पुस्तक
चन्दन की सौरभ

सपादिका
साध्वी चन्दनबाला, जैन सिद्धान्ताचार्य

आवृत्ति
प्रथम मार्च १९६९

प्रकाशक
सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामंडी, आगरा-२

मूल्य
चार रुपए पचास पैसे

मुद्रक
रामनारायण मेडतवाल
श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस
राजा की मंडी, आगरा-२

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक 'चदन की सौरभ' प्राचीन जैनचरित्र साहित्य की एक महत्वपूर्ण सकलना है।

राजस्थानी भाषा के चरित साहित्य की अपनी एक गौरवपूर्ण परपरा रही है, उसका स्वारस्य और माधुर्य आज भी जीवित है, उसकी प्रेरकता और श्रेष्ठता का मूल्य वर्तमान युग मे भी किसी प्रकार कम नहीं हुआ है। प्रस्तुत सकलन राजस्थानी भाषा के प्राचीन कवि-मनीषियो की कृतियो का सरस सकलन है, जो भाषा, भाव और उपादेयता की दृष्टि से एक अनूठापन लिए हुए है।

सन्मति ज्ञानपीठ, जहाँ साहित्य के नवनिर्माण की दिशा मे अपनी नवीन उपलब्धियो के साथ अग्रसर हो रहा है, वहाँ प्राचीन साहित्य के सपादन, अनुसधान व प्रकाशन की दिशा मे भी सतत प्रयत्नशील है।

प्राचीन कृतियो का अनुसधान एव वर्गीकरण करके प्रस्तुत करने का यह श्रम-साध्य काय महासती श्री शीलकु वर जी की शिष्या साध्वी चदनबालाजी ने किया है। इस सपादन मे उनकी साहित्यिक सुरुचि एव ऐतिहासिक कृतियो के प्रति अनुशीलनात्मक अनुराग परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति हमारे जिज्ञासु पाठको को प्रिय लगेगी, विशेषकर उनको, जिनकी कि मातृभाषा राजस्थानी है और जिन्हें प्राचीन रास एव चौढालिया से विशेष लगाव है। इसके प्रकाशन मे राजस्थान के कुछ विशेष महानुभावो ने अथ सहयोग करके अपनी उदारता का परिचय दिया है, जिन्हें हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। पुस्तककी पाडुलिपि कहीं-कहीं अस्पष्ट व अशुद्ध होने के कारण विदुषी महासती श्री सुमतिकु वर जी ने अपना बहुमूल्य समय देकर शुद्ध करने की कृपा की उसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं। तथा पुस्तक को कलात्मक एव शुद्ध रूप मे मुद्रित कराने मे हमारे कायकता श्रीचन्द सुराना 'सरस' न मनोयोग पूर्वक जो श्रम किया है उसके लिए विशेष प्रसन्नता के साथ ही धन्यवाद।

आशा है यह प्रकाशन पाठको की सुरुचि को परिपुष्ट करेगा।

मन्त्री

सन्मति ज्ञानपीठ

अर्थसहयोगी

१९००) शाह हस्तीमल जी, जेठमल जी जिनाणी, गढसिवाना

५००) शाह सुखराज जी छोगालाल जी जिनाणी, गढसिवाना

५००) शाह ऋसवचन्द जी पारसमल जी जिनाणी,
सुपुत्र श्री मिश्रीलाल जी जिनाणी, गढसिवाना

५००) शाह घीगडमल जी मुलतानमल जी कानुगा, गढ़सिवाना

४००) श्रीमती प्यारीबाई के सुपुत्र बादरमल जी अमीचन्द जी
जवेरीलाल जी बागरेचा, गढ़सिवाना

पदन की सौरभ के प्रकाशन मे उपरोक्त महानुभावो ने
अर्थ सहयोग दिया, तदर्थ हार्दिक धन्यवाद !

सम्पादिका की कलम से

भारतीय इतिहास के निर्माण में राजस्थान की अपनी एक विशिष्ट देन रही है। इस भूखण्ड का अतीत अत्यन्त गौरवमय रहा है। धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सभी दृष्टियों से इसका महत्व अक्षुण्ण है। जहाँ वह रणबांकुरे वीर योद्धाओं की क्रीडाभूमि है, वहाँ वह सारस्वतों की पुण्यभूमि भी है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार जेम्स टाड ने लिखा है—[1]"राजस्थान में एक भी छोटी रियासत ऐसी नहीं है जिसमें थर्मोपोली जैसी युद्धभूमि न हो और कदाचित् ही कोई ऐसा नगर हो, जिसमें लियोनिडास जैसा योद्धा और होमर जैसा कवि उत्पन्न नहीं हुआ हो।" यहाँ के साहित्यकार लेखनी के साथ तलवार के भी धनी रहे हैं।

श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री रामनिवास हारीत ने राजस्थानी साहित्य का वर्गीकरण दो भागों में किया है[2]—

(१) डिंगल साहित्य

(२) साधारण बोलचाल का राजस्थानी साहित्य

श्री सीताराम लालस ने राजस्थानी साहित्य को चार भागों में विभक्त किया है[3]—

१ जैनसाहित्य

२ चारणसाहित्य

३ भक्तिसाहित्य

४ लोकसाहित्य

---

१ दी एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान,

२ राजस्थानी रा दूहा भाग १ प्रस्तावना पृ० ४२

३ राजस्थानी शब्दकोष, प्रस्तावना पृ० ८४

श्री पुरुषोत्तमलाल जी मेनारिया ने राजस्थानी साहित्य को सात भागों में विभक्त किया है[1] —

१ जैन-साहित्य
२ डिंगल-साहित्य
३ पिंगल-साहित्य
४ पौराणिक साहित्य
५ संत-साहित्य
६ लोक-साहित्य
७ आधुनिक-साहित्य

श्री नरोत्तमदास स्वामी ने शैली की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य को तीन भागों में विभक्त किया है[2] —

१ जैन शैली
२ चारणी-शैली
३ लौकिक शैली

डाक्टर हीरालाल माहेश्वरी ने राजस्थानी साहित्य की चार शैलियाँ मानी हैं[3] —

१ जैन-शैली
२ चारण शैली
३ सन्त-शैली
४ लौकिक-शैली

राजस्थानी जैन साहित्य की अनेक विधाएँ हैं । [illegible] वर्गीकरण भी इस प्रकार किया है[4] (१) कथात्मक अथवा चरित्रात्मक, (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible], (५) [illegible], (६) [illegible], (७) [illegible], [illegible] (८) [illegible], [illegible], आयुर्वेद [illegible] ।

---

१ मुनि हजारीमल स्मृति ग्रन्थ पृ० ७८३
२ राजस्थानी साहित्य : एक परिचय
३ राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० ५
४ [illegible] ग्रन्थ

कथा काव्य मे अन्तर्गत आदर्श व्यक्तियो के पवित्र चरित्र आते हैं। चरित्र के माध्यम से दान, शील, तप और भावना आदि सद्गुणो को ग्रहण करने पर बल दिया जाता है, इन गुणो को ग्रहण करने से जीवन कितना पवित्र, निर्मल बनता है, यह चरित्र के पात्र द्वारा प्रकट किया जाता है और क्रोध, मान, माया और लोभ आदि दुर्गुणो से जीवन का कितना अध पतन होता है, यह बताया जाता है। कहा भी है —

दान, शील तप भावना, चार चरित कहेस।
क्रोध मान माया वली, लोभादिक षमणेस ॥[1]

प्रस्तुत पुस्तक मे प्राचीन जैन मुनियों द्वारा रचित विविध चरित्रो का सकलन है। ये चरित्र भाव भाषा और शैली की दृष्टि से प्राचीन हैं। इनमें सिनेमा की राग रागिणियो की तरह चमक-दमक का अभाव है, तथापि जहाँ हृदय का प्रश्न है, भावनाओ का सवाल है, वहाँ प्राचीन होते हुए भी चिरनवीन हैं। आज भी इनमे हृदय को झकझोरने की अद्भुत शक्ति है। जब पाठक तन्मय होकर इन्हे गाता है, तो श्रोता झूम उठते हैं। उनमें वैराग्य की भव्य भावना अगडाइयाँ लेने लगती हैं।

मुझे स्मरण है—इन चरित्रो को एक साथ प्रकाश मे लाने की इच्छा मेरी दाद गुरुणी जी परमविदुषी शान्तमूर्ति श्री धूलकु वर जी म०, एव स्थविर-पद विभूषित स्व० माता जी श्री सभूकु वर जी महाराज के अन्तर्मानस में उत्पन्न हुई थी, उन्होंने सग्रह भी किया था, पर किन्ही कारणों से वे उन्हें मूर्त रूप प्रदान नही कर सकी।

सन् १९६८ का वर्षावास परम श्रद्धेय गुरुदेव राजस्थानकेसरी प्रसिद्ध-वक्ता श्री पुष्कर मुनि जी महाराज की आज्ञा से श्रद्धेया सद्गुरुणी जी शीत-कु वर जी महाराज ठा० ५ ने गढसिवाना किया। गुरुणी जी महाराज ने एक दिन वार्तालाप के प्रसग मे मुझे कहा कि स्वर्गीया सद्गुरुणी जी महाराज व माता जी म० की इच्छा को पूर्ण करना है। गुरुणी जी महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर मैं चरित्रो के सकलन करने में लग गई। सद्गुरुणी जी महाराज का दिशादर्शन व सेवामूर्ति मातृस्वरूपा सायरकु वर जी महाराज की प्रबल प्रेरणा से मैं प्रस्तुत कार्य सम्पन्न कर सकी। यदि सद्गुरुणी जी महाराज व

---

१ अमरकुमार की चोपाई

सायर कुंवर जी महाराज की अपार कृपा दृष्टि नहीं होती तो यह कार्य इतना शीघ्र पूर्ण नहीं हो सकता था। कितने ही चरित्र गुरुणी जी महाराज व सायर कुंवर जी महाराज से सुनकर लिखे हैं और कितने ही चरित्र प्राचीन पन्नों के आधार से लिखे हैं। अतः इनमें कहीं-कहीं पर भाषा आदि की दृष्टि से स्खलनाएं हैं परन्तु शुद्ध प्रति के अभाव में मन से परिवर्तन करना योग्य नहीं समझा गया अतः उन्हें उसी प्रकार रहने दिया गया है।

पाण्डुलिपि तैयार करने के पश्चात् श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी महाराज ने समयाभाव होने पर भी आत्मीय भाव से आरम्भ से अन्त तक अवलोकन कर अनेक स्थलों पर परिमार्जन किया, अतः सद्गुरुदेव का मैं हृदय से आभार मानती हूँ। साथ ही मेरे ज्येष्ठ गुरु भ्राता प० श्री हीरामुनि जी महाराज के प्रबल प्रयास से इसका प्रकाशन सुप्रसिद्ध साहित्य-संस्था सन्मति ज्ञानपीठ से हो रहा है अतः मैं प० श्री हीरामुनि जी महाराज की कृपा-दृष्टि को भी भूल नहीं सकती। मेरे स्नेह भरे आग्रह को सम्मान देकर श्री देवेन्द्र मुनि जी, शास्त्री, साहित्यरत्न ने ग्रन्थ पर मननीय मूल्यांकन लिखकर जो मुझे अनुगृहीत किया है उसे व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द मेरे पास नहीं है।

अन्त में मैं उन श्रद्धालु श्रावकों को भी और गुरु भगिनियों को भी विस्मृत नहीं कर सकती, जिनके उदार अर्थ सहयोग से ही प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और महासतीजी श्री सौभाग्य कुंवर जी, श्री शिखर कुंवरजी, पुष्प कुंवरजी, चन्दन कुंवर जी, दया कुंवरजी, हमा कुंवर जी, चेतना जी तथा प्रकाश कुंवर जी व तेजस्वी प्रमुख साध्वीमण्डल का स्नेहपूर्ण सद्व्यवहार भी सदा स्मृति पथ पर चमकता रहेगा। उन सभी का मैं हृदय से आभार प्रदर्शित करती हूँ जिनका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग मिला है।

श्री व० स्थानकवासी जैनस्थानक
लूणियावास
कर्नाटक

साध्वी चन्दनबाला

चन्दन की सौरभ — एक मूल्यांकन

भारतीय साहित्यरूपी सुमनवाटिका को सजाने, सवारने का जितना कार्य जैन मनीषियों ने किया है, सभव है, उतना अन्य किसी सम्प्रदाय विशेष के विनो ने नही किया। उन्होंने ज्ञान विज्ञान, धर्म और दर्शन, साहित्य और कला के क्षेत्र मे जो रग विरगे चटकीले फूल खिलाये हैं, वे अपने असीम सौन्दर्य और सौरभ से जन-जन के मन को आकर्षित करते रहे हैं। जैन साहित्य जितना प्रचुर है, उतना ही प्राचीन भी। जितना परिमार्जित है उतना ही विषय-वैविध्यपूर्ण भी, और जितना प्रौढ है उतना ही विविध शैली सम्पन्न भी। इसमे तनिकमात्र भी सशय नहीं कि जब कभी भी निष्पक्ष दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का इतिहास लिखा जाएगा उसका मूल आधार जैन साहित्य ही होगा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे आलोचक साधन सामग्री के अभाव मे यदि प्रस्तुत-साहित्य को 'धार्मिक नोट्स मात्र कहकर उपेक्षित करते हैं तो वह साहित्य की कमी नही, पर अन्वेषणा की ही कमी कही जाएगी, किन्तु वर्तमान अन्वेषणा के तथ्यों के आधार से यह मानना ही पडेगा कि भारतीय चिन्तन के क्षेत्र मे जैन साहित्य का स्थान विशिष्ट है जितना गौरव बुद्ध साहित्य का है उतना ही महत्व धर्म सम्प्रदाय के पास सुरक्षित चरित्र-साहित्य राशि का है।

जैन साहित्यकार आध्यात्मिक परम्परा के सृजक रहे हैं। आत्मलक्ष्यी सस्कृति मे गहरी आस्था रखने के बावजूद भी वे देश, काल एव तज्जन्य परिस्थितियो के प्रति अनपेक्ष नही रहे हैं, उनकी ऐतिहासिक दृष्टि हमेशा खुली रही है। उनका अध्यात्मवाद वैयक्तिक होकर के भी जन-जन के कल्याण की मगलमय भावना से ओत-प्रोत रहा है। यही कारण है कि उनके द्वारा सम्प्रदाय मूलक साहित्य का निर्माण करने पर भी उसमें सास्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथ्य इतने अधिक हैं कि वैज्ञानिक पद्धति से उनका सर्वेक्षण किया जाए तो भारतीय इतिहास के कई तिमिराच्छन्न पक्ष आलोकित हो उठेंगें।

जैन लेखकों ने मौलिक साहित्य के निर्माण के साथ ही विभिन्न ग्रन्थों पर सारगर्भित एवं पांडित्यपूर्ण टीकाएं लिखकर साहित्य की अविस्मरणीय सेवा व सुरक्षा की है, यह कभी भी विस्मृत नहीं की जा सकती। समीक्षकों ने जैन साहित्य को पिष्टपेषण से पूर्ण माना है, यह सत्य है कि औपदेशिक वृति के कारण जैन साहित्य में विषयान्तर से परम्परागत बातों का विवेचन-विश्लेषण हुआ है, किन्तु सम्पूर्ण जैन साहित्य में पिष्टपेषण नहीं है। और जो पिष्टपेषण हुआ है वह केवल लोकपक्ष की दृष्टि से ही नहीं, अपितु भाषा शास्त्र की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। जैन लेखकों ने भारतीय चिंतन के नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, मान्यताओं को जन भाषा की समुचित शैली में ढालकर, पिरोकर, सवारकर राष्ट्र के आध्यात्मिक स्तर को उन्नत, समुन्नत किया। उन्होंने साहित्य परम्परा को संस्कृत के कूप-जल से निकालकर भाषा के बहते प्रवाह में अवगाहन कराया, अभिव्यक्ति के नव-नये उन्मेष स्थापित किये।

विभिन्न जैन परम्परा के प्रातःस्मरणीय मुनिवरों ने जो साहित्य की अपूर्व सेवा की है, उसका सम्पूर्ण लेखा-जोखा लेने का न तो यहां अवसर ही है और न अवकाश ही, यहां तो प्रस्तुत कृति के सम्बन्ध में ही संक्षेप में कुछ विचार अभिव्यक्त किये जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में एक ही कवि की रचनाओं का संग्रह नहीं किया गया है, अपितु विभिन्न परम्परा के मुनिवरों की रचनाओं का सुन्दर संकलन-आकलन किया गया है। प्रत्येक चरित्र में त्याग वैराग्य का पयोधि उछालें मार रहा है। प्रत्येक चरित्र आत्मा को असत् से सत् की ओर, तमस् से ज्योति की ओर, एवं मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की अपूर्व क्षमता रखता है।

[illegible] के चरित्र में राजीमती के मुख से रथनेमि को फटकारते हुए ब्रह्मचर्य का विवेचन कर रहे हैं —

मदन मोहन छोड़ो हो, मुनिवर !
मुनिवर को [illegible] लाज ।
देशोद का तुम देखते हो मुनिवर !
[illegible] न [illegible] [illegible] ॥
और [illegible] [illegible] करो हो मुनिवर
[illegible] [illegible] ।

वमिया री वाछा करे हो, मुनिवर
काग कुत्ता के नीच ॥

राजीमती के हृदयग्राही उपदेश से रथनेमि पुन साधना के मार्ग में स्थिर हो जाते हैं। उनको हृत त्री के तार झनझना उठते हैं कि अयि राजमती! तूने मुझे नरक मे गिरते हुए को बचालिया, धन्य है तुझे—

नरक पडता राखियो हे राजुल,
इम बोल्यो रहनेम।
मुझने थिरता कर दियो हे राजुल,
वचन अकुश गज जेम ॥

महारानी देवकी के चरित्राङ्कन मे कवि ने वात्सल्य रस के सयोग के चित्र अत्यन्त तन्मयता के साथ अकित किये है। महारानी देवकी के छहों पुत्र देवता के उपक्रम से मृत घोषित हो जाते हैं। श्री कृष्ण का लालन-पालन भी वह नही कर पाई। जब उसे भगवान् नेमिनाथ के द्वारा यह सूचना मिलती है कि ये छहों मुनि तुम्हारे ही पुत्र हैं, तो उसका मातृत्व बरसाती नदी की तरह उमड पडता है। वह उन छहो मुनिवरो के पास जाती है। देखिए कवि श्री जयमल्ल जी के शब्दो मे सयोग वात्सल्य का सफल चित्र

तडाक से तूटी कस कचू तणी रे,
थण रे तो छूटी दूधाधार रे।
हिवडा माहे हर्ष मावे नही रे
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ॥
रोम रोम विकस्या, तन-मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आसू धार रे
बिलिया तो बाहा माहे मावे नही रे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हार रे ॥

प्रस्तुत चरित्र मे वियोग वात्सल्य का वर्णन भी कम सुन्दर नही है। माता देवकी के हृदय की थाह वही माता पा सकती है जिसने सात पुत्रो को पैदा करके भी मातृत्व का सुख नही लिया। उसके हृदय मे शल्य की तरह यह बात चुभ रही है कि उसने अपने प्यारे लालो को हाथ पकडकर चलाया नही, रोते बिलखते हुओ को बहलाया नही। वह अपने प्यारे पुत्र श्री कृष्ण से कहती है —

जैन लेखकों ने मौलिक साहित्य के निर्माण के साथ ही विभिन्न ग्रन्थों पर सारगर्भित एव पाण्डित्यपूर्ण टीकाएं लिखकर साहित्य की अविस्मरणीय सेवा व सरक्षा की है, वह कभी भी विस्मृत नही की जा सकती। समीक्षकों ने जैन साहित्य को पिष्टपेषण से पूर्ण माना है, यह सत्य है कि औपदेशिक वृत्ति के कारण जैन साहित्य मे विषयान्तर से परम्परागत बातो का विवेचन-विश्लेषण हुआ है, किन्तु सम्पूर्ण जैन साहित्य में पिष्टपेषण नही है। और जो पिष्टपेषण हुआ है वह केवल लोकपक्ष की दृष्टि से ही नहीं, अपितु भाषा शास्त्र की दृष्टि से भी बडा महत्त्वपूर्ण है। जैन लेखको ने भारतीय चिंतन के नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, मान्यताओ को जन भाषा की समुचित शैली में ढालकर, पिरोकर, सवारकर राष्ट्र के आध्यात्मिक स्तर को उन्नत, समुन्नत किया। उन्होंने साहित्य परम्परा को सस्कृत के कूप-जल से निकालकर भाषा के बहते प्रवाह मे अवगाहन कराया, अभिव्यक्ति के नये-नये उन्मेष द्योतित किये।

विभिन्न जैन परम्परा के प्रकृष्टप्रतिभासम्पन्न मुनिवरों ने जो साहित्य की अपूर्व सेवा की है, उसका सपूर्ण लेखा-जोखा लेने का न तो यहाँ अवसर ही है और न अवकाश ही, यहाँ तो प्रस्तुत कृति के सम्बन्ध में ही सक्षेप मे कुछ विचार अभिव्यक्त किये जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में एक ही कवि की रचनाओं का संग्रह नहीं किया गया है, अपितु विभिन्न परम्परा के मुनिवरो की रचनाओं का सुन्दर सकलन-आकलन किया गया है। प्रत्यक चरित्र मे त्याग वैराग्य का पयोधि उछालें मार रहा है। प्रत्येक चरित्र आत्मा को असत् से सत् की ओर, तमस् से ज्योति की ओर, एव मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की अपूर्व क्षमता रखता है।

भगवान् नेमिनाथ के चरित्र में राजीमती के मुह से रथनेमि को फटकारते हुए शाश्वाचार का निरूपण कर रहे हैं —

> अमृत भोजन छोडने हो, मुनिवर !
> कुतिया को भुरण खाय।
> देवलोक रा सुख देखने हो मुनिवर !
> नरक न भावे दाय ॥
> मीर खांड भोजन करो हो मुनिवर,
> भगियो कर्दमकीच ।

वमिया री वाछा करे हो, मुनिवर
काग कुत्ता के नीच ।।

राजीमती के हृदयग्राही उपदेश से रथनेमि पुन साधना के मार्ग में स्थिर हो जाते हैं। उनको हृत्तन्त्री के तार झनझना उठते हैं कि अयि राजमती ! तूने मुझे नरक मे गिरते हुए को बचालिया, धन्य है तुझे—

नरक पडता राखियो हे राजुल,
इम बोल्यो रहनेम।
मुझने थिरता कर दियो हे राजुल,
वचन अकुश गज जेम ।।

महारानी देवकी के चरित्राङ्कन मे कवि ने वात्सल्य रस के सयोग के चित्र अत्यन्त तन्मयता के साथ अकित किये हैं। महारानी देवकी के छहों पुत्र देवता के उपक्रम से मृत घोषित हो जाते हैं। श्री कृष्ण का लालन-पालन भी वह नही कर पाई। जब उसे भगवान् नेमिनाथ के द्वारा यह सूचना मिलती है कि ये छहों मुनि तुम्हारे ही पुत्र हैं, तो उसका मातृत्व बरसाती नदी की तरह उमड पडता है। वह उन छहो मुनिवरों के पास जाती है। देखिए कवि श्री जयमल्ल जी के शब्दो मे सयोग वात्सल्य का सफल चित्र

तडाक से तूटी कस कचू तणी रे,
थण रे तो छूटी दूधाधार रे!
हिवडा माहे हर्ष मावे नही रे
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ।।
रोम रोम विकस्या तन-मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आसू धार रे
विलिया तो वाहा माहे मावे नही रे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हार रे ।।

प्रस्तुत चरित्र मे वियोग वात्सल्य का वर्णन भी कम सुन्दर नहीं है। माता देवकी के हृदय की थाह वही माता पा सकती है जिसने सात पुत्रो को पैदा करके भी मातृत्व का सुख नहीं लिया। उसके हृदय मे शल्य की तरह यह बात चुभ रही है कि उसने अपने प्यारे लालों को हाथ पकडकर चलाया नहीं, रोते बिलखते हुओं को पत्नाया नही। वह अपने प्यारे पुत्र श्री कृष्ण से कहती है —

हू तुज आगल सू कहूं कन्हैया,
बीतक दुख री बात रे, गिरधारी लाल।
दुखणी जग मे छे घणी कन्हैया,
पिण घणी दुखणी थारी मात रे
जाया मैं तुम सारिखा, कन्हैया,
एकण नाले सात रे।
एकण ने हुलरायो नही, कन्हैया,
गोद न खिलायो सण मात रे॥
रोवतो मैं राख्यो नही, कन्हैया,
पालणिये पोढाय रे।
हालरियो देवा तणो, कन्हैया,
म्हारे हुस रही मन माय रे॥
ओढणियो पहराव्यो नहीं, कन्हैया,
टोपो न दीधो माय रे।
काजल पिण सार्यो नही, कन्हैया,
फदिया न दीधा हाथ रे॥

सच तो यह है महाकवि सूरदास जो वात्सल्य रस के सम्राट् माने जाते है वे भी इस प्रकार का चित्र प्रस्तुत नही कर सके है।

भगवान् नेमिनाथ के पावन प्रवचन को श्रवण कर गजसुकुमाल सयम के कटकाकीर्ण महामार्ग पर बढ़ना चाहते हैं। माता देवकी न ज्यों ही यह बात सुनी त्योंही वह मूच्छित होकर जमीन पर धुनक पडती है —

वचन अपूरव एह, पुत्र ना सामली-दी माई।
पडी मूर्छा-गति साय, धमके धरणी ढली॥
खलकी हाथा री चूड, माथे रा केश बीखर्‌या री माई।
योवन हुयो दूर, आंसू आगू ढर्‌या॥

मेघकुमार के चरित्र म माता धारणी का मेघकुमार कहतो है कि मां भौतिक पदार्थ के सुख सच्चे सुख नहीं है, ये आकाश में उमड़-घुमड़ कर आते हुए बादलों की तरह क्षणिक है। कवि कहता है —

संसार ना सुख सहू काचा,
तृणनीर सर्पो जाणो काचा।

भोग विषय मे रह्या कलीजे,
मैं तो जाणी ए काची माया,
विललावे जिम बादल छाया,
ऐसी जाणी कहो कुण रीझे॥

इस प्रकार चरित-कथाओ में कतिपय स्थल अत्यन्त मार्मिक बन पडे हैं। भृगुपुरोहित के चरित्र में जब भृगुपुरोहित अपनी विराट् सम्पत्ति का (कर श्रमण बनने के लिए प्रस्तुत होता है तब राजा उसकी सम्पत्ति लेने के लिए उद्यत होता है। इस प्रसग पर महारानी कमलावती का द्वोधन नितान्त ममस्पर्शी है। वह कहती है—राजन्! एक ब्राह्मण के द्वारा रित्यक्त सम्पत्ति को आप ग्रहण न करें। राजा का भाग्य बडा होता है। च्छिष्ट आहार की इच्छा तो कौवा और कुत्ता ही करता है, तुम्हें प्रस्तुत त्ति शोभा नही देती है, यह काय लज्जास्पद है। सारे विश्व की विभूति भी हो जाय तो भी तृष्णा शान्त नही हो सकती। एक दिन इस विराट को छोडकर एकाकी ही प्रस्थित होना पडेगा अत वीतराग धर्म को करो, वही त्राण और कल्याण का माग है। कवि की काव्यमयी वाणी

सांभल महाराजा, ब्राह्मण छाडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो।
वाछा कुण करे,
करे छे कुतरो ने काग॥
काग ने कुत्ता सरीखा
किम हुवो, नही प्रससवा जोग॥
भृगुपुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
थे जाणो आसी मारे भोग।
एकदिन मरणो हो राजाजी, यंदा तदा,
छोडो नी काम विशेष॥
बीजो तो तारण जग मे को नही,
तारे जिणजी रो धर्म एक॥

रानी राजा से आगे चलकर कहती है कि एक तोते को रत्न-जडित पिंजडे में भले ही बन्द कर दिया जाय, पर वह उसे बंधन मानता है, वैसे ही राजमहलों को मैं बंधन मानती हूँ। यहाँ मुझे तनिक मात्र भी आनन्द की उपलब्धि नही हो रही है, अत मैं सयम को ग्रहण करना चाहती हूँ। वह राजा से नम्र निवेदन करती है —

'रत्न जडित हो राजा जी पिंजरो,
सुवो तो जाणे है फद।
इसडी पण हू थारा राज मे,
रति न पाऊ आणद॥
स्नेहरूपिया ताता तोडने,
और बधन सू रह सू दूर।
विरक्त थई ने सजम मैं ग्रहूँ,
थे भी पण होय जाओ सूर॥

मुनि का वेश धारण करके भी यदि मन मे श्रमणत्व नही है, तो वह वेश भी कलकरूप है। आषाढभूतिअनगार के चरित्र मे आभूषणो से लदी हुई साध्वी को निहार कर आचार्य कहते हैं —

सुण महासती, या लखणासु जैन धर्म अति लाजे।
गुण नही रती, लोका माहे निर्ग्रन्थणी यू वाजे॥
यू चाले छे चाला करती,
शुद्ध ईर्यासमिति नहीं धरती।
लोक लाज सु नहीं डरती,
यू लावे गोचरी झरमरती॥

कपटसहित साधना—साधना नहीं, अपितु विराधना है। वह आत्म-वंचना है। अनन्तकाल से आत्मा इस प्रकार साधना करता रहा, किन्तु जीवनोत्थान नहीं हुआ, अत कवि कह रहा है —

कपट क्रिया से नहीं तरिया,
थाज आपारी पेट भरिया।
इसा साग तो यह करिया,
महिमा कारण करि माया॥

भोला नर ने भरमाया,
स्यू कपट धरम प्रभु फरमाया।

इस प्रकार चन्दन की सौरभ की सभी रचनाए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एव प्रत्येक पक्ष को समुन्नत बनाने की पुनीत प्रेरणा प्रदान करती हैं। काव्य के भाव पक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टियों से यह सग्रह मूल्यवान है। राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र में चन्दन की सौरभ अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगी, ऐसी आशा है।

मैं परम विदुषी महासती श्री शीलकुँवर जी की सुशिष्या महासती चन्दनबाला जी को हृदय से धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता जिन्होने प्राचीन जैन कवियों के चरित्रो का सुन्दर सकलन किया है। सकलन सुन्दर है, बालक से लेकर वृद्धा तक के लिए उपयोगी है। सम्पादन, आकलन अपने आप में एक कला है, आनेवाला युग प्रस्तुत सम्पादन का और महासती चन्दनबाला जी की प्राचीन चरित्रो के प्रति गहरी निष्ठा का समादर करेगा। आभ्यन्तर सुन्दरता के साथ पुस्तक की बाह्य सुन्दरता भी चित्ताकर्षक है। मैं आशा करता हूँ महासती चन्दनबाला जी भविष्य में मौलिक साहित्य का निर्माण कर जैन साहित्य की श्रीवृद्धि कर यशस्वी बनें।

जैन स्थानक रविवार पेठ
नासिक सिटी, फरवरी १९६९

—देवेन्द्रमुनि, शास्त्री
साहित्यरत्न

चदन की सौरभ

विपयानुक्रम

चन्दन की सौरभ

चन्दन की सौरभ से मानव-
मन का हो कण-कण सुस्मित।
सात्विक सुषमा से साधक का
जीवन हो महिमा-मंडित।।

ढाल १

राग—करो दान शील ने तप

१— 'शख' राजा ने 'यशोमती रानी,
जिण साधा ने वैरायो दाखारो पानी ।
हुवा नेम कवर राजुल नारो,
सुध-दान थकी खेवो पारो ॥

२— 'अपराजित' थी चव आया,
ज्यारी दिप दिप दीप रही काया ।
जस फैल्यो सहू ससारो,
सुध दान थकी खेवो पारो ॥

ढाल २

राग—चद्रायण

१—नगर 'शोरीपुर' राजियो रे, 'समुद्रविजय' राय धीरो ।
तस नदन श्री नेमजी' रे, सावल वरण शरीरो ॥
सावल वण शरीर विराजे,
एक सहस्र आठ लक्षण छाजे ।
दिन दिन अधिकी ज्योत विराजे,
दशन दीठा दारिद्रय भाजे ।
श्री नेमीश्वरजी हो ॥

२—एक दिवस श्री नेमजी रे, आया आयुधशालो ।
पचायन शख पूरियो रे, चाढ्यो धनुष करालो ॥
चाढ्यो धनुष कियो टकारो,
शब्द सुण्यो श्री कृष्ण' मुरारो ।
ए नर उठ्यो कोई अवतारो,
आय ने जोवे तो नेमकुमारो ॥ जी० ॥

ढाल ३ राग—आवे काल लपेटा लेतो रे

१— बाबा मल अखारे चालो रे,
मानें थारो बल देखालो रे।
अखाडे मड्या दोनू भाई रे,
घणा देखें लोग लुगाई रे॥

२— देखो या में कुण जीते कुण हारे रे,
गोप्या मन एम विचारे रे।
'हरि' तब कर ऊँचो कीधो रे,
'नेमजी' पाछो दीधो रे॥

ढाल ४ राग—चन्द्रायण

१— तब वलतो 'हरि' झुकियो रे साह्यो 'नेम' नो हाथो।
हिंडोला जिम हीचियो रे, गोप्या तणो इज नाथो॥
सोले सहस्र गोप्या रो स्वामी,
साचे घणी आमी ने सामी।
'नेम' री बाँह नमावण-कामी,
तो पिण 'नेम' री बाहु न नामी। जी०॥

२— बल देखी श्री 'नेम' नो रे, 'कृष्ण' थया दिलगीरो।
बावीसमा जिनजी अछे रे, इण सूं नहीं विगारो॥
इण सूं नहीं बिगाड रे भाई,
मन चिंता म करो कांई।
तो पिण पूरी समता न आई,
एक नारी इणा ने दो परणाई॥ जी०॥

ढाल ५ राग—हूं बलिहारी यादवां

१—'हरि' हरखी ने आणियो, साथे गोप्यां रो वृन्द वे।
नंदन वन विच परवर्या, 'नेम' सहित गोविंद वे॥
हूं बलिहारी यादवां॥

२—कान बजावे बासुरी, गोपी नाचे ताली छद के।
पाए नेवर रुण भणं, हस हस रामत रमे ग्राणद के ॥
हूं बलिहारी नेम की ॥

३—विच मेलिया 'नेम' ने, दोली फिर रही सगली नार के।
नदन वन मे ग्राणद स, कोयल रा तिहा हुवे टहुकार के ॥
+ बलिहारी नेम की ॥

४—हाव भाव गोप्या करे, वलि वलि इधको नेम ने देख के।
जादव-मन भीजे नहो, शील सबल तणो विशेष के
हूं बलिहारी नेम की ॥

ढाल ६ राग—होली

१—देवर ने 'रुकमण' हसे, 'हरि' निभावे ग्रनेको रे।
भाई तू निभावी न सके, तिण सू डरता न परणे एको रे॥
भाई व्याव मनावे 'नेम' को ॥

२-वलती दूसरी इम कहे, इण रा मन मे आको रे।
तोरण ग्राया करे ग्रारती, टीको काढने सासू साचे नाकोरे॥
बाई, इम डरतो परणे नही ॥

३—वली तीसरी इम कहे, तोने बात कहूं विचारो रे।
बाई चित करने चवरी चढे, तीन फेरा लेणा पडे लारो रे॥
बाई, सावलियो इम परण नही ॥

४—वलती चौथी इम कहे, साभल एक विचारो है बाई
जुवाजुई रमता थका, रखे बनडो जावे हारो ह बाई ॥इम०॥

५—वलती पाचमी इम कहै, साभल मोरी बातो हे बाई !
दोरो है कावण दोरडो, खोलणो पडे ग्रकण हाथो हे बाई। इम०॥

६—'गौरी' 'रुकमण' ने कहे, म्हारा मन्निया वछित काजो हे बाई!
तीन सो वरसा रा नेमजी कुवारा फिरता ग्राव लाजो ए बाई॥इम०॥

७ ग्रवर तो बात किनोल री, साचो एह उपायो ह बाई!
ग्राप ग्राप नितरी कह, ग्रो दुख सह्यो न जायो हे बाई ॥इम०॥

ढाल ७ राग—हूं बलिहारी यादवां

१– नारी घर रो सेहरो, नारी सू बाजे घर बार के ।
जिण घर मे नारी नही, ते घर गिणती मे गिणे नही ससार के ।।
थे क्यू परणो नी देवर नेमजी ।।

२—हिवडा तो खबर न का पडे,
बुढापो थाने घरसी आय के
कुण करसी थारी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा माय के ।।थे०।।

३—पुत्र विना सजसी नही,
कुण राखेला थारो कुल व्यवहार के ।
पुत्र विना प्रभुता किसी,
पुत्र विना नही वधे परिवार के ।।थे०।।

४—एक नारी रो काई ढावणो,
नारी होवे घर को सिणगार के ।
नारी विना मन्दिर किसो,
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के ।।थे०।।

५—राणी मिल सब इम कहे,
एक अर्ज विनति अवधार के ।
इसडा कठोरज काई हुवा,
थोडो तो हिरदा मे विचार के ।।थे०।।

ढाल ८ राग—चंद्रायण

१— कृष्ण गोप्या मिल नेम ने रे, फाग रमण ले जायो ।
जल सू भरी लहोमली र, पेठ पाणी रे मायो ।।
पेठा तिहा पासती पाणी,
नेमजी मांहे उछाल्यो पाणी ।
मायो मायो जाणी जाणी,
ध्याय मनाय लियो माहाणी जी ।।नेमीश्वरजी।।

२— उग्रसेण-राय-कन्यका रे, राजमती वहु रूपो।
शील गुणे करी सोभती रे, चतुराई वहु चूपो॥
चतुराई वहु चूप सिखाणी,
घणी विचक्षण मधुरी वाणी।
चौसठ कला मे शील-समाणी,
बीजली केरी ओपमा आणी॥जी०॥

३— नेम भणी परणायवा रे, मागे कृष्ण नरेसो।
'उग्रसेन' राय इम कहे रे, एक भणो हमारी रेसो॥
एक सुणो थे रहस हमारी,
विध सू जान करो तुमे भारी।
आवो म्हारा घर मझारी,
तो परणाऊ राजकुमारी॥जी०॥

४— मानी बात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो।
ब्राह्मण लगन लिया थका रे, हरख्या राणी राणो॥
हरख्या राणी राणज कोई।
नेमजी आगल पीठी ठोई।
माहे घाली घणी कसवोई,
न्हाय धोय कल्पवृक्ष ज्यू होई॥जी०॥

ढाल ९

१— महाराज चढे गज रथ तुरिया
हय गय रथ पायक—सुख दायक।
नयन-कमल हरसत ठरिया॥महा०॥

२— खूब वरात वनी—व्यावन की।
घोर घटा उमटी झरिया॥महा०॥

३— लाल गुलाल, अबीर अगारचो।
चऊ दिस नाच रही परिया॥महा०॥

ढाल ७ राग—हूँ बलिहारी यादवाँ

१- नारी घर रो सेहरो, नारी सू बाजे घर बार के।
जिण घर मे नारी नही, ते घर गिणती मे गिणे नही ससार के ।।
थे क्यू परणो नी देवर नेमजी ।।

२—हिवडा तो खबर न का पडे,
बुढापो थाने घरसी ग्राय के
कुण करसी थारी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा माय के ।।थे०।।

३—पुत्र विना सजसी नही,
कुण राखेला थारो कुल व्यवहार के।
पुत्र विना प्रभुता किसी,
पुत्र विना नही वधे परिवार के ।।थे०।।

४—एक नारी रो काई ढावणो,
नारी होवे घर को सिणगार के।
नारी विना मन्दिर किसो,
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के ।।थे०।।

५—राणी मिल सब इम कहे,
एक अरज विनति अवधार के।
इतरा कठोरज काई हुवा,
थोडो तो हिरदा मे विचार के ।।थे०।।

ढाल ८ राग—चंद्रायण

१— कृष्ण-गोप्या मिल नेम ने रे, फाग रमण ले जायो।
जल सू भरी गहोलसी र, पेट पाणी रे मायो ।।
पेटा तिहां पाणी पाणी
रानजी मांह उछाल्या पाणी।
मायो मायो जाणी जाणी,

२— उग्रसेण-राय-कन्यका रे, राजमती वहु रूपो।
शील गुणे करी सोभती रे, चतुराई वहु चूपो॥
चतुराई वहु चूप सिखाणी,
घणी विचक्षण मधुरी वाणी।
चौसठ कला मे शील-समाणी,
बीजली केरी ओपमा आणी॥जी०॥

३— नेम भणी परणायवा रे, मागे कृष्ण नरेसो।
'उग्रसेन' राय इम कहे रे, एक भणो हमारी रेसो॥
एक सुणो थे रहस हमारी,
विध सू जान करो तुमे भारी।
आवो म्हारा घर मझारी,
तो परणाऊ राजकुमारी॥जी०॥

४— मानी वात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो।
ब्राह्मण लगन लिया थका रे, हरख्या राणी राणो॥
हरख्या राणी राणज कोई।
नेमजी आगल पीठी ठोई।
माहे घाली घणी कसत्रोई,
न्हाय धोय करपवृक्ष ज्यू होई॥जी०॥

ढाल ९

१— महाराज चढे गज रथ तुरिया
हय गय रथ पायक—सुख दायक।
नयन-कमल हरसत ठरिया॥महा०॥

२— खूब वरात बनी—व्यावन की।
घोर घटा उमटी झरिया॥महा०॥

३— लाल गुलाल, अबीर अगारचो।
चऊ दिस नाच रही परिया॥महा०॥

ढाल ७ राग—हूं बलिहारी यादवां

१- नारी घर रो सेहरो, नारी सू बाजे घर बार के।
जिण घर मे नारी नही, ते घर गिणती मे गिणे नही ससार के ॥
थे क्यू परणो नी देवर नेमजी ॥

२—हिवडा तो खवर न का पडे,
बुढापो थाने घरसी आय के
कुण करसी थारी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा माय के ॥थे०॥

३—पुत्र विना सजसी नही,
कुण राखेला थारो कुल व्यवहार के।
पुत्र विना प्रभुता किसी,
पुत्र विना नही बधे परिवार के ॥थे०॥

४—एक नारी रो काई ढावणो,
नारी होवे घर को सिणगार के।
नारी विना मन्दिर किसो,
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के ॥थे०॥

५—राणी मिल सब इम कहे,
एक अर्ज विनति अवधार के।
इसडा कठोरज काई हुवा,
थोडो तो हिरदा मे विचार के ॥थे०॥

ढाल ८ राग—बड़ायन

१— कृष्ण-गोप्यां मिल नेम ने रे, फाग रमण ले जायो।
जल सू भरी मटोगली रे, पेट पाणी रे मांयो ॥
पेठा तिहां पागतो पाणी,
नेमजी मांह उछाल्यो पाणी।
मार्यो मार्यो जाणी जाणी,
ध्याव मनाय लियो माटोणी जी ॥नेमीश्वरजी॥

२— उग्रसेण-राय कन्यका रे, राजमती वहु रूपो।
शील गुणं करी सोभती रे, चतुराई वहु चूपो॥
चतुराई वहु चप सिखाणी,
घणी विचक्षण मधुरी वाणी।
चौसठ कला मे शील-समाणी,
वीजली केरी श्रोपमा श्राणी॥जी०॥

३— नेम भणी परणायवा रे, मागे कृष्ण नरेसो।
'उग्रसेन' राय इम कहे रे, एक भणो हमारी रेसो॥
एक सुणो थे रहस हमारी,
विध सू जान करो तुमे भारी।
श्रावो म्हारा घर मझारी,
तो परणाऊ राजकुमारी॥जी०॥

४— मानी वात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो।
ब्राह्मण लगन लिया थका रे, हरस्या राणी राणो॥
हरस्या राणी राणज कोई।
नेमजी श्रागल पीठी ढोई।
माहे घाली घणी कसवोई,
न्हाय धोय कल्पवृक्ष ज्यू होई॥जी०॥

ढाल ९

१— महाराज चढे गज रथ तुरिया
हय गय रथ पायक—सुख दायक।
नयन-कमल हरसत ठरिया॥महा०॥

२— खूब वरात वनी—व्यावन की।
घोर घटा उमटी झरिया॥महा०॥

३— लाल गुलाल, श्रबीर श्रगारचो।
चऊ दिस नाच रही परिया॥महा०॥

ा ११

राग—चन्द्रायण

इण विध जान जलूस सु रे, मन मे अधिक जगीसो ।
आगे आय ऊभा रह्या रे शक्रेन्द्र ने ईशो ।।
शक्रेन्द्र ने ईशज दोई,
ऊभा जान रह्या छे जोई ।
नेम कवर परणे नही कोई
तिणसू मोने अचिरज होई ।।जी०।।

कृष्ण कहे इद्रा भणी रे, थे रहिजो अबोला सीधा ।
विगर बुलाया आविया रे, थाने किण पीला चावल दीधा ।।
किण दीधा थाने पीला चावल,
जान वणी छे रग वेलावल ।
म्हारे काम पड्यो छे सावल
रखे वजावो दिखणो बावल ।।जो०।।

ा १२

राग—चलत

मैं नीठ नीठ व्याव मनायो रे,
थे विगर बुलाया क्यू आया ।
थे रहजो अबोला सीधा र,
पिण पीला चावल किण दीधा ।।
एतो इन्द्र बोले विसेखा रे,
कान्हा ! मै पिण मेलो देखा ।
थे जान जोरावर खाटी रे,
किम उतरे नेम पीलो पाटी ।।

र १३

राग—चद्रायण

इन्द्र बोल्या बेऊँ कृष्ण ने हो, लाया थे जान विसेखो ।
नेम कवर परणे जिको हो मैं पिण लेसा लेखो ।।
म्है पिण जोवा व्याव री वाटी,
किम उतरे नेम पीली पाटी ।

५—नेम कुवर तोरण चढ्या,
पशुवा करी पुकारो ए, हाहाकारो ए,
फूट्यो सगली जानमे क—सहिया ए ॥

प्रक्षिप्त ढाल राग—ये तो माला पेहरो जडावरी रे लाल

ये तो वें वें करता बोकडा र लाल, ये तो करे रे नेमसु अरदास ।
हो दयालराय ॥
मोडाई व्याव मनावियो रे लाल, नहो अन्तर मन री आश ।
हो दयाल राय ॥१॥
था विन करणा कुण करे रे लाल ॥टेक॥

ये तो हिरणा हिरणी मिल करी रे लाल, सामर सुअर सियाल
हो दया० ॥
केई वाडे केई पिंजरे रे लाल, ज्यारे पड रह्या अश्रु असराल
हो दया० ॥२॥

सुवटो सुवटी ने कह रह्या रे लाल, म्हारा वाहर रह्य गया वाल
हो दया० ॥
म्हाने चुगो पाणी कुण देवसी रे लाल, कुण करसी साल समाल
हो दया० ॥३॥

ढाल १६ राग—फाग

१— सीचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात ।
जादव राय ! रोकी ने राख्या पीजरे, दुख करे दिनरात ॥
जादव राय ! तुम विन करणा कुण करे ॥

२—हरिण सूसा ने बाकरा, सूर सावर ने मोर ।
दयालराय ! केई वाडे केई पिंजरे, दुखिया कर रया शोर ॥
दयाल राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

३—हिरण्यो हिरणी ने कहे, वाहिर गया बाल ।
दयालराय ! चुगो पाणी लेवा भणी, कुण करसी साल सभाल॥द०॥

५—नेम कुवर तोरण चढ्या,
पशुवां करी पुकारो ए, हाहाकारो ए,
फूट्यो सगलो जानमें क—सहिया ए ॥

प्रक्षिप्त ढाल राग—थे तो माला पेहरो जडावरी रे लाल

ये तो बें बें करता बोकडा र लाल, ये तो करे रे नेमसु अरदास।
हो दयालराय ॥
मोडाई व्याव मनावियो रे लाल, नही अन्तर मन री आश।
हो दयाल राय ॥१॥
था विन करुणा कुण करे रे लाल ॥टेक॥

ये तो हिरणा हिरणी मिल करी रे लाल, सामर सग्रर सियाल
हो दया० ॥
केई बाडे केई पिंजरे रे लाल, ज्यारे पड रह्या अश्रु असराल
हो दया० ॥२॥

सुवटी सुवटी ने कह रह्या रे लाल, म्हारा बाहर रह्या गया बाल
हो दया० ॥
म्हाने चुगो पाणी कुण देवसी रे लाल, कुण करसी साल सभाल
हो दया० ॥३॥

ढाल १६ राग—फाग

१— सीचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात।
जादव राय! रोकी ने राख्या पीजरे, दुख करे दिनरात॥
जादव राय! तुम विन करुणा कुण करे॥

२—हरिण सूसा ने बाकरा, सूर सावर ने मोर।
दयालराय! केई वाडे केई पिंजरे, दुखिया कर रया शोर॥
दयाल राय! तुम विन करुणा कुण करे॥

३—हिरण्यो हिरणी ने कहे, बाहिर गया बाल।
दयालराय! चुगो पाणी लेवा गणी, कुण करसी साल सभाल॥द०॥

— नफर भणी हलकार ने रे, तोड्या वधन जालो।
केई जीवडा दोटी गया रे, केई उड्या तत कालो ॥
उड गया जीव तत-कालो,
जवान वूढा नान्हा वालो।
नेम रह्या छे ऊभा भालो,
जीवा रे वर्त्या मगलमालो ॥जी०॥

ाल १८

१—गगन जाता जीव देवे आसीस के,
पशु ने पखिया जगदीश।
जादव ! हिवे चिरजीव जो,
वलिहारी तुम वाप ने माय के,
पुत्र रतन जिन जनमियो।
स्वामी ! थे सारिया, अम्ह तणा काज के,
तीन भवन रो पाम जा राज के—
शील अखडित पाल जो ॥

ढाल १९ राग—चद्रायण

१— वैरागे मन वाल ने रे, तोरण सू फिर जायो।
इण अवसर श्रीकृष्णजी रे, आडा फिरिया आयो ॥
कृष्ण फिर्या छे आडा आई,
हिवडे धीरज रख चतुराई।
तेल चढी ने किम छिटकाई,
जादव केरी जान लजाई ॥जी०॥

२— नेम कहे सुण बधवा रे, ए ससार असारो।
कुटुम्ब कवीलो छोडने रे, हूं लेस् सजम-भारो ॥
हू लेसू सजम—भारो,
कामभोग जाण्या खारो।
ए नारी न लगाऊं लारो,
मुक्ति-रमणी स छे मन म्हारो ॥जी०॥

४— नफर भणी हलकार ने रे, तोड्या वघन जालो।
केई जीवडा दोडो गया रे, केई उड्या तत कालो॥
उड गया जीव तत-कालो,
जवान बूढा नान्हा वालो।
नेम रह्या छे ऊभा भालो,
जीवा रे वर्त्या मगलमालो॥जी०॥

ढाल १८

१—गगन जाता जीव देवे ग्रासीस के,
पशु ने पखिया जगदोश।
जादव! हिवे चिरजीव जो,
वलिहारी तुम वाप ने माय के,
पुत्र रतन जिन जनमियो।
स्वामी! थे सारिया, ग्रम्ह तरणा काज के,
तीन भवन रो पाम जो राज के—
शील ग्रखडित पाल जो॥

ढाल १९

राग—चद्रायण

१— वैरागे मन वाल ने रे, तोरण सू फिर जायो।
इरण ग्रवसर श्रीकृष्णजी रे, ग्राडा फिरिया ग्रायो॥
कृष्ण फिर्या छे ग्राडा ग्राई,
हिवडे घीरज रख चतुराई।
तेल चढी ने किम छिटकाई,
जादव केरी जान लजाई॥जी०॥

२— नेम कहे सुरण बघवा रे, ए ससार ग्रसारो।
कुटुम्ब कवीलो छोडनें रे, हूं लेस् सजम-भारो॥
हू लेसू सजम—भारो,
कामभोग जाण्या खारो।
ए नारी न लगाऊं लारो,
मुक्ति-रमणी स छे मन म्हारो॥जी०॥

४—पूरे मासे पारेवडी इम करे अरदास ।
जादवराय । बधन पड्या पग माहरे, ढीला करे कोई पास॥जा०॥
५—तीतरी कहे तीतरी भणी,
गर्भ छे उदर माय ।
जादव राय । सकट पामू अति घणू,
कोइक करुणा कर दे छोडाय ॥जा०॥
६—अशरण थका केई पखिया,
बिल बिल करे निरधार ।
दयाल राय । छोडावण वालो कोई नही,
छोडावे तो नेमकुमार ॥दयाल०॥

ढाल १७

राग—चद्रायण

१— नेम कहे मावत भणी रे, ए जीव किण काजो ।
बलतो बोले सारथी रे साभल जो महाराजो ॥
साभल जो महाराज—कुमारो,
व्याव मड्यो छे एह तुम्हारो ।
या जीवा रो होसी सहारो,
पोखीजसी तुमरो परिवारो ॥जी०॥
२— वचन सुणी सारथी तणा रे, नेमजी चिते आपो ।
इतरा जीव विणाससी रे, परणीजण में पापो॥
परणीजण में पापज मोटो,
जीव—हिसा से सहज खोटो ।
ए तो दीसे परतख तोटो,
तो लेऊँ दयाधर्म रो ओटो ॥जी०॥
३— करुणा केरा सागरू रे जीवा री करुणा कीधी ।
माथा रो मुगट वरज न रे, गहणा बधाई में दीधो ॥
गेहणा सब बधाई में दीधो,
नेम जिणद समता रस पीधो ।
इसड़ो उत्तम कारज कीधो,
तीन लोक में हुवा प्रसिधो ॥जी०॥

२—पाच से तेसठ जादवां, कवर विचक्षण जाण रे।
एक सो आठ कृष्ण तणा, वहोतर वलभद्र ना वखाण रे ।।हूं तो०।।

३—वले आठ पुत्र उग्रसेण ना, अठावीस नेम ना भाय रे।
सात कह्या देवसेन ना, वलि आठ मोटा महाराय रे ।।हूं तो०।।

४—एक वरदत्त पुत्र अक्षोभ' नो, दोय से पाच यादव भेल रे।
श्री नेम साथे सजम लियो ओ सहस्र परस रो मेल रे। हूं तो०।।

५—एतो दश दशारज हरसिया, वले हरख्या हरि वलदेव रे।
सुर नर हरख्या अति घणा सारे प्रभुजी री सेव रे ।।हूं तो०।।

ढाल २१

१— सखी मुख साभल्यो राजुल वाल,
नेम गया रथ पाछो वाल के।
धरणी ढली ने लही मूरछा—
चदन लागे छे जेम अगार के ।।
सखी मोने पवन म लावजो,
हिरदा मे वसे नेम कुवार के—
राजमती इम बिल विले ।।

ढाल २२

राग—काईक ल्योजो ल्योजो

१—आठ भवा रो नेहज हुतो, नवमे दी छिटकाई।
तुमसा पूत पनोता होय ने, जादव जान लजाई ।।
ऊभा रोजी, थे रोजी रोजी रोजी, उभा रोजी ।।

२—सावलिया—साहिव ऊभा रोजी
थे छो म्हारा ठाकुर ऊभा रोजी
म्हे छा थारा चाकर ऊभा रोजी ।।

३—हरि हलधर सा जानी वणिया, तुम र कुमिय न काई।
विन परमारथ छोड चल्या, सीख कहा सू पाई ।।ऊभा०।।

४—जो कोई खून हुवे मुज अन्दर, तो दू साख भराई।
पिण कहो जुग मे न्याय करे कुण, जो हुवे राय अन्याई। ऊभा०।।

३—जो थारे मन मे आ हुँती रे, हूँ नही परण् नारो।
तो इसडी जान जुलूस सू रे, मोने नही लावणा था लारो॥

मोने नही लावणा था लारो,
जो मन वर्त्यो हो इम थारो।
हू तो लेस सजम—भारो,
तो इतरो काई कियो विस्तारो॥जी०॥

४—मन माडाणी मनावियो रे, कान्हा! येहिज म्हारो व्यावो।
म्हारे तो पला हुँतो रे, सजम ऊपरे चावो॥

चारित्र ऊपर चाव हमारो,
वचन न लोप्यो एकज थारो।
तिण सू एह हुवो विमतारो,
पिण विरक्त ने कुण राखणहारो।जी०।

५— कृष्ण मन फेरो दियो रे, इन्द्र कह्यो थो एमो।
नेम कवर परण नही रे, वचन खाली जावे केमो॥

इन्द्र-वचन किम जावे खाली,
कृष्ण रह्या विवाह री सोस पाली।
बीनणी विहूणी जानज चाली,
वैरागी मू डे इधकी लाली॥जी०॥

६— कृष्ण भणी समजाय न रे, पाछी चाली जानो।
लोकातिक प्रतिबोधसू रे, दीधो छमच्छर दानो॥

एक बरस तक दान ज देई,
कुटुम्ब कवीलो साथे लेई।
सुर नर वृन्द मिल्या छे केई
लोच कियो सिर नो स्वयमेई॥जी०॥

ढाल २० राग—म्हाला उचारी रे

१—मास सावण छठ चानणी चित्रा नक्षत्र ने माय रे।
सहस्र पुरुष साथे वरी रे, सजम लियो जिनराय रे॥
हू तो नेम नमू रे बावीसमां॥

४— म्हारी मन री हूस रही मन मे,
हू तडफा तोड रही तन मे ।
हू वात किसी कहू पाछी ने ग्रागी ॥नेमीसर०॥

ढाल २५

१— माता कहे कवरी ! मत रोय के,
मणि मडित झारी लेई मुख धोय के ।
नेम गयो तो ए जाण दे,
नेम बिना जग सूनो न होय के ॥
तोने परणाऊ म्हारी लाडली !

२— चाब तू पान, फूल सू घ के,
ग्रजे ताई बाई ! कोरा मू ग के ।
माता ग्राई इम धीर दे ॥

ढाल २६

राग—हस गया बटाऊ

१—किन के सरणे जाऊ, नेम बिना किन के शरणे जाऊ ।
इण जग माय नही कोई मेरो, ताकी मैज कहाऊ ॥नेम०॥

२—मात पिता सुण सखी सहेल्या, लिख कर दूत पठाऊ ।
किण गुन्हें मोय तजी पियाजी, मैं भी सदेसो पाऊ ॥नेम०॥

३ - म्हे तो पल एक सग न छोडू, छोड कहो किहा जाऊ ।
ग्रब टुक धीरप रथ-हाको, चालो मे भी थारै लार ग्राऊ ॥नेम०॥

ढाल २७

१— ग्ररि ! मेरा दुख मत कर जननी !
म्है जाऊगी गिरनार ।
दीक्षा लेऊगी भव-तरणी ॥

२— ग्ररि मात पिता सुण सखी सहली
करो क्षमास जननी ।
ग्रब रहणे की नाय भई,
मै करू श्याम मिलणी ॥ग्ररि०॥

ढाल २३

१— तरसत अखिआँ, हुई द्रुम-पखिया।
जाय मिलो पिव सू सखिया[1]॥
यदुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतिया
नेमनाथजी-दीनानाथजी ॥

२— जिण कू ओलभो एतो जाय कहणो,
थे तज राजुल किम भये जतिया ॥नेमनाथजी० ॥

३— जाकू दूगी जरावरो गजरो,
कानन कू चूनी मोतिया ॥नेमनाथजी०॥

४— अगुरी कू मूदडी-ओढण कू फुमडी,
पेरण कू रेशमी धोतिया ॥नेमनाथजी०॥

५— महल अटारी – भए कटारी,
चन्द – किरण तनू दाझतिया ॥ नेमनाथजी०॥

६— क्या गिरनार मे छाय रहे प्रभु,
वनचर नो करत थितिया ॥नेमनाथजी०॥

ढाल २४

राग—नवकार मन्त्र नो

१—म्हैं चित उम्मेद पेर्यो चूडो,
म्हारे मैंदी रो रग आयो रूडो।
पिण सावा री वेला क्यू टली पागी,
नेमीसर बनो भयो वेरागी ॥

२— हू शिवा दे सासू री बाजी रे बहू,
माने जग सगलाँ मे जाणी ए सहू।
हूँ नेमजी री राणी जो वाजो ॥नेमीसर०॥

३— कुण ताके तारा ने, छोड शशी—
म्हार सावरिया सरीखी सूरत किसी।
म्हें दूजा भरतार नी तृष्णा त्यागी ॥नेमीसर०॥

४— म्हारी मन री हूस रही मन मे,
हू तडफा तोड रही तन मे ।
हू बात किसी कहू पाछी ने ग्रागी ।।नेमीसर०।।

ढाल २५

१— माता कहे कवरी ! मत रोय के,
मणि मडित झारी लेई मुख धोय के ।
नेम गयो तो ए जाण दे,
नेम विना जग सूनो न होय के ।।
तोने परणाऊ म्हारी लाडली !

२— चाव तू पान, फूल सू घ के,
ग्रजे ताई बाई ! कोरा मू ग के ।
माता ग्राई इम धीर दे ।।

ढाल २६

राग—हस गया बटाऊ

१—किन के सरणे जाऊ, नेम विना किन के शरणे जाऊ ।
इण जग माय नही कोई मेरो, ताकी मैज कहाऊ ।।नेम०।।

२—मात पिता सुण सखी सहेल्या, लिख कर दूत पठाऊ ।
किण गुन्हें मोय तजी पियाजी, मैं भी सदेसो पाऊ ।।नेम०।।

३ - म्हे तो पल एक सग न छोडू, छोड कहो किहा जाऊ ।
ग्रब टुक धीरप रथ-हाको, चालो मे भी थारे लार ग्राऊ ।।नेम०।।

ढाल २७

१— ग्ररि ! मेरा दुख मत कर जननी !
म्है जाऊ गी गिरनार ।
दीक्षा लेऊ गी भव-तरणी ।।

२— ग्ररि मात पिता सुण सखी सहली
करो क्षमास जननी ।
ग्रब रहणे की नाय भई,
मैं करू श्याम मिलणी ।।ग्ररि०।।

३— छपन कोड जादव मिल आये,
खूब वरात बनी ।
विन परण्या मुझ नाथ फिरे,
सो कीधी वात घनी ॥अरि०॥

४— छिन मे काया माया पलटे,
ज्यू जल डाभ-अणी ।
कुन्जर-कान, पान पीपल को,
ऐसी आय बनी ॥अरि०॥

५— मोसू रे मोह तज्यो मुज प्रीतम,
करी निर्मल करणी ।
पशुवन के शिर दोष दिया,
प्रभु मुगत वधू परणी ॥अरि०॥

ढाल २८

१— सहिया कहे राजुल ! सुणो,
बाई ! कालो नेम कुरूपो ए ।
भल भूपो ए–
ओर भलेरो लावसा क सहिया ए ॥

२— करी कुसामदी ताहरी,
पिण म्हारे दाय न आयो ए–
न सुहायो ए ।
कालो वर किण काम रो क सहिया ए ॥

ढाल २९

१— राजुल भाखे ह सहिया ! थे तो मूढ गिवार ।
काला मे किसी खोड-पीत किजे मन भावती ॥
कालो हाथी हे सहिया ! साहे राज दुवार ॥
कालो घटा जल-धार ॥

२— काली हुवे किस्तूर डी काली कीकी है सहियाँ ।
सोहे आख मझार ।
जिम काला नेम कमार–
अवर वरेवा आखडी ॥

ढाल ३०

राग—चद्रायण

१— साजन ने परजन तणी हो, घणी जण्या ने तारो ।
नेम जिणेसर वादवा रे, पहुँती गढ-गिरनारो ॥
सती पहुँती छे गढ-गिरनारो,
विच मे वर्षा हुई अपारो ।
भीज गया कपडा ने साडी,
एकल जई गुफा-मझारी ।जी०॥

२— कपडा खोल चोडा किया रे, थई उघाडी देहो ।
झबको पडयो पुरप नो रे, म्यू दीसे छ एहो ॥
इहा तो नर दीसे छे कोई,
सती तिहा ह कपे होई ।
राखे शील भागेला मोई,
हेठी वेठी अग गुपोई ॥जी०॥

३— डरती देख सती भणी रे, इम बोल्यो रहनेमो ।
हू समुद्रविजयजी रो टीकरो रे, तू सोच करे छे केमो ॥
तू सोच करे छे केमो,
हे सुन्दर ! घर मोमू पेमो,
दुर्लभ मिनख जनम एमो,
आदरमा वले सजम नेमो ॥जी०॥

ढाल ३१

१— चित चलियो मुनिवर नो देखी, राजमती कहे एम ।
काम केल करणी इण काया, मोने साचे मन नेम ॥

२ – मुनिवर दूर खराडो रे, लोगो भर्म धरेगा ।
नारी सग किया थी रे, पापे पिंट भरेगा ॥मुनि०॥

३— जुवती रच्यो इण मडल जग मे मोटो जाल।
कामी मिरग मारग के ताई, मूढ मरे दे फाल ॥मुनि०॥

४— नाक-रीट देखी माखी, चित मे चिते गट के।
पिण पग पाख लपट जद जावे, मरे शीस पटके ॥मुनि०॥

५— केसरी वरणी कोमल काया मूढ कर मन हूंस।
ए पिण जहर हलाहल जाणो, जैसो थली रो तूस ॥मुनि०॥

६— देखो नेण काजल रा भरिया, जाणे दल उत्पल का।
कामी देव मारण के ताई, काम देव रा भलका। मुनि०॥

७— ऊजल कुल ने कलक लगावे, नाखे दुर्गति ऊडी।
खोवे लाज जनम री खाटी, पर नारी नरक री कूडी ॥मुनि०॥

८— राजा जाणे तो घर लटे, खर चाढे सिर मूडी।
जग सगलो जाणे भूडो, ए करणी सहू भूडी ॥मुनि०॥ -

९— फिरता गिरता राज दुवारे, सचरता पर गलिया।
हस हाथ दे वजावे ताली, देखाडे आगुलिया ॥मुनि०॥

१०— दुजन ज्यू क्यू चिते साभल वात तू मीणी।
खाख वजावी करसी हासी, जामी लाज लाखिणी ॥मुनि०॥

११— वश छोत लागे तुम कुल ने, सहू जग लेसी खीचो।
तुम पर वार उतरसी पाणी, यादव जोसी नीचो ॥मुनि०॥

१२ - महासती सू एह अकारज, उत्तम ने नही छाजे।
जो अति मीठो तो पिण मुनिवर ! अखज कहो किम खाजे ॥मु०॥

१३— जातिवत कुलवत कहीजे वमिया तू मती रीझे।
खिण सुख कारण वहु दुख पामा, एहवो काम न कीजे ॥मु०॥

ढाल ३२

राग—सुरसा गरव हवे भर्यो

१— गज असवारी छोडने हो—मुनिवर !
खर ऊपर मती बेस।
दव लोग रा सुख देखने हो—मुनिवर !
पाताले मती पेस ॥
सुगणा साधुजी हो मुनि ! थारा मन ने पाछो घेर ॥

२— अमृत भोजन छोडने हो—मुनिवर !
तुसिया को कुण खाय।
देव लोक रा सुख देखने हो मुनिवर !
नरक न आवे दाय ॥सुगणा०॥

३— खीर खाड भोजन करी हो- मुनिवर !
वमियो कर्दम-कीच।
वमिया री वाछा करे हो —मुनिवर !
काग कुत्ता के नीच ॥सुगणा०॥

४— इण परिणामे थाहरो हो—मुनिवर !
सयम थिर नही होय।
गन्धण कुल रा सर्प ज्यू हो—मुनिवर !
वमिया ने मत जोय ॥सुगणा०॥

५— वचन सुणी राजुल तणा हो—मुनिवर !
चित ने आण्यो ठाम।
धन धन राजुल तू सही ह—राजुल !
धन थारो परिणाम ॥सुगणा०॥

६— नरक पडता राखियो हे राजुल !
इम बोल्यो रहनेम।
मुजने थिरता कर दियो—हे राजुल !
वचन-अकुश गज जेम ॥सुगणा०॥

७— नेम समीपे जायने हो—मुनिवर !
शुद्ध थया अणगार।
निर्मल सजम पालने हो-मुनिवर
पहुता मुगत मझार ॥सुगणा०॥

८— शिव सुख राजमती लही हो—मुनिवर !
पामी परमानन्द।
चौपन दिन छद्मस्थ रह्या हो—मुनिवर !
धन धन नेम—जिणद ॥सुगणा०॥

दोहा

१— 'भद्दलपुर' पधारिया, बावीसमा जिनराय।
भव-जीवाने तारता, मेले मुगत रे माय॥
२— 'वसुदेवजी' रा डीकरा, 'देवकी' रा अग-जात।
सुलसा रे घरे वध्या, ते सुणजो साक्षात॥
३— छऊ वय मे सारिखा, सारिखे, उणियार।
वैराग पाम्या किण विधे, ते सुणजो विस्तार॥

ढाल १ राग—अलवेल्या

१— नेम जिणद समोसर्या रे लाल,
भद्दलपुर के बाग हो, भविक जन।
सुणने लोग राजी हुवा रे लाल,
भवि जीवा रे भाग हो, भविक जन॥नेम०॥

२— सहस अठारे साधुजी रे लाल,
अज्जा चालिस हजार, भविक जन।
तिण ने आण मनावता रे लाल,
शासन रा सिरदार हो, भविक जन॥नेम०॥

३— नर नारी ने हुवो घणो रे लाल,
नेम वादण रो कोड हो, भविक जन।
कोई पाला ने पालखी रे लाल
चाल्या होडा-होड हो, भविक जन॥नेम०॥

४— केई कहे दरसण देखस्या रे लाल,
केई कहे सुणस्या वाण हो, भविक जन।
केई कहे परसन पूछस्या रे लाल,
केई कुतुहल जाण हो भविक जन॥नेम०॥

५— राजा प्रमुख आविया रे लाल,
लारे नर नार्या ना थाट हो, भविक जन।
लोग बहु लटका करे रे लाल,
बोले विरुदावली चारण-भाट हो, भविक जन ।।नेम०।।

६— नाग सेठ वादण चालियो रे लाल,
लारे छ बेटा लेई साथ हो, भविक जन।
प्रभुजी रो दर्शन देखने रे लाल,
हिवडे हर्षित थाय हो, भविक जन ।।नेम०।।

७— जिनवर दीधी देशना रे लाल,
सुण ने हर्षित थाय हो, भविक जन।
परिषदा सुण पाछी गई रे लाल,
छऊ भाई जोड्या दोनू हाथ हो, भविक जन । नेम०।।

८— ए ससार छे कारमो रे लाल,
मैं लेस्या सयम भार हो, भविक जन।
जिम सुख होवे तिम करो रे लाल,
मन करो ढील लिगार हो, भविक जन ।।नेम०।।

९— घर आवी कहे मात ने रे लाल,
नेम दीठा मैं आज हो, भविक जन।
वाणी सुण ने सरदही रे लाल,
प्रभु सारे पर ना काज हो, भविक जन ।।नेम०।।

१०— बीहना जनम मरण थी रे लाल,
म्हा चावा उत्तम ठाम हो, भविक जन।
आज्ञा दो तमे मो भणी रे लाल,
म्हे सारा आतम-काम हो, भविक जन ।।नेम०।।

११— सुण माता विलखी थई रे लाल,
वात काढी कैसी आज हो, भविक जन।
सयम छे वछ! दोहिलो रे लाल,
एतो सूरा नो काज हो, भविक जन ।।नेम०।।

१२— मात पिता पाल्या घणा रे लाल,
एतो म्हा नही लीगार हो, भविक जन।

नार्या विलविलती रही रे लाल,
नही आण्यो मोह तिवार हो, भविक जन ॥नेम०॥

१३— सयम लीधो वैराग सू रे लाल,
घणो लाड ने कोड हो, भविक जन
मुगती महल र कारणे रे लाल,
ऊभा घर दिया छोड हो, भविक जन ॥नेम०॥

१४— नेमजी साथे छऊ जणा र लाल,
करता उग्र विहार हो, भविक जन ।
वैराग रस माहे भलता रे लाल,
सयम तपस्या धार हो, भविक जन ॥नेम०॥

दोहा

१— वैरागे मन वाल ने, दे तपस्या री नीव ।
वेले वेले पारणो, प्रभु ! करादो जावजीव ॥

२— नेम जिणद समोसर्या द्वारिका नगरी मभार ।
समोसरण देवा रच्यो देशना दे हितकार ॥

ढाल २

राग—बिनो फरीजे बाई वि०

१— पहली पोरसी सूत्र चितारे,
बीजी पोरसी अर्थ विचारे ।
जाणे तीजी पोरसी जागी,
वेदन रे वस खुध्या जागी ॥

२— मुनिवर मिलि जिणद पे आया,
हाथ जोडी ने वोले वाया ।
प्रभु ! तमारी आज्ञा थाय,
तो म्हाँ द्वारिका मे गोचरी जाय ॥

३— भगवत वोल्या इसडी वाय,
देवाणुपिया ! जिम सुख थाय ।
रखे घडी री ढील न ल्यावो,
आहार पाणी ने वेगा जावो ॥

दोहा

१—वचन सुणी भगवत रो मुनिवर हर्ष अपार।
पडिलेही भोली पातरा, सुन्दर पट अणगार॥

२—चरण करण मे ऊजला, च्यार महाव्रत धार॥
रूप गुणे अति शोभता, नल-कूबर अणुहार॥

ढाल ३ राग—वीर बखाणी राणी चेलणा

१—आज्ञा ले भगवत री जी, पट् बाधव मुनि जोय।
गोचरी करवा ने नीकल्या जी मुनिवर टोलेटोले दोय।
साधुजी उठ्या मुनि गोचरी जी॥

२—गोचरी करवा ने नीसर्या जी, द्वारिका नगरी मजार।
पाडे पाडे मे फिरता थका जी, लेवे छे शुद्ध ते आहार। साधु०॥

३—ऊच नीच मज्झम कुले जी, इर्या ए जोवता जाय।
दोष बयालिस टालता जी, लीना छे सयम माय॥साधु०॥

४—बेला तणो मुनि ने पारणो जी, ताक ताक नही जाय।
अनुक्रमे फिरता थका जी, आया वसुदेव-घर माय॥साधु०॥

५—बैठी सिंहासन देवकी जो, आपरा मदिर माय।
गज गति दीठा मुनि आवता जी रोम रोम हर्षित थाय॥साधु०॥
साधुजी भला पधारियाजी आज॥

६—सिंहासण थी राणी ऊठनेजी, सात आठ पग साम्ही जाय।
तिक्खुता रो पाठ गिणी करीजी, लुल लुल नीची जी थाय॥साधु०॥

७—भाव सु भगति करे घणी जी, पाचे ई अग नमाय।
आज कृतारथ हुँ थई जी, फली फूली विकसी घणी काय॥साधु०॥

८—आज भली दशा माहरी जी, दीठी छे मुनि तणो जोड।
आज भलो भानु ऊगियो जी, पूगा म्हारे मन तणा कोड॥साधु०॥

९—मोदक थाल भरी करी जी, मदिर माहे थी लाय।
केशरीसिंह जटा जिसा जी, बेहरावा उलटे जी भाव। साधु०॥

१०—मुनिवर वेहर पाछा वल्या जी,
लागी छे थोडी सी वार।
बीजो सिंघाडो इहा आवियोजी,
देवकी — घर — बार ॥ साधुजी०॥

दोहा

१— उठी ने साम्ही गई, जोडी दोनू हाथ।
विनय सहित वदना करी, मन मे थई रलियात ॥

ढाल ४ राग—हमीरिया के गीत

१— देवकी हरखी अति घणी,
भले पधारिया रिषिराय, मुनीसर।
पेहला सिंघाडा तणी परे,
भाव सहित वहराय, मुनीसर ॥

२— घन घन राणी देवकी,
प्रतिलाभ्या अणगार, मुनी०।
चित्त वित्त पात्र तीने भला,
राणी सफल कियो अवतार ॥मुनी०घन०॥

३— जाता ने पोहचाय ने,
पाछी आई तिण ठाई, मुनीसर ॥
तीजो सिंघाडो आवियो,
चिंतवे राणी चित माय ॥मनी०घन०॥

४— पहिला याने जो पूछ सू,
तो नही लेसी मुनि आहार मुनी०।
वेहर्या पछे ऊभा नहीं रहे,
इम मन मे करे विचार ॥मुनी०घन०॥

५— जहाज आई हम बारणें,
सहजे पुण्य प्रमाण, मुनीसर।
मोदक पहला वहराय ने
हूँ पूछस्यु जोडी पाण ॥मुनी०घन०

६— भाव सहित वेहराय ने,
देवकी चिंते एम, मुनीसर ।
साधा रे लोभ हुवे नही
वलि वलि आवे छे केम ।।मुनी०चन०।।

दोहा

१— आडी फिर ने देवकी, लुल लुल नीची थाय ।
एक सदेहो ऊपनो, दीजे मोहि बताय ।।

ढाल ५ राग—जगत गुरु त्रिसला-नन्दन वीर

१— भगवत नगरी द्वारिका जी,
बारे जोजन प्रमाण ।
कृष्ण नरेसर राजवी जी,
ज्यारी तीन खड मे आण ।।
मुनीसर एक करू अरदास ।।
२— सोवन कोट रतन कागुरा जी,
सोभे रूडा आवास ।
झिग-मिग करने दीपता जी,
देवलोक जिम सुख वास ।।मुनी०।।
३— साठ कोड घर बाहिरे जी,
माहे बहोतर कोड ।
लोग सहु सुखिया वसे जी,
राम कृष्ण री जोड ।।मुनी०।।
४— भाविक लोक वसे घणा जी,
दातार बहुला थाय ।
चवदे प्रकार नो सूझतो जी,
अढलक दान दिराय ।।मुनी०।।
५— सेठ सेनापति मंत्रवी जी,
ज्यारे घर मे घणो धन्न ।
साधा रे दरसण विना जी,
मुख मे न घाले अन्न ।।मुनी०।।

६— लाखा कोडा रा धणी वसे जी,
नगरी मे वहु लोग।
खाणे पीणे खरचणे जी,
पुन्य सू मिलियो जोग ॥मुनी०॥

७— घणी पुन्याई वाई ताहरीजी,
इम वोल्या मुनिराय।
देवकी मन मे जाणियो जी,
या ने तो खवर न काय ॥मुनी०॥

८— वात छे ग्रचिरज सारिखी जी,
माहर हिये न समाय।
कह्या मे नफो नही नीपजेजी,
विन कह्या रह्यो न जाय ॥मुनी०॥

६— मे ग्रागे इम साभल्यो जी,
नही वार - वार।
यो मोने ग्रचिरज थयो जी,
पुच्छा करू निरधार ॥मुनी०॥

१०— हू पूछ इस कारणे जी,
मुनि ने न लाभे ग्राहार।
म्हारा पुण्य तणे उदेजी,
ग्राप ग्राया तीजी वार ॥मुनी०॥

११— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
वाई शका मूल म ग्राण।
थारे घर वहरी गया जी,
ते मुनिवर दूजा जाण॥
देवकी लोभ नही छे कोय॥

१२— हाथ जोडी कहे देवकी जी,
साभल जो ऋषि-राय!
मै स्व-हाथा सु वहरावियो जी,
मो म इग किम नटियो जाय ॥मुनी०॥

१३— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई ! नगरी मे बहु दातार।
तीन सघाडे आविया जी,
अमे छा छउ अणगार ॥
देवकी लोभ नही छे कोय ॥

१४— सारखी रूप सपदा जी,
बाई ! सारिखे अणुहार।
साथे सजम आदर्यो जी,
बाई ! सारिखो तप धार ॥देवकी०॥

१५— हाथ जोडी ने कहे देवकी जी,
साभल जो मुनि-राय !
उतपत थारी किहा अछे जी,
हू सुणमू चित लाय ॥मुनी०॥

१६— किसा नगर रा नीकल्या जी,
स्वामी ! बसता कुण से ग्राम।
किण रा छो दीकरा जी,
पिता रो कहो नाम ॥मुनी०॥

१७— 'भदलपुर' रा वासिया जी,
बाई ! सुलसा' म्हारी माय।
नाग सेठ रा दीकरा जी,
घर छाडया छऊ भाय ॥देवकी०॥

१८— बत्तीसे रभा तजी जी,
बत्तीसे बत्तीसे दात।
कुटुम्ब मेलो सहू रोवतो जी,
वाई विल विल करती मात ॥देवकी०॥

दोहा

१— हाथ जोडी कहे देवकी, साँभल जो रिख राय।
वेराग पाम्या किण विधे, दीजे मोहि बताय ॥
२— साध वचन इसडा कहे, सांभल मोरी बाय।
माहरी रिध कहा किसी, ते सुणजो चित्त लाय ॥

ढाल ६ राग—राजगृहो नगरी

१— वत्तीस कोड सोनैया,
वत्तीस रूपा री कोड री माई।
वत्तीसे बाजुबध दीधा,
वत्तीस काकरण री जोड री माई।
पुण्य तरणा फल मीठा जाणो ॥

२— वत्तीस तो हार एकावली,
वत्तीस अद्धमरा जाण री माई।
वत्तीसे नवसरा दीधा,
वत्तीस मुकुट प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

३— अण सरिया वले हार वत्तीसे,
वत्तीस कनकावली हार री माई।
हार मक्तावली ऊजल सोहे,
वत्तीस रत्नावली सार री माई ॥पुण्य०॥

४— हीर चीर वले रत्ना जडिया,
पट कुल रा वहु वृन्द री माई।
भीणा सूत रा वस्तर दीधा,
पहिर्या अति सोहदरी माई ॥पुण्य०॥

५— वत्तीसे तो पिलग सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई।
वत्तीसे सोना रूपा रा भेला,
पागा रतना मे वखाण री माई ॥पुण्य०॥

६— बत्तीसे तो थाल सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री, माई।
वत्तीम तो प्याला दीधा
दूध पीवण ने वखाण री, माई ॥पुण्य०॥

७— बत्तीसे वाजोट सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई।
वत्तीसे तो तवा सोना रा,
वत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

१३— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई ! नगरी मे बहु दातार।
तीन सघाडे आविया जी,
अमे छा छउ अणगार ॥
देवकी लोभ नही छे कोय ॥

१४— सारखी रूप सपदा जी,
बाई ! सारिखे अणुहार।
साथे सजम आदर्यो जी,
वाई ! सारिखो तप धार ॥देवकी०॥

१५— हाथ जोडी ने कहे देवकी जी,
साभल जो मुनि-राय !
उतपत थारी किहा अछे जी,
हू सुणसू चित लाय ॥मुनी०॥

१६— किसा नगर रा नीकल्या जी,
स्वामी ! बसता कुण से ग्राम।
किण रा छो दीकरा जी,
पिता रो कहो नाम ॥मुनी०॥

१७— 'भदलपुर' रा वासिया जी,
बाई ! सुलसा' म्हारी माय।
नाग सेठ रा दीकरा जी,
घर छोडया छऊ भाय ॥देवकी०॥

१८— बत्तीसे रभा तजी जी,
वत्तीसे वत्तीसे दात।
कुटुम्ब मेलो सहू रोवतो जी,
वाई विल-विल करती मात ॥देवकी०॥

दोहा

१— हाथ जोडो कहे देवको, साँभल जो रिख राय।
वैराग पाम्या किण विधे, दीजे मोहि वताय ॥

२— साध वचन इसडा कहे, साभल मोरी बाय।
माहरो रिध कहा किसी, ते सुणजो चित्त लाय ॥

ढाल ६ राग—राजगृही नगरी

१— वत्तीस कोड सोनैया,
वत्तीस रूपा री कोड री माई।
वत्तीसे वाजुवध दीधा,
वत्तीस काकरण री जोड री माई।
पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥

२— वत्तीस तो हार एकावली,
वत्तीस श्रद्धसरा जाण री माई।
वत्तीसे नवसरा दीधा,
वत्तीस मुकुट प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

३— त्रण सरिया वले हार वत्तीसे,
वत्तीस कनकावली हार री माई।
हार मक्तावली ऊजल सोहे,
वत्तीस रत्नावली सार री माई ॥पुण्य०॥

४— हीर चीर वले रत्ना जडिया,
पट कुल रा वहु वृन्द री माई।
भीणा सूत रा वस्तर दीधा,
पहिर्या अति सोहदरी माई ॥पुण्य०॥

५— बत्तीसे तो पिलग सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई।
वत्तीसे सोना रूपा रा भेला,
पागा रतना मे वखाण री माई ॥पुण्य०॥

६— वत्तीसे तो थाल सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री, माई।
वत्तीम तो प्याला दीधा
दूध पीवण ने वखाण री, माई ॥पुण्य०॥

७— बत्तीसे वाजोट सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई।
वत्तीसे तो तवा सोना रा,
वत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

८— वत्तीसे तो गोकुल गाया रा,
　　　　दूध पीवरा ने दीध री माई।
　　दास्या वडारण खोजा दीधा,
　　　　वत्तीस चदण-पीसरा लीध री माई ॥पुण्य०॥

६— इरा रीते छऊ कुमारा ने,
　　　　सरीखी दाता री तोल री माई।
　　पगे लागता सासूजी दीधा
　　　　एक सौ ने बाण बोल री माई ॥पुण्य०॥

दोहा

१— कितरो काल ससार मे भोगविया सुख सार।
　　देव दोगुधक नी परे, बहुलो छे विस्तार ॥

ढाल ७

राग—करेलणा घडदे रे

१— जातो काल न जाणता जी, म्हे रहता महला मभार।
　　दास्या रा परिवार सू जी, वत्तीसे वत्तीसे नार ॥
　　　　देवकी हे लोभ नही माहरे कोय ॥

२— चन्द्र-वदन मृग-लोयरणी जी, चपल-लोचनी बाल।
　　हरीलकी, मृदु-भाषिणी जी, इन्द्राणी सी रूप रसाल ॥देव०॥

३— प्रीतवती मुख आगले जी, मुलकती मोहन-वेल।
　　चतुरा ना मन मोहती जी, हस गमणी सू करता वहु केल ॥देव०।

४— नित नवी चीजा खावणी जी, नित नित नवला वेश।
　　सुदर सू भीना रहे जी, सुपना मे नही कलेश ॥देव०॥

५— राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना धोकार।
　　नाटक विध वत्तीसना जी, रग विनोद अपार ॥देव०॥

६— भगवंत नेम पधारिया जी साधा रे परिवार।
　　म्हे भगवत ने वादिया जी सफल कियो अवतार ॥देव०॥

७— नेम तणी वाणी सुणी जी मीठी दूधाधार।
　　प्रतिवोध्या छऊ जणा जी, जाण्यो अथिर ससार ॥देव०॥

८—कुटुम्ब कबीलो छोडियो जी, सुन्दर बत्तीसे नार।
धन कचन रिघ छोडने जी, लीधो सयम-भार ।।देव०।।

९—बेले बेले पारणो जी, जाव-जीव मन धार।
मुक्ति भणी मैं उठिया जी, लेवा सुध आहार ।।देव०।।

१०-दोय दोय मुनिवर जुवा जुवा जी, आया नगर मझार।
तीन सिंघाडे उठिया जी, द्वारिका नगर मझार ।।देव०।।

११-तिण साधा रा वचन मे जी, शका मूल म आण।
ताहरे घर बेहरी गया जी, ते मुनिवर दूजा जाण ।।देव०।।

दोहा

१— तिण कारण मोदक तणो, लालच नही मोय।
घर री रिध एहवी तजी, मुगती साहमो जोय ।।

२— इतरो सुण शका पडी, देवकी करे विचार।
मोने खबर न का पडी, देखूं यारो अणुहार ।।

ढाल ८

राग— कम परीक्षा करण कु०

१— नेण निहाले हो राणी देवकी रे,
मुनिवर साम्हो न्हाल।
जोति काति यारी दीपती रे
मुनिवर रूप रसाल ।।नेण०।।

२— जिण घर थी ए छऊ नीकरया रे,
किस्यू रह्यू छे लार।
छऊ सहोदर दीसे सारिखा रे,
नल-कूबर उणिहार ।।नेण०।।

३— छप्पन कोड जादवा री साहिबी रे,
हरिवश-कुल सिणगार।
दीठा म्हारा सगला राज मे रे
नही कोई यारे उणिहार ।।नेण०।।

४— इण उणिहारे म्हारे राज मे रे।
अवर दीसे न कोय।

जो छे तो काइक म्हारो 'कान' छे रे,
ए मोने अचिरज होय ।।नेरण०।।

५— नेडो तो सगपरण को दीसे नही रे,
म्हारो हिवडो सगपरण जेम ।
लागे मुनिवर म्हाने सुहावरणा रे,
इम किम जाग्यो प्रेम ।।नेरण०।।

६— श्रावक रो साधा ऊपरे रे,
होवे छे धर्म-सनेह ।
मो जिम परवश काई ना पडे रे,
इम किम उलस्यो माहरो नेह ।।नेरण०।।

७— लाडु बहराया राणी देवकी रे,
लागी थोडी सी वार ।
मुनिवर बहरी ने पाछा नीसर्या रे,
ऊभा न रहे अरणगार ।।नेरण०।।

८— सूरत थारी प्यारी लागे घरणी रे,
कह्यो कठा लग जाय ।
जाणे याने देखवो हूँ करू रे,
इम माहरो मोहज थाय ।।नेरण०।।

९— मोहणी कर्म मोटो छे घरणो रे,
दोरो जीत्यो जाय ।
जीते कोई वड सूरमो रे,
मन मे धीरज लाय ।।नेरण०।।

दोहा

१— देवकी देख हर्षित थई, दिया सुगति रा सूत ।
करणी ज्यारी दीपतो, मुनिवर काकरा-भूत ।।

२— सारिखी जेहनी चामडी, सारिखे अरणुहार ।
वरण सारिखो जेहनो, यौवन रूप उदार ।।

३— इम चितवता तेहने, उपनो मन सदेह ।
कुरण माता पुत्र जनमिया, भरत क्षेत्र मे एह ।।

४— बालपणे भाख्यो हुँतो, श्रयवते श्रणगार ।
श्राठ जणसी हें देवकी, जिसा नही जणे भरत मभार ॥

ढाल ९

राग— रे जीव विषय न राचिए

१— भरत खेतर मे सामठा, किण मा बेटा जाया रे ।
तीन सघाडे श्राविया, मैं हाथा सू वेहराया रे ।
करे विमासण देवकी ॥

२— मो श्रागे कह्यो हुंतो, श्रयवते ऋषिरायो रे ।
तेतो वात मिलती नही, स्यू रिख वाणी मृषा थायो रे ॥करे०॥

३— श्राशा देता मात नी, जीभ बुहो छे केमो रे ।
एहवा बेटा वाहरी, दिन काढेला केमो रे ॥करे०॥

४— सूरत दीसे सोहती, घणोइज ज्यारो हेतो रे ।
जिण घर सू ए नीकल्या, लारे रह्यो छे केतो रे ॥करे०॥

दोहा

१— एहवा पुत्र जनम्या विना, किम थावे श्राणद ।
हाथ काकण सी श्रारसी, इहा छे नेम जिणद ॥

२— इसडो मन मे ऊपनी, वादू भगवत पाय ।
भाव-सहित वदन करू, तन मन चित्त लगाय ॥

३— शका छऊ श्रणगार नी, मुझ मन उपनी सोय ॥
नेम जिणद ने पूछ ने, ससो भाजु मोय ॥

४— इम चित माही विचार ने, सज सोले सिणगार ।
जिण वादण जावा भली, करे सजाई त्यार ॥

ढाल १०

राग – वीछिया का गीत

१— चाकर पुरुष बुलाइने,
देवकी बोले इम वाया रे लाला
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
तू रथ वेगो जोताय रे ॥
श्री नेम वादण ने जावस्या ॥

२— चाकर पुरुष गजी थयो,
जाय सभाले जाण रे लाला।
उवट्ठाणशाला छे बाहिरली,
रथ ऊभो राख्यो आण रे ॥श्री०॥

३— रथ हलको घणो वाजणो,
वले च्यार पेडा रो जाण रे लाला॥
अशुद्ध शब्द करे नही,
लागे लोका ने सुहाण रे ॥श्री०॥

४— हलवा काष्ट नो भूसरो,
वले चोडा पेडा जोत रे लाला।
मोत्या री जाली लग रही,
छती शोभा को उद्योत रे ॥श्री०॥

५— रथ सिणगार्यो फूटरो,
जुहारा सू हालो जोय रे लाला।
समिल सुहाली हलकी घणी,
ज्यू बलदा एल न होय रे ॥श्री०॥

६— खोली झल विराजती,
पाखतिया घूघर माल रे लाला।
सामग्री सगली सज करो,
जाय बादू दीनदयाल रे ॥श्री०॥

७— दीसत दीसे सोभता,
एहवी बलदा री जोड र लाला॥
चालत अति ही उतावला,
सीग पूंछ मे नही खोड रे ॥श्री०॥

८— धवला ने माता घणा,
वले छोटी सिगडिया जाण रे लाला।
दोनू बराबर दीसता,
तू एहवा ऋषभ आण रे ॥श्री०॥

९— वलदा रे झूलज सोभती,
नाके नघर साल रे लाला।
राखडी सीगा मे सोभती,
गल वाधी गुघर-माल रे। श्री०॥

१०— सोना री गले मे साकली,
रूपा रो टोकरियो जाए रे लाला।
सोना री खोली सीग मे,
दोय इसडा वलदज आए रे॥श्री०॥

११— कमल रो सोहे सेहरो,
लटके सीगा रे माय रे लाला।
नाथ सोने रेशम री भली,
तिएसू नाक दोरो नही थाय रे।श्री०॥

१२— इण रीते सेवग सुणी,
रथ जोतर कियो तयार रे लाला।
देखत लागे सुहावणो,
रथ चढण रो करे विचार रे॥श्री०॥

१३— न्हाई ने मजन करी,
पहिर्या नव-नवा वेश रे लाला।
माणक मोती माला मूदडी,
गहणा हार विशेष रे॥श्री०॥

१४— हाथो मे काकण सोभता,
कठे नवसर हार रे लाला।
पगे नेवर दीपता,
जाणे देवागना उणिहार रे॥श्री०॥

१५— अलकार एहवा सजी,
आई उवट्ठाण साला माय रे लाला।
रथ सजियो कसियो थको,
कलपवृक्ष समो ते थाय रे॥श्री०॥

५— सुलसा कहे तूठो मुझ भणी जी, मुझ करवो तुरत काज ।
पुत्र जीवाडो माहरा जी, कृपा करो महाराज ॥जिणे०॥

६— देव कहे नही मुझ थकी जी तुझ नदन जीवाय ।
पिण हु आपिस जीवता जी, पर ना बालक लाय ॥जिणे० ।

७— सुलसा ने तू एकण समेजी गर्भ धरे समकाल ।
साथे जणे देव जोग थी जी अनुक्रमे षट्ही बाल ॥जिणे०॥
देवकी सासो मति कर कोय ॥

८— मुवा बालक सुलसा जणे जो, ते मेले तुम पास ।
ताहरा मेले जीवता जी, सुरसा री पूरे आस ॥देव०॥

९— ते भणी पुत्र छे ताहरा जी, सुलसा रा नही एह ।
मुनि-भापित मृपा नही जी, न टले कर्म नी रेह ॥
देवकी ! कर्म न छोडे कोय ॥

१०— पाछले भव ते देवकी जी दीधी छाती मे दाह ।
सात रतन ते शोक ना जी, चोर्या नाणी आह ॥देव०॥

११— तिण ने रोती देखने जी तें मन मे करुणा आण ।
एक रतन पाछो दियो जी, सोले घडी थी जाण । देव०॥

१२— तिण कर्मे चोर्या गया जी, ए थारा छऊ पूत ।
सोले वर्ष थी कृष्णजी ए, आय रास्यो घर-सूत ॥देव०॥

१३— सुख दुख सच्या आपणा ए, जिके उदे हुवे आय ।
समो विचार्या सुख हुवे ए चिता म करो काय ॥देव०॥

१४— कर्म सबल ससार मे ए विन भुगत्या न टलत ।
देव दाणव नर राजवी ए, एकण पथे वहत ॥देव ॥

दोहा

१— नेम जिणेसर वाद ने, आई साधा रे पास ।
निरखे वादे हेत सू हिवडे हरस उलास ॥

२— मोक्ष तणी किरिया करे ज्यारो घणोहीज वान ।
सहस्र अठारे साध मे, कठे ही न रहे छान ॥

ढाल १२

चन्दन की सौर

राग—बे बे तो मुनिवर वहरण

१— देवकी तो आई नदन वादवा रे,
ऊभी रही मुनिवर पास रे।
नेणे साधा ने राणी देखने रे
करवा तो लागी इम अरदास रे ॥देवकी०॥

२— हाथ जोडी ने राणी वदना करे रे
विनय सू पाचे अग नमाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा दीवी हाथ स रे
लटका करे लुल लुल नीची थाय रे ॥देवकी०॥

३— आज कृतार्थ आशा मुझ फनी रे
रोम रोम मे प्रगट्यो आनन्द रे,
म्हारी कूख मा एहवा ऊपना रे,
धन धन यादव कुल-चद रे ॥देवकी०॥

४— तडके से तूटी कस कचू तणी रे
थण रे तो छूटी दूधाधार रे।
हिवडा माहे हर्ष मावे नही रे,
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ॥देवकी०॥

५— रोम रोम विकस्या तन मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आसू-धार रे।
बिलिया तो बाहा माहे मावे नही रे,
जाणे तूटयो मोत्या रो हार रे ॥देवकी०॥

६— देवकी आल्या ने अण हलावती रे,
निरख्या बेटा ने घणी वार रे।
वलि वादी ने आई जिन कने रे
हिये उपनो कवण विचार रे ॥देवकी०॥

देवकी मन माह चितवे, देखो कर्म-सयोग।
मैं जनम्या छ बालुडा, पाल्या [illegible]

२— इम चिंतव प्रभु वाद ने, आई आपणे गेह।
दुख मन माहे ऊपनो कह्यो न जावे जेह॥

३— चिंता सागर झूलती नजर धरणी पर राख।
मुख विलखे जोवे नहीं, किण ही सू नहि भाख॥

४— इण अवसर श्री कृष्णजी मा ने वदन काज।
आवे प्रणमी चरण युगल, बैठा श्री महाराज॥

५— देवकी तो बोली नहीं पुन थकी तिण वार।
तव कृष्णजी मन चिंतवे मा ! तोने चिंता अपार॥

६— माहरा सहू इण राज मे, थे ही जा दुखिया होय।
तो कहो इस ससार मे सुखियो न दीसे कोय।

७— वहुवा थारे हुकम मे, लुल लुल लागे पाय।
सगली पगे लगावता पिंड्या को शल जाय॥

ढाल १३

राग—चद्रायण

१— माताजी ! किण कारणे हो, वदन तमारो आजो।
चितातुर दीसे घणो हो, इण वाते आवे लाजो॥
इण वाते मोने लाज कहावे,
पुत्र थका मा दुखणी थावे।
हूँ समझू थारे समझावे,
वात कहो वेला घनी थावे॥
जी मातजी हो॥

२— थाने चिंता रो कुण हेत, कहो तुमे हम भणीजी।
हूँ करसू हो चिंता दूर के, जामण ! तुम तणी जी॥

३— बोले माता देवकी हो मुझ नदन थया सातो।
लाल्या पाल्या मे नहीं हो, ए मुझ दुख री वातो॥
ए दुख मुजने दिन दिन शाले,
साजन सो, जो ए दुख पाले।
एमो भाग्य लिखो मुज भाले।
जो आवे हिव वात विचारे।
जी कान्हजी ओ॥

७— जाया मैं तुम सारिखा कन्हैया!
एकण नाले सात रे, गिर०।
एकण ने हुलरायो नही कन्हैया!
गोद न खिलायो राण मात रे, गिर० ॥हैं०॥

८— बालपण रा बोलडा कन्हैया!
पूरी नही काई श्रास रे गिर०।
आशा अलूधी हूं रही कन्हैया!
भार मुई नव मास रे गिर० ॥हैं०।

९— रोवतो मैं राखतो नहीं, कन्हैया!
पालणिये पौढाय रे गिर०।
हालरियो देवा तणी, कन्हैया!
म्हारे हूंस रही मन मांय रे गिर० ॥हैं०॥

१०— आगणिये न करावी थिरी, कन्हैया!
आगुलिया विलगाय रे, गिर०।
हाऊ बेठो छे तिहा, कन्हैया,
अलगो तू मति जाय रे गिर० ॥हैं०॥

११— आोडणियो पहराव्यो नही, कन्हैया,
टोपी न दीधी माथ रे, गिर०।
काजल पिण सार्यो नही, कन्हैया
फदिया न दीधा हाथ रे, गिर० ॥हैं०॥

१२— रोवाण्यो नही हासी मिसे, कन्हैया—
म्हें आस तोषण काज रे, गिर०।
न कर्यो एक नो सासरो कन्हैया!
करिस्या तेवड आज रे गिर० ॥हैं०॥

१३— न कह्यो केहने मीमलो कन्हैया,
ए माहरे मन पाप रे, गिर०।
इतरा बोला मायलो, कन्हैया!
एक न पाम्यो थारो माय रे गिर० ॥हैं०॥

१४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया !
हर्ष नही मुज तन्न रे, गिर०
गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
ते माता छे धन्न रे, गिर० ।।हूँ०।।

१५— मोटी जग माहे मोहणी, कन्हैया !
उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
बीजो कोई जाणे नही, कन्हैया !
जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ।।हूँ०।।

दोहा

१— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
सोच कोई राखो मती, पूरस्यू थारो आस ।।

२— जिम तुझ नदन थाहस्ये, करस्यू तेह उपाय ।
मीठा मधुरा वचन सू, सतोषी निज माय ।।

३— माता इण पर साभली, हिवडे हर्ष अपार ।
सत्पुरुष वचन चले नही, जो होवे लाख प्रकार ।।

ढाल १५

राग—चद्रायण

१— कृष्ण कहे मातजी ! साभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
जिम मुझ बाधव थायसी हो, तिम हू करसू विचारो ।।
तिम हू करसू विचारो रे माई !
म करो मन मे चिंता काई ।।
दीजो मोने भली वधाई,
जब होवे नानो भाई ।।
जी मातजी हो ।

२— माता रे पगे लागने हो, आया पौषध शालो ।
हरिणगमेसी देवता हो, मन चिंतवे ततकालो ।।
मन चिंतवे ततकाल मुरारी,
तेलो तप मन मांही [illegible] ।

आवी देव कहे तिण वारी,
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
जी कान्हजी हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो।
इण कारण मैं सिमर्यो हो, बीजो नहो कोई प्रेमो ॥
बीजो नही कोई प्रेम हमारे,
पुत्र थया मा दुख विसारे।
बालक नी लीला चित धारे,
स्त्री ने एहिज सुख ससारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र थायस्ये हो, पिण होश्चे जव मोटो।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

दोहा

१— कोइक सुर ते चव करी गभ लियो अवतार।
रग विनोद वधावणा, हरस्यो सहु परिवार ॥

२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार।
पाप तिमिर निर्घाटवा, सहस्र किरण दिन कार ॥

३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द।
घर घर रग वधावणा, घर घर माहे आणद ॥

ढाल १६

राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्त लाला,
राणी जनम्यो बाल।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥

१४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया !
हर्ष नही मुज तन्न रे, गिर०
गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
ते माता छे धन्न रे, गिर० ।।हूँ०।।

१५— मोटी जग माहे मोहणी, कन्हैया ।
उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
बीजो कोई जाणे नही, कन्हैया !
जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ।।हूँ०।।

दोहा

१— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
सोच कोई राखो मती, पूरस्यू थारो आस ।।

२— जिम तुझ नदन थाहस्ये, करस्यू तेह उपाय ।
मीठा मधुरा वचन सू, सतोपी निज माय ।।

३— माता इण पर साभली, हिवडे हर्ष अपार ।
सत्पुरुष वचन चले नही, जो होवे लाख प्रकार ।।

ढाल १५

राग—चन्द्रायण

१— कृष्ण कहे मातजी ! साभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
जिम मुझ बाधव थायसी हो, तिम हू करसू विचारो ।।
तिम हू करसू विचारो रे माई !
म करो मन मे चिंता काई ।।
दीजो मोने भनी वधाई,
जब होवे नानो भाई ।।
जी मातजी हो ।

२— माता रे पगे लागने हो, आया पोषध शालो ।
हरिणगमेसी देवता हो, मन चितवे ततकालो ।।
मन चितवे ततकाल मुरारी,
तेलो तप मन माही धारी ।

आवी देव कहे तिण वारी,
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
जी कान्हजी हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो।
इण कारण में सिमर्यो हो, बीजो नही कोई प्रेमो ॥
बीजो नही काई प्रेम हमारे,
पुत्र थया मा दुख विसारे।
बालक नी लीला चित्त धारे,
स्त्री ने एहिज सुख समारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र थायस्ये हो, पिण होश्ये जब मोटो।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

दोहा

१— कोइक सुर ते चव करी गर्भ लियो अवतार।
रग विनोद वधावणा, हरस्यो सहु परिवार ॥

२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार।
पाप तिमिर निर्घाटवा, सहस्र किरण दिन-कार ॥

३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द।
घर घर रग वधावणा, घर घर माहे आणद ॥

ढाल १६ राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्त लाला,
राणी जनम्यो बाल।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥

१४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया !
हर्ष नही मुज तन्न रे, गिर०
गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
ते माता छे धन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥

१५— मोटी जग माहे मोहणी, कन्हैया !
उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
बीजो कोई जाणे नही, कन्हैया !
जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ॥हूँ०॥

दोहा

१— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
सोच कोई राखो मती, पूरस्यू थारी आस ॥

२— जिम तुझ नदन थाहस्ये, करस्यू तेह उपाय ।
मीठा मधुरा वचन सू, सतोषी निज माय ॥

३— माता इण पर साभली, हिवडे हर्ष अपार ।
सत्पुरुष वचन चले नही, जो होवे लाख प्रकार ॥

ढाल १५

राग—चन्द्रायण

१— कृष्ण कहे मातजी ! साभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
जिम मुझ बाधव थायसी हो, तिम हू करसू विचारो ॥
तिम हू करसू विचारो रे माई !
म करो मन मे चिंता काई ॥
दीजो मोने भली वधाई,
जब होवे नानो भाई ॥
जी मातजी हो ।

२— माता रे पगे लागने हो, आया पौषध शालो ।
हरिणगमेसी देवता हो, मन चितवे ततकालो ॥
मन चितवे ततकाल मुरारी,
तेनो तप मन माही धारी ।

आवी देव कहे तिण वारी,
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
जी कान्हजी हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो।
इण कारण में सिमर्यो हो, बीजो नहो कोई प्रेमो ॥
बीजो नही कोई प्रेम हमारे,
पुत्र थया मा दुख विसारे।
बालक नी लीला चित धारे,
स्त्री ने एहिज सुख ससारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र थायस्ये हो, पिण होश्चे जव मोटो।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

दोहा

१— कोइक सुर ते चव करी, गभ लियो अवतार।
रग विनोद वधावणा, हरस्यो सहु परिवार ॥

२— भविक जीव प्रतिवोधता, जिनवर करे विहार।
पाप तिमिर निर्धाटवा, सहस्र-किरण दिन-कार ॥

३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द।
घर घर रग वधावणा, घर घर माहे आणद ॥

ढाल १६

राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्ते लाला,
राणी जनम्यो वाल।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥

राणीजी कुमर जायो जी ॥

२— जीहो हरस्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरस्या दशे ही दशार।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सहू परिवार ॥राणीजी०॥

३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मडाण।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी०॥

४— जीहो-तोला मापा वधारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय।
जीहो-बाध्या तोरण, वाटे सीरणी लाला,
चदन केशर हाथा दिराय ॥राणी जी०॥

५— जीहो-यादव नारी साथठी लाला,
आवे गावे गीत।
जीहो-चोक पुरावे माडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ॥राणी जी०॥

दोहा

१— वाजा बाजे अति भला, वरत्या मगल-माल।
सतोषे याचक सुहासणी, हर्ष्या बाल, गोपाल ॥

२— मरता जीव छोडाविया, सगले नगर मझार।
मुह माग्या दीजे घणा, मणि माणक भडार ॥

ढाल—वही

६— जीहो-दीधा मेंगल मोतीडा, लाला
दीधा हयवर हार।
जीहो-दीधा सोनो सावटू, लाला,
दीधा अर्थ भडार ॥राणी जी०॥

७— जीहो बारसमो दिन आवियो, लाला,
नाम दियो अभिराम।
जीहो चद्रकला जिम वधतो, लाला,
रूप—कला—गुण—धाम ॥राणी जी०॥

दोहा

१— हाथी नो जिम तालवो, देहो तिम सुकुमाल।
वालक हुवो तेहवे, नामे गज—सुकुमाल ॥

२— वालक पाच धाये करी, वाधे आनद-कद।
एक ग्रही दूजी ग्रहे, दिन दिन अधिक आणद ॥

ढाल-वही

८— जीहो खेलावण-हुलरावणे लाला,
चुगावण ने पाय।
जीहो न्हवरावयण पेहरावणे, लाला,
अगो अग लगाय ॥राणीजी०॥

९— जीहो आखडली अजावणी, लाला
भाल करावण चद।
जीहो गाला टीकी सावली, लाला,
आलिगन आनन्द ॥राणीजी०॥

१०— जीहो पग-माडण ग्रही अगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल।
जीहो बोलण भापा तोतली, लाला,
रिझावण अति स्याल ॥राणीजी०॥

११— जीहो दही रोटी जिमावणे लाला,
अरु चबावण तबोल।
जीहो मुख सू मुख मे दिरीजता, लाला,
लीला अघर अमोल ॥राणीजी०॥

राणीजी कुमर जायो जी ॥

२— जीहो हरख्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरख्या दशे ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरख्यो सहू परिवार ॥राणीजी०॥

३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी०॥

४— जीहो-तोला मापा वधारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय ।
जीहो-बाध्या तोरण, वाटे सीरणी लाला,
चदन केशर हाथा दिराय ॥राणी जी०॥

५— जीहो-यादव नारी सावठी लाला,
आवे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुरावे माडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ॥राणी जी०॥

दोहा

१— वाजा बाजे अति भला, वरत्या मगल-माल ।
सतोषे याचक सुहासणी, हर्ष्या बाल गोपाल ॥

२— मरता जीव छोडावियो, सगले नगर मझार ।
मुह माग्या दीजे घणा, मणि माणक भडार ॥

ढाल—वही

६— जीहो-दीधा मंगल मोतीडा, लाला
दीधा हयवर हार ।
जीहो-दीधा सोनो सावटू, लाला,
दीधा अर्थ भडार ॥राणी जी०॥

७— जीहो वारसमो दिन आवियो, लाला,
नाम दियो अभिराम।
जीहो चद्रकला जिम वधतो, लाला,
रूप—कला—गुण—धाम ॥राणी जी०॥

दोहा

१— हाथी नो जिम तालवो, देही तिम सुकुमाल।
वालक हुवो तेहवे, नामे गज—सुकुमाल॥

२— वालक पाच धाये करी, वाधे आनद-कद।
एक ग्रही दूजी ग्रहे, दिन दिन अधिक आणद॥

ढाल-वही

८— जीहो खेलावण-हुलरावणे लाला,
चूगावण ने पाय।
जीहो न्हवरावयण पेहरावणे, लाला,
अगो अग लगाय॥राणीजी०॥

९— जीहो आखडली अजावणी, लाला
भाल करावण चद।
जीहो गाला टीकी सावली, लाला,
आलिगन आनन्द ॥राणीजी०॥

१०— जीहो पग-माडण ग्रही अगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल।
जीहो बोलण भाषा तोतली, लाला,
रिझावण अति ख्याल॥राणीजी०॥

११— जीहो दही रोटी जिमावणे लाला,
अरू चवावण तवोल।
जीहो मुख सू मुख मे दिरीजता, लाला,
लीला अधर अमोल॥राणीजी०॥

राणीजी कुमर जायो जी ॥

२— जीहो हरस्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरस्या दशे ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सहू परिवार ॥राणीजी०॥

३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी०॥

४— जीहो-तोला मापा वधारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय ।
जीहो-बाध्या तोरण, वाटे सीरणी लाला,
चदन केशर हाथा दिराय ॥राणी जी०॥

५— जीहो-यादव नारी सावठी लाला,
आवे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुरावे माडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ॥राणी जी०॥

दोहा

१— वाजा बाजे अति भला, वरत्या मगल-माल ।
सतोषे यात्रक सुहासणी, हर्ष्या बाल गोपाल ॥

२— मरता जीव छोडाविया, सगले नगर मझार ।
मुह माग्या दीजे घणा, मणि माणक भडार ॥

ढाल—वही

६— जीहो-दीधा मेंगल मोतीडा, लाला
दीधा हयवर हार ।
जीहो-दीधा सोनो सावटू, लाला,
दीधा अर्थ भडार ॥राणी जी०॥

ढाल १७ राग—रग मेहल मे हो चोपड खेलस्या

१— वस्त्र ने गेहणा हो घणा शरीर ना,
सोनैया लाख साढी बार ।
प्रीतज दान हो दियो तेहने,
हर्ष्यो वधाई दार ॥

२— यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वादवा,
नगरी द्वारिका सिणगार ।
घर घर माहे हो महोच्छव मड रह्यो,
हप सू जावे नर-नार ॥यादव०॥

३— नर ने नारी ने हो हर्ष हुवो घणो,
नेम वादण रो कोड ।
कोई पाला ने हो कोई पालखी,
चाल्या जावे होडा होड ॥यादव०॥

४— मजन-घर मे हो कृष्ण न्हावण करी,
सर्व पहेर्या सिणगार ।
चदन-लेप हो शरीर लगाविया,
जाणे इन्द्र अवतार ॥यादव०॥

५— एक सौ आठ हो हाथी सिणगारिया,
चरच्या तेल सिंदूर ।
दीसत दीसे हो पर्वत टूक ज्यू,
चाले आगे हजूर ॥यादव०॥

६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
सुन्दर-सोवन-जडित पिलाण ।
एक सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
चाले असवारी आगीवाण ॥यादव०॥

७— लाख बैयालिस हाथी सिणगारिया,
वल लाख बयालिस घोड ।
लाख बैयालिस रथ सिणगारिया,
पायदल अडतालिस कोड ॥यादव०॥

२— जीहो बतलावण ने चालवे लाला,
दीरावण मुख, गाल ।
जीहो ग्रालकरावण ग्राकरी लाला,
सीखावण सुर साल ॥राणीजी०॥

१३— जीहो बरस सरस ग्राठा लगे लाला,
लीला वाल, विनोद ।
जीहो सब ही पर मा देवकी, लाला,
पावे ग्रधिक प्रमोद ॥राणीजी०॥

१४— जीहो पढियो गुणियो मति ग्रागलो, लाला,
माधव जीवन जोय ।
जीहो सहू ने प्यारो प्राण थी लाला,
माताजी ने सोय ॥राणीजी०॥

दोहा

१— बालक-क्रीडा तेहनी, देखी विविध प्रकार ।
हर्षी माता देवकी, हिवे सफल गिणे ग्रवतार ॥ ॥

२— यौवन वय ग्राव्या थका, कीवी सगाई ग्रभिराम ।
'द्रुम' राजा नी पुत्रिका, प्रभावती' इण नाम ॥

३— 'सोमल' ब्राह्मण नी धिया, 'सोमा' नामे एक ।
प्रत्यक्ष जाणे ग्रपछरा, चतुराई रूप विशेष ॥

४— क्रीडा करता तेह ने देखी कृष्ण नरेश ॥
लघु भाई लायक ग्रछे, वाला यौवन वेश ॥

५— कीधी सगाई तेहसू, 'सोमा' ग्राई दाय ।
थापी तेहनी भारिया, मेली कुमारी-ग्रंतेउर माय ॥

६— तिण काले ने तिण समे, करता उग्र विहार ।
भगवत नेम पधारिया, द्वारिका नगर मझार ॥

७— वन पालक ग्रनुमत लही उतर्या बाग मझार ।
वन-पालक दीवी वधावणी, हर्ष्या कृष्ण मुरार ॥

ढाल १७ राग—रग मेहल मे हो चोपड खेलस्या

१— वस्त्र ने गेहणा हो घणा शरीर ना,
सोनैया लाख साढी बार ।
प्रीतज दान हो दियो तेहने,
हर्ष्यो वधाई दार ॥

२— यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वादवा,
नगरी द्वारिका सिणगार।
घर घर माहे हो महोच्छव मड रह्यो,
हर्ष सू जावे नर नार ॥यादव०॥

३— नर ने नारी ने हो हर्ष हुवो घणो,
नेम वादण रो कोड ।
कोई पाला ने हो कोई पालखी,
चाल्या जावे होडा होड ॥यादव०॥

४— मजन-घर मे हो कृष्ण न्हावण करी,
सर्व पहेर्या सिणगार।
चदन-लेप हो शरीर लगाविया,
जाणे इन्द्र अवतार ॥यादव०॥

५— एक सौ आठ हो हाथी सिणगारिया,
चरच्या तेल सिंदूर।
दीसत दीसे हो पर्वत टूक ज्यू,
चाले आगे हजूर ॥यादव०॥

६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
सुन्दर-सोवन-जडित पिलाण।
एक सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
चाले असवारी आगीवाण ॥यादव०॥

७— लाख बैयालिस हाथी सिणगारिया,
वले लाख बयालिस घोड ।
लाख बैयालिस रथ सिणगारिया,
पायदल अडतालिस कोड ॥यादव०॥

८— हरि ने हलधर दोनू गज चढ्या,
साथे लियो गजकुमार।
छत्र ने, चामर दोनू विजे रह्या,
बाजे वाजा रा झणकार ॥यादव०॥

९— देवकी माता आदे राणिया,
साथे सहू परिवार।
बोले विरुदावलिया, चारण सुजन सब,
जय जय शब्द अपार ॥यादव०॥

दोहा

१— अतिशय देखी ने उतर्या, वाद्या दीन दयाल।
पाच अभिगम साचवी, पाप कियो पेमाल ॥

२— भगवत दीधी देशना, भवि जीवा हितकार।
आगार ने अणगार नो, धर्म करो सुखकर ॥

३— परिषदा सुण पाछी गई, वलिया कृष्ण नरेश।
गज सुकुमार बरागियो, लागी धर्म री रेश ॥

४— हाथ जोडी कहे नेम ने, आणी मन वैराग।
मात पिता भाई पूछ ने, करसू ससार नो त्याग ॥

५— जिम सुख होवे तिम करो, म करो ढील लिगार।
घर आवी कहे मात ने, चरण नमी तिण वार ॥

ढाल १८

राग—जोधाण जसराज

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पडी—रे माई।
आज अदर री आख, जामण म्हारी ऊघडी ॥

२— वलतो बोले माय, वारी जाऊं तुम तणो—रे जाया।
सुणी प्रभुजी री वाण, पुन्याई ताहरी घणी ॥

३— कु वर कहे माय ! वाण, साची मैं सरद्दी—रे माई?
मीठी लागी जेम, दूध शाकर दही ॥

४— अनुमति दीजो मोय, दीक्षा लेसू सही—री माई।
हिवे आज्ञा री जेज, जामण ! करवी नही॥

५— वचन अपूरव एह, पुत्र ना सांभली—री माई।
घणु मूर्छा—गति खाय, धमके धरणी ढली॥

६— खलकी हाथा री चड, माथे रा केश वीखरया-री माई।
ओढण हुवो दूर, आखे आसू भरया॥

७— मोह तणे वश आज, सुरती चलती रही—री माई।
शीतल पवन घाल, माता बैठी थई॥

८— कुवर मामो माय, रही छे जोवती—री माई।
मोह तण वश वेण, बोले माता रोवती॥

ढाल १९ राग—सौदागर चलण न देसू

१— प्यारे हमारे जाया, एसी न कीजे।
तुम विन आछे लाल, कहो किम जीजे रे॥प्यारे०॥

२— छतिया मेरे लाल ! तीखी खाती।
कलेजो कापे लाल, अति अकुलाती रे॥प्यारे०॥

३— छतिया मेरे लाल, आगज उठी।
तनु जाले रे लाल, न समजे झूठी रे॥प्यारे०॥

४— छतिया मेरे लाल ! दुख न समावे।
दाडिम ज्यू रे लाल, फाटी आवे रे॥प्यारे०॥

५— वटा की रे लाल ! आशा एती।
कही नही जावे लाल ! अवर जती रे॥प्यारे०॥

६— ऊची लेई लाल, आभ अडाई।
नीची किया लाल, जात वडाई रे॥प्यारे०।

७— रोवत अत ही लाल देवकी राणी।
भर भर आवे लाल, नयणा मे पाणी रे॥प्यारे०॥

८— कुवर कहे रे लाल, माय न रोजे।
मरणो आवे लाल किम सुख सोजे रे॥प्यारे०॥
प्यारी हमारी अमा अनुमति दीजे॥

९— जनम जरा रे लाल पूठं लागी।
किम छूटीजे लाल, तेहथी भागी रे ॥प्यारे०॥

१०— उत्कृष्टी रे लाल, कीजे करणी।
तो रे मिटे लाल, यम की डरणी रे ॥प्यारी०॥

११— अजर अमर लाल, हूं अब होस्यू ।
शुद्ध होई लाल ! त्रिभुवन जोस्यू ॥प्यारी०॥

दोहा

१— मात कहे सुत साभलो, सयम दुक्कर अपार।
तू लीला रो लाडलो सुख विलसो ससार ॥

ढाल २०

राग—जोधाणे जसराज

१— साधपणो नही सहेल, जाया जामण कहे—रे जाया।
तू न्हानडियो बाल, परीसा किम सहे॥

२— त्रिविधे निवध च्यार, महाव्रत पालवा—रे जाया।
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालवा॥

३— दोष बैयालीस टाल, करणी वच्छ गोचरी—रे जाया।
भमवो भमरा जेम, चिता मोने लोच री॥

४— कनक कचोला छाड, लेवी वच्छ काछली— रे जाया।
जाव जीव लगे वाट, नही जोवणी पाछली॥

५— रहणो गुरा रे पास, विनय सू आपणो—रे जाया।
राती पड्या एक शीत, वासी नही राखणो॥

६— सरस नीरस आहार, करणो वच्छ पातरे—रे जाया।
ए सुख सेज्या छोड सूवणो साथरे॥

७— नहीं करणो सिनान, मुखे बधं मुहपती—रे जाया।
मेला पेहरे वेश, तिके जैन रा यती॥

८— करणो उग्र विहार, सेहणो सो तावडो—रे जाया।
कह्यो हमारो मान, पुत्र तू बावरो॥

६— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी ये कह्यो—री माई।
सूरा ने छे सेहल, कुमर उत्तर दियो॥

१०— जनम मरण रा दुख, माता जिणवर कह्या-री माई।
भमियो गर्भावास, जामण मैं दुख सह्या॥

११— नही पलक री ग्रास, जाण काल जपियो—री माई।
ग्रो जग मरतो देख, माताजी कपियो॥

दोहा

१— वलती माता इम कहे, साभल तू सुजाण।
परिवार ताहरे छे घणो, म करो दीक्षा री वात॥

ढाल वही

१२— सहस वहोत्तर मात तात, वसुदेव है—रे जाया।
जीवन-प्राण आधार, केशव वलदेव है॥

१३— भोजाया सहस्र बत्तीस तणो रामकरो—[illegible]।
तुझ ने अनुमति देवा, कुण होमी खरो॥

१४— सहस्रवहोत्तर परिवार, माताजी आवी मिले-[illegible]।
पर भव जाता साथ, कोई ना चले॥

१५— पलटे रग पतग, तिको जिण रो जिमो—[illegible]।
तिण ऊपर विश्वास, जामण करणो किसो॥

१६— शूर वीर बावीस, परीसा धार्मी—[illegible]।
जाणो शिवपुर वास, तिके नर [illegible]॥

१७— सुन्दर वाला दोय, परणीजो [illegible]।
सुख लोनी जोवन-वेश, रूप चतुराई [illegible]॥

१८— मृग-नयणी, शशि-वदन इन्द्राणी-[illegible]।
विलसी सुख ससार, लीजो [illegible]।

१६— लिया घणा ने घेर, विषय [illegible]।
जग माहे सहू नार, माता [illegible]।

२० — स्वार्थ नी सगी नार, माता जिनवर कही — री माई।
अशुच दुर्गन्ध अपार, माता परणू नही ॥

२१— वाल्यो मन वैराग, विषय रस परिहरी— री माई।
मल मूत्र नो भडार माता नारी खरी ॥

२२— किंपाक फल समान, विषय जिनवर कह्या — री माई।
दीजे अनुमति आज, कीजे मो पर मया ॥

२३— नेम जिणेसर पास, महाव्रत आदरी— री माई।
जाव जीव लगे बात, न करू प्रमाद री ॥

२४— जाव जीव जप तप, करस्यू खप आकरी — री माई।
मूल थकी जड काटस्यू, कर्म-विपाक री ॥

२५— म्हारे क्षमा गढ माय, फोजा रहसी चढी — री माई।
बारे भेदे तप तणी, चोकी खडी ॥

२६— बारे भावना नाल, चढाऊँ कागरे— री माई।
तोडू आठे कर्म, सकल कार्य सरे ॥

२७ — हाथ जोडी ने अर्ज, कुवर माय सू करे— री माई।
द्यो अनुमति आदेश, मनोरथ मुझ फले ॥

दोहा

१— मोह छकी माता कहे, साभल माहरी बात।
दुर्लभ अवर फूल ज्यू तुझ दर्शन साक्षात ॥

२— पान फूल नू जीव तू, कोमल केलि समान।
ललडो अति लाडलो, लालन लीला थान ॥

ढाल २१

राग — राजवियां ने राज पियारो

१— देवकी बोले साभल बेटा,
निमुणो माहरी वाणी।
जो माता मरि जाणो मीने,
तो मन पर रांचा-राणी ॥

२— रे जाया चारित्र दोहिलो
जोवो हिये विमासो।
वेलू कवल लोहना चरणा,
मेण दाते न चवासी ॥रे०॥

३— द्वारिका नगरी नो राज्य ले तू
मस्तक छत्र धराय।
सफल मनोरथ करि माता नो,
हाथी घोडा अधिपति थाय ॥रे०॥

४— कृष्ण नरेसर खोले लेवे,
निसुणो वचन सुखदाई।
पगे करी ने अगनी वुझावे,
ज्यू दुकर सयम भाई ॥रे०॥

५— वावल बाथ मे लेवी दोरी,
चालवो खाडा नी धार।
सायर तरवो भुज वल करी ने,
ज्यू दुक्कर सयम-भार ॥रे०॥

६— केशव कहे लघु भाई ने,
जो तू छोडे भसार नो पास।
पिण द्वारिका नगरी नो,
राज तोने देसू, पूरो माता नी आस ॥रे०॥

७— रह्यो अबोलो वचन सुणी ने
तव दीधो माधव राज।
छत्र ने चामर दोन वीजे,
कीना राज ना साज ॥रे०॥

८— गज-सुकुमार कहे केहनो सारो,
अब वरते आण हमारी।
तो हुकुम माहरो मत उथपो,
थे करो दीक्षा री त्यारी ॥रे०॥

६— श्री भडार माहे सू काढो,
तीन लाख सोनैया लीध।
बे लाख ना ओघा पातरा,
एक लाख नाई ने दीध ।।रे०।।

दोहा

१— दीक्षा महोच्छव कृष्णजी, कीधो हर्ष अपार।
मझ बाजारे चालिया, आया जिहा करतार ।।

ढाल २२

राग—गवरादे बाई आज वसो०

१— कुवर कहे कर जोड ने,
साभलो कृपानाथो रे।
एतो जनम मरण सू डरपियो,
छोडसू सगली आथो रे।
माहरो कुवर वैरागी सयम आदरे।।

२— इण गहणा तनसू उतारिया,
माता खोला माहे लीधा रे।
जिम सरप बिछु ने अलगा करे,
तिम कुमर परा नाखी दीधा रे ।।माहरो०।।

३— माता देखी कुमर भणी,
जाग्यो मोह अपारो रे।
इण रे ठलक ठलक आसू पडे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हारो रे ।।माहरो०।।

४— मोने इष्ट ने कत व्हालो हुतो,
हूँ देखी ने पामती साता रे।
पिण म्हारो राख्यो न रह्यो न्हानड़ो,
इण विध बोले छे माता रे ।।माहरो०।।

५— इण ने तपस्या थोडी करावजो,
घणीं कीजो सार संभालो रे।

हिवे कुवर कने माता आयने,
एतो देवे सीख रसालो रे ।।माहरो०।।

६— वेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणेहीज पाले रे ।
तू क्रिया कीजे रे जाया निर्मली,
तू दोनू ही कुल उजवाले रे ।।माहरो०।।

७— झुरती बोले माता देवकी,
साभल तू सुजातो रे ।
तें मुजने रोवाई इण परे
जिम बीजी म रोवाणे मातो रे ।।माहरो०।।

दोहा

१— लोच कियो निज हाथ स, कोण ईशाने जाय ।
वेश पेहरी साधु तणो वादे प्रभुजी ना पाय ।।
२— जनम मरण रा जोड सू, विहनो किरपानाथ ! ।
भवोदधि मोने तार ने, दीजे शिवपुर आथ ।।

ढाल २३

राग—सोभागी-सुन्दर

१—नेम जिणेसर स्व-हथे जी, चारित्र दीधो तास ।
हप लहे चित मे घणो जी, थई मन मे आस ।।
२—सोभागी मुनिवर घन घन गजसुकुमार ।
भव वधन थी छूटवा जी, छोड्यो माया-जाल ।।सोभागी०।।
३—माधव प्रमुख दुख धरे जी मन मे आणी नेह ।
वादी मुनि ने आपण जी, पोहता लोग सुगेह ।।सोभागी०।।
४—मेहला मे कुवर दीसे नही जी साले आई-ठाण ।
झुरे माता देवकी जी, प्रेम बडो वधाण ।।सोभागी०।।
५—तिणहीज दिन जिनवर भणी जी पूछे ते मुनिराय ।
प्रतिमाए जाई रहू जी, जो तुम आज्ञा थाय ।।सोभागी०।।
६—जिम सुख होवे तिम करो जी, म करो वहु प्रतिबध ।
चाल्यो मुनिवर जिन नमी जी, मेटण भव नो द्वद ।।सोभागी०।।

७—गजसुकुमार मसाण मे जी, प्रतिमा रह्यो रे सधीर ।
मेरु तणी परे नवी डिगे जी, वड-क्षत्री वड-वीर ॥सोभागी०॥

८—ग्रातम ध्यान विचारतो जी, मूकी ममता देह ।
जड चेतन भिन्न भिन्न करे जी, लागो शिव सू नेह ॥सोभागी० ।

९—ग्रापण ने भजे ग्राप स् जी, पुद्गल रुचि न निवार ।
ग्रातम-राम रमावतो जी, निज-स्वभाव विचार ॥सोभागी०॥

१०–क्षपक श्रेणि मुनि चढ्यो जी करण ग्रपूरव माय ।
ध्यान शुक्ल मुनि ध्यावता जी, परीषह उपजे ग्राय ॥सोभागी०॥

११–सोमल ब्राह्मण ग्रावियोजी, दीठो मुनिवर तेह ।
मन मे बहु दुख ऊपनोजी, चिते दुष्टी जेह ॥सोभागी०॥

१२–ग्रति नान्ही मुज बालिकाजी, रूपे देवकुमार ।
पापी इण परणी नही जी, मूकी ते निरधार ॥सोभागी०॥

१३–पाखण्ड दर्शन ग्रादर्योजी, पर दुख जाणे नाय ।
हिवे दुख दू इण ने खरोजी, जिम जाणे मन माय ॥सोभागी०॥

१४–चित माहि इम चितवेजी, निर्दय विप्र चडाल ।
करे परीसो साधनेजी दे मुख सू घणी गाल ॥सोभागी०॥

१५-बलता ग्रगारा ग्रहीजी, घडी माहे ते घाल ।
पापी माथे मेलियाजी, पहिला बाधी पाल ॥सोभागी०॥

१६–ग्राप कमाया पावियेजी, तू भोगव फल ग्राज ।
मुज पुत्री दुखणी करीजी, तुजने नावी लाज ॥सोभागी०॥

दोहा

१— दु सह परीषह मुनि सह, मन मे नाणे रीस ।
धर्म केवल ध्याने चढे, मुनि ध्यावे जगदीश ॥

ढाल २४ राग—रहेनी रहेनी अलगी रहेनी

१— माता-हाथ तणो करि भोजन,
ग्रन्य ग्राहार नवि लीधो ।

गज मुनि धीर कर्म ने हणवा,
मुक्ति महल मन कीधो ॥
तुम पर वारी मैं, वारो-३ तुम पर वारी ॥

२— महाकाल मसाण व्याल बहु,
लान अवर द्रिग दीस ।
उजड झाल बले चेहे झील,
तरु-तल रह्या मुनीस ॥तुम पर०॥

३— नेत्र-दृष्टि मडो अगुष्ठ,
शिष्ठ सकल विध साजे ।
राचे आतम राम तणे रस,
सर्व पुराकृत भाजे ॥तुम पर०॥

४— मस्तक पाल बधी माटी की,
मुनिवर समता रस भरिया ।
झग झगता खयर ना खीरा,
मुनिवर ने शिर धरिया ॥ तुम पर० ॥

५— खदबद खीच तणी परे सीजे,
तड तड नासा तूटे ।
मुनिवर समता-भाव करी ने,
लाभ अनन्तो लूटे ॥तुम पर०॥

६— अत समे केवल ऊपारजी,
त्याग उदारिक देह ।
अक्षय अटल अवगाहना कर ने,
अनन्त चतुष्टय लेह ॥ तुम पर०॥

७— अल्प प्रव्रज्या, अतुल परीषह,
अष्ट कर्म करी हाण ।
जनम मरण नो अतज कीनो,
सासता सुख निर्वाण ॥तुम पर०॥

दोहा

१— मात तात वादण भणी, आवे कृष्ण नरेश ।
दीठो ब्राह्मण डोकरो, सहतो बहु कलेस ॥

२— इट वहे देवल भणी, कद होस्ये पूरी एह।
दया आणी मन तेहनी, एक उपाडी तेह ॥

३— एक एक ते सह ग्रही, कृष्ण तणे परिवार।
मन मे ते हर्षित कहे, कृष्ण कियो उपगार ॥

४— करि उपगार शुभ भावसू, चित मे धरि आणद।
वादण आव्या कृष्णजी, जिहा श्री नेम जिणद ॥

ढाल २५

राग—पपीडा तू कई भूलो रे

१— त्रण प्रदक्षिणा दे करीजी, वाद्या दीन दयाल।
साध सकल वादियाजी, नही दीसे गज-सुकुमाल ॥

२— जगत गुरु ! किहा गयो गज-सुकुमाल ?
हू प्रणमू जई तेहनेजी, त्रि करण-शुद्ध त्रि-काल ॥जगत०॥

३— पूछे कृष्ण नरेसरूजी, छाड्यो जिण ससार।
रमणीय सुहावणो हो, रूप मदन अवतार ॥जगत०॥

४— नेम कहे उत्तर इसोजी, पोहतो ते निर्वाण।
सबल सखाई तसु मिल्योजी, काम थयो सिध जाण ॥जगत०॥

५— अचेतन थई देवकी जी, कुरडे सा असराल।
हीन दीन विल विल करेजी, दोहली पेट री झाल ॥जगत०॥

६— मूरछागति धरणी पड्योजी, चेतन पामी जाम।
बोले कृष्ण दयामणोजी, नेम भणी सिर नाम ॥जगत०॥

७— किण उपसर्ग कियो इसोजी, मुजने कहो जिनराय !
आपू सीख जाई करीजी, जिम मुज रीस बुझाय ॥जगत०॥

८— अमने वादण आवताजी, ब्राह्मण ने जिम आज।
ते उपगार कियो भलोजी, तेहनो सार्यो काज ॥जगत०॥

९— मिलियो ते उपगारियोजी, बहु काले जे कर्म।
न खपता ते थोडे खप्याजी, मत कहभाई ! अधम ॥
कृष्णराय ! सामलो मोरी वाण ॥

१०— मैं किम हिव जाणीसकू जी, मुज भाई मारण-हार।
नेम कहे इये नामनोजी, ते मुज कहूं विचार ॥कृष्ण० ॥

११— जे नर तुजने देखनेजी, तुरत तजे जे प्राण ।
तिण तुज भाई मारियोजी, ए सच्चो सहिनाण ।।कृष्ण०।।

१२— साभल वाणी नेमनीजी, ते दुख हिये न समाय ।
कामकिसोकियो पापियोजी ते मुख कह्यो न जाय ।।जगत०।।

१३— नेम भणी हरि वादनेजी आवे नगरी मझार ।
खिण खिण भाई साभरेजी, प्रीत सबल ससार ।।जगत०।।

दोहा

१— दुख करता भाई तणो, कृष्ण घण उदास ।
मझ चोहटो टाल ने, जावे निज आवास ।।

२— मुनि-घातक ब्राह्मण जिको, डरप्यो मन मे अपार ।
सेरी कानी नीकल्यो, जावे नगरी वार ।

ढाल २६

राग—ऋषभ प्रभुजी ये ए

१— कृष्ण वदन देखी करिए,
मार्यो हुंतो जिणे साध ।
ते तो मुवो पापियो ए,
आप किया फल लाध ।।

२— नरेसर इम कहे ए,
साची प्रभुजी री वाण ।
अन्यथा नही होवे ए
ए मुनि-घातक जाण ।।नरेसर०।।

३— तुरत वधावी राढ्यें ए,
जेहना हाथ ने पाय ।
नगरी माहे बाहिरे ए,
फेरी जे तसु काय ।।नरेसर०।।

४— कराई उद्घोषणा ए,
सारे शहर मझार ।
साध ने दुख दिया तणा ए,
ए फल ताजा सार ।।नरेसर०।।

५— फल दीठो ऋषि-घातनो ए,
इम नही करे चडाल।
ते इण कियो पापिये ए,
खिण खिण होय उदाल ॥नरेसर०॥

६— वात सुणी मुनि तणी ए,
बहु यादव - परिवार।
लेवे सयम भलो ए,
जाणी अथिर ससार ॥नरेसर०॥

७— जे चारित्र लेवा मते ए,
ते लेज्यो इण वार।
माधव कहे मुख सू इसो ए,
म करो ढोल लिगार ॥नरेसर०॥

८— पाछल सहू परिवार नी ए,
हू करिसु सभाल।
दुखिया रा दुख मेटसू ए,
सुणजो बाल गोपाल ॥नरेसर०॥

९— वचन सुणी श्री कृष्ण नो ए
हुवा साध अनेक।
महा महोच्छव हरि करे ए,
आणी हृदय विवेक ॥नरेसर०॥

१०— केई तो श्रावक हुवा ए,
केई समकित – धार।
नेम जिणेसर तिहा थकी ए,
जनपद कियो विहार ॥नरेसर०॥

११— साता दीजो साधा भणी ए
तन मन चित्त उल्लास।
आशा मती उपापजो ए,
ज्यू पामो सासतो वास ॥नरेसर०॥

१२— सतगुरु सगति पायने ए,
मत कीजो परमाद।

पर निन्दा ईर्ष्या तजो ए,
कीजो धर्म - आल्हाद ।।नरेसर०।।

१३— इण आरे धरम पायने ए,
कीजो घणा जतन ।
थोडा मे नफो घणो ए,
राखीजो ऊजल मन ।।नरेसर०।।

१४— इण अवसर मे चेतजो ए,
धरम खरची लीजो लार ।
गुरु-सेवा कीजो हरस सू ए,
जिम होसी निस्तार ।।नरेसर०।।

१५— एसा पुरुपा सामो जोयने ए,
राखीजो धर्म सू प्रेम ।
ज्यू शिवरमणी वेगी वरो ए,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ।।नरेसर०।।

दोहा

१— गोतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भडार।
चवदे सो बावन सहू, नमता जय जय कार ॥

२— सूत्र ज्ञाता मे चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव।
सक्षेपे करी हू कहूँ, साभल जो धरि चाव ॥

ढाल १

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रा तिलक समान री माई।
एक कोड ने छासठ लाख,
गाव तणो अनुमान री माई ॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥

२— राज करे तिहा 'श्रेणिक' राजा,
मत्री 'अभय' कुवार री माई।
महाराजा रे 'धारिणी' राणी,
साधा ने हितकार री माई ॥पुण्य०॥

३— धारणी-श्रेणिक रो अग-जात,
नामे मेघ-कुमार री माई।
सुविनीत बहोत्तर कला भणियो,
वाणी अमृत सार री माई ॥पुण्य०॥

४— तिण नगरी मे नालदो पाडो,
तिण रो इसो अनुमान री माई।
चवदे तो चोमासा किया,
भगवत श्री वर्द्धमान री माई ॥पुण्य०॥

५— पूरव भव गवालज केरो,
दान दियो निण खीर री माई।
जिण पुन्याई इसडी वाधी,
घाली 'गोभद्र' सेठ घर सीर री माई ॥पुण्य०॥

६— 'जवू' जैसा इण पाडा मे हुवा,
बले कोडी-धज घर थाय री माई।
सहस पैंसठ ने लाख इग्यारे,
पणसे छत्तीस घर इण माय री माई ॥पुण्य०॥

७— मदिर मालिया जाली झरोखा,
सोहे पोल प्रकार री माई।
चोरासी वले चोहटा सोहे,
परतक देवलोक सार री माई ॥पुण्य०॥

दोहा

१— 'मेघ' कुवर जोवन आया, परणी आठ नार।
महल माहे सुख भोगवे, मादल नो धोकार ॥

२— गाम नगरपर विहरता, भगवन्त श्री महावीर।
शरणे आवे ते प्राणिया पावे भव जल तीर ॥

ढाल २

राग— रसिया के गीत की

१— वीर पधार्या हो मगध सुदेश मे,
करता धर्म उद्योत—जिणेसर।
मेरा जीव थया है मिथ्यात मे,
ज्या री उतारता छोत—जिणेसर ॥वीर०॥

२— चोतीस अतिशय हो करने दीपता,
वाणी रा गुण पेतीस—जिणेसर।
एक सहस्र ने आठ लक्षण धणी,
जीत्या राग ने रीस—जिणेसर ॥वीर०॥

दोहा

१— गौतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भडार।
 चवदे सो वावन सहू, नमता जय जय कार ॥
२— सूत्र ज्ञाता मे चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव।
 सक्षेपे करी हू कहूँ, साभल जो धरि चाव ॥

ढाल १

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
 माथा रा तिलक समान री माई।
 एक कोड ने छासठ लाख,
 गाव तणो अनुमान री माई ॥
 पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥
२— राज करे तिहा 'श्रेणिक' राजा,
 मत्री 'अभय' कुवार री माई।
 महाराजा रे 'धारिणी' राणी,
 साधा ने हितकार री माई ॥पुण्य०॥
३— धारणी-श्रेणिक रो अग-जात,
 नामे मेघ-कुमार री माई।
 सुविनीत वहोतर कला भणियो,
 वाणी अमृत सार री माई ॥पुण्य०॥
४— तिण नगरी मे नालदो पाडो,
 तिण रो इसो अनुमान री माई।
 चवदे तो चौमासा किया,
 भगवंत श्री वर्द्धमान री माई ॥पुण्य०॥

वले अनेराई पूछिया,
के कोई खिणावे निवाण रे ॥कुवर०॥

३— वचन सुणी श्री मेघ नो,
सेवग हर्षित थाय रे।
हाथ जोड ने इण पर कहे,
ते सुणजो चित लाय रे ॥कुवर० ॥

४— चोवीसमा श्री वीरजी,
तारण तिरण जहाज रे।
तेहनी वाणी सुणवा भणी,
लोग वादण जावे आज रे ॥कूवर०॥

५— नाम ने गोत्र सुणिया थका,
पातिक जावे परा दूर रे।
साजे ही मन आराधता,
च्यारे ही गति देवे चूर रे ॥कुवर०॥

६— वचन सेवग तणो साभली,
चितवे मेघ कुमार रे।
हू पण वीर ने वादसू,
वेग सजाई करो तयार रे ॥कुवर०॥

७— वीर वादण तणो मेघ ने,
ऊठघो है प्रेम अपार रे।
मोटे मडाने करी नीकल्यो,
चाल्यो मज्झ वाजार रे ॥कुवर०॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवत हर्षित थाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुवर०॥

९— भगवत देवे हो देशना,
ते सुणजो धरि प्रेम रे।
ए जीव लोह जिम जाणई,
पिण किण विध होवे छे हेम रे ॥कुवर०॥

वले अनेराई पूछिया,
के कोई खिणावे निवाण रे ॥कुवर०॥

३— वचन सुणी श्री मेघ नो,
सेवग हर्षित थाय रे।
हाथ जोड ने इण पर कहे,
ते सुणजो चित लाय रे ॥कुवर० ॥

४— चोवीसमा श्री वीरजी,
तारण तिरण जहाज रे।
तेहनी वाणी सुणवा भणी,
लोग वादण जावे आज रे ॥कूवर०॥

५— नाम ने गोत्र सुणिया थका,
पातिक जावे परा दूर रे।
साजे ही मन आराधता,
च्यारे ही गति देवे चूर रे ॥कु वर०॥

६— वचन सेवग तणो साभली,
चितवे मेघ कुमार रे।
हू पण वीर ने वादसू,
वेग सजाई करो तयार रे ॥कु वर०॥

७— वीर वादण तणो मेघ ने,
ऊठचो है प्रेम अपार रे।
मोटे मडाने करी नीकल्यो,
चाल्यो मज्झ बाजार रे ॥कु वर०॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवत हर्षित थाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुवर०॥

६— भगवत देवे हो देशना,
ते सुणजो धरि प्रेम रे।
ए जीव लोह जिम जाणई,
पिण किण विध होवे छे हेम रे ॥कूवर०॥

दोहा

१— आगार ने अणगार नो, धम ना दोय प्रकार ।
चउ-विध धम आराधता, चउ-गति पामे पार ॥

राग—नवकार मत्र नो ध्यान धरो

ढाल ४

१— जीवडला री आद नही काई,
पुन रे जोग नर-भव पाई ।
भमियो जीव आठ करम बाधो,
इम जाणी दया धरम आराधो ॥

२— पाम्यो जीव आरज खेतो,
उत्तम घर जनम लह्यो हेतो ।
तोही सेवे पाच परमादो ॥इम०॥

३— आऊखा नो सुणिया मानो,
जिम पाको पीपल-पानो ।
पडता वार नही जादो ॥इम०॥

४— इसडो छे ओछो आयू,
ज्यू ओस सिरे वागे वायू ।
तिण मे रोग सोग बहु असमाधो ॥इम०॥

५— पाच स्यावर तीन विकलेन्द्रिय गयो,
सख्यात असख्यात काल रयो ।
हिवे निगोद री सुणो सवादो ॥इम०॥

६— जीव हुवो मूलो ने आदो,
घणाजणा सवाद करी खादो ।
वनस्पति रा भव बहु लाधो ॥इम०॥

७— पंचेन्द्रिय काय माय रे फसियो,
उत्कृष्टो सात आठ भव वसियो ।
...प्राप उदारिक मोही रायो ॥इम०॥

८— देवता ने नारकी रे हुवो,
सुखियो दुखियो जीव बहु मुवो।
भाख गया देव-देवाधो ॥इम०॥

९— इम रुलियो चउ-गति मायो,
अब नीठ नीठ नर-भव पायो।
समो एक म करो परमादो ॥इम०॥

१०— कदा च मनुष्य रो भव पामो,
तो कठे आरज क्षेत्र ठामो।
नीचे कुल मे जनम लाधो ॥इम०॥

११— आर्य क्षेत्र कुल सुध आयो,
तो पूरी इन्द्रिय जीव नही पायो।
हीरण-इन्द्रिय दुखा नो दाधो ॥इम०॥

१२— कदाच जो पूरी इन्द्रिय पाई,
तो धर्म सुरणवो किहा सुख दाई।
मिथ्या मत्या नो जोर जादो ॥इम०॥

१३— उत्तम धर्म सुरणवो जे रे लह्यो,
पिरण सरधा विना जीव यू ही गयो।
काम ने भोग कलरण कादो ॥इम०॥

१४— भुगती इरण जीव चउरासी,
शुद्ध धर्म करणी सू मुगति जासी।
नही तर सुपनो एक योही लाधो ॥इम०॥

दोहा

१— वाणी सुण ने परिपदा, आई जिरण दिश जाय।
'श्रेणिक' नामे नरपति, वादी वीर ना पाय॥

२— 'मेघ' कुमर तिरण अवसरे, जोडी दोनू हाथ।
सर्घ्या रुच्या प्रतीतिया, दीक्षा लेसू जग-नाथ॥

३— वलता वीर इसी कहे, सुरणजो 'मेघ' कुमार।
जो थारो मन वैराग सू, तो म करो जेज लिगार॥

४— प्रभु प्रणमी घर आयने, वदे मात ना' पाय।
हाथ जोड ने इम कहे, ते सुणजो चित लाय॥

ढाल ५ राग— सोजत रो सिरदार वामां रो लोभी

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पडी रे माई।
आज अक्षर री आख जामण! म्हारी ऊघडी॥

२— वलती बोले माय, हू वारी जाऊ तुम तणी!
रे जाया! सुणी जिणद नी वाण, पुन्याई थारी घणी॥

३— पुत्र कहे माय! वाण, साची मैं सरदही, री माई।
लागी मीठी जेम, दूध शाकर सही॥

४— दीजे अनुमत मोय, दीक्षा लेसू सही-री माई।
हिवे आज्ञा री जेज, करवी जुगती नही॥

५— वचन अपूरव एह पुत्र ना साभली री माई।
मूर्छागत झट थाय, माता धरणी ढली॥

६— मोह तणे वश आज, सूरती चलती रही रे जाया।
शीतल पवन घाल माता बैठी थई॥

७— पुत्र ने साभी, रही छे जोवती, रे जाया!
मोहतणे वश वेण, बोले माता रोवती॥

८— साधपणो नही सहल, जाया! जामण कहे, रे जाया!
तू नानडियो बाल परीषह किम सहे॥

९— त्रिविधे त्रिविधे करी, पच महाव्रत पालना, रे जाया!
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालना॥

१०— दोष बेयालिस टाल करणी रे जाया! गोचरी रे।
भमणो भमरा जेम, चिता मोने लोच री॥

११— कनक कचोला छोड, लेणी रे वस्त्र काष्टनी, रे जाया!
जावजीव मगे याट, नहीं जोयणी गाडनी॥

१२— न्हावे धोवे नाहि, मुखे राखे मुखपति, जाया!
मैला पेहरे वेश, जिके जैन रा जती॥

१३— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी थे कह्यो, री माई।
सूरा ने छे सहल, कु वर उत्तर दियो॥

१४— जनम मरण री बात, सहु जिणवर कही, री माई।
दो अनुमत आदेश, दीक्षा लेसू सही॥

१५— पलटे रग पतग, जामण! जाणो इसो, री माई।
तिण ऊपर विश्वास, जामण! करणो किसो॥

दोहा

१— माता मुख सू इम कहे, वात सुणो मुज पूत।
कोड घणे परणावियो, काई भाजे घर-सूत॥

२— रमण्या सामो जोइये, ए माता ना वेण।
मोह शब्द बोले घणा, झुरे भर भर नेण॥

३— धन जोवन राण्या तणो, लाहो लीजे एह।
दिन पाछा पडिया पछे, कीजो मन-चिंतेह॥

४— वचन सुणी माता तणा, बोले मेघ-कुमार।
अथिर सुख ससार ना, विणसता नही वार॥

ढाल ६

राग— धन धन सती चदनबाला

१— वले माता ने कहे एमो,
मोने धम तणो आगे प्रेमो।
अब तो जेज नही कीजे,
मोने आज आज्ञा जननी दीजे॥

२— सयम दुख रो स्यू कहेणो,
छेदन भेदन वदन सहेणो।
नरक तिर्यञ्च दुख सह्या खोजे॥मोने०॥

३— हूँ तो जामण! मरण थकी डरियो,
वीरवचन छे रस थी भरियो।
तन धन जोवन आऊ छीजे॥मोने०॥

३— हरखी न दीधो हालरोजी,
वहू नही पाडी रे पाय।
एक ही पुत्र न जनमियोजी,
हूँस रही मन माय-रे जाया ।।तो विन०।

४— ग्रान्न-लुहण तू माहरेजी,
कालेजा नी कोर।
तु वच्छ ग्राधा-लाकडीजी,
किम हुवे कठिन कठोर ।।रे जा० तो०।।

५— चढ़ती तुझ मुख जोइवाजी,
दीहाडा मे दश वार।
ते पिण भू य भारी हूसथीजी,
कुण चढसी चउ वार ।।रे जा० तो०।।

६— जो वालापणो सभारस्येजो,
सीयाला नी रे रात।
तो जामण ने छाडवाजो,
सहीय न काढे वात ।।रे जा० तो०।।

७— बूढापे सुखणी हुस्यू जो,
होती मोटी रे ग्रास।
घर सूनो करि जाय छे रे,
माता मूकी नीरास ।।रे जा० तो०।।

८— दीसे ग्राज दयामणोजी,
ए ताहरो परिवार।
सेवक ने सामी पखेजी,
ग्रवर कवण ग्राधार ।।रे जा० तो०।।

९— महल कवण रखवालस्येजी,
कवण करसी सार।
एकण जाया बाहिरोजी,
सूनो सहू ससार ।।रे जा० तो०।।

१०— वच्छ ! तू भोजन ने समे रे
हिवडे वेसे सी ग्राय।

ढाल ८ राग—राजेसर रावण हो बोलोनी

१— सुदर आठे मुलकती, ऊभी महला रे माह।
इण उणिहारे लोयणा, निरखो नवला नाह॥
रहो रहो वालहा विछडो क्यू इण वार॥

२— दूजा तो सगला रह्या, मुख वोलो मीठा बोल।
काई ठेलो पगसू परी, वात कहो मन खोल॥रहो०॥

३— सुदर मदिर मालिया, मुलकती नेह विलुद्ध।
पूरे हाथे पूजियो, परमेश्वर मन-शुद्ध॥रहो०॥

४— आगोत्तर सुख कारणे, छती रिध छोडो आवास।
हाथ छोडो कुण करे, पेट माहिली आस॥रहो०॥

५— पदमणी-परिमल पाम ने, भोगी भ्रमर नाह!
सुख विलसो मोसु वालहा! लीजे जोवन-लाह॥रहो०॥

६— कुवर कहे श्री वीर नी, वाणी सुणी कान।
तन धन चचल आउखो, जैसो पीपल-पान॥
रहो रहो कामणी श्रमे लेस्या सयम-भार॥

७— अलप सुख ससार ना कुण वाछे काम-भोग।
कडवा फल किंपाक सा, वहुला रोग ने सोग॥रहो०॥

८— पोखे प्रेम स्वारथ लगे, अथिर अवला नो सग।
च्यार दिहाडा उहड है, जम कसूभा नो रग॥रहो०॥

दोहा

१— ए जुग जाणी कारमो, लेस्या सयम भार।
वचन सुणी प्रीतम तणा, वले वोले आठे नार॥

ढाल ९ राग—भाग्य प्रवल नृप घदनो रे

१— सुदर आठ वीनवे रे,
कोई अवगुण मो मे दीठ रे।
कहीने देखावो कता! मो भणी रे,
बोलो वाणी मीठ रे॥

३— दीक्षा महोच्छव हर्ष सू, करे श्रेणिक महाराय।
आठ राण्या रो लाडलो, धन धन मेघकुमार ॥
४— दीक्षा ने त्यारी हुवो मन मे हर्ष अपार।
हियो कायर रो थरहरे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल १० राग—वे वे तो मुनिवर वहरण पागुरिया रे

१— मोटी वणाई इक शीविका रे,
माहे बेठो छे मेघ-कुमार रे।
माता रो हिवडो फाटे अति घणो रे,
विल विल कर रही आठे नार रे ॥
जोयजो कायर रो हीयो थर हरे रे ॥
२— सयम लेवा घर सू नीसर्यो रे,
जिम रण माहे निकसे सूर वीर रे।
वाजित्र वाजे शब्द सुहावणा रे,
कायर इण वेला होवे दलगीर रे ॥जो०॥
३— कोईक कामण मुख सू इम कहे रे,
दीसे नान्हडियो सुकमाल रे।
कुटुव कवीलो किण विध छोडियो रे,
किण विध तोडयो माया जाल रे ॥जो०॥
४— एक कहे बारी जाऊं एहनी रे,
इण वैरागे छोडयो घर-सूत रे।
जोवन वय मे सुन्दर परहरी रे,
राजा 'श्रेणिक-धारिणी' के रो पूत रे
जोइजो समकितनो रस परगम्यो रे ॥
५— पडदायत नारी मदिर मालिये रे,
जोवे जाल्या मे मूडो घाल रे।
सुदर कमला री केल री काव ज्यू,
देखो पापी मूके छे आठे बाल रे ॥जो०॥
६— धरम रा धेखी घेटा इम कहे रे,
बोले मूडे सू खोटी वाण रे।

८— आठ नारी ने मायडी,
बाप बाधव ने परिवारो रे ।
सहू आव्या नीझरणा नाखता,
पाछा आया घर मझारो रे ॥वैरागी०॥

दोहा

१— धारिणी घर मे आय ने, झुरे आठे ही नार ।
मेहला मे कुवर दीसे नही, रोवे बारम्बार ॥

ढाल १२ राग—सयम थी सुख

१— मेघ-कुवर सयम लियो, छोड्यो माया जाल-मुनीसर ।
साधा री रीत हुती जिका, साचवे कालो-काल मुनीसर ॥
जोयजी गति कर्मां तणी ॥

२— सथारो कियो साझरो, 'मेघ' रिखि तिणवार-मुनीसर ।
साध घणा प्रभुजी कने, तिण सू आयो छेहलो सथार ॥मु०जो०॥

३— विनय मार्ग जिनधम छे, राव रक रो कारण नही कोई-मुनी०।
आप सू पहला नीकल्या, ते मुनिवर वडा होई ॥मुनी० जो०॥

४— वैरागे राज छोड ने, हुवो नव-दीक्षित अणगार-मुनीसर ।
उण दिनरो थो नीकल्यो, तिण सू चित्त चले सयम वार ॥मु०जो०॥

दोहा

१— सिख हुवो श्री वीर नो, आणी वैराग भाव ।
कर्मां रे वश साधुजी, हवे करे पिछताव ॥

ढाल १३ राग—मान म कीजे रे मानवी

१— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मायजी ।
किण री ठोकर लागय,
काई ऊपर पडी जायजी ॥
मेघ रिखी मन चितवे ॥

ढाल ११ राग—सहेल्या ए आंबो मोरियो

१— कुवरजी गहणा उतारिया,
माता खोला माहे लीधा रे।
सर्प विच्छ अलगा करे,
जिम कुवर परा नाख दीधा रे।
वरागी हो सयम आदरे ॥

२— माता देखे बेटा भणी,
जिम जागे मोह अपारो रे।
ठलक ठलक आसू पडे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हारो रे ॥वैरागी०॥

३— प्रभुजी सू करे वीनती,
जोडी दोनू हाथो जी।
माहरो कुवर वीहनो ससार थी,
थाने सूपू कृपानाथो जी ॥वैरागी०॥

४— मोने इष्ट ने कात बालो हुतो,
हू देखी ने पामती साता रे।
पिण माहरो राख्यो ना रहे,
इण विध बोले माता रे ॥वैरागी०॥

५— एहनी सार सभार कीजो घणी,
मायडी इण पर दाखे रे।
कुवर आगे हिवे आयने,
देखो किण विध माता भाखे रे ॥वैरागी०॥

६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणहीज पाले रे।
सयम चोखो पालने,
दोनू कुल उजवाले रे ॥वैरागी०॥

७— मोने तो सेवाणी तमे,
अब तो क्रिया करायो रे।
लीजो पदवी शिवपुर तणी,
काई दूजी म रोवाये मायो रे ॥वैरागी०॥

रिध सपदा रमणी पामी अति घणी रे,
पिण परमेसर नही देवे खाण रे ॥जो०॥

७— वाई कोई परणी जावे सासरे रे,
मझनो गावे ससार नो माग रे।
ज्यू काचे हिये रा मानव झूरे घणा रे,
नही धर्म उपर तेहनो राग रे ॥जो०॥

८— एक एक बोले इण परे रे,
धन धन इण कुवर तणो अवतार रे।
मूकी इण काया माया कारमी रे,
आप तिरसी ने ओरा ने तार रे ॥जो०॥

९— इण राणी इद्राणी सम छोड दी रे,
वले भाई सजन मायने वाप रे,
नरक दुखां सू इण वीहते रे
जिम काचली छोडे साप रे ॥जो०॥

१०— कोइक भुरखो नाखी इम कहे रे,
बोले ज्यू मनरी आवे दाय रे।
ज्ञानी तो जाणे गेला सारखा रे,
ए सूत माखी ज्यू खेल माय रे ॥जो०॥

११— चारण भाट बोले विरुदावली रे,
जय जय बोले शब्द कर घोष रे।
कर्म आठे ही वेरी जीतने रे,
वगी थे लीजो अविचल मोख रे ॥जो०॥

दोहा

१— नगर बीच हो नीकल्या, गया वीर जिणद रे पास।
वदणा करी कर जोड ने, कहे तारो भवजल तास ॥

२— मूडे सोसी चन्द्र रही, जाणे करत्या मगल-माल।
गहणा उतारे शीन थी, हुवो वराग मे लाल ॥

ढाल ११ राग—सहेल्यां ए आंबो मोरियो

१— कुवरजी गहणा उतारिया,
माता खोला माहे लीधा रे।
सर्प बिच्छू अलगा करे,
जिम कुवर परा नाख दीधा रे।
वैरागी हो सयम आदरे ॥

२— माता देखे बेटा भणी,
जिम जागे मोह अपारो रे।
ढलक ढलक आसू पडे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हारो रे ॥वैरागी०॥

३— प्रभुजी सू करे वीनती,
जोडी दोनू हाथो जी।
माहरो कुवर वीहनो ससार थी,
थाने सूपू कृपानाथो जी ॥वैरागी०॥

४— मोने इष्ट ने कात वालो हुतो,
हू देखी ने पामती साता रे।
पिण माहरो राख्यो ना रहे,
इण विध बोले माता रे ॥वैरागी०॥

५— एहनी सार सभार कीजो घणी,
मायडी इण पर दाखे रे।
कुवर आगे हिवे आयने,
देखो किण विध माता भाखे रे ॥वैरागी०॥

६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणाहीज पाले रे।
सयम चोखो पालने,
दोनू कुल उजवाले रे ॥वैरागी०॥

७— मोने तो सेवाणी तमे,
अब तो क्रिया करायो रे।
लीजो पदवी शिवपुर तणी,
काई दूजी म रोवाये मायो रे ॥वैरागी०॥

८— आठ नारी ने मायडी,
बाप बाधव ने परिवारो रे।
सहू आख्या नीझरणा नाखता,
पाछा आया घर मझारो रे ॥वैरागी०॥

दोहा

१— धारिणी घर मे आय ने, झुरे आठे ही नार।
मेहला मे कुवर दीसे नही, रोवे वारम्बार ॥

ढाल १२

राग—सयम थी सुख

१— मेघ-कुवर सयम लियो, छोड्यो माया जाल-मुनीसर।
साधा री रीत हुती जिका, साचवे कालो-काल मुनीसर ॥
जोयजो गति कर्मा तणी ॥

२— सथारो कियो साझरो, 'मेघ' रिखि तिणवार-मुनीसर।
साध घणा प्रभुजी कने, तिण सू आयो छेहलो सथार ॥मु०जो०॥

३— विनय मार्ग जिनधर्म छे राव रक री कारण नही कोई-मुनी०।
आप सू पहला नीकल्या, ते मुनिवर बडा होई ॥मुनी० जो०॥

४— वैरागे राज छोड ने, हुवो नव-दीक्षित अणगार मुनीसर।
उण दिनरो थो नीकल्यो, तिण सू चित्त चले सयम वार ॥मु०जो०

दोहा

१— सिस हुवो श्री वीर नो, आणी वैराग भाव।
कर्मा रे वश साधुजी, हवे करे पिछताव ॥

ढाल १३

राग—मान म कीजे रे मानवी

१— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मायजी।
किण री ठोकर लागय,
कोई ऊपर पडी जायजी ॥
मेघ रिखी मन चितवे ॥

२— कोई लेवा जावेजी वाचणी,
पग तले आगुली आयजी।
पगनी रज पडे साथ रे,
अरति आई मन मायजी ।।मेघ०।।

३— कठे प्रीत साधा तणी,
कठे राण्या री हेजजी।
अठे धरती सोवणो,
कठे सुवाली सेजजी ।।मेघ०।।

४— अठे काठ पातरा,
कठे सोना रा थालजी।
अठे माग ने खावणो,
कठे घर रा चावल दालजी ।।मेघ०।।

५— जदि हूं घर मे हुंतो,
म्हारे माथे हुती पागजी।
एहिज साधु बुलावता,
धरता मोसू रागजी ।।मेघ०।।

६— आगे साधुजी और था,
अवे हो गया और जी।
मैं तो माथो मुंडायने,
वडो पसायो जोरजी ।।मेघ०।।

७— हूं राजा श्रेणिक रो दीकरो,
म्हारे कुमी नही थी कायजी।
पिण यातो माथो मूंड ने,
घाल्यो खोगी री भरती मायजी ।।मेघ०

८— रात हुई पट मासनी,
चितवे मनरे माय जी।
दुख रा दाधा माणसा,
यम-वारो किम जायजी ।।मेघ०।।

६— आवण जावण ऊठणो,
साधा माडी ठेलम ठेलजी।

आखो राती मैं नही सक्यो,
आख्या दोनू मेल जी ॥मेघ०॥

ढाल १४

राग—काची कलियाँ

१— कोई चापे साथरो रे हा, कोई सघटे अरणगार।
मेघ मुनीसरू॥
कोइक छाटे रेणुका रे हा, चिंतवे मेघ कुमार—मेघ०॥

२— कोइक ढाले मातरो रे हा कोइक अग ठपग—मेघ०।
खेद पामे तिण अवसरे हा, चारित्र सू मन भग—मेघ०॥

३— राज ने रिध रमणी तजी रे हा, स्वरूप बहुला दाम—मेघ०।
परवश पडियो आयने रे हा, किम सुधरसी काम—मेघ०॥

४— कुटुम्ब न्यातिला माहरा रे हा, घरता मोसू प्रीत—मेघ०।
खमा खमा करता सदा रे हा, ते पाछे रही रीत—मेघ०॥

५— किहा प्रमदानी प्रीतडी रे हा, किहा साधु नी रीत—मेघ०।
किहा मदिर ने मालिया रे हा, किहा सुन्दर ना गीत—मेघ०॥

६— किहा फूल किहा काकरा रे हा, किहा चदन किहाँ लोच—मेघ०।
पूरब भोग सभार तो रे हा, मेघ करे मन सोच—मेघ०॥

७— मेघ मुनि कोपे चढ्योरे हाँ, चिंतवे मन मे एम—मेघ०।
लट पट करी दीक्षा दीवी रे हा, अबे करे छे केम—मेघ०॥

८— परीसा चीतारे घणा रे हा, आया कायर भाव—मेघ०।
जोग भागो सयम थकी रे हा, सीदावे मन माय—मेघ०॥

९— अजे काई विगड्यो नही रे हा, पहली रात विचार—मेघ०।
मन मान्यो करू माहरो रे हा, एतो छे व्यवहार—मेघ०॥

१०— मैं थांई न लीधो वीर नो रे हां, मैं नवि साधो आहार—मेघ०।
मोली पातरा सू पने रे हां, जास्यू राज मझार—मेघ०॥

दोहा

१— चारित्र थी चित्त चल गयो, मन मे थयो सताप।
घरे जावण रो मन हुवो, इसो उगटियो पाप॥

२— चदन अगर ने गधवती, लेप लगाऊं अग ।
क्रीडा करू ससार मे, नाटक नव नव रग ॥
३— लोक-व्यवहार राखण भणी, वीर समीपे जाय ।
पूछण री विरिया हुई, तरे लाज आई मन माय ॥

ढाल १५ राग—कोयल पर्वत धूधलो रे

१— प्रभात समे उतावलो रे,
मेघ आयो वीर जिणदजी रे पास हो—मुनीसर ।
पडि-कमणो पिण नवि कियो रे,
मेघ ऊभो चित्त उदास हो—मुनीसर ।
वीर जिणद बुलावियो रे मेघ !

२— श्रेणिक नो तू दीकरो रे, मेघ !
धारिणी माता थाय हो—मुनीसर ।
सयम थी मन ऊतर्यो रे, मेघ !
थारे कास्यू आई दिल माय हा—मुनीसर ॥वीर०॥

३— सयम-दुखा सू बीहतो रे, मेघ !
ते आण्यो कायर-भाव हो—मुनीसर ।
मन मे सिदायो अति घणो रे, मेघ !
ते लाधो नही तिणरो साव हो—मुनीसर ॥वीर०॥

४— छोडी थे माया काया कारमी रे मेघ ।
वले पाछो मती निहाल हो—मुनीसर ।
ओ तो दु ख तू स्यू गणे रे मेघ !
पूरव भव सभाल हो—मुनीसर ! ॥वीर०॥

५— तिहा थी मरने ऊपनो रे मेघ !
श्रेणिक घर अवतार हो—मुनीसर !
पहिले भव हाथी हुतो रे मेघ !
हथणिया रो भरतार हो—मुनीसर ॥वीर०॥

६— नरक तिर्यंच मे तू भम्यो रे मेघ !
सह्या दु ख अघोर हो—मुनीसर ।
सगलो जायगा ऊपनो रे मेघ !
खाली न रही कोई ठोर हो—मुनीसर ॥वीर०॥

७— भव अनता भमता थका रे मेघ ।
लाधो नर अवतार हो—मुनीसर ।
नर-भव चितामणि सारिखो रे मेघ ।
एले जनम मति हार हो—मुनीसर ।।वीर०।।

८— एतो दुख जाणो मती रे मेघ ।
रहे तू मन सू सधीर हो—मुनीसर ।
ससार समुद्र तीरे पामियो रे मेघ ।
जेज म करि बैठो तीर हो—मुनीसर ।।वीर०।।

९— [सातमो सुख चक्रवर्ती तणो रे मेघ ।
आठमो देव-विमाण हो—मुनीसर ।
नवमो सुख साधा तणो रे मेघ ।
दशमो सुख निर्वाण हो—मुनीसर ।।वीर०।।

१०— पूर्व भव दुख साभल्यो रे मेघ ।
हाथी रो भव जाण हो—मुनीसर ।
पूरव-भव सभारतो रे मेघ ।
उपनो जाति-स्मरण ज्ञान हो—मुनी० ।वीर०।।

११— याद आयो भव पाछलो रे मेघ ।
चमक्यो चित्त मझार हो—मुनीसर ।
जनम मरण सू थर हर्यो रे मेघ ।
पाछो हुवो सुरति सभार हो—मुनीसर ।।वीर०।।

दोहा

१— भागो थो पिण बावड्यो, वीर लियो समझाय ।
ज्यू सुरठ री साघी बाजरी, मेह हुवा बूटो बपाय ।।

२— पाके खेत रा मानवी, करे घणा जतन ।
ज्यू 'मेघ' मुनि सयम तणा, करे कोड जतन ।।

३— सयम अमोलक ते पायो, भांजे भव भव रा दुख ।
शिव रमणी वेगी वरे, जावे सगला दुख ।।

४— मारगा गेह मगार ना, किण विध जावे भूख ।
मेह तणो मगर रहे, तो ऊभा जावे सूख ।।

५— पड़तो थो जिम टापरो, दीधी थूणी लगाय ।
तिम 'मेघ' संयम थी डिग्यो, पिण वीर दिधो सहाय ॥

ढाल १६

राग—पत्तनी

१— 'मेघ' ने वीर समझायो,
तरे धरम अमोलक पायो ।
वले शंका न राखी कायो,
ए परमार्थ साचो पायो ॥

२— इण रे मन मे इसडी आई,
पिण वीर हुवा रे सहाई ।
इण रा परिणाम हुवा था खोटा,
पिण वाहरू मिलिया मोटा ॥

३— परिणामो मे पडियो फेर,
पिण वीरजी लीधो घेर ।
वले दीक्षा लीधी तिण वार,
मन मे हर्ष हुवो अपार ॥

४— मन ठिकाणे दियो आण,
भगवन्त बोले वाण ।
दोय नेणा री करसी सार,
और डील साधा ने त्यार ॥

५— घणा काल संयम पाली,
तिण आतम ने उजवाली ।
मन वैराग तिहा वाली,
तप कर देही गाली ॥

६— चढयो पर्वत ऊपर सार,
कियो पादोपगमन संथार ।
तिहा थी कीनो मुनि काल,
पहोतो विजय विमाण रसाल ॥

७— देव नी थित पूरी करसी,
महाविदेह मे अवतरसी।
तिहा भरिया घणा भडार,
माय बाप कुटुम्ब परिवार ॥

८— जठे धरम ज्ञानी रो पासी,
वठे आठे ही करम खपासी।
जठे केवल ज्ञान उपासी,
एतो मुगति नगर मे जासी ॥

९— जनम मरण रो करसी अत,
लेसी सासता सुख अनन्त।
सूत्र ज्ञाता तणे अनुसार,
रिख 'जयमलजी' कह्यो विस्तार ॥

४ | स्कंदक ऋषि

दोहा

१— मोह तरण वश मानवी, हासो किलोल कराय।
कर्म कठरण बाधे जीवडो, तीनू वय रे माय ॥

२— वैर पुराणो नहि हुवे, जोवो हिये विचार ।
काचर ने 'खदक' तणो, भविक सुणो विस्तार ॥

३— क्षमा किया सुख ऊपजे, क्रोध किया दुख होय ।
क्षमा करी खदक ऋषि, सुगति गयो शुद्ध होय ॥

ढाल १

राग—मुनीसर जै जै गुण भडार

१— नमू वीर शासन घणीजी, गणधर गोतम साम।
कथा अनुसारे गावसू जी, 'खदक' ना गुण-ग्राम ॥

२— क्षमावत जोय भगवत नो जी ज्ञान।
अत क्षमा अधिकी कही जी, रहा धर्म ने ध्यान ॥क्षमा०॥

३— त्वचा उतारी देहनी जी, रास्या समताजी भाव।
जिन-धर्म कीघो दीपतो जी मोटा अटलक राव ॥क्षमा०॥

४— 'सावत्थी' नगरी शोभती जी, कनक--केतु' जिहा भूप।
राणी 'मलयासुन्दरी' जी, 'खदक' कु वर अनूप ॥क्षमा०॥

५— सगला अगज सु दरू जी, इन्द्रिय नही कोई हीण।
प्रथम वय चढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण ॥क्षमा०॥

६— विजयसेन' गुरू पागुर्या जी, साधा रे परिवार।
ज्ञान गुणे कर आगला जी, तपसी पार न पार ॥क्षमा०॥

७— नर नारी ने हुवो घणो जी, साध–वादण रो जी कोड ।
कोई पाला केई पालखी जी, चाल्या होडाहोड ॥क्षमा०॥

८— खदक कुवर पिण आवियो जी, बैठो परिषदा माय ।
मुनिवर दीधी देशना जी, सगला ने चित्त लाय ॥क्षमा०॥

६— आगार ने अणगारनो जी, धर्म तणा दोय भेद ।
समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति—उम्मेद ॥क्षमा०॥

१०—डाभ अणी-जल-बिन्दवो जी, पाको पीपल-पान ।
अथिर तन धन आउखो जी, तजो कपट ने मान ॥क्षमा ॥

११—पेहडे सुत ने बधवा जी, पेहडे स्वजन परिवार ।
धन ने कुटुम्ब पेहडे सहू जी, न पेहडे धर्म सार ॥क्षमा० ।

१२—आयो छे जीव एकलो जी, जासी एकाजी एक ।
भोले को मती भूलजो जी, कुटुम्ब कबीलो देख ।क्षमा०॥

१३—पुन जोगे नर-भव लह्यो जी, सदगुरू नो सजोग ।
पाछ हिवे राखो मती जी, तजो जहर जिम भोग ॥क्षमा०॥

१४—ओछा जीवित कारणे जी, स्यू दो ऊंडी थे राग ।
भव भव माहे काढिया जी, नटवे–वाला साग ॥क्षमा०॥

१५—च्यार गति ससार मा जी, लग रही साचा जी ताण ।
अथिर वस्तु सगली कही जी, निश्चल छे निर्वाण ॥क्षमा०॥

१६—अथिर सुख ससार ना जी, काय अलूजो जी जाल ।
वचन सुणो सत गुरु तणा जी, चेतो सुरती सभाल ॥क्षमा०॥

दोहा

१— मुनिवर परिषदा आगले, दाखे धर्म सुजाण ।
राजा कुवरजी आद दे, निसुणे सतगुरु-वाण ॥

२— आदि अनादि जीवडो, रुलियो चऊ गति मांय ।
धर्म बिना ए जीव रो, गरज सरी नहीं काय ॥

३— धर्म करो भवि-प्राणिया ! दे सतगुरु उपदेश ।
साधु-श्रावक-व्रत आदरो, राखो दया री रेग ॥

ढाल २ राग—जी हो मिथिला पुरी नो राजियो

१— जीहो काया माया कारमी,
जीहो जेसो सुपनो रेण।
जीहो-विणसता देर लागे नही,
जीहो मानो सतगुर—वेण॥

२— चतुर नर चेतो,
अवसर एह।
जीहो दान शील तप भावना,
जीहो राचो रुडे नेह ॥चतुर०॥

३— जीहो घन धान घर हाटनी,
जीहो म करो ममता कोय।
जीहो काचा सुख रे कारणे,
जीहो हीरा-जनम मति खोय।चतुर०॥

४— जीहो पाच महाव्रत आदरो,
जीहो श्रावक ना व्रत वार।
जीहो कष्ट पड्या सेंठा रहो,
जीहो ज्यू हुवे खेवो पार ॥चतुर०॥

५— जीहो सगपण सहू ससार ना,
जीहो स्वारथ ना छे एह।
जीहो जो स्वारथ पूगे नही,
जीहो तडके तोडे नेह ॥चतुर०।

६— जीहो सगपण इण ससार ना,
जीहो थया अनती वार।
जीहो मिल मिल ने वले वीछडे,
जीहो कर्म लगावे लार ॥चतुर०॥

७— जीहो नरक निगोद मा ऊपनो,
जीहो छेदन भेदन मार।
जीहो तो पिण घेठा जीव ने,
जीहो नही आवे लाज लिगार ॥चतुर०॥

८— जीहो वेदना नरक मे सासती
जीहो जरा तापसी खेद ।
जीहो वेदना दश प्रकार नी,
जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद ॥चतुर०॥

९— जीहो मारा पल सागर तणी,
जीहो सुणता थरहरे काय ।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो धर्म न आवे दाय ॥चतुर०॥

१०— जीहो ठग बाजी माडे घणी,
जीहो चाडी चुगली खाय ।
जीहो कर्म उदय आया थका,
जीहो पछे पछतावे मन माय ॥चतुर०॥

११— जीहो ऐसा दुखा सु डरपने,
जीहो चेतो चतुर सुजाण ।
जीहो ज्ञानादिक आराध ने,
जीहो लेवो पद निर्वाण ॥चतुर०॥

१२— जीहो दिल मे दया विचार ने,
जीहो छोडो खाचा—ताण ।
जीहो ज्ञान सहित तप आदरो,
जीहो ए जीता रा डाण ॥चतुर०॥

१३— जीहो उपशम मन मा आण ने,
जीहो चेतो चढ़ती बार ।
जीहो रिख 'जयमलजी' इम कहे
जीहो उतर्या थाहो पार ॥चतुर०॥

दोहा

१— परिषदा सुण राजी थई समकित देश-व्रती पाय ।
निज सगती पे सम करो, माया जिण दिन जाय ॥

२— वाणी सुण सतगुरु तणी, कुमर जोड्या दोनू हाथ ।
वचन तुम्हारा सरदणा, कहा मना कृपानाथ ' ॥

३— मात पिता ने पूछ ने, लेसू सजम—भार।
वलि ते मुनिवर इम कहे, म करो ढील लिगार।।

४— चरण कमल प्रणमी करी, खदक नामे कुमार।
सजम लेवा ऊमह्यो, बीहनो भव-भ्रमण ससार।।

ढाल ३ राग—मरणो दोरो ससार मां

१— कु वर कहे माता सुणो, दीजे मुज आदेश।
सजम ले होसू सुखी, काटण करम—कलेश।।

२— अनुमति दीजे मोरी मातजी, ए ससार असार।
जनम मरण दुख मेटवा, चारित्र लेऊ इण वार।।अनु०।।

३— वचन सुनी सुत ना इसा, धरणी ढली छे माय।
सावचेत थई इम कहे, एसी मतो काढो वाय।।अनु०।।

४— भुलक भुलक माता रोवतो, कु वर सामो रही जोय।
ए सुरती जाया ! ताहरी, ऊबर फूल ज्यू होय।।अनु०।।

५— सजम छे वछ ! दोहिलो, जैसी खाडा नी धार।
पाय उवहाणो चालणो, लेवो शुद्धज आहार।।अनु०।।
वछ ! दूकर व्रत पालना।

६— हिंसा न करणी जीवरी, तजवो मृषा–वाद।
अणदोधी वस्तु लेवी नही, तजणा सरस सवाद।।वछ०।।

७— घोर ब्रह्मचर्य पालवो, तजवो नारी नो सग।
मन वचन काया करी, व्रत पालणा इक रग।।वछ०।।

८— परिग्रहो नहीं राखवो, त्रि–विधे त्रि–करण त्याग।
रयणी–भोजन परिहरे, ते साचो वैराग।।वछ०।।

९— मेला लूगडा राखवा, करवो नही सिनान।
बाबीस परीसा जीतणा, रहणो रूडे ध्यान।।वछ०।।

१०— सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा–भार।
राज कवर सुकुमाल छे करवी न देह री सार।।वछ०।।

११— केई कहे पूज पधारिया, देवे आदर मान।
केई कहे मोडा ! क्यू आवियो, बोले कडवी वाण।।वछ०।।

१२— ए परीसा सहणा दोहिला, कहू छू बारबार।
सुख भोगव ससार ना, पछे लीजो सजम-भार ॥वछ०॥

दोहा

१— कुवर कहे माता सुणो, तुम्हे कह्यो ते सत्त।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त॥

२— अथिर ससार नी साहिबी, जाता न लागे बार।
आज्ञा दे गजो थई, होसू शुद्ध अणगार॥

३— उत्तर प्रत्युत्तर किया घणा, बाप बेटा ने माय।
सूत्र माहे विस्तार छे, दीजो चतुर लगाय॥

४— माता मन मा जाणियो, राख्यो न रहे कुमार।
दीक्षा ए लेसी सही, इण मा फेर न फार॥

ढाल ८

राग—सहेल्यो ए आंबो मोरियो

१— अनुमति देवे माय रोवती, तुज ने थावो कल्याणो रे।
सफल थावो तुम आसडी, सजम चढज्यो परिणामो रे॥

२— महोच्छव जमाली नी परे करि मोटे मडाणो रे।
शोविरा मा बमाग ने, दामे जे जे वाणो रे ॥अनु०॥

३— [illegible] चित्त मझारो रे।
[illegible] साथे बहु परिवारो रे ॥अनु०॥

४— [illegible] मामी ! माहरो पूनो जी।
[illegible] जी ॥अनु०॥

५ [illegible] जी।
[illegible] जी ॥अनु०॥

[illegible] जी।
[illegible] जी ॥अनु०॥

[illegible] जी।
[illegible] ॥अनु०॥

८— तब कुंवर कहे प्रणमी करी, तारो मोने कृपालो जी।
तब गुरु व्रत उचराविया, थया छकाया ना दयालो जी ॥अनु०॥

९— सूरत देख कुंवर तणी, ऊठी मोह नी झालो जी।
प्रेम तणे वश मायडी, विलवे सा असरालो जी ॥अनु०॥

१०— ठलक ठलक आसू पडे, जाणें तूट्यो'मोत्या रो हारो जी।
कुंवर कने माता आय ने, भाखे वचन उदारो जी ॥अनु०॥

११— सिंह नी परे व्रत आदरी, पालो सिंहज जेमो रे।
करणी कीजे रे जाया निर्मली, लीजे शिवपुर खेमो रे ॥अनु०॥

दोहा

१— इम सिखावण देई करी, आया जिण दिश जाय।
कुंवर खदक दीक्षा ग्रही, मन मा हर्षित थाय ॥

ढाल ५

राग—मुनीसर जै जै गुणभडार

१— खदक सयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार।
निज आतम ने तारवा जी, पाले निरतिचार ॥

२— मुनीसर घन घन तुम अणगार।
नाम लिया पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ॥मुनी०॥

३— पाचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कषाय।
पाच समिति तीन गुप्तिने जी, राखे रूडी ऋषि-राय ॥मुनी०॥

४— सयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीधा धार।
जिनकल्पी पणे आदर्यो जी, एकल-पण अणगार ॥मुनी०॥

५— मलिया सुदरी कहे रायने जी, ए नानडियो जी बाल।
सिंहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ॥मुनी०॥

६— पाच से जोध बुलायने जी, दिया कुंवर ने जी लार।
साधु ने खबर काई नही जी, माथे वहे सिरदार ॥मुनी०॥

७— सावत्थी नगरी सू चालिया जी, कुंती नगरी जी जाय।
नगरी बहनोई तणी जी, शक न राखी काय ॥मुनी०॥

१२— ए परीसा सहणा दोहिला, कहू छू बारबार।
सुख भोगव ससार ना, पछे लीजो सजम-भार ॥वछ०॥

दोहा

१— कुवर कहे माता सुणो, तुम्हे कह्यो ते सत्त।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त ॥

२— अथिर ससार नी साहिबी, जाता न लागे बार।
आज्ञा दे राजी थई, होसू शुद्ध अणगार ॥

३— उत्तर प्रत्युत्तर किया घणा, बाप बेटा ने माय।
सूत्र माहे विस्तार छे, दीजो चतुर लगाय ॥

४— माता मन मा जाणियो, राख्यो न रहे कुमार।
दीक्षा ए लेसी सही, इण मा फेर न फार ॥

ढाल ४

राग—सहेल्यां ए आबो मोरियो

१— अनुमति देवे माय रोवती, तुज ने थावो कल्याणो रे।
सफल थावो तुम आसडी, सजम चढज्यो परिणामो रे ॥

२— महोच्छव जमाली नी परे, करि मोटे मडाणो रे।
शीविका मा वेसाण ने, दाखे जे जे वाणो रे ॥अनु०॥

३— हिवे कुवर तणा वाछित फल्या, हरख्यो चित्त मझारो रे।
आव्या जिहा मुनिवर अछे, साथे बहु परिवारो रे ॥अनु०॥

४— इष्ट ने कात बाल्हो हुँतो, सामी ! माहरो पूनो जी।
डरियो जनम मरण सू, करसी करणी करतूतो जी ॥अनु०॥

५— मलयासुन्दरी' कहे मुनि भणी अरज करु कर जोडी जी।
जालवजो रूडी परे सूपी कलेजा नी कोरो जी ॥अनु०॥

६— तप करता ने वार जो, भूख नी करजो सारो जी।
दुख जमवारे जाण्यो नही, सतगुरु ने अवतारो जी ॥अनु०॥

७— माहरे आयी पोथी हुँती, दीधी तमारे हाथो जो।
जिम जाणो तिम राख जो, व्हालो माहरो आथो जी ॥अनु०॥

८— तब कुवर कहे प्रणमी करी, तारो मोने कृपालो जी ।
तब गुरु व्रत उचराविया, थया छकाया ना दयालो जी ॥अनु०॥

६— सूरत देख कुवर तणी, ऊठी मोह नी झालो जी ।
प्रेम तणे वश मायडी, विलवे सा असरालो जी ॥अनु०॥

१०— ठलक ठलक आसू पडे, जाणे तूट्यो मोत्या रो हारो जी ।
कुवर कने माता आय ने, भाखे वचन उदारो जी ॥अनु०॥

११— सिह नी परे व्रत आदरी, पालो सिहज जेमो रे ।
करणी कीजे रे जाया निर्मली, लीजे शिवपुर खेमो रे ॥अनु०॥

दोहा

१— इम सिखावण देई करी, आया जिण दिश जाय ।
कुवर खदक दीक्षा ग्रही, मन मा हर्षित थाय ॥

ढाल ५

राग—मुनीसर जै जै गुणभडार

१— खदक सयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार ।
निज आतम ने तारवा जी, पाले निरतिचार ॥

२— मुनीसर धन धन तुम अणगार ।
नाम लिया पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ॥मुनी०॥

३— पाचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कषाय ।
पाच समिति तीन गुप्तिने जी राखे रूडी ऋषि-राय ॥मुनी०॥

४— सयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीधा धार ।
जिनकल्पी पणे आदर्यो जी, एकल-पण अणगार ॥मुनी०॥

५— मलिया सुदरी कहे रायने जी, ए नानडियो जी बाल ।
सिहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ॥मुनी०॥

६— पाच से जोध बुलायने जी, दिया कुवर ने जी लार ।
साधु ने खबर काई नही जी, माथे वहे सिरदार ॥मुनी०॥

७— सावत्थी नगरी सू चालिया जी, कुती नगरी जी जाय ।
नगरी बहनोई तणी जी, शक न राखी काय ॥मुनी०॥

८— पाचमी ढाल मां एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम।
माग़े निरणो साभलो जी, सहे परीसो केम ॥मनी०॥

दोहा

१— पाचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज।
वलो वलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज।

२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम।
एक मना थई साभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम॥

ढाल ६ राग—आवाडभूत अणगार

१— तिण अवसर मुनिराय,
कु'ती नगरी के मांय, सुकोमल साध।
विरहण विरिया पागुर्या ए॥

२— आवे लूहा – जाल,
दाझे पग सुकुमाल, सुकोमल साध।
तीजा पोहर नी गोचरी ए॥

३— झोली पातरा हाथ,
पसीने भीनो गात, सुकोमल साध॥
दो पहरां रे तावडे ए॥

४— निरमोही निरमाय,
ईर्या जोवता जाय, सुकोमल साध।
पडे तणी परे गोचरी ए॥

५ सुधाता त्रासत नाहि,
धीरज धरे मन माहि सुकोमल साध।
दमवर नी परे मालतो ए॥

६— राम तणी फिर वार,
तोल पासा सार, स
म्हारो सबे मु

७— पड़िया राणी री फेट,
सदक महलां हेट, सुकोमल साध।
एसो हुतो मुज वधवो ए॥

८— बीता आय गयो पीर,
नेणा मे छूटो नीर, सुकोमल साध।
विरह व्याप्यो ने चिंता थई ए॥

९— राजा साह्मो जोय,
आ राणी इम किम रोय, सुकोमल साध।
सुख मांहे दुख किम हुवो ए॥

१०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो धेख, सुकोमल साध।
एह कर्म मोडे किया ए॥

११— राणी हुंती सुख माय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध।
खबर हमे मोडा तणी ए॥

१२— राजा नफर बुलाय,
जावो थे वेगा धाय, सुकोमल साध।
इण मोडाने पकडो जायने ए॥

१३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वैर, सुकोमल साध।
पाछलो भव काचर तणो ए।

१४— माठी विचारी मन माय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध।
त्वचा उतारो देहनी ए॥

१५— मति करजो काई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध।
सगली खाल उतारजो ए॥

१६— नफर सुणी इम वाण,
कर लीघी प्रमाण, सुकोमल साध।
अजाण थका जायने ए॥

८— पाचमी ढाल मा एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम।
आगे निरणो साभलो जी, सहे परीसो केम ।।मनी०।।

दोहा

१— पाचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज।
वलो वलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज।

२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम।
एक मना थई साभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम।।

ढाल ६

राग—आषाढ़भूत अणगार

१— तिण अवसर मुनिराय,
कुंती नगरी के माय, सुकोमल साध।
बिरहण विरिया पागुर्या ए।।

२— वाजे लूहा - जाल,
दाझे पग सुकुमाल, सुकोमल साध।
तीजा पोहर नो गोचरी ए।।

३— झोली पातरा हाथ,
पसीने भीनो गात, सुकोमल साध।।
दो पहरा रे तावडे ए।।

४— निरमोही निरमाय,
ईर्या जोवता जाय, सुकोमल साध।
गऊ तणी परे गोचरी ए।।

५— गुसता उतावल नांहि,
धीरज धरे मन माहि, सुकोमल साध।
गयवर नो परे मालतो ए।।

६— राय राणी तिण वार,
रमेज पासा सार, सुकोमल साध।
महलां तने मुनि धाविया ए।।

७— पडिया राणी री फेंट,
खदक महलां हेट, सुकोमल साध ।
एसो हुतो मुज बधवो ए ॥

८— चीता आय गयो पीर,
नेणा मे छूटो नीर, सुकोमल साध ।
विरह व्याप्यो ने चिंता थई ए ॥

९— राजा साहमो जोय,
आ राणी इम किम रोय, सुकोमल साध ।
सुख मांहि दुख किम हुवो ए ॥

१०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो धेख, सुकोमल साध ।
एह कर्म मोडे किया ए ॥

११— राणी हुंती सुख माय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध ।
खबर हमे मोडा तणी ए ॥

१२— राजा नफर बुलाय,
जावो थे वेगा धाय, सुकोमल साध ।
इण मोडाने पकडो जायने ए ॥

१३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वैर, सुकोमल साध ।
पाछलो भव काचर तणो ए ।

१४— माठी विचारी मन माय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारो देहनी ए ॥

१५— मति करजो काई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध ।
सगली खाल उतारजो ए ॥

१६— नफर सुणी इम वाण,
कर लीधी प्रमाण, सुकोमल साध ।
अजाण थका जायने ए ॥

८— पाचमी ढाल मा एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम।
आगे निरणो साभलो जी, सहे परीसो केम ।।मनी०।।

दोहा

१— पाचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज।
वलो वलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज।

२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम।
एक मना थई साभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम।।

ढाल ६

राग—आषाढ़भूत अणगार

१— तिण अवसर मुनिराय,
कुती नगरी के माय, सुकोमल साध।
विरहण विरिया पागुर्या ए।।

२— बाजे लूहा – जाल,
दाझे पग सुकुमाल, सुकोमल साध।
तीजा पोहर नी गोचरी ए।।

३— झोली पातरा हाथ,
पसीने भीनो गात, सुकोमल साध।।
दो पहरा रे तावडे ए।।

४— निरमोही निरमाय,
ईर्या जोवता जाय, सुकोमल साध।
गऊ तणी परे गोचरी ए।।

५— सुसता उतावल नाहि,
धीरज धरे मन माहि, सुकोमल साध।
गयवर नी परे मालतो ए।।

६— राय राणी तिण वार,
रमेज पासा सार, सुकोमल साध।
महलां तले मुनि आविया ए।।

२७— सह्यो परीसो थोडी वार,
कर्मा रो कियो अपहार सुकोमल साध।
अविचल सुख मा भिन रह्या ए ।।

२८— ऋषि 'जयमलजी' कहे इम वाय,
प्रणमू ते ऋषि ना पाय, सुकोमल साध।
सासता सुख पाया मुगति गया ए।।

दोहा

१— कुंती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार।
देखो राय मराविया, विना गुने अणगार ।।

२— लोग हुवा वहु आकुला, पिण जोर न चाले कोय।
मुनि ने मुगति सिधावणो, वैर पुराणो न होय ।।

३— किम बूझे पाच से सुभट, वले राणी ने राय।
वैराग पामे किण विधे, ते सुणजो चित लाय ।।

ढाल ७

राग— पुण्य सदा फले

१— अजेय साध आयो नही रे,
जोवे पाच से वाट।
भोलावण दीधी रायजी रे,
खिण खिण करे उचाटो रे ।।

२— घन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे।
मन - वछित फले
सीझे सगला कामो रे।।घन०।।

३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे
तव परमारथ लाधो रे ।।घन०।।

१७— पकड्या मुनि ना हाथ,
थाने मसाण भोम ले जात, सुकोमल साध।
नफर कहे कर जोडने ए।

१८— कहे मोनै तो खबर न काय,
फुरमायो महाराय, सुकोमल साध।
खाल उतारो देहनी ए।।

१९— तिणसू माहरो नही दोष,
मुनि! मति करजो रोष, सुकोमल साध।
डरप्या, रखे बाल भस्मी करे ए।।

२०— कठण आण बण्यो काम,
तोही न कह्यो आपणो नाम, सुकोमल साध।
सगपण कोई दाख्यो नही ए।।

२१— मसाण भोमका ने माय,
काया दीवी वोसिराय, सुकोमल साध।
आहार च्यारू त्यागन किया ए।।

२२— राख्या समता—भाव,
सयम ऊपर चाव, सुकोमल साध।
मन-कर ने चलिया नही ए।।

२३— तीखी पाछणा नी धार,
मस्तक ऊपर फार, सुकोमल साध।
त्वचा उतारी देहनी ए।।

२४— पगां सुधी खाल,
तोही रह्या सयम मा लाल, सुकोमल साध।
नाकेई सल घाल्यो नही ए।।

२५— रह्या रूडे ध्यान,
पाम्या केवल ज्ञान, सुकोमल साध।
कर्म खपाय मुगते गया ए।।

२६— केवल महिमा होय,
धन धन करे सह कोय, सुकोमल साध।
जिनमारग कियो दीपतो ए।।

२७— सह्यो परीसो थोडी वार,
कर्मा रो कियो अपहार, सुकोमल साध।
अविचल सुख मा भिल रह्या ए॥

२८— ऋषि 'जयमलजी' कहे इम वाय,
प्रणमू ते ऋषि ना पाय, सुकोमल साध।
सासता सुख पाया मुगति गया ए॥

दोहा

१— कुंती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार।
देखो राय मरावियो, विना गुने अणगार॥

२— लोग हुवा वहु आकुला, पिण जोर न चाले कोय।
मुनि ने मुगति सिधावणो, वैर पुराणो न होय॥

३— किम वूझे पाच से सुभट, वले राणी ने राय।
वैराग पामे किण विधे, ते सुणजो चित लाय॥

ढाल ७

राग— पुण्य सदा फले

१— अजेय साध आयो नही रे,
जोवे पाच से वाट।
भोलावण दीधी रायजी रे,
खिण खिण करे उचाटो रे॥

२— धन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे।
मन – वछित फले
सीझे सगला कामो रे॥धन०॥

३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे,
तव परमारथ लाधो रे॥धन०॥

११— जिम जिम भाई साभरे रे,
आणे राय पर धेस।
वीरा वेगो! आवजे रे,
हूँ लेऊ निजरा देखो रे ॥धन०॥

१२— कुण वीरो कुण वहनडी रे,
जोयजो मोहरी वात।
इण भव मुगति सिधावसी रे,
एम करे विलापातो रे ॥धन०॥

१३— इम जाणी ने मानवी रे,
मोह म करजो कोय।
मोह थकी दुख ऊपजे रे,
कर्म वधे इम होयो रे ॥धन०॥

१४— सालो सगो नही जाणियो रे,
तपसी मोटो जी साध।
'पुरुष-सिह' राजा झुरे रे,
वहुत लागो अपराधो रे ॥धन०॥

१५— पाच सो जोध इम चितवे रे,
मार्यो गयो मुनिराय।
'कनककेतु' राजा कने रे,
कासु कहिसा जायो रे ॥धन०॥

१६— चारित्र लेसू चूपसू रे,
किसो श्वास-विश्वास।
काल किताइक जीवणो रे,
राखा मुगति नी आसो रे ॥धन०॥

१७— मतो करी सयम लियो रे,
पाच से सिरदार।
चोखो पाली सुरगति लही रे,
करसी खेवो पारो रे ॥धन०॥

दोहा

१— राजा मन मे चितवे, एहवो खून न कोय।
साध-मरण मन ऊपनो, ए सासो छे मोय ॥

२— एम विचारी वादण गयो, साध भणी कहे एम।
विना गुन्हे मोटो मुनि, म्हे मार्यो कहो केम ॥

ढाल ८ राग—वीर सुणो मोरी वीनती

१— साध कहे राय सामलो,
तू तो हुंतो रे काचर तणो जीव।
ए खदक हुतो मानवी,
चतुराई रे हुती अतीव ॥

२— कर्म न छोडे केह ने,
विण भुगत्या रे छूटको नही होय।
इम जाणी उत्तम नरा,
तमे बाधो रे कर्म मति कोय ॥कर्म०॥

३— कुण साह ने कुण चोरटो,
भिखारी हो कुण राणो ने राव।
कुण धर्मी पापी तिके रे,
भला भूडा रे भू-पे सहू भाव ॥कर्म०॥

४— कितरेक भव इण खदके,
उतारी हो काचर तणी खोल।
विचलो गिर काढी लियो,
सरायो हो घणी करी किलोल ॥कर्म०॥

५— पछे ही पिछताणो नहीं,
वध पडियो हो तिण रे तिण ठाय।
तिण कर्म करि साध री,
स खाल हो उतारी राय ॥कर्म०॥

६— वचन सुणी राजा हरखियो,
करमां री हो घणी विरामी वात।

राय राणी दोनू कहे
घर माहे हो घडी अफली जान ॥कर्म०॥

७— पुरुषसिंह राजा तिहा,
सुनदा हो राणी सुविनीत।
राज छोडी चरित्र लियो,
आराधो हो दोनू रूडी रीत ॥कर्म०॥

८— कम खपाई मुगते गया,
वधारी हो जुग धर्म री सोय।
अजर अमर सुख सासता,
ऐसी करणी हो की जो सहू कोय ॥कर्म०॥

९— अठारे सो इग्यारोतडे,
चैत मासे हो सुद सातम जोय।
'लाडणू' रिख 'जयमलजी' कहे,
विपरीत रो मिच्छामि दुक्कड मोय ॥

५— रोही तो डडाकार।
घणी भगी ने भार।
सुणो ऋषभजी,
मिनख रो मुख दीसे नही ए।

६— दोनु ही मुनिराय,
बेठा तरुवर छाय।
सुणो ऋषभजी,
चिन्ता कर रह्या साधुजी ए,

दोहा

१— इतरे आया गवालिया, मुनिवर बेठा देख।
आई ने ऊभा रह्या, पूछे बात विशेष।।

२— वलता मुनिवर इम कहे, काचो न लेवा नीर।
विघ बताई आपणी, मोटा साहस धीर।।

ढाल २

राग—साथ सदा इसडा

१— वलता बोले गवालिया,
सामी सुणो अरदास हो।
मुनिवर,
खारो पाणी म्हारे गावरो।
माहे भेली छास हो,
धन करणी मुनिराज री।

२— मुनिवर माड्यो पातरो,
पाणी ले पीधो तिण वार हो।
मुनिवर,
साधुजी साता पामिया
तिरखा दीधि निवार हो।।धन०।।

३— ऋषभजी दीधी धर्म देसना,
भिन्न भिन्न बहु विस्तार हो।
मुनिवर,

सुणने छहुं गोवालिया,
लीधो संजम भार हो ॥धन०॥

४— चोखो चारित्र पालने,
पहुता देव विमाण हो।
मुनिवर,
तिहा सू चवने उपजे,
ज्यारो सणो वखाण हो ॥धन०॥

दोहा

१— 'इषुकार' नगर ने विषे, 'इषुकार' हुवो राय।
दूजी देवी कमलावती, चालि सुतर के माय॥

२— 'भृगु' पुरोहित तेहने, 'जसा' पुरोहितानी जाण।
च्यार जीव तो ए थया, दोय रह्या देव विमाण॥

३— अवधिज्ञान प्रयु जियो, देण मुगतरा सूत।
आपे चव किहा ऊपजा, थासा 'भृगु' रा पूत॥

४— दोय देवता देवलोक में, जाण्यो चवण विचार।
पहिलां आया प्रतिबोधवा 'भृगु' पुरोहित परिवार॥

ढाल ३

राग—मारी मो नेह निवारजो

१— ए तो साधू नो रूप बणावियो,
दोनू देवता तिण वार रे लाला।
भृगु रे घरे आवियां,
करवा शुद्ध करार रे लाला॥
घर करणी मुनिराज री॥

२— मुसद्दे विराजे सुरपति,
मुनिवर थासे वेत रे लाला।
मोपो विराजे मारा में,
मापे मोप्पा वेग रे सामा॥

३— झोली पातरा हाथ मे,
चाले इर्या मार्ग सोघ रे लाला।
श्रमा पिया पट् कायना,
घणा जीवा ने प्रतिबोध रे लाला ॥

४— मुलकता दोनु जणा,
भृगु आवता दीठ रे लाला ॥
ऊठी ने वाद्यो दपती,
तन मन मे लागा मीठ रे लाला ॥

५— अमी समाणि वाणी वागरि,
शुद्ध दियो उपदेश रे लाला।
ए ससार असार छै,
राखो दयाधर्म रेस रे लाला ॥

६— वाणी सुण मुनिराज री,
भृगु आदरिया व्रत बारे रे लाला।
पुत्र तणी तृष्णा घणी,
पूछे दपति तिण वार रे लाला ॥

७— ऋषिजी कहे पुत्र दो ए हुसी,
पिण ये मानो एक वात रे लाला।
व्रत लेसी वाला पणे,
जो नवि करो व्याघात रे लाला ॥

८— आदरसी तो आदरे,
पिण कोई न कहसि अऊत रे लाला।
काम सरचा दुख वीसरे,
ते सुणज्यो विरतत रे लाला ॥

दोहा

१— सुरलोक थी चवकरि, 'जसा' उदर लियो अवतार।
सवा नव मास पूरा हुआ, जनम्या दोनु कुमार ॥

२— पुन्यवन्त पूरा रूप मे, नदन नीका बाल।
भृगु मन मे चितवे, बाधू पाणी पेली पाल ॥

३— वालक घर मासू निकले, भृगु लावे घेर।
नगरी मे महिमा घणी, साधा रो पग फेर॥
४— साधा री सगत हुवा, पछे कारि न लागे काय।
दीक्षा थी डरतो थको, भृगु करे उपाय॥

ढाल ४ राग—मारू

१— परिहर्यो नगर वीहतेरे
वास कियो कुल गाम।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया सग म जायज्यो रे।
२— आदू वेर छै ब्राह्मण व्रतिया रे
मूस मजारी जेम।
चले मगपण साकडो रे,
दूध रुद्र मेल तेम—के ॥जाया०॥
३— ओलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पास।
वेगा घर आवजो दोडने रे,
रखे करी, वेसास—के ॥जाया०॥
४— उत्तम छै ओ प्राणियो रे,
घणा जिवारो सेण।
मोह रो घाल्यो भृग पहे रे,
घोले खोटा वेण—मे ॥जाया०॥
५— रग रगीला पातरा रे,
हाथ मे चितरग सोट।
मूडे राखे मुहपती रे,
मन मे घणी छै खोट—रे ॥जाया०॥
६— उतावला चाले नहीं रे,
हुपसे मेसे पाय।
जता करे पटकाय [illegible] रे,
दया [illegible] [illegible] गोय—रे ॥[illegible]॥

७— धरती सामो जोयने रे,
चाले चित लगाय।
ओघो राखे साख मे रे,
जिण तिण सू लजाय के ॥जाया०॥

८— मेला पहरे कापडा रे,
रेवे पर घर वाट।
जो देखो थे आवता रे,
तो छोड दीजो ऊभा वाट के ॥जाया०॥

९— दीसता दीसे एहवारे,
मुनिवर केरे वेस।
बालक पराया भोलवी रे,
ले जावे परदेश के ॥जाया०॥

१०— धर्म कथा धुन सू कहे रे,
विध सू करे वखाण।
चतुर तणा मन मोहले रे,
लोहे चमके पाखाण के ॥जाया०॥

११— प्रीत लगावे एहवी रे,
दोडया केडे जाय।
ए करे सू गया थका रे,
मोह गेहलडा थाय के ॥जाया०॥

१२— राखे छुरी ने पासणा रे,
पातरा केरे माय।
नाना बालक भोलवी रे,
कालजो काढी ने खाय के ॥जाया०॥

१३— विहार करता आविया रे,
साधू तिण हिज गाम।
भूला चूका पुन जोग सू रे,
जोग मिलियो छे ताम के ॥जाया०॥

१४— एक समय रमता थका रे,
वारे चाल्या वाल।

३— बालक घर मासू निकले, भृगु लावे घेर।
नगरी मे महिमा घणी, साधा रो पग फेर॥
४— साधा री सगत हुवा, पछे कारि न लागे काय।
दीक्षा थी डरतो थको, भृगु करे उपाय॥

ढाल ४

राग—माँड

१— परिहर्यो नगर वीहतेरे
वास कियो कुल गाम।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया सग म जायज्यो रे।
२— आदु वेर छं आह्मण व्रतिया रे
मूस मजारी जेम।
बले मगपण साकडो रे,
दूध रुद्र मेल तेम—के ॥जाया०॥
३— ओलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पास।
वेगा घर आवजो दोडने रे,
रखे करी, बेसास—के ॥जाया०॥
४— उत्तम छं ओ प्राणियो रे,
घणा जिवारो सेण।
मोह रो घाल्यो भृग कहे रे,
वोले खोटा वेण—के ॥जाया०॥
५— रग रगीला पातरा रे,
हाथ मे चितरग लोट।
मू डे राखे मुहपती रे,
मन मे घणी छं खोट—के ॥जाया०॥
६— उतावला धाले नही रे,
हवले मेले पाय।
जतन करे पटकाय ना रे,
दया घणी दिल गांय—के ॥जाया०॥

७— धरती सामो जोयने रे,
चाले चित लगाय।
ओघो राखे खाख मे रे,
जिण तिण सू लजाय के ॥जाया०॥

८— मैला पहरे कापडा रे,
रेवे पर घर वाट।
जो देखो थे आवता रे,
तो छोड दीजो ऊभा वाट के ॥जाया०॥

९— दीसता दीसे एहवा रे,
मुनिवर केरे वेस।
बालक पराया भोलवी रे,
ले जावे परदेश के ॥जाया०॥

१०— धर्म कथा धुन सू कहे रे,
विध सू करे वखाण।
चतुर तणा मन मोहले रे,
लोहे चमके पाखाण के ॥जाया०॥

११— प्रीत लगावे एहवी रे,
दोडया केडे जाय।
ए करे सू गया थका रे,
मोह गेहलडा थाय के ॥जाया०॥

१२— राखे छुरी ने पासणा रे,
पातरा केरे माय।
नाना बालक भोलवी रे,
कालजो काढी ने खाय के ॥जाया०॥

१३— विहार करता आविया रे,
साधू तिण हिज गाम।
भूला चूका पुन जोग सू रे,
जोग मिलियो छे ताम के ॥जाया०॥

१४— एक समय रमता थका रे,
वारे चाल्या बाल।

मुनिवर देख्या आवता रे,
ऊठ्या सुरत सभाल के ॥जाया०॥

१५— दूर थकी मुनिवर देखने रे,
डर्या दोनू बाल।
तात कह्या जिके आविया रे,
अब नेडो आयो छे काल के,
बधविया ए कुण आयारे।

१६— दोड चढ्या तरू ऊपरे रे,
हिवडे न मावे सास।
केडे आपा के आविया रे,
हमे किसी जीवण की आस के ॥बधविया०॥

१७— घड घड लागा धूजवा रे,
कपण लागी देह।
साकडे आपे आविया रे,
किणविध जासा गेह के ॥बधविया०॥

१८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवा रा जतन करत।
दयावत दीसे खरा रे,
मन मे एम धरत के ॥बधविया०।

१६— कीडो ने दूहवे नही रे,
वालक मारे केम।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म सू प्रेम के ॥बधविया०॥

२०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले भाई दोन वान।
उतरता द्रुम चितवे रे,
रसे पड नीलो पान के ॥बधविया०॥

२१— बधव ए भल आविया रे,
सरिया वांछित काम।

जाति-समरण ज्ञान थी रे,
आयो वेराग वेऊ ताम के ।।वधविया०।।

२२— हलवे हलवे ऊत्तर्या रे,
वाद्या मुनि ना पाय ।
मात पिता ने पूछने रे,
म्हे लेसा सजम सुखदाय के ।।वधविया०।।

२३— जिम सुख हुवे तिम करो रे,
खिण खिण छीजे प्राव ।
थोड़ा मे नफो घणो रे,
तमे उत्तम देखो भाव के ।।वधविया।।

ढाल ५ राग—वीरजिणद समोसर्या ए

१— आय कहे माय वाप ने रे,
मैं दीठो अथिर ससार ।
बीहना जनम मरण सू रे,
मैं लेसा सजम भार ।।
पिताजी अनुमति दीजै आज ।।

२— व्रत विना एको घडी रे,
खिण लाखीणी जाय ।
सबल पडे छे आतरो रे,
थे अनुमत दो हित लाय ।।पिताजी०।।

३— पुरोहित बेटा ने इम कहे रे,
वेद मे इसो रे विचार ।
पुत्र विना गति नही हुवे रे,
तमे सुख विलसो ससार ।।
जाया तुज विन घडी रे छ मास ।।

४— भडसुरी सद्गति लहे रे,
करणी निरफल ना जाय ।
'शुकदेव' प्रमुख सिद्ध हुवा रे,
वेद ई वरता थाय रे ।।जाया०।।

मुनिवर देख्या आवता रे,
ऊठ्या सुरत सभाल के ।।जाया०।।

१५— दूर थकी मुनिवर देखने रे,
डर्या दोनू बाल ।
तात कह्या जिके आविया रे,
अब नेडो आयो छे काल के,
बधविया ए कुण आयारे ।

१६— दोड चढ्या तरू ऊपरे रे,
हिवडे न मावे सास ।
केडे आपा के आविया रे,
हमे किसी जीवरण की आस के ।।बधविया०।।

१७— घड घड लागा धूजवा रे,
कपरण लागी देह ।
साकडे आपे आविया रे,
किरणविध जासा गेह के ।।बधविया०।।

१८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवा रा जतन करत ।
दयावत दीसे खरा रे,
मन मे एम धरत के ।।बधविया० ।

१९— कीडी ने दूहवे नही रे,
बालक मारे केम ।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म सू प्रेम के ।।बधविया०।।

२०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले भाई दोन वान ।
उतरता इम चितवे रे,
रखे पड नीलो पान के ।।बधविया०

२१— बधव ए भल आविया रे,
सरिया वाछित काम ।

दोहा

१— च्यारे सजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी खेवो पार॥
२— ऊभा घर तज नीसर्या, च्यारे चतुर सुजाण।
साभल नृप हुकम दियो, धन लावो सहु ताण॥
३— पेला दान दियो सहु हाथ सू, वलि देखो धनसू हेज।
ताकीदी सू मगावियो, नहि करि काई जेज॥
४— खबर हुई राणी भणी, जरे कियो मन करूर।
भूपत ने हू पालसू, चटियो पोरस सूर॥

ढाल ६

राग—रग महल मे हो चोपड खेले

१— मेहला मे बैठी हो राणी कमलावती,
झीणी तो ऊडे मारग खेह।
जो वे तमासो हो 'इषुकार' नगर नो
कोतुक उपनो मनमे एह।
साभल हे दासी आज नगर मे
हलचल किम घणी ? ॥
२— के तो परधान हे दासी डड लीयो
के राजाजी लूटयो गाम।
के किणी रो हे गाडयो धन नीसर्यो,
गाडा रि हेडज ठामो ठाम ॥सा०॥
३— ना तो परधान हो राणीजी डड लीयो
न काई राजाजी लूटयो गाम।
भृगु पुरोहित रिध तज नीसर्यो
भूपत रे धन लावण रो काम ॥सा॥
४— साभल हो राणी, हुकम करो तो,
गाडो लाऊँ घेरने।
इहा तो कुमी नही काय,
इतरी साभल ने हो राणी,
माथो धूणीयो।
राजा ने धन री लागी फाय ॥सा०॥

५— लाला ! लिछमी-सुख भोगवो रे,
पूरव पुण्य पसाय ।
जोवन वय पाछी पड्या रे,
थे उत्तम चारित्रिवा थाय रे ॥जाया०॥

६— सगत हुवे न्हासण तणी रे,
जेहने मित्र हुवे काल ।
जे जाणे मरसू नही जी,
ते वाधे आगली पाल ॥जाया०॥

७— पुरोहित प्रतिवोध पामियो रे,
दीक्षा आईजी दाय ।
विघ्न करे ते ब्राह्मणी रे,
ते सुणज्यो चित्त लाय ॥जाया०॥

८— बालक ए व्रत आदरे रे,
आपे रे वा किस आस ।
उत्तम चारित्र आदराजी,
करा मुगत मे वास ॥
गोरीजी मैं लेस्या सजम भार ॥

६— बेटा जावे तो जाण दो जी,
आपा भोगवा लिछमी भडार ।
जूने हस जिम दोहिलो जी,
तिरणो भव जल पार ॥पतिजी मत०॥

१०— धोरी जिम धर्म धुरधराजी,
जु तिया आगेवाण ।
ज्यारे केडे जावसा जी,
मत करो खेंचाताण ॥ गोरी० ॥

११— प्रीतम पुत्र तिन रिघ तजी जी,
मुझने किसो घरवास ।
दीक्षा से व्रत आदरु जी,
हूँ जासू साधविया के पास ॥
पतिजी मल ल्यो सजम भार ॥

दोहा

१— च्यारे सजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी खेवो पार॥
२— ऊभा घर तज नीसर्या, च्यारे चतुर सुजाण।
साभल नृप हुकम दियो, धन लावो सहु ताण॥
३— पेला दान दियो मह हाथ सू , वलि देखो धनसू हेज।
ताकीदी सू मगावियो, नहि करि काई जेज॥
४— खबर हुई राणी भणी, जरे कियो मन करूर।
भूपत ने हू पालमू, चटियो पोरस सूर॥

ढाल ६

राग—रग महल मे हो चोपड खेले

१— मेहला मे बैठी हो राणी कमलावती,
झीणी तो ऊडे मारग खेह।
जो वे तमासो हो 'इषुकार' नगर नो
कोतुक उपनो मनमे एह।
साभल हे दासी आज नगर मे
हलचल किम घणी ? ॥
२— के तो परधान हे दासी डड लीयो
के राजाजी लूटयो गाम।
के किणी रो हे गाडयो धन नीसर्यो,
गाडा रि हेडज ठामो ठाम ॥सा०॥
३— ना तो परधान हो राणीजी डड लीयो
न काई राजाजी लूटयो गाम।
भृगु पुरोहित रिध तज नीसर्यो
भूपत रे धन लावण रो काम ॥सा॥
४— साभल हा राणी, हुकम करो तो
गाडो लाऊँ घेरने।
इहा तो कुमी नही काय,
इतरी साभल ने हो राणी,
माथो धूणीयो।
राजा ने धन री लागी फाय ॥सा०॥

५— साभल हे दासी राजा ने,
एहवी वाता जुगती नही।
मेहला सू उतरी हो,
राणी कमलावती ॥
आई छै ठेट हजूर,
वचन कहे छे हो, राजाजी आकारा।
जाणे पोरस चढियो सूर ॥सा०॥

६— साभल महाराजा ब्राह्मण छाडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो,
वाछा कुण करे ?
करे छे, कूतरो ने काग ॥सा०॥

७— काग ने कुत्ता सरीखा,
किम हुवो, नही प्रससव वा जोग।
भगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो
थे जाणो आसी म्हारे भाग ॥सा०॥

८— सकल्प कियो पाछो किम लीजिये,
सांभलजो महाराज।
दान दियो थे पेला हाथ सू,
पाछो लेता नही आवे लाज ॥सा०॥

६— जग सगला रो हो भेलो करी,
घाले थारा राज रे माय।
तो पण तृष्णा हो राजाजी पापणी,
कदे तृप्ति नही थाय ॥सा०॥

१०— एक दिन मरणो हो राजाजी यदातदा,
छोडो नी काम विशेष।
बीजो तो तारण जग मे को नहीं,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥सा०॥

११— इम साभलने हो इखुकार बोलियो,
तू भाखे नी वचन सभाल।
के तो राणी हे तो ने झोलो वाजियो,
के थे कीधी मतवाल ॥ सा० ॥

१२— साभल ? हे राणी राजा ने करडा न बोलिये,
नि सङ्क हुई जं नाय।
इसी वेरागण अजे तू दीसे नही,
तू बैठी छे राज के माय ॥ सा ॥

१३— ना तो महाराजा झोलो वाजियो,
ना कोई कीनी मतवाल।
भृगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
हूँ वरजण आई भूपाल ॥ सो ॥

१४— ऊतरने वाली तो दीसे नही,
इसडी आइ छं मतवाल।
हू पण घर छोडी ने नीसरू,
तमे चेतो हो भूपाल ॥ सा० ॥

१५— रत्न जडित हो राजाजी पिंजरो,
सुवो तो जाणे छे फद।
इसडी पण हू थारा राज मे,
रति न पाऊ आणद ॥ सा०॥

१६— स्नेह रूपिया ताता तोडने,
ओर बधन सू रहसू दूर।
विरक्त थईने सजम मैं ग्रहू,
थे भी पण होय जाओ सूर ॥ सा० ॥

१७— दव तो लागो छे राजाजी वन मधे,
हिरण ससादिक बले माय।
ऊला माला रो हो पखी देखने,
मन माहे हर्षित थाय ॥ सा० ॥

१८— इण दृष्टान्ते थे मूरख थका,
मुरझ रह्या भोग मझार

पहिला दुःख देखे पश चेते नही,
राज त्यागी लो सजम भार ॥ सा० ॥

१९— भोगव्या काम भोग छोडने,
वेहूँ भव हलका थाय।
वेउ सरीखा पखीया नी परे
विचरसा इच्छा आपणी दाय ॥ सा० ॥

२०— मेहल पिलगादिक अथिर छे,
सो तो आया आपणे हाथ।
आपे भोग माहे राची रह्या,
आप समझो पृथ्वीनाथ ॥ सा० ॥

२१— मास री बोटी हो पखीया नी परे,
मोह वस पखी पडे आय।
ज्यू आपे कामभोग छोड ने,
चारित्र लेसा चित लाय ॥ सा० ॥

२२— गद्ध पखी जिम इण जीव ने,
काम वधारे ससार।
साप जिम मोर थकी डरतो रहे,
जिम पाप सू सको इणवार ॥ सा० ॥

२३— हस्ती जिम वधन तोडने,
आपण वन मे सुखे जाय।
ज्यू कम बधन तोडी सजम गह्या,
होस्या ज्यू सुखी मुगत माय ॥ सा० ॥

२४— इम साभल ने इखुकार राजा चेतियो
छाडयो छे मोटो राज।
कायर न ए रिध तजणी दोहिली,
विषय छाडी सारू निज काज ॥ सा० ॥

२५— सनह सहित परिग्रहा छोडने
साचा एव समज जाण।
तपस्या मोटो सगना आदरी
घोरी जिम परागम माण ॥ सा० ॥

२६— छऊही अनुक्रमे प्रतिबोधिया,
साचा धर्म मे तप जप तत।
जनम-मरण रा भय थकी डरपिया,
दु सारो कियो छे अत ॥ सा० ॥

२७— मोह निवार्यो जिन शासन मधे,
पूरब सुभ कर्म भाय।
छउ ही जणा थोडा काल मे,
मुगत गया दु ख मुकाय ॥ सा० ॥

२८— साभल ने प्राणी सजम लियो,
सुख लेसी सासता सार।
राजा सहित राणी कमलावती,
भृगु पुरोहित ज सार ॥ सा० ॥

२६— ब्राह्मण रा दोनु ही बालका,
सगला पाम्या भव जल पार।
धन धन प्राणी छती रिध छिटकाय ने,
शिवपुर का सुख लिया सार ॥ सा० ॥

३०— सक्षेप माफक भाव ए कह्या,
सूत्र अनुसारे जोय।
अधिको ओछो रिख 'जयमलजी' कहे,
मिच्छामि दुक्कड मोय ॥ सा० ॥

३१— इम जाणी ने हो उत्तम मानवी,
छोडो काम ने भोग।
तप, जप, क्रिया निर्मल आदरो,
ज्यू मिटे भव भव रोग ॥ सा० ॥
धन धन प्राणी हो गुरु सेवा करे ॥

११— प्रभु गाम नगर पुर विचरिया, भव्य जीवा रे भाग जी।
मार्ग बतायो मोक्ष को, कियो उपकार अथाग जी ॥थें०॥

१२— साढा बारह बरसा लगे, ऊपर आधो मास जी।
छद्मस्थ रह्या प्रभु एटला, पछे केवल ज्ञान प्रकाश जी ॥थें०॥

१३— वर्ष बयालीस पालीयो, सयम साहस धीर जी।
तीस वर्ष घर मा रह्या, मोक्षदायक महावीर जी ॥थें०॥

१४— पावापुरी मे पधारिया नर नारी हुआ हुल्लास जी।
"ऋषि रायचद" इम विनवे, हू आयो प्रभुजी ने पास जी ॥थें०॥
हू थारा चरण रो दास जी ॥

१५— सवत् अठारे गुण चालीस मे, नागौर शहर चौमास जी।
पुज्य जैमल जी के प्रसाद थी, मैं ए करी अरदास जी ॥थें०॥

ढाल २

राग—काची कलियाँ

१—शासन नायक वीर जिनद, तीरथनाथ जाणे पुनमचद।
चरणों लागे ज्यारे चौंसठ इन्द्र, सेवा करे ज्यारी सुरनर वृन्द ॥

थें अबको चौमासो स्वामी जी अठे करो जी, अठे करो ३ जी।
चरम चौमासो स्वामी जी अठे करो जी ॥टेर॥

२— हस्तिपाल राजा विनवे कर जोड,
पूरो प्रभुजी म्हारा मनडारी कोड।
शीश नमाय ऊभो जोडी जी हाथ,
करुणा सागर वाजो कृपा जी नाथ ॥

३— राय नी राणी विनवे राजलोक,
पुण्य जोगे मिल्यो सेवानो सजोग।
मन वाछित सहु मिलियाजी काज ॥
थें मया करी सामु जोवो जिनराज ॥

४— श्रावक श्राविका कई नरनार,
मिली विनती करे बारम्बार।
पावापुरी म पधार्या वीतराग,
प्रगटी पुण्याई म्हारा मोटाजी भाग ॥थें०॥

"ऋषि रायचद" विनवे जोडी हाथ,
थें करुणा सागर वाजो कृपाजी नाथ ॥थें०॥

१३— नागोर शहर मे कियो जी चौमास,
दिज्यो प्रभुजी माने मुक्ति नो वास,
हूँ सेवक तुम साहिब स्वाम ।
अवर देवासु म्हारें नही कोई काम ॥थें॥

ढाल ३

१— शासन नायक श्री महावीर,
तीरथ नाथ त्रिभुवन धणी ।
पावापुरी मे कियो चरम चौमास,
हुई मोक्षदायक री महिमा घणी ॥गौ०॥
गौतम ने मेल दियो महावीर, देवशर्मा प्रतिबोधवा ॥टेर॥

२— उत्तराध्ययन रा अध्ययन छत्तीस,
कार्तिक वदी अमावस्ये कह्या ।
एक सौ ने वली दश अध्ययन,
सूत्र विपाक तणा लह्या ॥गौ०॥

३— पोसा कीधा श्री वीर जी रे पास,
देश अठाराना राजीया ।
नव मल्ली ने नवलच्छी जी राय,
वीर ना भगता जी वाजीया ॥गौ०॥

४— प्रभु शासन ना सिरदार,
सर्व सघ ने सतोप मे ।
सोले प्रहर लग देशना दीध,
पछे वीर विराज्या मोक्ष मे ॥गौ०॥

५— तीन वप ने साढा आठ मास,
चौथा आरा ना वाकी रह्या ।
दिन दोय तणो सथार,
मौन रही मुगते गया ॥गौ०॥

ढाल ४

राग—चढो चढो लाडा वार म लावो

गुराजी थें मने गोडे न राख्यो, मुगति जावण रो नाम न दाख्यो ॥टेर

१— श्री महावीर पहोच्या निर्वाणी।
गौतम स्वामी ए वात ज जाणी ॥गु०॥

२— हू सगला पहेला हूवो थारो चेलो।
इण अवसर आघो किम मेल्यो ॥गु०॥

३— प्रभु तुम चरणे म्हारो चित्त लागो।
आप पहुता निर्वाण मने मेल दियो आगो ॥गु०॥

४— मने आपरा दर्शन लागतो प्यारो।
आप पहोंत्या निर्वाण मने मेल दियो न्यारो ॥गु०॥

५— आप तो मुझ म अन्तर राख्यो।
पिण मैं म्हारा मन रो दर्द न दाख्यो ॥गु०॥

६— हू आडो माडी नहीं झालतो पल्लो।
पण शावास काम कियो तुम भल्लो ॥गु०॥

७— हूं तुमने अन्तराय न देतो।
मुगती मे जागा व्हेंची नहीं लेतो ॥गु०॥

८— हू सकडाई न करतो काई।
आप साथे हूँ मोक्ष मे आई ॥गु०॥

९— अब हूँ पूछा करसु किण आगे।
प्रभु म्हारो मन एक थासु ही लागे ॥गु०॥

१०— म्हारो सासो कहो कुण टाले।
आप विना पाखण्डी ना मद कुण गाले ॥गु०॥

११— हुता चौदे पूरव ने चौनाणी।
पिण मोहनीय कर्म लपेट्यो आणी ॥गु०॥

१२— ऐसो गौतम स्वामी कियो विलापात।
ए मोहनी कर्म नो अचरज वात ॥गु०॥

१३— हवे मोहनीय कर्म दूरे टाली।
गौतम स्वामी ए सूरती सभाली ॥गु०॥

वीतराग राग द्वेष ने जीत्या ।।टेर।।

१४— वीतराग राग द्वेष ने जीत्या ।
म्हारा चित्त मा आई गई चिंता ।।वी०।।

१५— तिण वेला निर्मल ध्यान ज ध्यायो ।
केवल ज्ञान गौतम स्वामी पायो ।।वी०।।

१६— बारा वर्ष रह्या केवल ज्ञानी ।
बात ज्यासु काई नही रही छानी ।।वी०।।

१७— गौतम पण कियो मुक्ति मे वासो ।
ससार नो सर्व देखे तमासो ।।वी०।।

१८— जणी राते मुक्ति गया वर्द्धमान ।
इन्द्रभूति ने उपन्यो केवल ज्ञान ।।वी०।।

१९— तिण दिन थी ए बाजी दिवाली ।
म्होटो दिन ए मगलमाली ।।वी०।।

२०— रात दिवाली नो शियल थें पालो ।
वली रात्रि भोजन नो कर वो टालो ।।वी०।।

२१— "ऋषि रायचद" कहे सुणो हो सुज्ञानी ।
दया रूप दिवाली थें लेज्यो मानी ।।वी०।।

कलश

१— श्री शासन नायक, मुक्ति दायक,
दया मार्ग अजुवालियो ।
श्री गौतम स्वामी, मुक्ति गामी,
कियो चित्त वल्लभ चौढालियो ।।

२— सवत् अठारे, गुणचालीसे,
नागोर चौमासो निर्मल मने ।
पूज्य जेमल जी प्रसादे,
पूर्ण कियो दिवाली रे दिने ।।

•

रहनेमि--अणगार

— अरिहत सिद्ध ने आयरिया, 'उवज्झाया अणगार।
पाच पदा ने हू नमू अष्टोत्तर सो वार ॥

— मोक्ष गामी दोनो हुआ राजमती रहनेम।
चरित्र कहू रलियामणो, साभल जो धर प्रेम ॥

१ राग—खट खण्ड भोगवे राज०

— सुख कारी सोरठ देश, राजा श्री कृष्ण नरेश ॥मन मोह्यालाल॥
दीपती नगरी द्वारिकाए ॥

— समुद्र विजय तिहा भूप, शिवा देवी राणी रूडे रूप ॥मन०॥
महाराणी मानीजती ए ॥

— जनम्या है अरिहत देव, इन्द्र चौसठ सारे जारी सेव ॥मन०॥
बाल ब्रह्मचारी बावीसमा ए ॥

— अन्त समे राजुल नार, तजी तेल चढी निरधार ॥मन०॥
सतिया मे सिर सेहरो ए ॥

५— ते समय राजुल नार, लीनो सजम भार ॥ ॥मन०॥
सहसाम्रवन उद्यान मे ए ॥

६— समुद्रविजय जी रा नद, रहनेमीरो सुण जो सबध ॥मन०॥
लघु भाई श्री नेमिनाए ॥

७— रहनेमी विराजे रूडे रूप भर जोवन धर चूप ॥मन०॥
मन वाछित लीला करे ए ॥

भीज्या कपडा अलगा मेल्या, साध्वी चतुर सुजाणो जी ॥
७—आर्याजी उघाडी उभी, कचनवर्णी काया जी।
उजवाला मे उभो दीठो, परघ रूप री माया जी ॥
८—कपण लागी सघली काया, शील सोच मे बैठी जी।
अगज मारो कोई नही देखे, साध्वी हेठी बैठी जी ॥
९—रूप देख रहनेमी डिगिया, सजम जोग गया भागी जी।
कामी अधा कछु नही देखे, विषय सेवन लो लागी जी ॥
१०—डरती देख सती ने बोले, रहनेमी कहे एमो जी।
हूँ समुद्र विजय राजा जी रो बेटो, तू सोच करे छे केमो जी ॥
११—छोड जोग ने आदर भोग, साभल सोहन वरणी जी।
सुख विलसी ने सजम लेसा, पछे करसा करणी जी ॥
१२—राजमति तो हिये विमासे, जातिवत छे एहो जी।
म्हारो शील कदीयन भजे, हूँ समझाऊँ धरी नेहो जी ॥
१३—दूजी ढाल तो हो गई पूरी, राजमति कहे आगे जी।
"ऋषि रायचद" कहे मोक्ष गामी ने, सीख सोयली लागे जी ॥

दोहा

१— आला पहर्या लूगडा ढाकियो सगलो शरीर।
बोले सेणी साध्वी, साभल मोरा वीर ॥

ढाल ३

राग— ज्ञानी गुरु रे बोध सुन साभलो

मुनिवर डिगजे नही, थें माली विचारी मन माय ॥मुनि०॥
थारे शील रूपीयो धन ॥मुनि०॥
काई तरस थारो तन ॥मुनि०॥
थारे मोक्षजावणरो मन ॥मुनि०॥टेर॥

१— आर्या ने थे एहवा, वचन कहो छो केम।
इण भव म्हारे आखडी, काई जावजीव लग नेम ॥मुनि०॥
२— तू गाव नगर पुर विचरती, जहाँ जहाँ देखसी नार।
हडनामा वश नी परे, थे घणो उठायो भार ॥मुनि०॥

८— परण्या कन्या पच्चास, भोगवे लील विलास
सदा काल सुख भोगवे ए ॥

९— पडे नाटिक ना झणकार, रमण्यां रूप रसाल
सुख विलसे ससारनाए ॥

१०— प्रतिबोध्या रहनेम, लागो धर्म सु प्रेम
वाणी सुणी श्री नेमनीए ॥

११— जाण्यो है अस्थिर ससार, लीधो है सजम भार
रमणी पचासो ने परहरी ए ॥

१२— छत्ता छोडया भोग, आदर्यो मारग जोग ॥मन०॥
कठिन क्रिया मुनि आदरी ए ॥

१३— एक गुफा मे आप, जपता जिनवर जाप ॥मन०॥
काउस्सग्ग कर उभा रह्या ए ॥

१४— या थई पेली ढाल, "ऋषि रायचद" भणे रे रसाल ॥मन०
आगे निर्णय साभलो ए ॥

ढाल २

राग—इण सर्वार्थसिद्ध रे ऊपर

श्री नेम जिनन्द वदन को चाली, राजुल गढ गिर नारो जी ॥टेर॥

१—राजमती तो सेणी साध्वी, सजम मारग पाले जी।
घणी आरजिया री हो गई गुरुणी, दया मार्ग उजवाले जी॥

२—सात सो सहेलीयाँ साथे, लीनो सयम भारो जी।
दशन केरो लग्यो उमावो, चाली आरजिया तिण वारो जी॥

३—उजाड मे तो उठी बावल मच गयो घोर अधारो जी।
वर्षा हो गई मार्ग बीच मे, अटवी दण्डाकारो जी॥

४—भीज गई साध्वियाँ सघली, अधारो नही सुझे जी।
बिछुड गई आरजिया इण पर किण ने मारग बुझे जी॥

५—राजमती अकेली चाली, हो गई घणी ही ज काई जी।
भीज गया कपडा ने साडी, सती गुफा मे आई जी॥

६—राजमती रहनेमी को, मिल्यो, एक गुफा मे टाणो जी।

भीज्या कपडा अलगा मेल्या, साध्वी चतुर सुजाणी जी ॥

७—आर्याजी उघाडी उभी, कचनवर्णी काया जी।
उजवाला मे उभो दीठो, परप रूप री माया जी ॥

८—कपण लागी सघली काया, शील सोच मे बैठी जी।
अगज मारो कोई नही देखे, साध्वो हेठी बैठी जी ॥

९—रूप देख रहनेमो डिगिया, सजम जोग गया भागी जी।
कामी अघा कछु नही देखे, विषय सेवन लो लागी जी ॥

१०—डरती देख सती ने बोले, रहनेमी कहे एमो जी।
हूँ समुद्र विजय राजा जी रो बेटो, तू सोच करे छे केमो जी ॥

११—छोड जोग ने श्रादर भोग, साभल सोहन वरणी जी।
सुख विलसी ने सजम लेसा, पछे करसा करणी जी ॥

१२—राजमति तो हिये विमासे, जातिवत्त छे एहो जी।
म्हारो शील कदीयन भजे, हू समभाऊँ धरी नेहो जी ॥

१३—दूजी ढाल तो हो गई पूरी, राजमति कहे आगे जी।
"ऋषि रायचद" कहे मोक्ष गामी ने, सीख भोयली लागे जी ॥

दोहा

१— आला पहर्या लूगडा ढाकियो सगलो शरीर।
बोले सेणी साध्वी, साभल मोरा वीर ॥

ढाल ३

राग— ज्ञानी गुरु रे बोध सूत्र सांभलो

मुनिवर डिगजे नही, थें माठी विचारी मन माय ॥मुनि०॥
थारे शील रूपीया मर ॥मुनि०॥
काई तरस थारों मर ॥मुनि०॥
थारे मोक्ष जावण रो मर ॥मुनि०॥टेर॥

१— आर्या ने थे एहवा, वचन [illegible] [illegible] केम।
इण भव म्हारे आखडी, काई [illegible] ॥मुनि०॥

२— तू गाव नगर पुर विचरती, [illegible]।
हडनामा [illegible] नी परे, थे [illegible] ॥मुनि०॥

३— हडवृक्ष हेठो पड़े, वायु तणे प्रकार।
अस्थिर होती थारी आतमा, तू रूल सी घणो ससार ॥मुनि०॥

४— वमिया की वछा करे, धिग्-धिग् थारो जमार।
मरणो श्रेय छे तो भणी, थें लीना महाव्रत चार ॥मुनि०॥

५— गधनकुल ज्यु किम होने, वधव सामो जोय।
चारित्र रत्न चिन्तामणी तु कादा मे मत खोय ॥मुनि०॥

६— वमियो विष वछे नही, अगधन कुल नो सर्प।
भस्म होवे जिम अग्नि मे, पण राखे कुलनो शर्म ॥मुनि०॥

७— तु अधकविष्णु जीरो पोतरो समुद्र विजय जीरो पूत।
कुल सामो देखे नही तु मन दे काचा सूत ॥मुनि०॥

८— हू भोजकविष्णु जी री पोतरी, उग्रसेन म्हारा तात ॥
दोनो रा कुल दीपता, या किम विगडेला बात ॥मुनि०॥

९— चन्द्र अगन वरसे नही, समुद्र न लोपे कार।
पश्चिम सूरज ऊगे नही, ज्यु कुलवत नो आचार ॥मुनि०॥

१०— जो तु होवे वैश्रमण देवता नल कुवेर उणिहार।
जो तु होवे इन्द्र सारिखो, मैं वछू नही लिगार ॥मुनि०॥

११— गाया रो धणी गवालियो तु मत जाणे कोय।
सयम रो धणी तू नहीं, काई हृदय विमासी जोय ॥मुनि०॥

१२— बाले चन्दन बावनो, किधी चावे राख।
चौथासु चूक्या पछे, थारे कुल ने लागे चाक ॥मुनि॥

१३— रतन जतन कर राख जो, खण्डिया लागे खोड।
जोबन मे जोखो घणो, काई कीजे जत्तन करोड ॥मुनि०॥

१४— काचा सुखा रे कारणें, काई बगाडे बात।
पछे घणो पछतावसो, थारे काइयन आसी हाथ ॥मुनि०॥

१५— मधुबिन्दु रे कारणे, मडो दीधो माण्ड।
अल्प सुखा रे कारणे, तू होसी जग मे भाण्ड ॥

१६— वचन सतीरा साभली, आयो ठिकाणें रहनेम।
शील सयम दोनो तणा, काई रह्या कुशल ने खेम ॥मुनि०॥

१७— हाथी ज्यु रहनेमि जी, महावत राजुल नार।
वचन रूपी अकुश करी, काई आण्यो ठिकाणे तिणवार।मुनि०॥

१८— तीजी ढाल पूरी थई, "ऋषि रायचद" कहे एम।
राजमति सती तणा, कह्या जावे केम।मुनि०॥

ढाल ४ राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

१— भला वचन थें भाखिया रे लाल,
इम बोले रहनेम ॥सुनो साध्वी ए॥
महासती तू भूलगी रे लाल,
तू तिरण तारण की जहाज ॥सु०॥
हुँ डगियो थें स्थिर कियो रे लाल ॥टेर॥

२— हुँ डगियो थें स्थिर कियो रे लाल
थे राखी म्हारी लाज ॥सु०।
तें उपकार मोटो कियो रे लाल,
जाणे रक ने दीधो राज ॥सु०॥

३— ससार समुद्र मे बूडतो रे लाल,
थें लीधो माने झेल ॥सु०॥
हू रूप कूप देखी पड्यो रे लाल,
थे शील द्वीपा मे दियो मेल ॥सु०॥

४— विषय रा वचन म्हारा निसर्या रे लाल,
कुमति कु बोल्यो बोल ॥सु०॥
मोहनी कर्म लपेटियो रे लाल,
थें राख्यो म्हारो तोल ॥सु०॥

५— मतिहीणो हु मानवी रे लाल,
कुशीलियो कगाल ॥सु०॥
हु पापी पान्तर गयो रे लाल,
पिण थें राख्यो म्हारो माल ॥सु०॥

६— तु परमेश्वर सारखी रे लाल,
तु भगवत वीतराग ॥सु०॥

तु सतिया रो शिर सेहरो रे लाल,
थारो शील वडो रे वैराग ॥सु०॥

७— भुण्डो मुण्डो माहरो रे लाल,
भुण्डा निकल्या म्हारा वैण ॥सु०॥
काया मे कन्दर्प व्यापीयो र लाल,
निरखता डिगीया म्हारा नैण ॥सु०॥

८— मैं नारी परिषह नही सह्यो रे लाल,
म्हारा मनमाहे प्रगट्यो पाप ॥सु०॥
मोटी सती ने मैं दियो रे लाल,
मेरु जे तो सताप ॥सु०॥

६— पुरुषो मे उत्तम हुआ रे लाल,
रहनेमी अणगार ॥सु०॥
चलिया चित्त ने दृढ कियो रे लाल,
ते विरला ससार ॥सु०॥

१०— चौथी ढाल पूरी थई रे लाल,
व्रतो ने नही लागी खोड ॥सु०॥
रहनेमी जीती आतमा रे लाल,
'ऋषि रायचद' करी जोड ॥सु०॥

दोहा

विनय भर्या वचना सुणी, रेहनेमि ना आम ।
राजीमती हर्षित थई, प्रशसा करे ताम ॥

ढाल ५

१—तारा मोह पडल अलगा टल्या, तारेघट मे प्रगट्यो ज्ञान हो ॥र०॥
विषय जाण्यो विष सारखो, म्हारा वचन लियो थें मान हो ॥र०॥

थे स्थिर कर राखो थारी आतमा ॥टेर॥

२— थे स्थिर कर राखो थारी आतमा,
थारा चित्त आई गयो ठाम हो ॥र०॥

शील री नीव सेंठी रही,
पापथी पाम्या विराम ॥हो र०॥

३— थें तो मुगति रे सामा मण्डिया,
शीलागरथ पर बेठ रे ॥ र० ॥
पथ लियो थे पाधरो,
तू तो शिव नगरी मे जासी ठेठ हो ।र०॥

४— जो मन मेले मोकलो,
ते तो होवे फजीत हो ॥ र० ॥
मन जीते जे मानवी,
ते तो जावे जमारो जीत हो ॥र०॥

५— थारो मन जाई लागो मुगत सु,
थारे गुरु ज्ञानी से प्रीत हो ॥र०॥
यश फेल्यो थारो जगत मे,
थें तो राखी है रूडी रीत हो ॥र०॥

६— थें तो क्षमा वैराग्य वधारियो,
तोने मित्र मिलीयो सतोप हो ।।र०॥
शील देसी सुख शासता,
थारे टलसो सगला दोप हो ॥र०॥

७— थारे तेज घणो तपस्या तणो,
थें तो पीधो समता रस पूर हो ॥र०॥
क्षमा खड्ग थें कर गह्यो,
थारा अशुभ कर्म जासी दूर हो ॥र०॥

८— थें जीत्यो स्वाद जिह्वा तणो,
स्थिर मन राख्यो क्षोभ हो ॥र०॥
क्रोध मान माया नही,
थारे नही लालच लोभ हो ॥र०॥

९— काम दहन किरीया भली,
जिनसे मिटे मिथ्यात्वरी जाल हो ॥र०॥
रा द्वेप अकुरा ऊगे नही,
कर्म बीज दिया बाल हो ॥र०॥

शील री नीव सेंठी रही,
पापयी पाम्या विराम ॥हो र०॥

३— थें तो मुगति रे सामा मण्डिया,
शीलागरथ पर वैठ रे ॥ र० ॥
पथ लियो थे पाधरो,
तू तो शिव नगरी मे जासी ठेठ हो ।र०॥

४— जो मन मेले मोकलो,
ते तो होवे फजीत हो ॥ र० ॥
मन जीते जे मानवी,
ते तो जावे जमारो जीत हो ॥र०॥

५— थारो मन जाई लागो मुगत सु,
थारें गुरु ज्ञानी से प्रीत हो ॥र०॥
यश फैल्यो थारो जगत मे,
थें तो राखी है रूडी रीत हो ॥र०॥

६— थें तो क्षमा वैराग्य वधारियो,
तोने मित्र मिलीयो सतोप हो ॥र०॥
शील देसी सुख शासता,
थारे टलसो सगला दोप हो ॥र०॥

७— थारे तेज घणो तपस्या तणो,
थें तो पीधो समता रस पूर हो ॥र०॥
क्षमा खड्ग थें कर गह्यो,
थारा अशुभ कर्म जासी दूर हो ॥र०॥

८— थें जीत्यो स्वाद जिह्वा तणो,
स्थिर मन राख्यो क्षोभ हो ॥र०॥
क्रोध मान माया नही,
थारे नही लालच लोभ हो ॥र०॥

९— काम दहन किरीया भली,
जिनसे मिटे मिथ्यात्वरी जाल हो ॥र०॥
राग द्वेप अकुरा ऊगे नही,
कर्म बीज दिया बाल हो ॥र०॥

१०— थें तो दयामार्ग उजवालियो,
कर्मां मु माण्ड्यो जग हो ।।र०।।
थें चलिया चित्त ने घेरीयो,
अविचल छोड्यो रग ।।र०।।

११— राजमति रहनेमी जी,
दोनो ही केवल पाम हो ।।र०।।
मुक्ति गया दोनो जणा,
पाम्या है अविचल ठाम हो ।।र०।।

१२— पाचमी ढाल सुहावणी,
उत्तराध्ययन अनुसारे हो ।।र०।।
वली दशवैकालिक में लिख्यो,
विशेष कियो विस्तार हो ।।र०।।

१३— शील ऊपर पच ढालियो,
कियो दोय सूत्र मे निचोड हो ।।र०।।
तिण अनुसारे ए कीनी,
"ऋषि रायचद" जोड हो ।।र०।

१४— सवत् अठारे पचानवे,
जयवत नगर जोधाण हो ।।र०।।
ये चरित्र रच्यो चौमास मे,
मास आसोज शुभ जाण हो ।।र०।।

१५— ओछो अधिको जे कह्यो,
ते मिच्छामि दुक्कड मोय हो ।।र०।।
श्रोताजन जे साभले,
तस घर मङ्गल होय हो ।।र०।।

दोहा

१— थावरचा भोगी भ्रमर, बठो महल मझार।
ऋद्धि वृद्धि सुख सपदा, भोगे सुख श्रीकार ॥
२— पाडोसी तिण रे हुतो, पुत्र रहित घनवत।
पुत्र भयो तिण अवसरे, गोरिया गीत गावत ॥

ढाल १

राग—जतन की

१—महला मे बैठो सुणे रागी, थावरच्या पुत्र वैरागी।
महला सु उतर्यो हुवो राजी, कर जोड कहे सुणो माजी ॥
२—ए तो इसडा गीत गावे, म्हारे काना मे घणा सुहावे।
वलती इम बोले माया, साभलरे म्हारा जाया ॥
३—पाडोसन बेटो जायो, तिण रो हर्ष वधावो आयो।
थाल भरो गुड व्हेचे, जाणे पुत्र हुवो मारे जीसे ॥
४—बाजा बाजे थाल कसाला, गोरिया गावे गीत रसाला।
गोरी हिलमिल गीत ज गावे, बालक री मा ने घणा सुहावे ॥
५—गुड दे ने गीत गवावे, गोरिया राजी हो जावे।
सब कुटुम्ब तणे मन भावे, काना मे शब्द सुहावे ॥
६—गीत गायन गोरिया ऊठी, देवे सोनया भर भर मुठी।
माता इतनी बात सुणाई, थावरचा रे मन भाई ॥
७—माता ने बेटो बहु प्यारो, नित भाणे परोसे आहारो।
माता कने बैठ जिमावे, भाणा री माखी उडावे ॥
८—इतरा मे कूको पडियो, थावरचा काने सुणियो।
साभल ए मात माहरी, ये किम रोवे नर नारी ॥

९—इण पर तो बोली माया, साभल रे म्हारा जाया।
बेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो॥
१०—इम या बात सुणाई माजी, थावरचा हुवो बेराजी।
मा बाप अरडाटे रोवे, बालक ना मुख सामो जोवे॥
११—मा ये क्रूर शब्द अरडावे, मा सु सुन्यो नही जावे।
जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुझ ने हुवो॥

दोहा

१— उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय।
जन्मे सो मरसी सही, चिंता इणमे क्यू थाय॥
२— इण ससार मे आ वडो, जन्म मरण रो जोड।
जन्ममरण ज्याछे नही, इसडी नही कोई ठोड॥
३— हाथ रो कवा हाथ मे, और मुह रो है मुह माय।
माताजी हू मरू नही, इसडी ठौर बताय॥
४— सुख भोगो ससार नो और करो आनन्द।
जन्म मरण ने मेटसी, यादव नेम जिनद॥

ढाल २

राग—जतन री

१—माता ओ ससार असारो, मैं तो लेसू सजम भारो।
ससार नी माया झूठी, ओ तो एक दिन जाणी उठी॥
२—ससार मे मोटी खोड, जन्म मरण रो अठे जोड।
किण रा मायने किणरा बापो जीव बाधे छे बहुला पापो॥
३—थावरचा लीधो धार, कीधो नेम जी त्या थी विहार।
स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया॥

ढाल ३

राग—शाति जिनेश्वर सोलमा रे लाल

१—नेम जिनद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मझार रे।
जा पुरुषा ने वादता रे लाल, भव भव नो निस्तार रे॥*भविकजन*॥
२—प्रभु जी तिहा पधारिया रे लाल, सहस्राम्र नामे बाग रे।
तरण तारण जग प्रगटियारे लाल, भव्य जीवा रे भाग रे॥भ०॥

३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे।
ज्या मे आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे।।भ०।।

४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे ।।भ०।।

५—कोई लेवे मुनिवर वाचणी र, कोईयक चर्चा बोल रे।
समभावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे।।भ०।।

६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल मोरिया किम गह काय रे।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे।।भ०।।

७—उठो रे लोका सतावसू रे लाल, रखे अवेला थाय रे।
तेमना दरसन कीधा विना रे लाल, क्षण लाखीणो जाय रे।।भ०।।

८—कोई कहे प्रश्न पूछसा रे लाल, कोई कहे सुनसा वखाण रे।
कोई कहे सेवा करसा रे लाल, करसा जन्म प्रमाण रे। भ०।।

९—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड रे।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनैया साढी बारा क्रोड रे।।भ०।।

१०—केई बैठा हयवरा रे लाल, केई चढिया गजराज रे।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे।।भ०।।

११—चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे।
बोलन्ता विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे।।भ०।।

१२—छत्र चवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे।
नप तिहा पर आविया रे लाल, वादिया श्री जिनराज रे।।भ०।।

दोहा

१— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे वहार।
नेम जिनद समोसर्या, सहस्र वन मझार।।

२— थावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मझार।
लोक घणा ने देखने मन मे करे विचार।।

ढाल ४

राग—बुढ़ाने बाल पणारी

१—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे।
यह सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया।।

९—इण पर तो बोली माया, सामल रे म्हारा जाया।
बेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो॥

१०—इम या बात सुणाई माजी, थावरचा हुवो बेराजी।
मा बाप अरडाटे रोवे, बालक ना मुख सामो जोवे॥

११—मा ये क्रूर शब्द अरडावे, मा सु सुन्यो नही जावे।
जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुझ ने हुवो॥

दोहा

१— उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय।
जन्मे सो मरसी सही, चिंता इणमे वय् थाय॥

२— इण ससार मे आ बडो, जन्म मरण रो जोड।
जन्ममरण ज्याछे नही, इसडी नही कोई ठोड॥

३— हाथ रो कवा हाथ मे, और मुह रो है मुह माय।
माताजी हू मरू नही, इसडी ठौर बताय॥

४— सुख भोगो ससार नो और करो आनन्द।
जन्म मरण ने मेटसी, यादव नेम जिनद॥

ढाल २

राग—जतन री

१—माता ओ ससार असारो, मैं तो लेसू सजम भारो।
ससार नी माया झूठी, ओ तो एक दिन जाणो उठी॥

२—ससार मे मोटी खोड, जन्म मरण रो अठे जोड।
किण रा मायने किणरा बापो, जीव बाधे छे बहुला पापो॥

३—थावरचा लीधो धार, कीधो नेम जी त्या थी विहार।
स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया॥

ढाल ३

राग—शाति जिनेश्वर सोलमा रे लाल

१—नेम जिनद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मझार रे।
जा पुरुषा ने वादता रे लाल, भव भव नो निस्तार रे॥भविकजन॥

२—प्रभु जी तिहा पधारिया रे लाल, सहस्राम्र नामे बाग रे।
तरण तारण जग प्रगटियारे लाल, भव्य जीवा रे भाग रे॥भ०॥

३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे।
ज्या मे आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे ।।भ०।।

४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे ।।भ०।।

५—कोई लेवे मुनिवर वाचणी र, कोईयक चर्चा बोल रे।
समभावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे।।भ०।।

६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल मोरिया किम गह काय रे।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे।।भ०।।

७—उठो रे लोका सतावसू रे लाल, रखे अवेला थाय रे।
तेमना दरसन कीधा बिना रे लाल, क्षण लाखोणो जाय रे।।भ०।।

८—कोई कहे प्रश्न पूछसा रे लाल, कोई कहे सुनमा वखाण रे।
कोई कहे सेवा करसा रे लाल, करसा जन्म प्रमाण रे। भ०।।

९—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड रे।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनैया साढी बारा क्रोड रे।।भ०।।

१०—केई बैठा हयवरा रे लाल, केई चढिया गजराज रे।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे।।भ०।।

११—चतुरगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे।
बोलन्ता विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे।।भ०।।

१२—छत्र चवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे।
नप तिहा पर आविया रे लाल, वादिया श्री जिनराज रे ।।भ०।।

दोहा

१— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे वहार।
नेम जिनद समोसर्या, सहस्र वन मझार।।

२— थावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मझार।
लोक घणा ने देखने मन मे करे विचार।।

ढाल ४

राग—बुढाने बाल पणारी

१—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे।
कह सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया।।

९—इण पर तो बोली माया, साभल रे म्हारा जाया।
बेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो ।।

१०—इम या बात सुणाई माजी, थावरचा हुवो बेराजी।
मा बाप अरडाटे रोवे, बालक ना मुख सामो जोवे ।।

११—मा ये क्रूर शब्द अरडावे, मा सु सुन्यो नही जावे।
जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुझ ने हुवो ।।

दोहा

१— उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय।
जन्मे सो मरसी सही, चिंता इणमे क्यू थाय ।।

२— इण ससार मे आ बडो, जन्म मरण रो जोड।
जन्ममरण ज्याछे नही, इसडी नही कोई ठोड ।।

३— हाथ रो कवो हाथ मे, और मुह रो है मुह माय।
माताजी हू मरू नही, इसडी ठौर बताय ।।

४— सुख भोगो ससार नो और करो आनन्द।
जन्म मरण ने मेटसी, यादव नेम जिनद ।।

ढाल २

राग—जतन री

१—माता ओ ससार असारो, मैं तो लेसू सजम भारो।
ससार नी माया झूठी, ओ तो एक दिन जाणो उठी ।।

२—ससार मे मोटी खोड, जन्म मरण रो अठे जोड।
किण रा मायने किणरा बापो जीव बाधे छे बहुला पापो ।।

३—थावरचा लीधो धार, कीधो नेम जी त्या थी विहार।
स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया ।।

ढाल ३

राग—शाति जिनेश्वर सोलमां रे लाल

१—नेम जिनद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मझार रे।
जा पुरुषा ने वादता रे लाल, भव भव नो निस्तार रे ।।भविकजन।।

२—प्रभु जी तिहा पधारिया रे लाल, सहस्राम्र नामे बाग रे।
तरण तारण जग प्रगटियारे लाल, भव्य जीवा रे भाग रे ।।भ०।।

३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे।
ज्या मे आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे ॥भ०॥

४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे ॥भ०॥

५—कोई लेवे मुनिवर वाचणी र, कोईयक चर्चा बोल रे।
समभावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे॥भ०॥

६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल मोरिया किम गह काय रे।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे।भ०॥

७—उठो रे लोका सतावसू रे लाल, रखे अवेला थाय रे।
तेमना दरसन कीधा विना रे लाल, क्षण लाखीणो जाय रे॥भ०॥

८—कोई कहे प्रश्न पूछसा रे लाल, कोई कहे सुनमा वखाण रे।
कोई कहे सेवा करसा रे लाल, करसा जन्म प्रमाण रे। भ०॥

६—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड रे।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनैया साढी बारा क्रोड रे ॥भ०॥

१०—केई बैठा हयवरा रे लाल, केई चढिया गजराज रे।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे ॥भ०॥

११—चतुरगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे।
बोलन्ता विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे ॥भ०॥

१२—छत्र चवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे।
नृप तिहा पर आविया रे लाल, वादिया श्री जिनराज रे ॥भ०॥

दोहा

१— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे वहार।
नेम जिनद समोसर्या, सहस्र वन मझार ॥

२— थावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मझार।
लोक घणा ने देखने मन मे करे विचार ॥

ढाल ४

राग—बुढाने बाल पणारी

१—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे।
कहे सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया ॥

२—बात नेम आगमन री ताजी, सुण थावरचा हुवो राजी।
पुण्य जोगे प्रभु अठ आया, वदी सफल करू म्हारी काया ॥

३—म्हारा मनरा मनोरथ फलिया, म्हारा भव २ रा दु ख टलिया।
इम हरपे घरि शीर पागे, और पेरिया नव रग गागे ॥

४—उत्तरासन भीणे सुतर्रा, मेल्या कलगी तुर्रा।
कडा हाथ कानो मे मोती, जाणे लागी जगामग ज्योति ॥

५—दसो अगुलिया मु दडी गले डोरो मन मे नेम वदन रो कोडो।
देख चवर छत्र घर प्रेम, आण ने वादिया छे श्री नेम ॥

६—भवि जीवा रो, काटन क्लेश, दीधो स्वामी इसो उपदेश।
दुख जन्म मरण रा भारी, वाधे कर्म तो आगे त्यारी ॥

७—हँस-हँस ने वाँधि भूठे, तिका रोणा सु नही छूटे।
आवे काल भपेटा ले तो, वले बब नगारा देतो ॥

८—सुणी इक चित्त प्रभु नी वाणी, होती मन मे विछुडी जाणी।
कर जोड ने कहे सुणो स्वामी, दीक्षा लेसु अन्तर्जामी ॥

दोहा

१— जिम सुख थावे तिम करो, इम बोले श्री नेम।
ढील लगार करो मती, जो चाहो कुशल ने क्षेम ॥

२— प्रभु ने वदन कर चालिया, कीधो महल प्रवेश।
माता पासे जायने, मागे इम आदेश ॥

ढाल ५

राग—तू मुझ प्यारो रे

१—आज्ञा दो मुझ माता जी अम्मा, ओ ससार असार।
काल आण घेरिया थका हो अम्मा, कोई न राखण हार ॥
म्हारी अम्मा, आज्ञा दीजे वेग ॥टेर॥

२—वाणी अपूर्व सामली हो अम्मा, पडी मुर्छागत खाय।
सावधान बैठी करी हो अम्मा घाली शीतल वाय ॥म्हारो०॥

३—तू एकाकी म्हायरे रे जाया, तू कालजारी कोर।
तू मुझ आधा लाकडी रे बेटा, तुझ सम म्हारे कुण ओर ॥
मोरा जाया यू मत बोले वैन ॥टेर॥

४—त मुझ जीवन की जडी रे जाया, तू मुझ प्राण आधार।
जीवू थने होज देखने रे जाया, मान थावरचा कुमार॥

५—रमणी वत्तोसे थायरी रे जाया, अप्सर ने अनुहार।
विलविलती छाँड ने र जाया, मति ले सजम भार॥

६—रमणी झुर रग महल मे रे जाया, मात झुरे मन माय।
वैरागी झुरे मोक्ष ने रे माता, मनडो रह्यो उमाय॥

७—साधु पणो अति दोहिलो रे जाया, त्रिविध महाव्रत चार।
दोप बयालीस टाल ने र जाया, लेणो निर्दोषण आहार॥

८—कनक कचोला छांड ने रे जाया, जीमणो काष्ठ के पात्र।
ए सुख सेज्या छोडने रे जाया, मेलो राखणो गात्र॥

९—कायर ने ए दोहिलो ए माता, आप कही जे वात।
सूरा सव सोहिलो माता, दुर्लभ नही तिल मात॥

दोहा

१— वचन सुणी बेटा तणा, माता थई निरास।
बेटो आज घरे नही, भद्रा थई उदास॥

२— रतन अमोलक भेंटना, ले दास्या ने लार।
मध्य बाजारे निकली, गई, कृष्ण तणे दरबार॥

ढाल ६

राग—सर्विजन कम समो नहीं कोय

१—माता तो ऊठ कृष्ण घर चाली, कहे साभल जो नर नाथो।
एका एकी म्हारो कुँवर थावरचा, काढी दीक्षा री बातो॥
जायो म्हारो, लेसी सजम भारो॥
भात-भात घणो समजायो, पिण माने नही लिगार॥टेर।

२—अन्न धन्न तुम प्रसाद घणो ही तिणरी नही मार चावो।
पुत्र वैरागी तिणरे महोत्सव काजे, छत्र चवर दिरावो॥

३—वलता कृष्ण जी इण पर बोले थारो बेटो होसी धर्म देवो।
हूस हमारी पूरण काजे, मोच्छव करसा स्वयमेवो॥

४—चतुरगी सेना सज कीधी, आप हुआ असवारो।
नाटक ना भणकार होवता, आया थावरचा घर वारो॥

ढाल ७ राग—चन्द्रगुप्त राजा सुणो

१—थावरचा ने कहे कृष्ण जी, तू दीक्षा मत ले भाया रे।
सुख भोगवो ससार नो, म्हारी छे छत्रछाया रे॥
थावरचा ने कहे कृष्ण जी ॥टेर॥

२—वलतो कुंवर इसडी कहे, म्हारो जीवतो जद सुख पावेरे।
आप कहो तिमि ही करू, जो जन्ममरण मिट जावे रे॥

३—वलता कृष्ण जी इम कहे, बात कही थें भारी रे।
जन्ममरण मेटण तणी, आ तो पोच नही छे म्हारी रे॥

४—हाथी पर बेसाय ने, गलिया गलिया मझारो रे।
कृष्ण करावे उद्घोषणा, द्वारिका नगर मझारो रे॥

५—जगत मे कोई केहनो नही स्वार्थियो ससारो रे।
माधव मख सो इम कहे, मति करो ढील लगारो र॥

६—दीक्षा लो निश्चित पण, पाणी पेली पालो र।
पाछला सब परिवार नी, हू कर लेसूं साल सभालो रे॥

७—खाणो खरची पूर सू, बोले कृष्ण मुरारो रे।
थावरचा साथ वैरागिया उठीया पुरुष हजारो रे॥

८ सेविका सेंस त्यार हुई, आवे अति आनन्दे रे।
छत्र चवर देखी करी पाला हुई ने प्रभु वदे रे॥

९—पच मुष्टि लोच हाथे कियो, सजम लियो प्रभु पासे रे।
कुंवर थावरचा ज्यो करे, तिण ने छे स्यावासो रे॥

दोहा

१— दर्शन परिषह बावीसमो, काठो तिण रो काम।
पाच दोष ने परिहरो, रखो पाका परिणाम॥

२— उत्तराध्ययन कथा माहे, चाल्यो आषाढाभूत।
पेहला परिणाम पोचा पड्या, पाछे मेंठा दीना सूत॥

ढाल १

राग—आच्छेलाल

१—आषाढ भूति अणगार, बहुशिष्यों रे परिवार।
मनमोहन स्वामी ! आचारज चढती कलाए॥

२—जाणे आगम अर्थ अपार, हेतु दृष्टान्त बहुसार।
मनमोहन स्वामी ! चेला भणाया घणा चूँप सुए॥

३—एक शिष्य कियो रे सथार, गुरु बोल्या तिण वार।
सुण चेला म्हारा ! जो थू थावे देवता ए॥

४—जो तू कहिजे आय, जेजम करजे काय।
सुण चेला म्हारा ! गुरु सम जग मे को नही ए॥

५—दो तीन चेला कियो काल पण किनी किणी न सभार।
सुण चेला म्हारा, पाछो आय कह्यो नही ए॥

६—थू तो चेलो चौथो होय तो सम वालो नही कोय।
सुण चेला म्हारा ! मैं थने साज दियो घणो ए॥

७—थू शिष्य म्हारो सुविनीत, थारे म्हारे पूरी प्रीत।
सुण चेला म्हारा, अन्तर भक्त छे थू म्हायरो ए॥

८—थू मत जाजे भूल केणो म्हारो कर कबूल।
सुण चेला म्हारा थू तो वेगो आवजे ए॥

९—चेला ने छोड्या प्राण, उपन्यो देव विमान।
मन मोहन स्वामी, रिद्ध सिद्ध पाई घणी ए॥

१०—जगमग महलो री ज्योत, जाणें सूर्य उद्योत।
आच्छे लाल, जाली झरोखा झील रह्या ए॥

११—थाबा पे पुतलिया सार, महलो माहिं अपार।
आच्छे लाल, रतन जडित छे आगणाए॥

१२—पिलिग रतनमय होय, ईस सोना रा जोय।
आच्छे लाल, रतना रो वाण पच रग नो ए॥

१३ लुबा कसिया सेज, दीठा ही उपजे हेज।
आच्छे लाल, सुहालो माखण सारखो ए॥

१४—चोवा चन्दन चम्पेल, महके सुगन्धो तेल।
आच्छे लाल, चम्पा चमेली गुलाब रा ए॥

१५—महलो रे दोलो बाग, वलि छत्तीस ही राग।
आच्छे लाल, नाटक बत्तीस प्रकार रा ए॥

१६—कपडा महीन गलतान, गहणो रो नही कोई ज्ञान।
आच्छे लाल, देखता लोचन ठरे ए॥

१७—दीपे देवागना री देह, लागो नवलो नेह।
आच्छे लाल, देविया सु मोह्यो देवता ए॥

१८ एक नाटक रे झणकार, वर्ष जाये दोय हजार।
आच्छे लाल, गुरु कह्यो याद आवे कठे ए॥

१९—सुखा रो लाग रह्यो ठाठ, गुरु जोवे चेला री वाट।
आच्छे लाल, देवता बणियो आयो नही ए॥

२०—चेलो झील रह्यो जेह, गुर ने पडियो सन्देह।
आच्छे लाल, समकित मे शका पडी ए॥

२१—ये थई पेहली ढाल, 'रायचन्द' भाखी रसाल।
आच्छे लाल, आगलो निर्णय साभलो ए॥

दोहा

१— आपाढ भूति इम चिन्तवे, नही स्वग नही मोवख।
निश्चय नही छे नारकी, सगली वाता फोक॥

२— चित्त वल्लभ चेलो हुतो, म्हारो पूरो प्रेम।
सूत्र वचन साचा हुवे तो, पाछो न आवे केम॥

ढाल २

राग—सहेलिया ए आम्बो मोरियो०

१—आपाढ भूति इम चिन्तवे, पाछो जाऊँ हो म्हारे घर वास के।
सुन्दर सु सुख भोगवू, हूँ विलसु हो वली लीला विलास के॥
चारित्र सु चित्त चल गयो ॥टेर॥

२— चारित्र सु चित्त चल गयो,
घरे चाल्या हो हुवा श्रद्धा भ्रष्ट के।
अरिहन्त वचन उथापिया,
हुवा खाली हो गमाई समदृष्ट के॥

३— तिण समय सिंहासन कम्पियो,
देव दीधो हो तब अवधिज्ञान के।
गुरु ने दीठा घर जावता,
मार्ग मे माडयो हो नाटक प्रधान के॥

४— छ महीना नाटक निरखियो,
आचारज हो हुआ हुल्लास के।
पूरो हुवो नाटक पागरया,
विहार करता हो आया वनवास के॥

५— दया री परीक्षा कर वा भणी,
देव वणाया हो छ नाना वाल के।
गेहणा वहु पेराविया,
रिमझिम करता हो चाल्या सुखमाल के॥

६— छहु वालक वोल्या तिण समे,
पाये लागा हो जोडी दोउ हाथ के।
साता छे पूज्य आप रे,
खमाष हो छह काया रा नाथ के॥

७— पृथ्वी अप् तेउ वायरो,
वनस्पति हो छट्ठी त्रस स्वाम के।
छहूँ म्हा नान्हा छोकरा,
म्हारा दीधा हो माविता नाम के॥

८— दया पाली घणी छ काय री,
दीठी नही हो दया मे भली वार के।
पुण्य पाप रो फल पायो नही,
हु तो लेसु हो छउ ना गेणा उतार के॥

९— बालका ने कने बुलाय ने,
गहणा गाठा हो उतालिया खोल के।
छउ ना गला मसोसिया,
बालुडा हो मुण्डे नही सक्या बोल के॥

१०— गृहस्थी रे धन विना नही सरे,
पाने पडियो हो म्हारे मोकलो माल के।
मन माहे हर्ष मावे नही,
मलकन्ता हो चाल्या मन खुशाल के॥

११— दया पण दिल सु गई,
देव दीठो हो गुरा किया अकाज के।
अजु तो मारग आण सु,
जो एनेहो होसी आख्या लाज के॥

१२— दूजी ढाल पूरी हुई,
ऋख "रायचन्द" हो कहे छे एम के।
चतुराई देखो देवता तणी,
गुरा ने हो ज्ञान मे घाले छे केम के॥

दोहा

१— देव रूप फेरी करी, कियो साध्वी रो रूप।
गेणा गांठा भारी पेरिया, कपडा झीणा बहु चूप॥

२— बाया बाजुबन्ध बेरखा, गले नवसरियो हार।
ललाट टीको झल रह्यो, पग नेवर झणकार॥

३— सोवन चुडलो हाथ मे, काकण रतन जडाव।
आगुली वीटी झलहले, झीणी चाले पाव ॥
४— मारग जाता साधु ने, मिली साध्वी एम।
लज्जा हीण थे पापणी, भेख लजायो केम ॥

अथाग्रे प्रक्षिप्त दोहे—मुनिकथन

५— साग कियो साधु तणो, पेट भरी गुण हीन।
भेख लजावे लोक मे, धिक तुझ ने मति हीन ॥
६— महाव्रतणी वाजे जगत्, लाजे नही लगार।
धर्म लजावा कारणे, थे छोडयो ससार ॥

ढाल प्रक्षिप्त राग—चौकरी

सुण महासती, या लखण सु जैन धर्म अति लाजे।
गुण नही रती, लोका माहे निगन्थणी यू वाजे ॥टेर॥
१– थू चाले छे चाला करती, शुद्ध ईर्या समिति नही धरती।
लोक लाज सु नही डरती, थू लावे गोचरी झर झरती ॥
२—एक लडो थू फरती दीस, दोय ने वरजी जगदीसे।
शुद्ध सीख दीया दात ज पीसे, थ नही छोडी तिल भर रीसे ॥
३—तु मेले खेले देखण जावे, व्याव ओसर सु वेहरो लावे।
रवि उगा विन पाणी जावे, थू क्यु मारग ने लजावे ॥
४—थारे घेर दार पेरण साडी, रगी चगी छे देह थारी।
तप करणी भु थ हारी, थू टूट पडी खावण लारी ॥
५—थू भीणो पट ओढण राखे, अग अग सारा झाके।
लोक लज्जा पण नही राखे थे भेख लियो छो हक नाके ॥
६—परालब्धी वाल खिलावे छे, माहो माहे जग मचावे छे।
गृहस्थी आय छुडावे छे जिन मारग पूरो लजावे छे ॥
७—जग माहे वाजे तू गुरणी, विगड गई थारी करणी।
लपट नर ना चित्त हरणी, तू लाजे नही उदर भरणी ॥
८—केई कपट करी जग डहकावे, मलिन श्याम धोवण लावे।
शुद्ध दशा ते नही पावे ते पिण शिवपुर नही जावे ॥

९—कचन चूडो खलके है, लिलवर बिंदली झलके है।
मजन सु देही झलके है वीजली ज्यू तुज तन पलके है॥
१०—एक भागा सब ही भागे थारी वन्दना दाय नही लागे।
हू आषाढाचार्य मुनि सागे, मतो उभी रहे तू मुख आगे॥
११—रामचन्द्र कहे सुण लोजो, सुण ने सतिया मत खोजो।
जो खीजो तो तप कीजो, शुद्ध सजम री थे ख प कीजो॥

दोहा

१— आरजिया कहे सुण साधु तु, एहवा बोल न बोल।
पात्र माहेला सब मूक दो लज्जा सगली खोल॥
२— अल्प दोष छो माहरो, काई प्रकाशो साध।
दोष तुम्हारो देखलो, थे की बालक नी घात॥

साध्वी का उत्तर

राग—चौक की

सुणो मुनिवरजी, मत देखो पर दोष, विचारी बोलो।
गुणो जिनवरजी, तन उज्ज्वल मन कपट हिया खोलो॥टेर॥
१—परोपदेशी घणा जग मे, पर ओगुण देखे पग पग मे।
अरु आप तो भूल रह्या अध मे॥सुणो०॥
२—पू ज पू ज पग देवो छे, इण रीते विहार मे वेवो छे।
किम लम्बा तडाका देवो छे॥सुणो०॥
३—मलिन धोवण चौडे धर दो, निर्मल जल गुपचुप कर दो।
निन्दा करी गृही कान भर दो॥सुणो०॥
४—पडिले हण विधि नही जाणो छो, शुद्ध श्रद्धा न पिछाणो छो।
उत्सूत्र प्ररूपी रूढ ताणो छो॥सुणो०॥
५—कपट क्रिया से नही तरिया, बाज आचारी पेट भरिया।
इसा साग तो बहु करिया॥सुणो०॥
६—उजड वस्ति मे सम रणो, कैणो जिण रीते वै णो।
घर ओगुण देख पर गुण लेणो॥सुणो०॥

७—महिमा कारण करि माया, भोला नर ने भरमाया ।
स्यू कपट धरम प्रभु फरमाया ॥सुणो०॥

८—आप सासरे नही जाव, पर ने सीख शुद्ध फरमावे ।
ज्यारी प्रतीत किम आवे ॥सुणो०॥

९—हाथ थकी फेरे माला, भरया पेट मे कुद्दाला ।
ऐसे मुनि का मुख करो काला ॥सुणो०॥

१०—आप पोते निर्ग्रन्थ वाजो, थोथा चिणा ज्यू मत गाजो ।
घर जाता मन मे नही लाजो ॥सुणो०॥

११—मनुष्य मार ने धन लावो, अबे पेला ने समभावो ।
भोली पातरा दिखलावो ॥सुणो०॥

१२—बात सुणी अचरज पाया, या किम जाणे म्हारी माया ।
राम तत्क्षण दौड आगे आया ॥सुणो०॥

दोहा

१— इम सुण साधु आगे चाल्या, आ किम जाणे दोख ।
रूप मेली श्रावक हुआ, आडम्बर बहु थोक ॥

ढाल ३ राग – धम आराधिये

१—सथवाडो कियो घणो वनिर ए, किया नर नारिया का ठाट के ।
सभ वाला ने घोडा घणा ए, चाल्या घणो गहघाट के ॥
पूज्य पधारिया ए ॥टेर॥

२—जुना श्रावक जाणे समभणा ए मुण्डे मुहपत्ति बान्ध के ।
गुरु ने प्रदक्षिणा देय ने ए, भलो तरे पग बान्द के ॥

३—म्हे आप ने वान्दण आवता ए, म्हारे पूरा धर्म सु राग के ।
आप ही सामा मिल गया ए, भला जाग्या म्हारा भाग के ॥

४—म्हा दर्शन दीठो राज नो ए म्हारे दूधा वुठा मेह के ।
मन वाछित फल मिल गया ए, आज पावन हुई म्हारी देह के ॥

५—इण दर्शन रे कारणे ए, म्हा वारी वार हजार के ।
म्हा पर कृपा कीजिए लीजिए सूजतो आहार के ॥

६—गुरु कहे श्रावक माभलो ए, थारे भलो धर्म सु राग के।
पिण आहार लेवा तणो ए हिवडा नही म्हारे लाग के ॥

७—म्हारे वेरण रा भाव को नही ए, म करो खीचा ताण के।
हठ जरा नही कीजिये ए, थे छो अवसर तणा जाण के ॥

८—तब वलता श्रावक इम कहे ए, जोडी दोनो हाथ के।
हठीला स्वामी थे घणाए, किम खीचो (सो बात के ॥

९—दोय पोहर तो ढल गया ए थारे हुवो भिक्षा रो काल के।
खीचडी ने वडियाँ भली ए, ऊना रोटा घृत दाल के ॥

१०—ओ दाखा रो धोवण देखलो ए, आपुरी भरी परात के।
मन होवे तो मिठाई लीजिए, पीओ ओला मिश्री नवात के ॥

११—गुरु ने वहराया विना ए, म्हाने जीमण रो छे नेम के।
वेगा काढो पातरा ए, थे झोली नही खोलो केम के ॥

१२—थे झोली ने क्यों झाली रह्या ए,म्हारे निश्चय नही परिणाम के।
थे किम कर वहरावो सो ए, कोई नही जोरावरी रो काम के ॥

१३—थे तो श्रावक मिलिया सामठा ए थे लीधो म्हाने घेर के।
आगे किम जावण दो नही ए, हू तो होगयो मण को सेर के ॥

१४—म्हे श्रावक घणा ही देखिया ए पिण ओ हठ ने या झोड के।
कठे ही पण नही देखिया ए, ओ दीठो इया ही ज ठौड के ॥

१५—पूज्य सुणो थे पादरा ए माण्डो पात्रा म करो जेझ के।
म्है छा ओ समगति आपरा ए, हुलस्यो म्हारो हेज के।

१६—इतरा चरित्र चेला ने किया ए, तीजी ढाल मझार के,
ऋषि रायचन्दजी कहे ए, आगे सुणो अधिकार क ॥

ढाल ४

राग—नणदल ए०

१—आमी सामी खीचता झोली खुली नीठा नीठ, गुराजीओ।
पातरा माहे सु गहणा पडया, चवड लोका लिया दीठ ।गु०
थे गेहणा कठा सु लाविया। टेर॥

२—गेहणा कठा सु लाविया, कहो थारा चित्त री बात, गुरा जी।
थे भेख लजाया लोक म, कह्यो कठा लग जात, गुरा जी ॥

३—इतरे वारू आविया, वले आया वाप ने माय, गुरा जी।
गेहणा तो गया आगला, म्हारा वेटा देवो वताय, गुरा जी॥

४—तात मात कहे रोवता, सुत विन गेहणा रो शाल, गुरा जी।
कुरले म्हारो कालजो, ज्या लग निरखा नहो वाल, गुरा जी॥

५—वेगा म्हाने वताय दो, जेभ करो मत काय, गुरा जी।
थे टावर कठे छिपाविया, म्हारो जीव निकलियो जाय, गुरा जी॥

६—जीवता होवे तो म्हैं जोयला, मुआ होवे तो देवाँ त्याग, गुरा जी।
गुरु आख्या मीच अवोला रह्या, आवी लाज अथाग, गुरा जी॥

७—जो धरती फाटे परी, हू पेस जाउ पाताल गुरा जी।
मोटो अकारज मैं कियो मैं मारचा नाना वाल, गुरा जी॥

८—अरिहन्त सिद्ध साधु धर्म रो, चित्त धरचा शरणाचार, गुरा जी।
अवकि इण विरिया विषै, म्हने शरणा रो आधार, गुरा जी॥

९—ये देवता चरित्र देखाविया, पिण एक रही गुरा मे लाज, गरा जी।
लाज रही तो मारग अ वसो, लाज स सुधरे काज, गुरा जी॥

१०—गुरु समभावण कारण, चौथी मे चरित्र अनेक, गुरा जी।
रिख रायचन्द कहे साभलो, आगे चेला रो विवेक, गुरा जी॥

दोहा

१— वारू लागा वाघ ज्यू, गर हुवा घणा भय भ्रन्त।
देवता ज्ञान मे देखिया आण मिल्यो अव तन्त॥

२— माया सर्व समेटने, साधु रूप वणाय।
मत्थेण वन्दना मुख सु कहे उभो आगे आय॥

३— आप आवन्ता कठ अटकिया काँई दीठो माग माय।
एक पलक नाटक देखियो, तब चेलो वोल्यो वाय॥

४— पलक कहो किण कारणे, नाटक निरख्यो छ मास।
देखो सूरज माण्डलो, जोवो हिये विमास॥

ढाल ५

राग—चार प्रहरो दिन हुवे रे लाल

१— रूप कियो दवता तणो रे लाल,
रिद्धि तणो कर विस्तार, गुरा जी ओ।

चित्त वल्लभ चेलो पूज्य रो रे लाल,
उपनो स्वर्ग मझार, गुरा जी ओ ॥
राखो अरिहन्त वचना री आसता रे लाल ॥टेर॥

२— राखो अरिहन्त वचनो री आसता रे लाल,
टालो समकित ना दोख ॥गुरा०॥
स्वर्ग नरक निश्चय जाण जो रे लाल,
कम खपाया मिले मोख ॥गुरा०॥

३— हूँ सजम पाली हुवो देवता रे लाल,
रतन जडत रो विमान ॥गु०॥
दो हजार वर्ष पूरा हुवा रे लाल,
एक नाटक से प्रमाण ॥गुरा०॥

४— ज्यू थे नाटक मे मोहिया रे लाल,
त्यु म्हे मोही रह्यो एम, ॥गुरा०॥
थाने मैं विसरी गयो रे लाल,
लागो नवलो प्रेम, ॥गुरा०॥

५— समकित माहे सेठा किया रे लाल,
काट दियो मिथ्यात ॥गुरा०॥
वन्दना किधी गुरा भणी रे लाल
जोडी दोनो हाथ ॥गुरा०॥

६— देवता प्रतिबोधी गयो रे लाल,
गुरु लियो सञ्जम भार ॥गुरा०॥
पछे चारित्र पाल्यो निर्मलो रे लाल,
वलि ओरा रा कियो उपगार ॥गुरा०॥

७— आषाढभूति भली तरे रे लाल
जिन मारग दीपाय ॥गुरा०॥
अन्त समय अनशन करी रे लाल,
मोक्ष गया कर्म खपाय ॥गुरा०॥

८— जिम आषाढभूति दृढ हुआ रे लाल,
जिम रहिजो चतुर सुजाण ॥गुरा०॥

दर्शन परिषह जीत जो रे लाल,
ज्यू पहुँचो निर्वाण । गु०॥

९— उत्तराध्येन अध्येन दूसरे रे लाल,
कथा माहे अधिकार ॥गुरा०॥
तिण अनुसारे मैं कियो रे लाल,
रिख रायचन्द पर उपगार ॥गुरा०॥

१०— समकित दृढ पच ढालियो रे लाल,
कह्यो कथा माहे जोय ॥गुरा०॥
जो कोई विपरीत मैं कह्यो रे लाल,
ते मिच्छामि दुक्कड मोय ॥गुरा०॥

११— पूज्य जयमल जी रे प्रसाद सु रे लाल,
नागोर शहर चौमास ॥गुरा०॥
पच ढालियो जोड्यो जुगत सु रे लाल,
समकित ज्योत प्रकाश ॥गुरा०॥

१२— सवत् अठारे छत्तीस मे रे लाल,
आसोज विद दशमी दिन ॥गुरा ।॥
राखो समकित निर्मलो रे लाल,
वाजो जग माहे धन ॥गुरा०॥

दोहा

१— परिषह् कह्यो इक्कवीसमो, नामे तेह् अनाण।
ज्ञानावरणीय ने उदे, ज्ञान न चढे प्रमाण।।

२— जघन्य नवतत्त्व ओलखे, प्रवचन माता आठ।
भेद भिन्न उत्कृष्ट थी, नही आवे सूत्र ना पाठ।।

ढाल १ राग—साभल रे मोरा बीरा

१— खपकरे भणवारो आकरी, माण्डे गोखा गोखोरे।
गुरु सिखावे वली वली, पिण नही बेसे अक्षर चोखो।।

२— अध्ययन सूत्र आवे नाही, प्रश्न नो उत्तर नावे।
परिषदा आवी रे उमाई, व्याख्यान कियो नही जावे।।

३— सूक्ष्म बादर जीवना भेदो, गुणठाणा ने वली जोगो।
उपयोग लेसा प्रमुख घणा, पूछ्या न करे सोगो।।

४— जाणे निश्चय मैं पूरवे, कीधा कम अनाण।
जिण रीते भेद न जाणु पाप धर्म ने कल्याण।।

५— अथ मैं जो समकित लही, ज्ञान पामशु आगे।
इम मन ने मुनि धीरपे, जिण वली कम न लागे।।

६— तप उपधान जो आदर, पडिमा कही जेम।
यू विचरत छद्मस्थ थी, न निर्वतु केम।।

७— यव मुनि नी परे जाणो, जीता परीषा अज्ञान।
केवल लेई मुगत गया, धरो निमल ध्यान।।

दोहा

१— अज्ञान परिषह आकरो, करडो तिण रो काम ।
सहता पिण नहीं सोहलो, दोहलो जाणे जाम ॥

२— ज्ञान हेतु गुर खप करे, सिखावे सिद्धान्त ।
चेला मूढ इम चिंतवै, गुरु ले छे मुझ अन्त ॥

३— जातिवत जो शिष्य हुवे, तो आलोचे ऊण्डो ।
गुप उपकारी माहरा, कदीय न करे भूण्डो ॥

४— विनय भक्ति तपस्या घणी, उज्ज्वल वलो आचार ॥
गुरु शिक्षा दे ज्ञान री, जद जाणे वज्र प्रहार ।

५— जिसो तिसो पिण सीखीया निरर्थक नहो थाय ।
आडो आवे कदेक ते जिम बीति यव मुनि माय ।

ढाल २

राग—चौपइनी

१—सुप्रतिष्ठ नगर यव राजान, अलकापुरी धनेन्द्र समान ।
राणी प्रियदर्शना ना नन्द गुणवान्, गर्दभिल्ल नामे वुद्धि निधान ॥

२—लाडली ने लौडी वहन गुणवत, अणुल्लिका कुवरी रूपवत ।
दीर्घपृष्ठ मुथो करे राजकाज, दुश्मन सहु नाठा है लाज ॥

३—एक दिन थेवर पधार्या जेत, परिषदा आवी वदन घर हेत ।
अति आडम्बर करी यव राज, हष धरी वाद्या मुनिराज ॥

४—अपूर्व धर्म कथा कही जाण, मुनिवर मुखनी अमृत वाण ।
सुण वरागी थयो यवराज, हूँ दीक्षा लेमु मुनिराय ॥

५—जिम सुख हो तिम करो यवराज, कलकरता कीजिए आज ।
गर्दभसेण कुँवर पट्ट थाप, मुनिपद लीनो यव नृप आप ॥

६—गुर साथे मुनि करे विहार विनय वैयावच्च तप करे अपार ।
क्षमा दया ने बहु गुणवत, पिण नही पढे गुरु पास सिद्धान्त ॥

७—लज्जा विना मेलवे केई गाहा,
हरि विना मन्त्रा रो किम होवे उमाह ।
गुरु कहे सीखो मुनि ज्ञान वैरो नही मरे कोरे म्यान ॥

दोहा

१— गुरु प्रेरे अहो यव मुनि, थोडो घणो सिद्धान्त।
आलम्बन ए धर्म नो, परभव सुख अनन्त॥

२— विद्या नर नो रूप है विद्या धन प्रच्छन्न।
विद्या धन यश सुखकरी, विद्या बन्धव जन॥

३— विद्या ए गुरु निगुरु, विद्या ए पूजे राज।
विद्यावत नर देवता, सिद्ध करे सब काज॥

४— विद्या अगुरु लघु गण, भार न देश प्रदेश।
उदक अग्नि ने चोर नो, भय पिण नही लव लेश॥

५— विद्यावत प्रसिद्ध जग विद्यानत प्रवीण।
सिंग पूंछ बिना मनुष्य ते ढोर न विद्याहीण॥

ढाल ३

राग—किण से कडवा मत बोलना जी

१— प्रथम ज्ञान ने क्रिया पछे छे, प्रभु आगम मे भाखी।
ज्ञान बिना नही सुगति मुगति बेहुं, बहु आगम तासु साखी॥
यवमुनी भणीये, हो भणीये, भणीयें भणीयें, यव॥टेर॥
भव भव सचित पाप निकाचित हणीये यव।

२— बावनो चदन लद्यो गधेडो, भारवाहक बिण ने।
ग्राम नगर मे सब चतुर विध ज्ञानी बिना कुण माने॥

३— बार बार इम कहे आचारज, पण जब मुनि नही माने।
गुरु कहे है जव भणे नही, पिण मुश्किल पडसी थाने॥

४— नृप थयो साधु जाण ने परीषदा, ग्राम नगर बहु आसी।
पुछ्या जबाब कह्यो नही जासी, पछे घणो पछतासी॥

५— जब मुनि कर जोडी कहे गुरु ने स्वामी हूं गरडो डोसो।
पाव हांड चढ न बानो शू कीजे अफसोसो॥

६— श्री जो साहिब था खादे नचीतो, धर्म ध्यान हू ध्याऊं।
ओर चिन्ता मगनी छाण्डी श्री पुज चिरजीवाऊं॥

दोहा

१— जव थेवर इम चितवे, एने चितानाथ।
भणवो आवडमी जदी, पडसी माथे आय ॥

२— एम विचारी आपणा, शिष्य ने कहे बुलाय।
सीखावण इण विध कहे,जव ने भणावण उपाय ॥

३— जव मुनि ने हुँ, एक दा, मू कू किण इक गाम।
थे साथे मत जाव जो, हुँ कहूं तो पिण ताम ॥

४— नट जो भापा समिति थी, सिखावी विध एम।
जोई जो उपकारी गुरु, शिष्य भणावे केम ॥

ढाल ४

राग—चढ़ो चढो लाडा वार म लावो

१—एक दिन जव मुनि ने तेडी, बात कहे गुण होवे जेवी।
ससार्या ने वदावण जावो, प्रतिवोध देई ने पाछा आवो ॥
हो यव मुनि कह्यो करीजे ॥टर॥

२—तब जव मुनि कहे शिर नागी तेहत वचन तुम चो स्वामी।
पिण सोहसु केम अकेलो, तिण एक सिघाडो साथे मेलो हो। यव।

३—बडा चेला ने कह्यो तू'जासी,तें कहेविनय किण विध थासी।
छोटा चेला ने हुकम ज दीधो, तिण मीठो जवाव इम दीधो ॥यव॥

४—मे दोनो सरीखा हिण्डोला, हूठोठी जव मुनि भोला।
स्वामी उपदेश कहो कुण देसी,इण वाता दोनारी हासी होसी ॥यव॥

५—तव गुरु कहे अकेला ही जावो, ससार्या ने वदाई आवो।
लाभ घणो थाने थासी, म मेलाछा हिवडे विमासी ॥यव।

६—जातवत नी चाल एही, कु जातनी कहो गत के ही।
विनयवत ने भद्रिक भोला, आज्ञा गुण हिये ताला ॥यव।

७—मोटा होवे तो मोटी सोचे, उण्डी मन माहे आलोचे।
चाल्या हुकम ले वादया गुरु पाया, घन धन श्री जवमुनि राया ॥

दोहा

१— जव मुनि ने माग विषे, थई चिंता मन माय।
नृपति हूँ साधु थयो, पिण हूँ भणीयो नाय ॥

२— लोग वादवा आवसी, कहसी दो उपदेश ।
शू कहशू तव लोक ने, ए विखवाद विशेष ॥
३— हा ! हूं वडो अभागीयो, पापी हूं पुण्यहीण ।
हूं मूरख मति वावलो एम थायो मुख दीन ॥

ढाल ५ राग—श्रावक धर्म करो सुखदाई

१—इम पछतावतो कितरेक काले निजपुर सीम मे आयो हो ।
जव नो खेत तिहा एक हरीयो, शोभनीक डह डायो रे ॥
२—देखो आचारज अकल उठाई, गरु उपकारी सदाही रे ।
गुरु री सीख अबे याद आई, आण पड्या अब काई रे ॥
देखो आचारज अकल उठाई । टेर॥
३—एक गधो तिहां चरवा पेठो, हरीया जव ते खावे रे ।
खेत धणी थी डरतो खिण खिण, ऊंचो नीचो जोवतो जावे रे ॥
४—खेत धणी तिहा अलगो ऊभो, देख गधो गाथा बोली रे ।
जव मुनिवर सुण मन मे हरख्यो, बात हिये इम तोली रे ॥

गाहा

१— आधावसि पधावसि ममवावि निरिक्खसि ।
लक्खिओ ते अभिप्पाओ, जव पत्थेसि गद्दहा ॥

दोहा

१ – इत उत देखे गदभा, जाण्यां मन का भाव ।
जव को चाहे खिणसवो, थारी हिम्मत हो तो आव ॥

ढाल पूर्व की

५— ए गाथा रूडी हूं सीखु आडी आसी मारे आजे हो ।
ससारी मुझ वदन आसी, तिण ने सुणावा काज हो ॥
६— खेत घणी वार बार गाथा, भाखी ते ऋषि धारी रे ।
ज्ञान जतन करतो जिम चाले, वार वार संभारी रे ॥

दोहा

१— नगरपोल ने ठूकडा, आया जव मुनि राय।
तिणपुर ना वालक तीहा, खेले गिल्ली आय॥

२— एक उछालो गिल्लिका, गयो दूसरो लेण।
ऊंची नीची देखता, कठे न आई नेण॥

३— अणलाधा गाया भणी, सुण रिखी चिंते आम।
दोय दिन री खरची भई, उपदेश ने काम॥

गाहा

इओ गया, इओ गया मग्गिज्जति न दीसई।
अहमेय वियाणामि, अगडे छूढा अणल्लिया॥

दोहा

वो गई वो गई गुल्लिका, पडी भू अरा माय।
हम देखी सो कहत है, तुमको दीसत नाय॥

ढाल ६

राग—पथिडा वात कहो धुर देह थी।

१— गाथा कही खंतरे घणी, दोय तीन चार वार।
जवरिख रे, जवरिख, मन मे घारी आयो चालीयो रे॥

आयो नगर मे दिन थोडो सो देख रे।
जव रिख रे जवरिख मन मे एम विचारीयो रे॥टेर॥

२— प्रगट हूं सहु ससार्या मे जाय रे,
राते रे, राते लोग घणा वन्दन ।आवसे रे।
उमाया मुझ दर्शन केरे काज रे, ॥जव०॥

३— हिंसा रे हिंसा खट काय तणी वहु थावसी रे।
तिण कारण एकात थान के जाय रे॥
रात्र रे, रात्र रही प्रभाते जाय वदावसु रे।
इम जाण एक थान कुभार पे याच रे॥

४— रात्रि रे रात्रि रह्या जवमुनि उज्ज्वल भावसु रे।
इण प्रस्तावे नाम विषे के एक रे॥

चाकर रे, चाकर दगपिण्ठ मुथा रो आवियो।
तिण देख्यो जव मुनि नो उणीहार रे मन मे रे।
मन मे रे मनमे अचरज चाकर अधिको पावियो।

५— दौड कही मुनि नी मुथा ने बात रे, जवरिख रे।
जवरिख अमुक कुभकार की छान मे रे॥
इम सुण मुथो चमकियो, निज कृत्य जाण रे।
जाण्यो रे जाण्यो, रख मुझ करतव मु ज्ञान सु र॥

दोहा

१— गदभिल्लने मुथा थकी, वचनादि कियो विरोध।
तब प्रपच मूथे रच्यो, करने बहुलो क्रोध॥

२— गर्दभसेन ने मारने, अणल्लिका तस बेन।
परणावु मारा पुत्र ने, करू राज सुख चैन॥

३ - इम कर कुंवर भोलवी, गाली निज भोयरा माय।
राजा मुलक शोधावियो, पिण सुध लाधी नाय॥

ढाल ७

राग—श्री राम जी नार गमाई हो

१—सोच पडयो नृप लोक सहु कोने, खोज हाथे नहीं आवे।
खान पान निद्रा सब भूला, आरत ध्यान जा ध्यावे
उपाय अनेक उठाव॥
कम गत मेटी कीम ही न जावे हो॥टेर॥

२ चाकरे साध आगमनो बात मुथो सणी द ख पाव हो।
नप ने जणावण आयो झट चाली रख जव बात जणावें हो।
तो घर मारो लूट जावे हो॥कर्म॥

३ तो तिम करीये ज्यु बाप बेटा बेहु, मिलवो ही नही थावे।
हू रहू अलगो मुनि ने पर वारो परभव मे पहुचावे।
पापी इसी कुबुधि उठावे॥कर्म॥

४ इम जाणी मुहतो आयो, नृप पासे विधोकर वात सुणावे।
यव नृप वद्ध थई व्रत लीधा, हवे तेह पाल्या न जावे।
तेमाटे पाछा आन॥कर्म॥

५—छाने छिप्या है कुमार रा घर मे, उमराव छाने बुलावे।
मिल सगलाई राज तुम्हारो, रखे जमी सु उठावे॥
जीव थी रहित करावे॥कर्म॥

दोहा

१—इम साभल राजा तिहा, अति रलियायत थाय।
मुहता जीए तो रुजे घणो, जो पिता राज ले आय॥
२—राज करो महाराज जी, हुकमी हमे हजूर।
खिदमत करसा खूब हमे, दम इक न रहा दूर॥

ढाल ८

१—मुह तो भाखे हो, सुणो नी थें महाराजवी,
नहीछे आप लायक ये वात।
लोगा मे हांसी होसी अति घणी जी, जोवो हृदय विमास॥
हठ तज देखो हो नरेश्वर अतरगत थकी॥टेर॥
२—अरि थी नाठा हो, योग लेई भागता जी,
सत्य थी जो नाठा ऊठ।
जिण रो मुण्डो हो देख्या ही खोटो फल,
होवे जो देखणी भली नही पूठ॥
३—चोर ने थानक हो, भोजन दे वैरी भणी,
जार ने सोपणी निज नार।
अन्धा सिंघनी हो वैद्य आख्या खोलता,
तुरत लहे जम द्वार॥
४—देश मे राख्या हो इता ने भलपण छे नही,
घर मे घाल्या थी मोटी हाण।
पछे ही कैसो हो पेला क्युं नही कह्यो जी,
बोली ऐसी मुथा जी वाण॥
५—सब नृप भाखे हो मुथा जी किसो कीजिएजी,
कहो कोई दाय उपाय।

सो ही करूँ हो मुथा जी थारा केण थी,
विघ्न म्हारा टल जाय ॥
६—दुष्टी मुथो हो कहे सोपो पड्या,
पीछे खड्ग ले जाय ।
मुनि ने मारो हो, जो विघ्न दूरा टले जी,
जन अपवाद न थाय ॥

दोहा

१— इम सुण खड्ग ले निसर्यो, रात पड्या नृप आप ।
केलवणी मूथे करे, पिण प्रगट सी पाप ॥

२— इण अवसर मुनिराज ने शीत लागतो जाण ।
दे कुम्भार दया करी, आडी टाटी आण ॥

३— सज्झाय करे दो गाहनी, माय बैठा मुनिराज ।
तीजी गाथा किम लहे, ते सुण जो तज काज ॥

ढाल ९

राग—मोटी हो जग मे मोहणी

१—कुभारे जब चाक थी, उतार्या हो तिण काचा भाण्ड ।
रात्रे भागण भयथकी, ते सुतो हो ऊपर माचो माण्ड ॥
जोई जो जी हिवे सू होवे ॥

२—तिहा तणे एक ज उन्दरो, ते करती हो चक्कर मुख शोर ।
जाति स्वभाव ने कारणे, तं जावे हो नित भाण्डा कोर ॥

३— तव कुम्भार गाथा भणी,
ते सुण ने हो धारी जब ऋषिराय ।
त्रण दिवसनी खरची थई,
चोथे दिन जाई हो भेंट सु गुरु पाय ॥

गाहा

सुकुमालग ! भद्दया ! रत्तिंहिंडणसीलया ।
भय ते णत्थि म मूला दीहपिट्ठाओ तें भय ।'

दोहा

१— "रे मूपक भद्रिक तुम, कहूँ वात सच मान।
भय श्राण दीर्घपिष्ठ को मुझ से भय मत जाण ।।

ढाल पूर्व की

४—तू सुकुमाल सुहावणी, फिरे राते हो, रहे दिन विलमाय।
भय तो ने दीघपिष्ठ थी, हम थी हो तुझने भय नाय ।।हठ।।

५—ए त्रण गाथा स्मरण करे, फुलता हो जिम कमल रो फूल।
चितारे एक ध्यान थी, विन गुणिया हो रखे जासु भूल ।।हठ।।

६–इतरे तो नृप श्रावियो, पिण जागता हो न घलावे घाव।
देख्या मुनिवर शू गिणे नृप देख हो मुनि मारण दाव ।।हठ।।

दोहा

१— अधावसी पधावसी, गाथा फेरी मुनिराय।
गर्दभिल्ल वाहिर खडो, सुणी चित्त लगाय ।।

२— चित्त मे राजा चमकियो साभल ने ये गाय।
ज्ञान करी मुझ जाणीयो, धन हो स्वामी नाथ ।।

३— दुर्बुद्धि धिक्कारता, मन सु उतर्यो क्रोध।
जानु ज्ञानी वाई तणी, जो ये वतावे शोध ।।

४— इत मुनि गाथा दूसरी वोली फेरण काज।
अर्थ समझ राजा कहे धन-धन ये मुनिराज ।।

५— कुण वैरी भुश्रारा मे रखी, मुथेखतरो कह्योकेण।
जो ये दाखे मुनिवरू तो समझु साचा सेण ।।

६— रखे गाथा विसरू कही सोची ने मन माय।
सहज भाव से उच्चरी गाथा तीजी चित्त लाय ।।

७— रे मूसक भद्रिक तुम, कहु वात सचमान।
भय श्रान दीर्घपिष्ट को, मुझ से भय मत ग्यान ।।

ढाल १०

राग—ख्याल की

१—सुधो अर्थ विचारी समज्यो, मुहजे तो तुझने मार।
राज लेसी तिण वहिन छिपाई, इण में फेर न सार ॥
है पर उपकारी जाऊं बलिहारी श्री गुरुदेव की ॥

२—डर पाम्यो झट पट तव उठी, टाटी परी उतार।
यवमुनि ने चरणों जाई पडियो, दे आतम ने धिक्कार ॥

३—खमो अपराध हमारो स्वामी, तुमने किया उपकार।
खमवा योग्य थे क्षमा का सागर, तुम गुण अनन्त अपार ॥

४—तुम बह्मज्ञानी सकल द्रव्य ज्ञाता, हू मूरख सरदार।
हराम खोर गुरु देव को घाती, मैं मूल न कियो विचार ॥

५— तुम प्रसाद बात मह जाणी, नहीं नर कर तो सहार ॥
घम रुप जन्म दियो दूजो, मरतालियो उबार जी।

६— छोरु कुछोरु आज थयो थो, पिण तुम लियो सुधार ॥
बात मुथारी मानी मैं मूरख कह्यो सकल विचार जी।

दोहा

१— नृप अपराध खमायने, आयो निज दरबार।
चकितभूत मुनिवर भये, ये शू थयो अवार।

२— खड्ग ग्रही आयो हतो, मारण की मन धार।
उपदेशादि साज बिन, सुधर्यो केम विचार।

३— धन्य शिक्षा मुझ गुरु तणी, धन्य ज्ञान दातार।
धन्य आज्ञा गुरुराज नी बडो कियो उपकार।

ढाल ११

राग—वीर जी वखाणी हो मुनिश्वर करणी आपरी।

१— हिवे दिन उगा हो राजा निज सामत तेडने,
मुहता नो घर लियो घर।
जीवतो झाल्यो हो सकल परिवार सु जी,
फिर गया सुभट चोफेर।
धन्य गुरु ज्ञानी जी दाता जीवन तणा जी ॥टेर।

२— घर लूट लीधो हो, काढी भूग्ररा माय थी जी,
पूछ्यो सब वीरतत ।।
देई दिलासा हो बाई ने राखी रोवती जी,
वात मिली सहू तन ।।टेर।।

३— धन्य उपकारी हो, गुरु जी ग्रापरा ज्ञान से जी,
सिद्ध हुग्रा सहू काज ।
देश मे निकाल्यो हो, मुथा परिवार ने जी,
राज सभाल्यो जी राज । टेर।।

४— नृप प्रभात हो, ग्राडम्बर ग्रति करी जी,
वादशा श्री जव मुनि राज ।
नरक पडन्तो हो, राख्यो गुरु मुझ भणी जी,
प्राण वचाया म्हारा ग्राज ।।टेर।।

५— लोक नगर ना हो, ग्राया सहु वदवा जी,
राय मुख सुणे गुण ग्राम ।
मुनि मुख वाणी हो जाणी सूत्र सारसी जी,
सुण राखी चित्त ठाम ।।टेर।।

६— वात फैलाणी हो, पाणी ज्यू ग्राखा शहर मे जी,
धन्य धन्य करे नर नार ।
धर्म तणी श्रद्धा हुग्रा हो, घणी सू स ने ग्राखडी जी,
ग्रतुल हुग्रा उपकार ।

७— तीन दिन राख्या हो मुनि ने ग्राग्रह करी जी
वली हठ किया कहे एम ।
मुझ ने गुरुनी हो ग्राज्ञा छे श्रावका एटली जी,
ते क्हो लोपाये केम । टेर।।

८— इम समजावी हो यव मुनि ग्राया गुरु कने जी,
वादशा श्री गुर जी ना पाय ।
हाथ जोडी ने हो गुरासु ग्रर्जी ऐसी करे जी,
मुझ ने भणावा महाराय ।।टेर।।

९— स्वामी तव बोल्या हो, तुम तो इम कहता हता,
माने भणावो ग्रावे जी नाय ।

हिवे थें कहो छो, भणावो स्वामी मुझ भणी,
कासु आई दिल माय ।।टेर।।

१०— जब मुनि भाख्यो हो, वृतान्त सहू मांडने,
पछे भण्या ग्यारह अंग।
कर्म खपाई हो, केवल ले मुगति गया,
तिम दूजा ही करजो उमङ्ग ।

११— उत्तराध्ययन दूजे हो, परिषह इकवीसमो,
कथा माहे अधिकार ।
तिण अनुसारे हो, कवि जन इम कहे,
इण परे कीजो निस्तार ।।टेर।।

दोहा

१— शासनधणी सानीध करो, वचन सुधारस जाण।
कर्म तोड केवल लही, तेहना करू वखाण ॥
२— भक्तपूत चारित सुद्ध, भाव सहित प्रमाण।
ते श्री वीर जिनेश्वरु, प्रणम्या हो कल्याण ॥

ढाल १ राग—नर माया काय कु जोडी

१—दक्षिण भरत मगध माह सोहे, राजग्रही सुखकारी रे।
श्रेणिक राजा ने चेलणा राणी, दोई दृढ समकित धारी रे॥
सेवो भविक शुद्ध अणगारी रे ।।टेर।।
२ - जिण साधु वदण चाव सदाई, धर्मघोष आया तिणवारी रे।
दर्शन कु लोग उमग भर्या है मिल-मिल जात हजारी रे ।।से०।।
३—वाणी सुणवा कु जुडी परिषदा, साधु केवल वैण उचारी रे।
भविक जीव सुण मगन होत है वाणी सुधासम प्यारी रे ।।से०।।
४—सूस व्रत पच्चक्खाण बहु विध, शक्ति मुजब लिया धारी रे।
वाणी सुण लोक आया ठिकाणे, आगे सुणो अधिकारी रे ।।से०।।

दोहा

१— छठ खमण ने पारणे, मुनि अषाढो तह।
सज्झाय ध्यान कर गुरु कने आज्ञा मागी धर नेह ॥

ढाल २ राग—जुहारमल जाट का गढ जैपुर वकारे।

१—तीजा पोहर नी गोचरी रे, नगरी मे कियो प्रवेश।
लब्धि धारी भणीया घणा रे, जोवन तरुणी वेश ॥
मन मोहन साधुरी छवि लागे प्यारी रे ।।टेर।।

२—ऊँच नीच मध्यम कुले रे, फिरता आया नटवा गेह।
हम घर आया साधु जी रे, मोदक बहरावे घर नेह ।।म०।

३—मोदक ले पाछो वल्यो रे, चितवे चित्त मझार।
ए लेसी गुरु माहरा रे, पावै न पडसी लगार ।।म०।।

४—रूप फेर अन्दर गयो रे, आय वहर्यो दुजी बार।
इण मे मुझ ने ना मिलेरे, लेसी विद्या भणावणाहार ।।म०।।

५—तीजो रूप डोसा तणो रे, हाथ मे डागडी झाल।
डिगमिग तो पगला भरे रे, मन पडिया नाक ने गाल ।।म०।।

६—आयो नटवा आगणे रे, नटवी करुणा कीध।
क्षीण शरीरज देखने, एक मोदक मुनि ने दीध ।।म०।।

७—ओ मोदक लघु शिष्य लेवसी रे, चौथो रूप धर्यो कर चूप।
हाल चाल रलियामणी रे वले दीसे वालक रूप ।।म०।।

८—इसडो रूप धारी करी रे, फेर मोदक लीया ऋषि राज।
ए ज्येष्ठ गुरु भाई लेवसो रे, नटवो देखे सर्व साज ।।म०।।

९—पाचमो रूप खोडा तणो रे, जीमणी बठी आख।
मोदक जाचण आवीयो रे, कुवडो कडीया मे वाक ।।म०।।

१०—रूप नवा नवा देखने रे नाटकियो अचरज चाय।
महिला सु हेठो उतर्यो रे, हर्ष सु वाद्या ऋषि राय ।।म०।।

११—हाव भाव करे अति घणा रे, लागी घर मे राखण री चूप।
कन्या दोय नटवा तणी रे, ज्यानें सारोही कह्यो स्वरूप ।।म०।।

१२—चितामणी सुर तरु समो रे, मुनि माह विद्या अथाग।
हेत जुगत करी ने रीझावजो रे, तुम घर कर वहलो राग ।।

दोहा

१— "जय सुन्दरी" भवन सुन्दरी, सज सोला शृङ्गार।
मुनि आगल हाजर खड़ी, अप्सर ने अनुहार ।।

२— चन्द्र वदन मृग लोचनी, हस सरीसी चाल।
लुल-लुल ने लटका घरे, बोले वचन रसाल ।।

ढाल ३ राग—महावीर जी री पालखडी

१—हा रे मुनिवर ! आप पधारो रग महल मे ॥हा०॥ सूरत नी वलि०॥
ए सुख सेज्या ने सायवो ॥हा॥ सुख विलसो ससार॥

महाराज, मोरी विनतडी अवधार ज्यो ॥टेर॥

२—हा, आज्ञापालक आपरी, हा, जोड खडो रेंसा हाथ ॥
हा, म्हे छा थारी कामण्या, हा थे छो म्हारा नाथ ॥म०॥

३—हा, घर घर फिरणो गोचरी हा, अरस-विरस लेणो नाज ।
हा, ए लायक तुम छो नही, हा, अज मानो महाराज ॥म०॥

४—हां, माथे लाच करावणो, हां, पालो करणो विहार।
हां, मला कपडा पहरणा, हां, दोरो सजम भार ॥म०॥

५—हां, शीत ताप दुख का सहो, हां, तुमछो राजकुमार।
हां, जोवन वय मे काया का दमो, हा, एकरणी दुष्कर कार ॥म०॥

६—हां, फूलो मे वास रमी रही, हां, जिम थासु लागो प्रेम।
हां, भोग कर्म उदे हुआ, हां, ते छुटी जे केम ॥म०॥

७—हां, नाटकणी थी मोही रह्यो, हां, भूला तप जप जोग।
हां, कामण चित्त मे बस रही, हां, कर वा सु मन भोग ॥म०॥

८—हां, नेह नजर निरखे रह्यो, हां, सुन्दर इम बोले ऋषिराय।
हां, सुन्दर आसा तुम घर आगणे, हां गुरु ने पुछ सु जाय। म०॥

दोहा

१— वाट जोवे चेला तणो, सत गुरु नेण निहाल।
हिवे अषाढ मुनिसर, तिहा आवै तत्काल ॥

२— शिष्य मोडा किम आविया,,किहा रह्या विलमाय।
तडक भडक चलो कहे, ए मासु न खमाय ॥

३ - शिर तपे पग तले बले, फिरवो घर-घर माय।
ए लो ओघा पातरा, करमूं जे मुझ दाय ॥

ढाल ४ राग—गरभ्यो राजवी

१—वचन सुणी निज शिष्य तणारे चेला जी काई गुरु बोल्या तदवाण।
सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की ॥टेर॥
२—चूक वचन किम बोलिए रे ॥चे०॥ तू तो चतुर सुजाण ॥सी०॥
३—कीसो ठिकाणो विचारीयो र चेला जी, थारे किण सु लागो प्रेम।
४—नाटकणी मुझ मन वसी हो॥ सत्गुरुजी॥ मोह्यो राधा माधव जेम।
५—नीठ-नीठ नर भव लह्यो र ॥चे०॥ मिलीयो सत्गुरु साथ ॥सी०॥
६—खप करी ज्ञान भणावीयोरे ॥चे०॥ थारे लागो चितामणी हाथ।
७—सेठ सेनापति राजवी र ।चे०॥ वल इन्द्र सुरारा नाथ ॥सी०॥
८—तु जगरो पुजणीकछे रे ॥चे०॥ थारे कने जोड सहु हाथ ॥सी०॥
९—ए सुख पदवी छोडने र ॥चे०। तु रह्यो मन्दर सु रीज ॥सी०॥
१०—विविध वचन कह्या घणारे। चे०॥ तब चेलो बोल घर खीज॥सी०॥
११—था रो राख्यो नही रहु हो ॥सत्गुरुजो॥ जो होवे लाख प्रकार।
साख नही मानु हो गुरुवर जी ॥टेर।
१२—वचन दियो सुन्दर भणी हो। स ॥ जाय सुख विलसु ससार ॥सी०।

दोहा

१— गुरा रो राख्यो नही रह्यो, तो ही गुरा रो जीव।
मद्य मास लीजे मती, मैठी राखजे ममकित नीव॥
२— मद्य मास लेउ नही थारो वचन कबूल।
इम कही उठी चालीयो, रह्यो काम भोग रस झूल॥

ढाल ५ राग—मुनि मन नावा मे बस रह्यो॥

१— कामण सु मोही रह्यो, सुख विलसे चित्त लाय रे।
बारे वरस बीता पछे ते राजा पे जाय रे॥
कामण सु मोही रह्यो ॥टेर॥

प्रक्षिप्त दोहा

१— राज भवन मे रगसु, कलासार के साथ।
आयो कुंवर उछाह सु, करे राय सु बात॥

प्रक्षिप्त ढाल

राग--अस्सी रुपये लो कलदार

एतो अचरज बात अपार, सांभल जो सगला नर नार ॥टेर॥

१—कुंवर आयो नृप सुख पायो, मन मे भयो कयो विचार।

२—कुंवर बाले कुण,मुझ तोले, जीतु एहने छिनक मझार।

३—बात करता नभ जोवतो दीठो दल सेन्या अणपार।

४—राय विमासे केम आकाशे, युद्ध माण्ड्यो छे कहो इणवार।

५—कुंवर भासे वचन प्रकाशे, चन्द्र सूर्य आपस थयो खार।

६—तुम आज्ञा पाउ अब मैं जाऊँ, तुरत मिटाऊँ न लाउंवार।

७—पिण मुझ सग दो नार रुपारी, सुपु कहने कहो विचार।

८—महेल रखावो तुमे सिधावो, राड मिटावो गगन मझार।

९—तुमछो राजा गरीव नवाजा, मेटो मर्जादा न दो मुझ नार।

प्रक्षिप्त ढाल

राग—बनारसी

अचरज सुण जोए आगे। सुणता सव वल्लभ लागे जी ॥टेर॥

१—नृप कहे कुंवर से वाणी, ए किम करी बात अयाणी जी।

२—पर नारी दोसन भारी, आ भव-भव करे खरारी जी।

३—पर नारी फन्द मे पटके, वैरण अधारी भटके जी।

४—सब लोका केरी साखे, दो नारी ने नृप राखे जी।

५—मुझ हायो हाथ सुपी जो, दुजा ने एह मत दीजो जी।

६—पग अगुष्टे काचे तारे, लवाव्यो गगन मझारे जी।

७—छिन भर म अवर जावे, नही किणरे दृष्टज आवे जी।

प्रक्षिप्त ढाल

राग—तमासारी

इण राज सभा मे, अचरज आयो रे सगला साथ ने ॥टेर॥

१—क्षण अतर वे पांव पडीया जद, राज सभा मे आय।
थोडी देर से घड सर पाणी पडिया, अचरज पाय ॥इ०॥

२—नृप विचारे किम अब कीजे, ए स्यू थयो अकाज।
कुंवर काम रण माहे आयो, कुण जीते नट आज ॥इ०॥

३—सुणी वात ए सुन्दर बेहु, कहे राय सु एम।
खिण भर मैं रेवा नही राजा, म्हारे पति सु प्रेम जी ॥इ०॥

४—इण मग साम म्हे सत लेंसा, ढील न करो लगार।
बहु विध कर राजा समझाव, नही माने तव नार जी ॥इ०॥

५—तुरत जली पिव के मग जाई देखे दुनिया सारी।
थोडी देर से वारि बरसी, जमी सुखाई जीवाणी जी। इ०॥

६—थोडी देर से कुंवर उतर्यो नृप पे कयो विचार।
राड मिटाई शीघ्रे आयो, अब सूपो मुझ नार हो ॥इ०॥

७—अग उपाग अबर से पडिया, सन्दर बे सत लीधा।
सभा समक्ष तुमे पूछलो समझास सभी तम कीधारे ॥इ०॥

प्रक्षिप्त ढाल राग चिडी थनें चावलिया भावे

राजेश्वर वात सुणो म्हारी, राजेश्वर वात सुणो म्हारी।
किम थे बदलो नीत हरगिज मैं, छोडु नही नारी ॥टेर॥

१—ए सब नौकर तुम का साहिब, साख मेरे सारी।
मानू नही मैं बात महाराजा करू कपट जहारी ॥गरीबन॥

२—मेल मायने मेरी पदमण, नही मुझ से छानी।
कहो तो लेउं बुलाय सभा मे, नही झूठी जानी ॥ग०॥

३—नृप कहे किम नार बुलावे, मैं पिण लेसा देख।
मूवा सो जीवित नही होवे जिनमत का ए लेख ॥कुंवर जी॥

४—आवो प्यारी प्यार दिखावो, जरा न लावो जेज।
बोली महल माय ने वाला, हीवड धरती हज ॥अब तो ज०॥

५—किण विध कर आता तुम पासे राजा राणी रोक।
राय सुणी विस्मय थयोस बाई, जाई जोवे गोख ॥सायब जी०॥

६—दोनो उतरी महल थी सरे, आई प्रीतम पास।
सब साचा ने झूठा कीधा लोक यह शावाश ॥देख तो आ०॥

७—प्रदेशो नट विस्मय पायी, सघला नमीया आय।
रीझ्यो राजा अति घणो सरे कीधो कुंवर पसाय ॥कुंव०॥

ढाल ५ राग—मूलणी

१— राज दुवारे जायने, जीतो नाटकीयो तिवार रे।
प्रमदा छाक पीधी तदा, मद मस्त थव विकार रे॥
२— घर आय देखी नार ने, लार मद्य मास ना आहार रे।
अपाढभूति विरक्त थयो जीतो वीपे विकार रे॥
धन धन रे अपाढ मुनिसरू ॥टेर॥
३— कामण चूकी निजवचन थी, अब घर रह वाना त्याग रे।
सयम मारग आदरु, मन घरिये वैराग रे॥

दोहा

१— कामण ने इण पर कहे, हू लेसु सजम भार।
तद कामण वलती कहे, नैणे जल नी धार॥

ढाल ६ राग – काइक लोजी

१— सूणी वचन निज कता केरा, हाथ जोड इम भाखे।
माफ करो तकसीर हमारी, खाविंद रोप न राखे॥
उभारोजी, रोजी-३ अपाढा ठाकुर उभारो जी। तेर॥
२— आज पछे सुण पियुडा म्हारा, न करा ए काजो।
दीन वचन कहे पलो झालने, आप गरीब निवाजो।उ०॥
३— इम करताइ प्रीतम म्होरा, जो तम्हे छेह दीखासो,
मुझ अबलानो जोर नही छे पिण सुख कदेई न पासो।
४— हाव भाव करवा मे सुन्दर मूल न राखी बाकी।
पिण गुरु वचन निभावण काजे, वात न मानी वाकी॥उ०॥
५— पलो झाल उभी रही, दोय सुन्दर तिण वारोरे।
तुम मुकी ने जावसो जरे, हमने कोण आधारो रे॥
६— विविध वचन कह्या घणा, अपाढो चतुर सुजाणो रे।
कह नाटक देखावसु, न करो खाचा ताणो रे॥

कलश

१—सवेग मन धर, राय पे हरख कर भरत नाटिक माडीयो।
हाथी घोडा रथ अन्तेवरी, कीधी परदा दोडीयो॥

२—अग आभूषण खूब छाजे, आप विराजे भूपए।
लब्धि तरणा परताप सु ए, कीधा नवा-नवा रूप ए॥

३—आरिसा भवन आए सुख पाए ध्याए निर्मल ध्यान ए।
अनित्य भावना सुद्ध जोगे, पाम्या केवल ज्ञान ए॥

४—शासन देवा कीयो उछव, दुदुभी रही गाज ए।
भक्त "विमल' कर जोड भाखे, धन अपाढो मुनिराज ए॥

दोहा

१— खराखरी रो खेल है पालणो शील उदार।
पर वस पडिया जे सहे घन तेनो अवतार।।

२— झाझरीया रिखराय जी, पडी सकट आय।
तो ही न डिगीया मुनि तदा, ते सुण जो चित्तलाय।।

ढाल १

राग—श्री जिन अजीत नमु जयकारी

१—सरस्वती चरणे शीश नमावी, प्रणमु सतगुरु पाया रे।
झाजरिया रिख ना गुण गाता उलटे अग सवाया रे।।
भविजन, वदो मुनि झाजरिया।।टेर।।

२ – भविजन बदो मुनि झाजरिया, ससार समुद्र तरिया रे।
सबल सह्या परिसह मन शुद्धे शीयल रयण कर भरिया रे।।

३—पइठाणपुर मकरध्वज राजा, मदनसेना तसु घरणी रे।
तस सुत मदन ब्रह्म बालूडो, कीरती है तसु वरणी रे।।

४—बत्तीस नारी सुकोमल परणी, भर जोवन रस लीनो रे।
इन्द्रमहोत्सव उद्याने पहूतो मुनि देखी मन भीनो रे।।

५—चरण कमल प्रणमी साधूना, विनय करी ने बैठो रे।
देशना धर्म री देवे रे मुनिवर, वैराग्ये मन पैठो रे।।

६—पिता तणी अनुमत मागी ने ससारी सुख छाडी रे।
सयममार्ग सीधो लीधो मिथ्यामत सब छाडी रे।

७—एकलडो वसुधा तले विचरे, तप तेजे कर दीपे रे।
जोवन वय जोगीश्वर बलियो, कर्म कटक ने जीपे रे।।

८—शील सन्नाह पहर्यो तसु सवलो, समिति गुप्ति चित्त धरता रे।
आप तिरे ने परने तारे, दोष ने दूरे हरतो रे॥

९—तावावती नगरी मुनि पहुँतो, उग्र विहार करन्तो रे।
मध्य समये गोचरी सचरियो, नगरी मे फिरतो रे॥

दोहा

१— घर-घर फिरता गोचरी, मदन ब्रह्म मुनिराय।
तावडोये थाक्या थका, ऊभा देखी छाय।

ढाल २

राग—श्री जिन मोहनगारो छे के जीवन

विरहणीमदन चढायो राज, जिण तिण जीत न जइये जी ॥टेरा॥

१—इण अवसर विरहिनी एक तरुणी गोरडी गोखा बैठी।
निजपति चाल्यो छे परदेशा, विषय समुद्र मे पैठी॥

२—सोले शृ गार सजी सा सुन्दर, भर जोवन मदमाती।
चपल नैण चौदिशी फेरे विषय रस रगराती॥

३—चोवटे चौदिशी जोता आवन्तो मुनि दीठो।
मलपन्तो ने मोहनगारो, लागो मन मे मीठो॥

४—राजकुमार कोइक छे रुडो, रूप अनुपम दीसे।
जोवन वय मलपतो जोगीसर, ते देखी चित विकसे॥

५—तव दासी खासी तेडाई, लावोये बुलाई।
ठुकरानी ना वचन सुनि ने दासी त्याथी धाई॥

६—हम घर आवोनी साधुजी, वेहरण काजे पेला।
भोले भावे मुनीवर आवे, शु जाने मन मेला॥

७—थाल भरी ने मोदक मेवा, मुनिवर ने कहे वेरो।
ये मला कपडा परा उतारी, आछा वागा पेरो॥

८—ये मन्दिर ये मालिया मोटा, सुन्दर सेज बिछाई।
चतुर नार हाजर मुझ सरसी, सुख विलसो लिवलाई॥

९ विरह अगन से मै दाझी हूँ, प्रेम सुधा से सींचो।
म्हारा वचन सुनी ने मुनिवर, बात मागो मत खींचो॥

१०—विषय वचन मणी वनीता ना, मुनि समता रस वोले।
चन्दन थी पण शीतल वाणी, मुनि अन्तर से खोले॥

११—तू अबला दीसे छे भोली, बोलन्ती नवी लाजें।
उत्तम कुलना जेह उपना, तेने ये नवी छाजे॥

१२—ए आचार नही अम कुलमा, कुल दोषण केम दीजे।
निज कुल आचारे चाली जे, तो जग मा यश लीज॥

१३—वात अछे जग मे दो मोटी, चोरी ने फिर जारी।
इण भव दु ख बहुलो पामे, पर भव नरक अघोरी॥

१४—शीलचिंतामणी सरीखो छोडी, विषया रस कुण रीजे।
वर्षाकाले मन्दिर पामो, कौन उघाड भीजे॥

१५—मन, वचन अर, काया, करने, लियो व्रत नही खडू।
ध्रुव तणी पर अविचल जाणों, मे धर वास न मण्डू॥

ढाल ३

राग—बींछियानो

रे लाला, मुनि पाय झाजर रण जणे॥टेर॥

१—रे लाल, सीख साधु नी अवगुणी,
जाने बह गई परनालरे।
र लाला, काम वशे थई आधली,
देवे साधु तणे शिर आल रे॥

२—रे मुनि पाये झाजर रण जणे,
आय अपुठी मुनि ने पाय रे लाला।
वेल तणी परे सुन्दरी
या तो वलगी साधु नी काय रे॥

३—रे लाला, जोर करी जोरावरी,
तीहाँ थी निकलिया मुनिराय रे।
तब पुकार पूठे करे धावो,
ऐणे किधो अन्याय रे लाला॥

४—हारे लाला, मलपन्त मुनि चालियो,
पाय झाजर रो झणकार रे।

लोक सहू निन्दा करे, जोवो,
एं तो माठो छे आचार रे।

५—रे लाला, बेठी चोबारे राजवी,
नजरे, जोयो यह अवदात रे॥
दीनो देशवटो नार ने,
मुनि ने जस तणी थई वात रे॥

६—रे लाला, तीहाँ थी मुनिवर चालीयो,
आयो, कञ्चनपुर के माय रे लाला।
राजा ने राणी प्रेम सु,
बैठा गोखा तणी छाय रे लाला॥

७—राणी मुनिवर ने देख ने,
छूटी आँसुडारी धार ने लाला।
राय देखी मन कोपियो,
यो दीसे छे एनो जार रे लाला॥

८—रे लाला राजश्वर बिन सोचियो,
तेडाया रिख ने ताम रे।
खाड खणी ऊडी घणी,
बेसाडियो रिख ने माय रे लाला॥

ढाल ४ राग—देवतणी ऋद्धि भोगवी आव्यो

१—अणसण खामण, कर मुनि तिहाँ, समता सायर मा झीले।
चोरासी लख जीव खमावो, पाप कम ने पीले रे॥
मुनिवर ते म्हारे मन वासिया ॥टेर॥
मुनिवर ये म्हारे मन वसिया, हृदय कमल हुलसिया ॥मु॥

२—उदय आमा निज कर्म आलोई, ध्यान जिनेश्वर नो ध्यावे।
खडक हणन्ता केवल पामी अविचल स्थाने जावे रे॥मु०॥

३—शरीर साधु नु असीए हण्यायो, हाहाकार त्यां पडियो।
ओघो ने वस्त्र लोई रगाना अति अन्याय राय करियो रे॥मु०॥

४—सवली ओघो ले उडन्ती, राणी आगल आय पडियो।
बधव केरो ओघो देखी, ने हृदय कमल थर हरियो रे॥
५—अति अन्याय जाणी ने राणी, अणसन पोते लीधु रे।
परमार्थ तव जाणी ने राजा, हा हा ये सु कीधु रे॥
६—रिख हत्या नो पातिक लाग्यु, ते किम छुट्यु जावे।
आँखें आसडा नाखतो राजा, मुनि कलेवर ने खमावे॥
७—गद् गद् स्वरे रोवतो राजा, मुनिवर आगल बैठो।
मान मेली ने खमावे रे भूपति, समता सायर माँ पठो॥मु०॥
८—फिरी-फिरी उठी पाये लागे आसु डे पाय पर वाले।
भूपति उग्र भावना भावता, कर्म पडल सवे टाले रे॥मु०॥
९—केवलज्ञान लियो राजेश्वर, भवोभवो वैर खमावे।
झाजरिया रिखी ना गुण गाता पाप कर्म ने खपावे रे॥मु०॥
१०—सवत् सत्तरा छपने केरा, अषाढ सुदी बीज सोहे।
सोमवार सज्झाय ए कीनो साभलता मन मोहे॥मु०॥
११—श्री पुनमिया गच्छराज विराजे, महिमाप्रभसूरिन्दा।
'भावरतन' सुशिष्य एम भणे, साभलता आनदा॥मु०॥

१३ | रोहाकुमार

दोहा

१— श्री आदिनाथ प्रणमु सदा, धम धुरा किरतार।
जुगल्या धर्म निवारणा, शासन रा सिरदार॥

२— चार कथा विकथा कहो धर्म कथा तत सार।
तिरीया ने तिरसी घणा, पामे भवनो पार॥

३— बुध वखाणीजे जेहनी, पडवा न दे खोट।
काम पड्या कायम रहे, जिन मारग री श्रोट॥

४— नदीसूत्र कथा मध्ये, रोहा नो विस्तार।
तुरत फुरत बुध उपजे, साभल जो नर नार॥

ढाल १ — राग—भूलो मन भवरा कांई भमे०

१— मालव देश सुहावणो कदई न पड दुकाल।
निवाण तो भरिया रहे, सुखी बाल गोपाल॥
मालव देश सुहावणो ॥टेर॥

२— नगर उज्जनी दीपती, गढ मठ पोल पागार।
चोरासी वले चोहटा, वस्ता गमामी सार॥मा०॥

३— सपत पणी ऊँचा घणा, मेल मेलायत गोख।
भोगी जन सुख मानता, पूरे मन री जोख॥मा०॥

४— स्थानक चौसठ जोगणी, देव छे बावन वीर।
सीप्परा नदी तिहा वहे, मीठो तिण रो नीर॥मा०॥

५— रिपुमर्दन राजा तिहा, धारणी राणी गुजान।
सुखे राज पाले सदा, पूजे वैरी ना पाण॥मा०॥

६— तिणपुर पासे वसे भलो, नट नामे गाम।
लोका मे मेढी समो, भरत पटवारी नाम ॥मा०॥

८— पारासरी तिण रे भारजा, ते तो कर गई काल।
पडियो विछुवो नार नो, रह्यो नानो बाल ॥मा०॥

८— रोहो बालक जाणने, दूजी परण्यो नार।
पूरन कर्म जोग थी, कजीया खोर ग्रपार ॥मा०॥

६— रात दिवस भगड़ा करे, खीण खीण बोले गाल।
दया दिल मे को नही, उभो पटके बाल ॥मा०॥

१०— साल सभाल नही बालरी कुण करावे स्नान।
खाणा मे कसर न पड, जाण पशु समान ॥मा०॥

११— बाल पण माता मरे, वृद्ध पणा मे नार।
बहुग्रां हाथे भोजन होवे परहस्ते व्यापार ॥मा०॥

१२— पापण तो पर भव गई, रोहो जीवे केम।
मूई ने देवे गालीयां विणठी बोले एम ॥मा०॥

दोहा

१— इम करता मोटो हूवो, रोहो चिंते मन माय।
नितरी देवे गालीयां, रोजी ना कुण खाय॥

२— माता नही ये माहरी माहे दीस ग्रंधेर।
ग्राद ग्रनादि जाण जो सौका हदो वर॥

ढाल २

राग—गजरा की

१—रोहो ८ा(यो दे कर ताली मारा लीज वचन सभारी।
तू सायत सायत म्हासु लडती वले बाले घर का करती॥

२—तू देख लीजे मारी बात, तोने फल चखाउ साख्यात।
भूण्डी घणी तू चाले मोसु, पिण ग्रबे न चूकू तोसू॥

३—म्हाने ग्रढता ग्राल तू भाखे वली खावण मे ग्रन्तर राखे।
तू बणी रही रावरी धीग इण बाता मे घाल द हीग॥

४—नेमतू पराई जाई मारा वाप रे लारे तू आई।
बैठी घर मे हुई घणीयाणी मैं तो थने मोलज आणी॥
५—रोहे साचा जाव पकडाया, पिण इणरे मन नही भाया।
तू काई करसी रे छोरा, मारा ये हीज रेसी जोरा॥
६—भला इण वयणा मे रहीजे, बोल्या बोल माहे वहीजे।
करता सू तो कीज, आपरो दाव ज लीजे॥
७—एक दिन वाप ने जगावे, आयाणा घर सू ए कूण जावे।
वोले वचन ज मीठो, मैं उजल वरणो दीठो॥
८—डावा डोल कर वा लागा, इणरो नारी सू मन भागो।
नार ने नही वतलावे, जद तद घर मे आवे॥
९—एक रोहा सू माण्डे वात, खाटी नारी री जात।
अव मन मे ते विलखाणी, नैणातो नाखे पाणी॥
१०—ए धणी मासू केम रूठो, जाणे तारो अकाले टूटो।
रोहा सु करे नरमाई, सुण नानडिया वित्त लगाई॥
११—गरज वडी जग माई, कहे गधा ने मारा भाई।
रोहो वोले तिण वार, थारा करतव ले तू चितार॥

दोहा

१— माई पलो पात री, कहे नारी ओछी जात।
पुरुष सदा ही निर्मला, सो वाता एक वात॥
२— वचन लीघो माई भणी, रोहो चतुर सुजाण।
उठो तात उत्तावला, ओ कुण जावे अजाण॥
३— छाया वताई आपरी, ताते जाण्यो वाल।
नारी सू मन मेलीयो, उतर गयो सब ग्राल॥
४— पिण नित्य भोजन रोहो करे, तात सघाते ग्रास।
माई मात रो मूल थी, न करे कदी विश्वास॥
५— सोदो लेवाकारण, हू जाऊँ छ उज्जीण।
हट कर रोहो साथे चल्यो, चतुर महा प्रवीण॥

६— सौदो ले पाछा वल्या, एक वस्तु गया भूल।
तू रहीजे नदी तटे, पाछो आऊ कबूल॥

ढाल ३

राग—प्यारो मोहन गारो राज

मण्डप खूब बण्यो छेजी क, मण्डप अवल रच्यो छे ॥टर॥

१— रोहो नदी तटे बैठो, आप गयो शहर मझारी।
उजैणी री रचना देखी ते मण्डप माण्डे सारी॥

२— मेल मेलायत चौक चोवटा, चोतरीया विच न्यारी।
सुन्दर मन्दिर कोट बणाया, दरवाजा छवी न्यारी॥

३— चोवारा ने विचे कोरणी, हाट हवेली वीच गलीयाँ।
खुणा तिखुणा ने चोखूणा, देखत पामे रलीया॥

४— घोडा खेलावता तिहा राजा रिपुमर्दन गयो आई।
मत पेस जो इण शहर मे, थाने राय तणी दुवाई॥

५— तत्खिण घोडो ऊभो राखी, राखी राजा मण्डप देखे।
चतुराई ने बुद्ध विज्ञानी कला घणी विशेखे॥

६— कुण ग्राम नो छे तू वासी, कुण पितारो ठाम।
नट ग्राम ने भरत रो बेटो, रोहो मारो नाम॥

७— रे बालूडा इण शहर मे, वार केटली आयो।
एक वार हू आयो स्वामी, बोल्यो शीष नमाया॥

८— राजा सुण ने हरष भराणो पहुतो नगर मझारी।
बाप ने बेटो मिल घरे आया, आग सुणो अधिकारी॥

दोहा

१— बालक बुधवत जाणने, राजा करे विचार।
तुरन्त मेल्यो आदमी, नट ग्राम मझार॥

२— लोका ने भेला किया, कह हुकम दियो राय।
शीला मती हिलावजो दीजो मंदिर कराय॥

३— चितातुर सगला थया, बठा मजलस ठान।
मनसोबो विचारता, थाल न वैसे ज्ञान॥

४— इतरे रोहो आवियो, भोजन जीमा तात।
भूखडली लागी मुझे, ऊभो कूटे गात॥

५— लोग हातो कहे कुँवर जी उभा रहो इण ठाम।
घणा दिन खादी रोटीया, पिण आज वणी छे काम॥

ढाल ४

राग—लेर्यो मोजेलो

१—सामो पुतर ने जोय ने कहे तोने खवर न काय हो॥
सिला मति हुलावजो, दीजो मदिर वणाय हो॥राजा हट लागो॥

२—निण कारण अम्हे करा, मनसोवो विचार हो।
रोहो कहे ए सोहिलो, मत करो सोच लिगार हो॥

३—जिम ने वेला आवजो, दसु विध बताय हो।
चिंता फिकर करो मति, राजी होसी महाराय हो।

४—भोजन करी सव आविया, रोहा केरे पास हो।
मोटी सिला गिडदा जोसी, फिर जोई तास हो॥

५—चारो कानो थावा रोप ने, वीच मे कोरणी सार हो।
मन्दिर करायो चूप सू राय ने दिया समाचार हो॥

६—राय कहे बुध केहनी, एक बालक रोहो नाम हो।
नरपति सुणने चितवे चतुराई अभिराम हो॥

७—वीजे दिन मीण्डो मेली यो, तोली ने लीजो झेल हो।
घटवा बधवा दीजो मती, पण छेडे दीजो मेल हो॥

८—हिवें लोक कहे रोहा भणी, इण री का सु थाग हो।
ते कहे सबावो जुगत सु, कने रासो वाघ हो॥

६ पख छडे रे आन्तरे मेल कह्या समाचार हो।
आ सकल वालक तणी राय लीनो विचार हो॥

१०—कुकर तिन वीजे लडावजो राजा कही वाघ हो।
रोहो कहे ए सोहिलो मने रासो काम हो॥

११—विचमणी महिपति चितवे मन मे आप हो।
निनारा गाडा मोकल्या, ऊर्ध लीजो समेदीजो माप हो॥

१२—रोहे मगाई आरसी, ऊँधा लीदा समा दीधा सार हो ।
राय देखीने हरखीयो, बुध पारमपार हो ॥

१३—वले कहायो गाम ने, विण अगीरा खीर हो ।
वेगी गाने मोकलो, नही तो थामी तकसीर हो ॥

१४—चनादिक भटी परे, गेहे करी ततकाल हो ।
ताती ताती मोकली देख हरख्यो भूपाल हो ॥

दोहा

१— वेलूनी रमी करी, दोजो मतात्र सु मेल ।
नाग जिम रूठो महिपति नही तर करमू हेल ॥

२— लोक सहु भेला थया, पाम्या मन मे भ्रन्त ।
अवली गत है रायनी, लेवा माण्ड्यो अन्त ॥

३— रोहो कहे डरपो मती, मती छोडो थे गाम ।
हू समझाउ राय ने, ए थोडो सो काम ॥

ढाल—५

राग—रगे रमतो राजीयो ए

१— रोहे कहायो राय ने ए, साभल जो महीराण ॥नरेश्वर सा०॥
जमीयो राज सच्यो घणा ए जूना वताग्रो सहीनाण ॥

२— तिण अनुसारे माप के जी, वण ता जेज न काय ॥
नरपति सुण आनन्दियो ऐ इण दिनी गलारे माय ॥

३ - राजा जीर्ण गज मेलीयो ऐ, सडत पडत है काय ॥
मूआ रो कही जो मतिरे मूआ पछे जेज न काय ॥

४— आयो न मरण पामीयो रे लाक पूछे राहा ने तेह ॥
प्राण रहित कुजर थयो रे, उत्तर किण पर देह ॥

५— जाग्रो राजा जी रे आगले रे, कही जो वचन निरास ॥
हाथी चाले हाले नही रे मूल न लेवे सांस ॥

६ - राय कहेमी मरगयोरे तो जोड ज दोनो हाथ ॥
म तो मूआ रो कहाँ नही रे, आप कहो पृथ्वीनाथ ॥

७— नीर हलवो मिष्ट देखने रे, एक कूप दीजो पहुचाय ॥
गाव रा कूआ भडकणा रे, सेर रा आथा देसा मे लाय ।

८— सुण नरपति चिन्तवे रे इण री अकल अथाग ।
गाव की जो पूरव दिशे रे, पश्चिम कर जो वाग ॥

६— लोका रोहाने पूछियोरे, ए किम होसी काम ॥
ते कह् सारा फेरा झूपडा रे, पूरब होसी गाम ॥

१०— सर्वविध साचवी रे, दिया राय ने समाचार ॥
राजा मन मे जाणीयो रे, नही ठगावण हार ।

श्लोक

१— विद्वत्व च नृपत्व च, नैव तुल्य कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सवत्र पूज्यते ॥

दोहा

१— पान पदारथ सुगुण नर, अणतोल्या ही विकाय ॥
ज्यु-ज्यु परदेश सचरे त्यू त्यू मूगा थाय ॥

ढाल ६ राग—कौतुक करतो नहीं रे

१— नरपति इण परेचिंतवे भला दिया जवाव रे ।
अठे हिवे वालावणो, वधारुं इणरो आव रो ॥
रोहा हिवे वुलावे महीपति ।टेर॥

२— हिवे वुलावे महिपति जजम करे माय रे ।
तुरतज मोकल्या आदमी, नट गाव रे माय रे ॥

३— पिण इतरा वोला मे आवजें फरमायो महाराय रे ।
आदमी आणी कह्यो, लोक भेला थया घरणाय रे ॥

४— मौने भेट म लावजे, मत आव जे खाली हाथ रे ।
दिवस मे मत आवज, मत आय जे रात रे ॥

५— मारग मत तू आवजे मत वह जे उजाड रे ।
ऊचा पिण चढ़ जे मती, विण किया असवार रे ॥

६— वद सुद मे मत आवजे बिना किया स्नान रे।
सिनान पिण करणो नही, इम भाख्यो राजान रे॥

७— विन तारा मत आवजे, तारा ऊंगा सोय रे।
इतरा थोक कर आवजे, वेगो मिल जे मोय रे॥

८— लोका मन मे जाणीयो, एही ज टलीयो जजाल रे।
भरत पटवारी हरसीयो, देख नीको वाल रे॥

दोहा

१— रोहो कहे डरजो मति, देखो परात्रम पूर।
सुखे रहीजो थे सदा हू जाऊ हजूर॥

ढाल ७

राग—देखो दवदती रे महिमा शीलनी रे

१— रोहो बुद्धि आगलो रे, मीडे हुवो असवार रे।
माथे धर लीनी चालनी रे, लोक साथे अपार रे॥
रोहो चाल्यो दरवार मे रे॥टेर॥

२— रोहो चाल्यो दरवार मे रे, पामी मन हुलास रे।
रूप माहे रलीयावणो, देखे वहु तमास रे॥

३— स्नान पिण ना करी रे, हाथ पग धोया दोय रे॥
उजड मारग छोड ने रे, चीलो लीधो जोय रे॥

४— देशपति ने भेटणो रे, माटी पिण्ड लीधो हाथ रे।
सध्या समय मे आवियोरे, नाको दिवस ने रात रे॥

५— महिपति दीठो आवतो रे, आदर मान दियो ठीक रे।
मुजरो कर उभोरह्यो रे, लोक ने दीनी सीख रे॥

६— नृपत कुशल पूछियो रे, रोहा ने धर प्रेम रे।
सभा सुहावत भाखीयो रे, सहु को पाम्या खेम रे॥

७— रात समे राजा मेलमे रे, सूतो रोहो राख्यो पास रे।
निद आई के जाग तो रे, कह जागू करू विमास रे॥

८— कहो अजा उदरे मीगणी रे, कुण करे गोल महाराय रे।
राय वद तू जाण नही रे, घडे मण्डलीक वाय रे॥

९— बीजा पोहर मे पूछीयो रे, जागु छु राजान रे।
समा बिषम किम छे रे, बतावो पीपल पान रे॥

१०— राय कहे जाए नही रे, तुम हीज मुझ बताय रे।
विरट पान सारखो रे, समझ लो महाराय रे॥

११— तीजा पोर मे पूछीयो रे चितउ नर नाथ रे।
खसकली जीवतणी रे पूछ मोटी के गात रे॥

१२— राजा कहे समझ नापडी रे, तू ही'ज कर प्रकास रे।
घड पूछ सारखी रे, रोहो कह्यो तास रे॥

१३— चौथे पोर न बोलीयो रे ताजणो वायो ताम रे।
हड हड हसीयो घणो रे, कहे हसवा नो स्यू काम रे॥

दोहा

१— रोहो कह्यो राय ने, हसवा नो मत करो खाच।
विचार मोटो उपनो, तात तुमारे पाच॥

२— राय सुण ने हरसीयो का सु इणारो भेद।
रोहो कहे बतावसू, मत पामजो खेद॥

ढाल ८

राग— जम्बूद्वीप मझार

१— साभल पृथ्वीनाथ, बात ज म्हायरी ए।
साची करी ने मानिए॥
हाथी घोडा नी जोड बेल रथ ने पालखीए।
पायदल घणु जानिए॥

२—वेश्रम देव जेम, रिद्धि दीसे दीपती ए।
कमी नही किण बात री ए॥
दूजो बाप चण्डाल, तन मे फूटरो।
पण क्रोध वहे जिम धातरी ए॥

३— थे रूठा भूपाल, किण इम उपरे।
तब नही परणो भारी ए॥

भलो भूण्डो न देखो कोय,
बात करो सारखी ए।
ताग जिम तोलो ताकरी ए॥
तीजो रजक धोय, कपडा पछाडतो ए।
महीन मोटो देखे नही ए॥
तिम तुम्ह रजक समान,
चाबुक लगावियो ए।
छोटो मोटो गिणियो नही ए॥
चोथो विच्छ डक बाप, ऊंच नीच नही गिणे ए।
बालक जवान डोकरो ए॥
जिम थे भूपाल, बायो मुझ ताजणो ए।
नही गिण्यो नानो छोकरो ए॥
पाचमो वड भूपाल ते बाप जाण जोए।
जग मे नही इण सारखो ए॥
चार समान थें जाण, भूपत साभलो ए।
पर तस ओही ज पारखो ए॥
माजी सती जाण, चूक च्यारुं सु नही ए।
पिण मनसा वय गई ए॥
पूछो माता ने जाय,
जथारथ अरथ मैं लीयो ए।
जिम हुई तिम ही ज कही ए॥
रोहाने वुधवत जाण,
चार से नन्याणु ऊपरे।
राज्य धुरन्धर थापीयो ए॥
दीयो वडो सीर पाव, गय रोहा भणीए।
प्रधान पद आपीयो ए॥
घणा वरस लग तेह, सुख भोगवी करी।
पछे आतम कारण सारिया ए॥
वुध वडी ससार, गुण चतुराई आगला ए

बुधवत पामे वैराग, कारज सारे आपणो ए॥
तिण सु गरज वेगी सरे ए।

१०— नदी सूतर नी साख, कथा मे आणीयो ए।
बुध बखाणी रोहा तणी ए॥
बुधवत पर देशो राय चित ना सग सु ए।
चर्चा किधी गुरु भणी ए॥

११— जिन धर्म जाणो सार, समता आदरी ए।
सुर सुरीयाभे उपनो ए॥
बुधवत अभय कुमार, राजा श्रेणिक घरेए।
व्रत ले देव लोके उपनो ए॥

१२— इम अनन्ता जीव, समकित ले करी ए।
कर्म खपाय मुगती गया ए॥
दान शील तप भाव, भवीयण आदरी ए।
मन वाछित फल ते लह्यो ए॥

१३— कथा अनुसारे जोय, सबध ए कह्यो ए।
विपरीत रो मिच्छामिदुक्कड ए॥
पूज्य "सबल दास जी" कहे एम,
गुरुपरसाद थी ए।
कवियण कहे जिम करू ए॥

१४— संवत अठारे असीये साल,
सोजत सेखा काल मे, ए।
जोड्यो ए अठढालियो ए॥
साचो जिण धम सार, जीव अनन्ता उगर्या।
आतम दोपण टालीयो ए॥

दोहा

१— नेमीनाथ वावीसमा प्रणमू वारम्वार।
याटव कुल नेम उपन्या, तीर्थ थाप्या चार ॥

२— श्रावक ने वली श्राविका, श्रमणी ने अणगार।
आत्म काय सारने, पाया भव नो पार ॥

३— उत्कृष्ट धर्म साधुनो, तिण सम अवर न कोय।
अपर धर्म आगार नो, शिवपुरी मारग दोय ॥

४— वरदत्त गणधर आगले, भाख्यो नेम जिनन्द।
एकाग्र चित्त कर साभलो, जुठल नो सम्बन्ध ॥

ढाल १ राग—बाधो मति कर्म चिकणा

१—श्री जम्बुद्वीपे भरत जाणी ये,
भद्दिलपुर शुभठाम ॥हो जिनेश्वर॥
रैयत सुखी दुख समझे नही,
जीतशत्रु नृप नाम ॥हो जिने०॥
नेम पधार्या श्री वन बाग मे ॥टेर।

२—श्री वन बाग नन्दन जेहवो,
सुर नर ने आवे भोग ॥हो जिने०॥
अम्ब कदम्ब तरु छाइयो,
छेवो देखवा योग ॥हो० जिने०॥

३—जुठल सेठ वसे तिहा,
अडतालीस वसु कोड ॥हो जिने०॥

रोहिणी प्रमुख वत्तीस भारजा,
पोडश गोकुल जोड ॥हो जिने०॥
४—श्री जिन वन्दे नृप आडम्बरे,
जोडी बैठो हाथ ॥हो जिने०॥
जुठल सुनी इम वारता,
समोसर्या जगनाथ ॥हो जिने०॥
५—नाय धोय वलीकर्म करी,
जिम कोष्टक तिम जाय ॥हो जिने०॥
पच अभिगम साचवी,
वदे शीप नमाय ॥हो जिने०॥
६—महिधर जुठल आदि सहु,
बैठा सुर नर वृन्द ॥हो जिने०॥
अमृत वाणी प्राणी साभले,
भाखे श्री नेमि जिनद ॥हो जिने०॥
७—उपदेश सुणी जिन वन्दने,
आयो जिण दिशि जाय ॥हो जिने०॥
जुठल अपूर्व धर्म साभली
मन मे हर्षित थाय ॥हो जिने०।
८—गयो मिथ्यात्व धर्म पामियो,
खुलिया अन्तर नैन ॥हो जिने०॥
श्रद्धा प्रतिति रुचि थई,
पिण समर्थ नही सजम लेण ॥हो जिने०॥
९—श्रावक व्रत धराय दो,
महासुह वह नेम । हो जिने०॥
द्वादशव्रत कोष्ठक नोपरे
नवर कहे वलि एम ।हो जिने०॥

दोहा

१—बत्तीस भारजा माहरे, मैथुन सर्व परित्याग।
धन मदनालीम मोह है, पोडश गोकुल भाग॥

२—चउ दिशी चार-चार गाउ, ऊंचा नीचा भवन प्रमाण।
इम चतु पच पट व्रत मे, मोने जिम पच्चक्खाण॥

ढाल २ राग—श्री जिन मोहन गारो छेके जीवन प्राण हमारो छे

१—उलणीया विहि दतणविहि, फल अब्भगण जाणो।
उवटण विहि अग मजण विहि का, जावजीव पच्चक्खाणो॥
तारो पार उतारो राज, हुँ चाकर चरणारो।टेर॥

२—मोजा पहरण कल्पे मोने, बहुमोले वस्त्र एक।
आभरण विहि एक मुद्रिका, और त्याग अवशेष॥

३—धूप पेज भक्खण विहि नथी, ओदण विहि एक शाल।
सूप विहि एक दाल चणा की और त्याग सब दाल॥

४—विगय साग महुर विहि नथी, जिमण विहि तीन द्रव।
सचितपाणी ना त्याग जावजीव, शाल दाल धोवण सर्व॥

५—आज पछे छे सातम आठम, करणो मोने बेलो।
धारणे पारणे आमिल करणो, तेरस चवदस तेलो॥

६—पचम पक्षे निवी कल्पे, इम लीधा व्रत वार।
श्रावक जन्म हुओ कहे जिनवर, आगे सुणो विस्तार॥

दोहा

१— नेम जिनन्द ने वदने आया निज आगार।
जीवादिक सहू ओलख्या, भगवत कीधो विहार॥

२— विचरे आतम भावता, करना तप अतिधीर।
सुक्खे लुक्खे निमसे, देख्या नाही शरीर॥

३— सोक सहुमिल एकठी आवे प्रीतम पास।
स्वाम थया किम दूबला, करे एम अरदास॥

४— पीछे धन किए अरथ रो, किजे शरीर उपाय।
बिना दोष विन कारणे, क्यो मोने दी छिटकाय॥

ढाल ३ राग—बाबा किसन की पुरी

तुम साच कहो-कहो किण कारण दिलगीर रहो ।।टेर।।

१—शरीर तणो नही करो उपाय ।
या काँई थारे छे मन माय ।।
खावो पीवो करो भोग विलास ।
मानो अर्ज करा अरदास ।।

२—जुठल श्रावक बोले एम ।
रोग विना रोग कहो कहू केम ।।
मैं तो साच कही-कही मारा पिण्ड मे रोग नही ।।टेर।।

३—जिण दिन रोग हुवो आयो नेम ।
मैं पिण जाणा छा, कहो केम ।।

४—जाई पराई छिटकाया रो पाप ।
म तो देसा मिलने शराप ।।तुम०।।

५—इम सुणी सेठ करी रह्यो मौन ।
नारी जाती सु बोले कौन ।।म तो०।।

६—हाव भाव विभ्रम किया विपेक ।
नारी चरित्र दिखाया अनेक ।।तुम०।।

७—खोला माहि बैठी जाय ।
तो पिण रोम न सकी चलाय ।।तुम०।।

८—सता तता परितता होय ।
गई परी महलो मे आपो खोय ।।तुम०।।

९—जुठल श्रावक करे विचार ।
मैं तो देख लीवी है नार ।।मैं तो।।

१०—श्रावक पडिमा कही जे ग्यार ।
पेठो तिण में उण ही वार ।।तुम०।।

११—दस प्रतिमा प्रति पूरण होय ।
ग्यारमी पडिमा वहेतो सोय ।।मैं०।।

१२—मोसर देखी कियो सथार ।
जाव जीव पच्चख्या चार आहार ।।तुम०।।

१३—अष्टादस दिन हुआ व्यतीत।
धर्म ध्यान ध्यावे एकण चित ॥तुम०॥
१४—दिन उगणीस मे उज्वल ध्यान।
जुठल पाम्या अधि ज्ञान ॥तुम०॥
१५—कोष्टक श्रावक नी परे मर्व।
देखी तो पिण नही करे गर्व ॥तुम०॥

दोहा

१— एक दिन अवधि मे देखियो, उपसर्ग महा विकराल।
अर्ध जाम माहे होसी, अग्नि प्रयोगे काल ॥
२— वत्तीस त्रिया मिल एकठी, देसी आग लगाय।
माने माहे वालसी, पोपधशाला माय ॥

ढाल ४

राग—हारे लाला विछीयो, मारो वाजणो

१— हा रे लाला, नार वत्तीसी मिल करी,
ये तो चिंते मन रे माय रे लाला ॥
खून कियो विना कारणे,
किम सहुं ने दी छिटकाय रे॥
तुमे जोइ जो रे स्वार्थना सगा ॥टेर॥
२— हा ये बाई, अग्नि विष शास्त्र मत्र सु,
अबे सेठ ने देणो मार रे बाई ॥
पीछे आपा सहु मिलीकरी,
रेहसा स्वेच्छाचार रे ॥
३— हा रे लाला, सहुमिल निश्चय धारीयो,
यो तो भलो विचार्यो काम रे लाला ॥
इण मोल्या ने मारने,
पछे करसा सहू आराम रे॥
४— हा रे लाला, अवसर देखी कामनी,
सहु भेली थई तत्काल रे लाला ॥
ये तो काट अग्नि मधु घृत गही,
चल आई पोपधशाल रे ॥

दोहा

१— नारी नागण नारडी, नदी नृप निवेड।
नग्न पुरुप ये सात नना, भलो मनुष्य मत छेड ।।

२— नेह पक्ष करुणा रहित, सहु मिल दियो कपाट।
लात धमूका मारने, चहु दिशी चणियो काठ ।।

ढाल ५

राग—पहिलो तो पासो रायवर डालीयो

१—जुठल दीठी हो बैठो ध्यान मे कोधो छे अगनी उत्पात।
नही ए विचार्यो खाविंद माहरो, देखो लुगाई री जात ।।
साभल भव्य प्राणी, नारी विश्वास भूल न कीजिये ।।टेर।।

२— पाछी तो नाठी हो लाय लगाय ने, बल रही जुठल काय।
उत्कृष्टी वेदना उज्वल उपनी, ते तो जाणे जिनराय ।।

३—साढा तीन कोटी रोम न कंपियो, दृढ़ राख्या मन वच काय।
ऐसी खम्या सु केवल उपजे, जो कदी करे मुनिराय ।।

४—तीस सवच्छर श्रावक व्रत रह्यो, दो मास तणो सथार।
शत पच वर्ष ही आयु भोगवी, पाम्यो है भवोदधिपार ।।

५—काल मासे हो काल करीययो, ईशाने ने सुर महधिक।
द्वादश पल्योपम आउखे, जुठल देवत ते तीख ।।

६—जम्बूद्वीपे हो क्षेत्र विदेह मे, लेही मानव अवतार।
कम खपावी मुगत सिधावसी, सुणो वरदत्त अणगार ।।

७—सेव भते ! हो प्रभुजी सेव भते, थयो जे बीजो अध्येन।
श्रावक ऐसा हो आतम तारणा, वली तारक धर्म जैन ।।

८—सवत उगणी से द्वादस वर्ष मे, जोधपुर मे चौमास।
गुरु प्रसादे हो "रामचन्द' कहे, करो करणी जो पूरे आस ।।

६—सूत्र अनुसारे हो जोडी जुगत सु, नही कियो है विस्तार।
हीनाधिक विपरीत जो होवे, मिच्छामिदुक्कड बारम्बार ।।

१५ | आनन्द श्रावक

दोहा

१— प्रणमू परमात्म प्रभु शासन पति वर्धमान।
तास ज्येष्ठ श्रावक भला, आनन्द आनन्द मान।।

२— नाम ठाम शुभ है अति, कीना व्रत अगीकार।
सातवें अग मे वर्णव्या ते सुनजो विस्तार।।

ढाल १ राग—निहाल दे

१—तिण काले तिण अवसरे जी,
काइ वाणिया गाव मझार।।
राय जितशत्रु जाणिये जी,
हा जी कांइ प्रजा भणी हितकार।।
सुणो अधिकार सुहावणो जी ।।टेर।।

२—सुणो अधिकार सुहावणो जी,
हांजी काई सूत्र तणे अनुसार।।
समकित व्रत होवे निर्मलो जी,
होजी काई होवे ज्यु भव निस्तार।।

३—तिण पुर आनन्द नाम थी जी,
हांजी काई, गाथापति धन वान।।
बारे करोड सोनैया तणो जी
हाँ जी काई कह्यो तस धन परिमाण।।

४—दस सहस्र गाया तणो जी,
हांजी कोई होवे एक गोकुल इम चार।।

धेनु वर्ग वखाणिये जी,
हा जी काई, शिवा नन्दा तस नार ॥

५—पच विपय सुख भोगवे जी,
हा जी काई, माने बहु जन वाय ॥
इम करता वहु दिन गया जी,
काई, कोई (तिण) अवसर रे माय ॥

६– द्यु तिपलास नामे भलो जी,
काई चैत्य मनोहर जाण ॥
समोसर्या जग गुरु तिहा जी,
हा जी काई जगनायक जग भाण ॥

७—भूप सुणी वदन गया जी,
आनन्दश्रावक ताम ॥
पाद विहारे सचरिया जी,
हा जी काई,'भेट्या त्रिभुवन स्वाम ॥

८—प्रभु जी दी उपदेसना जी,
काई, यो ससार असार ॥
तन धन जोवन कारमो जी,
हा जी काई, कारमो सहु परिवार ॥

६—ए जीव आयो एकलो,
जी काई, परभव एकलो जाय ॥
धर्मरत्न सग्रह करो जी
हा जी काई, जो शिवसुख की चाय ॥

१०—इत्यादिक उपदेशना
जी, "प्रथमा ढाल' मझार ॥
तिलोकरिख" कहे आगले जी,
हा जी काई सुण जो श्रेय अधिकार ॥

दोहा

१— आनन्द सुनी देशना, बोले वचन विचार।
सत्य वचन प्रभु आपरो, य ससार असार ॥

२— धन्य जे राजा राजेश्वरु, नेवे मजम भार।
मुझ शक्ति एहवी नही पिण आदरसु व्रत बार॥

३— जिम सुख होवे तिम करो, जेज न करो लिगार।
व्रत करण विध साभलो, सूत्र तणे अनुसार॥

ढाल २

राग—म्हारी रस सेलडी

१—प्रथम व्रत मे धारीयो जी काई, त्रस प्राणी जग माय।
जाणी प्रीच्छी निरअपराधी सो मुझ हणवा नाय हो॥
जगतारक पासे, श्रावक आनन्द जी व्रत आदरे॥टेर॥

२—दूजो व्रत स्थूल मृषावाद को, भू कन्या पशु काज।
भूठ न बोलू रसु र थापन, नही लोभे लू व्याज हो॥

३—तीजे स्थूल अदत्त निवारु, खातर खनी गाठ छोड।
पड कूची मे न करू चोरी, त्यागू विरुध जे खोड हो॥

४—चौथे स्थूल मेहुणव्रत मे, शिवा नन्दा निज नार।
वरजी ने त्यागी सकल सरे, ममता दोनी मार हो॥

५—व्रत पचम इच्छा परिमाणे, चार करोड भू माय।
चार करोड घर बिखरी राखी, इतो हो याज के माय हो॥

६—गोकुल चार धेनु का राख्या, देनू वत्थू इम जाण।
पाच सो हल की सख्या धरणी शकट सहस्र परमाण हो॥

७—चार मोटी चार छोटी जहाजा, राख्या वाहन आठ।
उपभोग परिभोग व्रत की विधी, कहू जिम सूत्र पाठ हो॥

८—स्नान किया पीछे अग लूवण रातो वस्त्र जाण।
दातण कारण जेठी मद अर, अवर आमल फल ठाण हो॥

६—शतपाक हजार औषध का, तैल मर्दन के काज।
सुगन्ध सहित गेहूँ की पीठी, ए उवटणा का साज हो॥

१०—आठ लोठी प्रमाण घडो एक, स्नान कारण ने नीर।
क्षेत्र युगल कपास को निपज्यो, राख्यो ओढण चीर हो॥

११—अगर ककुम वावना चदन, विलेपन मर्याद।
घोलो कमल मालती कुसुम, सु घणो हित स्वाद हो॥
१२—कुण्डल युगल और नाममुद्रिका, रख्या आभरण दोय।
अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय॥
१३—घृत तैल तलिया तदुल पउआ, दूध की रबडी जाण।
पेय विधि ^रिमाण कह्या ए, उपरत का पच्चक्खाण॥
१४—घृत पुरित घेवर मनगमता, खाण्ड खाजा आगार।
कमल साल तदुल उपरात सब, ओदन का परिहार हो॥
१५—मू ग उडद मसुर ए तीनो, उपरात त्यागी दाल।
शरत् ऋत को निपज्यो घृत प्रात समय को काल॥
१६—तिण वेला को घृत जिण राख्यो, उपरत का किया त्याग।
अगतियो स्वस्तिक राय डोडी, और न खाणो साग॥
१७—आम रस युत्त पालख सालणो, अवर तणो सब त्याग।
मू ग दाल का वडा कचोरी, उपरत नही अनुराग हो॥
१८—टकी को मुझे नीर ज पीणो झेलीयो जेह आकाश।
ककोल जाय फल लोंग एलायची, कपूर पच मुखवास हो॥
१६—चारो अनर्थदण्ड का सोगन, इम अष्टम व्रत धार।
शक्ति मुजब शिक्षाव्रत चार, हरि हर देव परिहार हो॥
२०—ज्ञान का चौदह पाच समकित का पच्योत्तर व्रत बार।
पाच सलेहणा यह सव टालु, निन्याणु अतिचार॥
२१—पार्श्वस्थ सतानिया गोशालक मे, जिमते मिलीया जाय।
तिम अन्यतीर्थी ग्रहिया साधु, तिण ने हू वदु नाय॥
२२—वतलाउ नही पहेला उनको धर्म वुद्धि सुविचार।
चार आहार नही देउ तिणने, छद्दा आगार हो॥
२३—श्रमण निग्र न्थ ने देउ सुन तो, चौदह प्रकार नो दान।
इम व्रतधारी प्रभु ने वदी, आया ते निज स्थान॥
२४—निज पत्नि से कहे प्रभु पासे, मैं धार्या व्रत बार।
तुम पिण जाई करो प्रभु वदन, सफल करो अवतार॥

२५ - कत वचन सुणी रथ मे बैठी, वदचा श्री जगदीश।
श्राविका व्रत ते पिण धार्या, पूरी मन जगीश हो ॥

२६—छछ पौषध करे मास मे, नवतत्व का जाण।
तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥

दोहा

१— बारह व्रत पाले निमला, चवदह नियम विचार।
तीन मनोरथ चितवे, धारे शरणा चार॥

२— निश्चल समकित दृढ धर्मी, इक्कीस गुण का धार।
चौदह वर्ष इम बीतीया, करता धम उदार॥

३— पन्द्रवें वर्ष मे वर्तता, एक दिन आधीरात।
जागरणा करे धर्म की, ते सुण जो विख्यात॥

४— आनन्द सथारा को कथन, सुन विस्मित अपार।
गौतम सुण ने आविया, देखण ते सथार॥

ढाल ३

राग आज भलो दिन उगो जी

१— आनन्दजी विचारी हो, सुखकारी क्रिया धर्म नी,
काई भवजल तारण हार।
वाणिज्य गाव के माही हो, समरथाई नाही माहरो॥
आनन्दजी विचारी हो सुखकारी क्रिया धर्म नी ॥टेर॥
जब थावे दिन उगाई हो, निपजाई चारो आहार ने।
काई बुलाई निज परिवार।

२— सयण सज्जन, जीमाई हो, सभलाई कामज घर तणा।
काई धारणी पडिमा ग्यार॥
थई दिनकर उगाई हो, कराई महुविध चितवी।
काई ज्येष्ठ पुत्र घर भार॥

३— सौंपी सीधा आया हो, कोलाग नाम सन्निवेश मे।
काई वाणिजपुर ने बार॥
कोलाग सन्निवेश के माई हो, निज मित्र घणा कुल घर घणा।
काई रहे पौपध शाला मझार।

४— तिण साला ने प्रतिलेख्यो हो, काई देखी परठण भूमिका।
वली कीनो डाभ सथार ॥
केवली भाख्यो धर्मज हो, ते पाले परम ग्रानन्द सु ।
काई टालै सहु ग्रतिचार ॥

५— निर्ग्रन्थ गुरु ने टाली हो नही वदे कोई ग्रन्य भणी।
काई छे छण्डी परिहार।।
दूजी पडिमा माई हो, ग्रधिकाई बारा व्रतनी।
काई पाले निरतिचार ॥

६— तीजी मे शुद्ध सामायिक हो, चित्त लाई पाल शुद्ध पणे ।
काई बत्तीस दोप निवार ॥
चौथी पडिमा माई हो, चवदस ने ग्राठम पूर्णिमा ।
काई ग्रमावस्या तिथि धार ॥

७— मास मास पट् पोसा हो, धारे ते शुद्ध निश्चल पणे ।
काई वरजत दोप ग्रठार ॥
पाचमी पडिमा पाले हो, ते टाले स्नान शोभा वली ।
काई दिवसे ग्रब्रह्म निवार ॥

८— जे भाणे भोजन ग्रावे हो नही खावे ग्राप मगायने ।
करे काउसग्ग पोसा मझार ।
छठी पडिमा लेवे हो, नही सेवे ते कुशील ने ।
काई नारीकथा निवार ॥

९— सातमी पडिमा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो ।
काई नही करे सचित्त ग्राहार ॥
ग्राठमी मे ग्रारभ छण्ड हो, ते माण्डे प्रीत छ काय सु ।
काई तेवीस के भागे विचार ॥

१०— नवमी मे इम भाखे हो नही राखे दासी दास ने ।
काई पोते काम विचार ॥
दसमी दुष्कर कारी हो निज ग्ररथे भोजन जे कर्यो ।
काई ते वरजे निरधार ॥

११— सिर पर मुण्ड करावे हो, पचपे भाषा दो यली ।
काई सरय ग्रने व्यवहार ॥

ग्यारवी पडिमा लेवे हो, नही सेवे आश्रव द्वार ने।
काई वरते जिम अरणगार।।

१२— मस्तक लोच करावे हो, फरमावे हु साधु नही।
काई भेप मुनि नो धार।।
पहले मास एकान्तर हो, काई दुजी पडिमा दो मास नी।
काई छठ छठ तपस्या धार।।

१३— तीजी तीन मास लग तेला हो, चौथी ते चार ज मासनी।
काई चौले चौले आहार।।
एक एक मास वधावे हो, बढावे तप एम एम ही।
काई इम पडिमा ग्यार।।

१४— करता सुक्खे भुक्खे हो, लुक्खो अग पडियो तदा।
काई तन थयो पिंजराकार।।
श्रावक सो विचारे हो, नही चाले म्हारी देहडी।
काई शक्ति नही लगार।।

१५— आलोवी निंदी आतम हो, नि शल्य थया शूरापणे।
काई प्रणमी जगसिरदार।।
पाप अठारा त्यागे हो, काई वली जाग्या मोह निंद से।
काई थावे सवर द्वार।।

१६— धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो, काई त्यागे चारो आहार ने।
काई जावज्जीव सु विचार।।
इम नि शल्य मन थापी हो, तिरण कापी ममता जाल ने।

१७— काई धार्यो अनसन सार,"तिलोक रिख" कहे साचा हो।
नही काचा जाचा भाव मे, काई सफल कियो अवतार।

दोहा

१— तिरण अवसर आनन्द जी, विशुद्ध लेश्या शुभ ध्यान।
ज्ञानावरणीय क्षयोपशमे, उपनो अवधिज्ञान।

२— पूर्व लवरण समुद्र मे, पाच सो योजन जान।
एतो ही दक्षिरण पश्चिमे, उत्तर चूलहिमवान।।

३— जाने देखे ऊपरे, प्रथम स्वग विचार।
नीचे जानी रत्नप्रभा, स्थिति चौरासी हजार ॥

ढाल ४ राग—कोधारे कर्म न छूटिये

१—न्याय मारग जिन राज नो, भव दुःख भजन हार।
रिपु गजण दृग अजणो, शिवपद ना दातार ॥लाल रे॥
न्याय मारग जिन राज नो ॥टर॥

२—तिण काले ने तिण समे समोसर्या जगदीश।
गौतम छठ तप पारणे, प्रभु ने नमाया शीष ॥लाल रे॥

३—कहे मुझे छठम पारणो, जो तुम आज्ञा थाय।
वाणिज्य गामने विषे गोचरी जाऊँ चलाय ॥लाल रे॥

४—अहा मुह प्रभु जी कह्यो, गौतमजी तिण वार।
आज्ञा लेई ने सचर्या, जोवता इर्या विहार ॥लाल रे॥

५—गोचरी करता साभल्यो, आनन्द अनशन लीध।
चितवे हू देखू जई, इम निश्चय मन कीध ॥लाल रे॥

६—पौषधशाल तिहा आविया, देखी आनन्द सोय।
रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय ॥लाल रे॥

७ शक्ति नही प्रभु माहरी, आवण री तुम पास।
उरा पधारो नाथ जी मानो मुझ अरदास ॥लाल रे॥

८ चरण पै शीश नमाय ने, प्रणम्या तीन ज वार।
पूछ्यो उपजे के नही, अवधि गृहवास मझार ॥लाल रे॥

९—गौतम सुन हामी भरी, तब सो कहे सुविचार।
मुझ पिण अवधि उपन्यो, कह्यो छ दिशि विस्तार ॥लाल रे॥

१०—इम सुणी गौतम कहे ओही उपजे गृहवास।
पिण इतो दीर्घ न उपजे, एगो छे वात विमास ॥लाल रे॥

११—ए स्थानक तुमें आलोवो, प्रायश्चित करो अगीकार।
आनन्द कहता इम कर प्रभु सांभला मुझ नमाचार ॥लाल रे॥

१२—सत्य छता यथाभाव ते, कहता न दोष लीगार।
ए स्थानके तुम आलोवो मुज शका पडी तिण वार ॥लाल रे॥

१३—आप पूछे प्रभु शु तदा, आनन्द कह्यो ते विचार।
वीर कहे साची कही, थें लो प्रायश्चित तप मार ॥ल.ल रे॥

१४—जाय खमावो तिण प्रत्ये, इम साभली गौतम वाय।
प्रायश्चित लीनो प्रभुकने, खमावा ने गया उमाय ॥लाल रे॥

१५—बीस वर्ष श्रावक पणो, धारी पडिमा ग्यार।
एक मास अनशन कह्यो, सौधम कल्प मझार ॥लाल रे॥

१६—सौधर्मावतसक विमान थी, कौण ईशान माय।
अरुण विमान मे उपना, चार पल्योपम आय ॥लाल रे॥

१७—सुख भोगवी त्यायी चवी, महाविदेह क्षेत्र मझार।
सयम ले करणी करी, कर्म करी सहु छार ॥लाल रे॥

१८—केवलज्ञान लेई करी, जासी मोक्ष रे माय।
अजर अमर सुख सासता, लेसी सुख सवाय ॥लाल रे॥

१९—सवत् उगणी से चालीसे, पोष कृष्ण बुधवार।
तीज तीथी दिन रूयडो दक्षिण देश विचार ॥लाल रे॥

२०—शहर सातारा प्रसिद्ध छे पेठ भवानी वखाण।
जोड्यो चोढाल्यो चूप सू, सातमा अग प्रमाण ॥लाल रे॥

२१—ओछो अधिको जे जोडियो ते मिच्छामि दुक्कट मोय।
"तिलोक रिख" कहे सुणो धारसी तस शिव सपत होय ॥लाल रे॥

ढाल १

व्रत करावो श्रावक तणा ॥टेर॥

१—अन्न की जात अनेक छे, न्यारा न्यारा भेदो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, चावल तणो परेवो जी ॥व्रत०॥

२—मूग कलादिक दालिया, घोल वडा जेम जाणो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, उपरान्तरा पच्चक्खाणो जी ॥व्रत०॥

३—रायडाडो ने अकतीसो, और वतुवारी भाजी जी।
ये तो प्रभु जी मुझ ने मोकला, उपरातरा त्याग करावोजी ॥व्रत०॥

४—खाण्डरा खाजा मोकला, ऊपर घेवर ताजा जी।
दोय सुखडी मुझने मोकली, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥

५—शरद ऋतु नो नीपज्यो, घृत पण मुझ ने खाणो जी।
परपटो आया पछे, उपरात रा पच्चक्खाणो जी ॥व्रत०॥

६—फल री जात अनेक छे, न्यारा-न्यारा वखाणो जी ॥
एक प्रभु जी मुझने मोकलो, खरबूजो फल खाणो जी ॥व्रत०॥

७—रुखफल जात अनेक छे, न्यारा न्यारा भेदोजी।
एक प्रभु जी मुझने मोकलो, क्षीर आम्ल फल खाणो जी ॥व्रत०॥

८—कुआ तलाव ने बावडी, ज्यांरो जल में ठेल्यो जी।
एक प्रभुजी मुझने मोकलो, अधर आकाश को झेल्यो जी ॥व्रत०॥

९—मूग मटर उडद तणी, दाल री तीनो जातो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकलो, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥

१०—दातण जेठ मधुतणो, बीजा दातण रो नेमो जी।
पीठी गवादिक धान री, उवटण वली जाणो जी ।।व्रत०।।

११—अगर चदन रो धूपणो, विलेपन दोई भातो जी।
तैल ज दोई जात रो, शतपाक सेंस पाक जाणो जी ।।व्रत०।।

१२—स्नान करवारी विधकरी, कलशा आठ भरावो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, उपरात रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।

१३—अग पूछण री विध करी, अगोछो वली साडी जी।
पूछण कारण राखीयो, उपरात रा त्याग करावा जी ।।व्रत०।।

१४—कपडा री जात अनेक छे, न्यारा न्यारा भेदो जी।
एक प्रभुजी मुझ ने मोकलो, क्षेम युगल सफेदो जी ।।व्रत०।।

१५—गेणारी जात अनेक छ, न्यारा न्यारा भेदोजी।
नामकृतका मूंदडी काना मे कुण्डल दोई जी।।व्रत०।।

१८—पद्म कमल ने मालती, फूल री तीनो जातो जी।
सु घण कारण राखीयो, उपरात रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।।

१७—मुखवास मुझने मोकलो पाच भात तम्बोलो जी।
लोग डोडा ने इलायची, जाईफल ने ककेरोजी ।।व्रत०।।

१८—अगर चदन रो कुपलो, केशर कुकुम घोर जी।
तिलक कारण राखीयो, उपरात रा पच्चक्खाणो जी ।।व्रत०।।

१६—चार करोड धन धरती मे, चार करोड ब्याज वधे जी।
चार करोड घर बिखरी मे, उपरात रा त्याग करावो जी। व्रत०।।

२०—चार गोकुल गाया तणा गाया चालीस हजारा जी।
शिवानन्द नारी मुझने मोकली, उपरातरा पच्चक्खाणोजी ।।व्रत०।।

२१—चार जहाज मुझने मोकली वली डूडा चारो जी।
जो जाऊँ परदेश मे, माल किराणा लेई आऊँ जी। व्रत०।

२२—पाच से हलवा मझने मोकला गाडा एक हजारो जी।
धुर बोरा खेती करू, फसल काट घर लाऊँ जी ।।व्रत०।।

२३—पहली ढाल सम्पूर्ण थई, व्रत तणी मर्यादा जी।
आगे भवियण साभलो, समकित को विस्तारो जी।।व्रत०।।

ढाल २ राग—कर पडिक्कमणो भाव सु रे लाल

१—आज पछी अन्य तीर्थी रे लाल,
सन्यासीनी सेव ॥सुविचारी रे॥
ज्याने तो मैं वन्दू नही रे लाल,
नही नमाऊँ म्हारो शीश ॥सु०॥
आनन्द श्रावक व्रत उच्चरे रे लाल ॥टेर॥

२—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,
आचार मे ढीला थाय ॥सु० ।
ज्याने तो मैं वन्दू नही रे लाल,
नही नमाऊँ म्हारी काय ॥सु०॥

३—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,
निकल निदक थाय ॥सु०॥
ज्याने तो मै वन्दू नही रे लाल,
नही सारु ज्यारी सेव ॥सु०॥

४—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,
पड्या जमाली रे जाय ॥सु०॥
ज्याने तो मैं वदू नही रे लाल,
नही रे नमाऊँ पाचो अग ॥सु०॥

५—पहले हू वतलाऊँ नही रे लाल,
एकण सु दूजी बार ॥सु०॥
नही रे वहराउँ म्हारा हाथ सु रे लाल,
अशनादिक चारो आहार ॥सु०॥

६—ज्या लगे हूँ घर मे रहूँ रे लाल,
छ छडी रो आगार ॥सु०॥
राजा जी हुक्म फरमावियो रे लाल,
अथवा न्याति परिवार ॥सु०॥

७—जो कोई भेष ज राच करे रे लाल,
अटवी मे पड जाये मात॥सु०॥

ज्याने तो देणो मुझने मोकलो रे लाल
चावल चून रसाल ॥सु०॥

८—जो कोई देव पितर होवे रे लाल
अथवा कोई मोटका थाय ॥सु० ।
जो कोई दुर्जन आय भिडे रे लाल
अथवा कोई नागो अड जाय ॥सु०॥

९—भगवत रा साधु साध्वी रे लाल,
चाले सूत्र के न्याय । सु०॥
ज्याने तो मैं वदू सही रे लाल,
पाचो ही अग नमाय ॥सु०॥

१०—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,
चाले सूत्र के न्याय ॥सु०॥
ज्याने वहराऊ म्हारा हाथ सु रे लाल,
अशनादिक चारो आहार ॥सु०॥

११—चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
गाया चालीस हजार ॥सु०॥
शीवानदा नारी मुझने मोकली रे लाल,
दूजी नारी रा पच्चक्खाण ॥सु०॥

१२—चार जहाजा मुझने मोकली रे लाल,
वली डूडा चार ॥सु०॥
पाच से हलवा मुझने मोकला रे लाल,
गाडा एक हजार ॥सु०॥

१३—सू सलिया म तो मोटका रे लाल,
गेर गेर ने गेर ॥सु०॥
पाप न राख्यो राई जीतो रे लाल,
पच्चक्खाण मेरुसमान ॥सु०॥

१४—भगवत सरीखा गुरु मिल्या रे लाल,
म्हारे कमीय न काय । सु०॥

दुर्गति पडता ने झेलिया रे लाल,
म्हारे लागी मुगत सु उमेद ॥पु०॥

१५—दुजी ढाल पूरी हुई रे लाल,
समकित को विस्तार ।।सु०॥
तीजी ढाल हिवे साभलो रे लाल,
सथारा रो अधिकार ॥सु०॥

दोहा

१— आनन्द जी सथारो कियो, कोल्लाग पाडा माय।
गौतम उठ्या गोचरी, थे सुण जो चित्त लाय॥

ढाल ३

स्वामी अर्ज करु थासु विनती ॥टेर॥

१—स्वामी हाथ जोडी आनन्द कहे,
विनय करी वारम्वारो जी ॥
हो स्वामी उठन की शक्ति नही,
नेडा चरण करावो हो ॥स्वा०॥

२—गौतम चरण नेडा किया,
वद्या मन हुलास हो।
स्वामी धन्य रे दीहाडो धन्य घडी,
सफल हुई म्हारी आस हो ।।स्वा०॥

३—आनन्द कहे स्वामी सुणो,
गृहस्थी ने उपजे अवधिज्ञान हो।
गौतम कहे उपजे सही,
सु थारे उपज्यो सुजाण हो ॥स्वा०॥

४—तीन दिशो योजन पाच से
चौथी चुल्लहेम जाणो हो।
उचो त्वसोध पहलो दीसे,
नीचे लोलुची नरक थाय हो ॥स्वा०॥

५—आनन्द प्रश्न पूछियो,
गौतम दियो रे निपेध ओ।
आनन्द प्रायश्चित लेवो इण बात रो,
राखो मुगत सु उमेद हो ॥स्वा०॥

६—साचा ने तो को नही,
झूठा ने लागे छे पाप हो।
स्वामी मैं तो देख्यो जिसो ही भाखियो,
प्रायश्चित किम लेऊ कृपानाथ हो ॥स्वा०॥

७—इतनो सुण शका पडी,
आया श्री वीर जी के पास हो।
स्वामी मैं आज्ञा लेई ने उठ्यो,
गोचरी, बात दीवी प्रकाश हो ॥स्वा०॥

८—वलता वीर इसडी कहे,
थें गया वचना मे चूकी हो।
गौतम आनन्द जाय खमावजो,
पाछा मेल्या तत्काल हो ॥स्वा०॥

९—पारणो तो पीछे कियो,
आया श्री आनन्द जी रे पास हो।
गौतम आनन्द आय खमाविया,
ज्यारी सूत्र मे साख हो ॥स्वा०॥

१०—थे श्रावक सेंणा घणा,
गुणा करी ने गम्भीर हो ॥स्वा०॥
आनन्द समकित मे सेंठा घणा,
थारा गुण किया महावीर हो ॥स्वा०॥

११—शिवानन्दा नारी भली,
पतिव्रता सुकुमाल हो।
वा पिण स्याणी श्राविका,
जिन मारगरी जाण हो ॥स्वा०॥

१२—ऋषि रायचन्द इम कहे
या थई तीसरी ढाल हो।
आगे भवियण साभलो,
श्रावका रो अधिकार हो ॥स्वा०॥

ढाल ४ राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

१—आनन्द जी रे शिवानदा रे लाल,
दोनो रो दीपती जोड हो ॥भविक जन॥
चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनया बारा करोड हो ॥भ०॥
श्रावक श्री महावीर का र लाल ॥टेर॥

२—श्रावक श्री वधमान का रे लाल,
पूरा एकज लाख हो ॥भ०॥
उण सठ हजार ऊपर कह्या रे लाल,
सुनियो चित्त ठिकाण राख हो ॥भ०॥

३—कामदेवजी रे भद्रा भार्या रे लाल,
सेणी घणी सुकुमाल हो ॥भ०॥
गोकुल छ गाया तणा रे लाल,
सोनैया क्रोड अठार हो ॥भ०॥

४—चूलणी पियारे सोमा भार्या रे लाल,
करे कदी नही रोस हो ॥भ०॥
आठ गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनया क्रोड चौवीस हो ॥भ०॥

५—सुरादेवजी रे धन्ना शोभती रे लाल,
शोभे जुगती जोड हो ॥भ०॥
छ गोकुल गायां तणा रे लाल,
सोनया बारह करोड हो ॥भ०॥

६—चूलणी शतकरे बहुला भार्या रे लाल,
दीठा ही आवे दाय हो ॥भ०॥
कचन अठारा ना धणी रे लाल,
गायां साठ हजार हो ॥भ०॥

७– सेणा श्रावक कुण्डकोलिया रे लाल,
ज्या के पूसा नार हो ।।भ०।।
कचन अठारा ना धणी रे लाल,
गाया साठ हजार हो ।।भ०।।
८—सकडाल जी के अग्निमित्रा रे लाल,
धम रुच्यो मन माय हो ।।भ०।।
एक गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनैया तीन करोड हो ।।भ०।।

९—महाशतक जी श्रावक हुवा भाटका रे लाल,
ज्या के तेरा नार हो ।।भ०।।
क्रोड चौवीस रो परिग्रहो रे लाल,
गाया अस्सी हजार हो ।।भ०।।
१०– नदनि पिताजी रे अश्विनी रे लाल,
धर्म रुच्यो मन माय हो ।।भ०।।
चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
कचन बारह क्रोड हो ।।भ०।।
११—सालिहि पिताजी रे फाल्गुणी रे लाल,
धर्म दीपावन जोग हो ।।भ०।।
चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनैया बारा क्रोड हो ।।भ०।।
१२–दौलतवता दस हुआ रे लाल,
समकित ऊपर दृढ हो ।।भ०।।
स्फटिक रत्न हियो ऊजलो रे लाल,
ज्ञान दियो घट मे घाल हो ।।भ०।।
१३—पहला ने वली आठमा रे लाल,
दोना ने अवधिज्ञान हो ।।भ०।।
साता ने उपसर्ग उपनो रे लाल,
श्रद्धा है सर्व प्रधान हो ।।भ०।।
१४—दिन-दिन चढता वैराग्य मे रे लाल,
सुरा ने सुविनीत हो ।।भ०।।

वल्लभ लागे साधने रे लाल,
पडिमा सर्व ग्यार हो ॥भ०॥

१५—महाविदेह क्षेत्र मे सिझसी रे लाल,
कह्यो सातमे अग हो ॥भ०॥
फाटे पण पलटे नही रे लाल,
चोल मजीठ रो रग हो ॥भ०॥

१६—सवत् अठारे चौसठ साल मे रे लाल,
नागोर शहर चौमास हो ॥भ०॥
पूज्य जयमल जी रा प्रसाद से रे लाल,
"ऋषि रायचन्द" भणे रे हुल्लास हो ॥भ०॥

दोहा

१— अरिहंत सिद्ध आचार्य जी, उपाध्याय मुनिराज ।
प्रणमु सद्गुर देव को, पूरो वञ्छित काज ॥

२— सातवे अगे जाणीये, द्वितीय अध्ययन मझार ।
कामदेव श्रावक तणो, दाख्यो बहु विस्तार ॥

३— सूत्रानुसारे वर्णवु, किंचित् तास समास ।
सुनो श्रोता शुद्ध भावसु, समकित रत्न उजास ॥

ढाल १

राग— घोडा देश कम्बोज का

१—तिण काले तिण अवसरे, चम्पा नगर मझारो जी ।
जितशत्रु तिहा राजवी, प्रजा भणी सुखकारो जी ॥
धन्य श्रावक जे शुभ मति ।।टेर।।

२—धन्य श्रावक जे शुभमति, कामदेव गाथापति जाणो जी ।
छ कोडी द्रव्य धरणी वीपे छ क.डो व्याज बखाणो जी ॥

३—छ कोडी घर विखरी, छ गोकुल वग छे तासो जी ।
भद्रा घरणी जाणीये, भोगवे भोग उलासो जी ॥

४—अपर रिद्धि आनन्द परे, दाखी छे सूत्र के माई जी ।
तिण काले तिण अवसरे, जगगुरु जगसुख दाई जी ॥

५—ग्राम नगर पुर विचरताँ, चम्पा नगरा मझारो जी ।
वीर जिनन्द समासर्या, करवा परउपकारो जी ॥

६—राजादिक गया वदवा, कामदेव पाद विहारो जी ।
वदी बैठा प्रभु आगले, मन मे हर्ष अपारो जी ॥

७—प्रभु जी दी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी।
जो आराध भाव सु, उत्तरे भवजल पारो जी॥

८—कामदेव सुनी हर्षिया, कहे सत्य वेण छे थारो जी।
सयम की शक्ति नही, धरावो व्रत मुझे वारो जी॥

९—आनन्द नी परे जाणीयें, धन उपरात पच्चखाणो जी।
त्याग कर्या शुद्ध भाव सु वारा व्रत परिमाणो जी॥

१०—शिवानन्दा तिम ही लिया, भद्रा व्रत रसालो जी।
'तिलोक रिख' कहे सुणो आगले, ये थई प्रथमा ढालो जी॥

दोहा

१— कामदेव श्रावक भला, टाले व्रत अतिचार।
चौदह वर्ष इम वीतिया, पनरवें का अधिकार॥

२— जागरणा आनन्द जिम ज्येष्ठ पुत्र घर भार।
देई ने धारी तदा, पडिमा शुद्ध इग्यार॥

३— एक दिन पोषधशाल मे, पोषध लीनो भाव।
धर्म ध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव॥

४— शक्रेन्द्र सौधमपति, बैठा सभा मझार।
अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार॥

५— मुख जयणा करी बोलीया, भरत क्षत्र के माय।
धर्मी पुरुष निश्चल मति, कामदेव अधिकाय॥

ढाल २

राग—गुरा जी थे मने गोडे महीं राख्यो

१— निश्चय श्रद्धा समकित व्रत माई।
इण अवसर कामदेव अधिकाई॥

२— देव दानव असुर सुर जाई।
तिण न कोई र सके चलाई॥

निश्चय श्रद्धा समकित व्रत माई। टेर॥

३— समदृष्टि सुर दियो य याराग।
धन्य तिण नर नो सफल जमारो॥

४— महामिथ्यादृष्टि सुर तिरण वारे।
सुन कर सो मन माहे विचारे॥

५— अन को कीडो जीवे अन खाई।
तिरण ने एक दिन मे देऊ नचाई॥

६— ऐसो विचार कियो मन माई।
शीघ्र पण तिहा आयो चलाई॥

७— महापिशाच को रूप वणायो।
महाविद्रुप भयकर कायो॥

८— टोपला सरिखो शीश वणायो।
सूकर सरीखा केश जमायो॥

९— कढाला सरीखो कियो कपालो।
टाली की पूछ ज्यु भू आ विकरालो॥

१०— बाहिर छटक्या नेत्र का डोला।
सुपडा सरीखा कान कुडोला॥

११— गाडर जिम चिपटी तस नासा।
फालीया सरीखा दत सत्रासा॥

१२— लटके ऊँट सा होट कुरगी।
जिह्वा कतरणी जेम विभगी॥

१३— खद कर्या मृदग आकारो।
पुरपोल किंवाड ज्यो हियो भयकारो॥

१४— भजा विभत्स शिल्लासी हथेली।
खलवतासी अगुली कुमेली॥

१५— सीपपुटसा तस नख विस्तारो।
नाई पेटी सम थण सय भारो॥

१६— ढीलो छे सधी वद सरीरो।
देखता कायर होत अधीरो॥

१७— कुकडा उन्दरा की तनमाला।
कुण्डल नोल का अति विकराला।

१८ – उत्तरासण भुजग को अग धरतो ।
अट्टहास गर्जारव करतो ।।

१६— अतितिक्षण खाण्डो कर सायो ।
पौषधशाला तिहा चल आयो ।।

२०— बोले वचन जिम कोपियो कालो ।
'तिलोकरिख" कहे दूसरी ढालो ।।

दोहा

१— हु भो कामदेव ! श्रावक तु मृत्यु नो वछण हार ।
खोटा लक्षण ताहरा ह्री श्री वरजण हार ।।

२— धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्ष नो तू छे वछण हार ।
कल्पे नही तुझ खण्डवा शीलादिक व्रत बार ।।

३— पिण हू आज भजावसु पौषधादिक व्रत जेह ।
नहीं तो इण ही खड्ग सु, खण्ड खण्ड करसु देह ।।

४— आर्त्त रौद्र ध्यानवश मरसी आज जरूर ।
एक दो तीन वार तो, बोल्यो वचन करूर ।।

५— वयन सुनी इम तेहना डरिया नाही लिगार ।
धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ।।

ढाल ३

राग— सूरिजन, सामल ओ सबकोय

भविक जन, धन धन साहस धीर ।।टेर।।

१— क्रोधातुर मिस मिस थयो काइ, त्रिशुल लिलाड चढ़ाय ।
तीक्षण पाछणा धार सो काई, खड्गसु खण्डे काय ।।

२— उज्जल वेदना उपनी काई कहता न आवे पार ।
के तो जाण आतमा काई, के जाणे किरतार ।।

३— त्राम नही एक रोम मे काई, रम्या सम परिणाम ।
कामदेव सोच तदा काई, मिथ्यात्वी सुर-नाम ।।

४— ए खण्डे मुझ काय ने काई, मुझ समकित व्रत बार ।
खण्डवा समर्थ छे नही काई जो आव देव हजार ।।

५— थावयो देव तिण अवसरे काई, जोर न चाल्यो लिगार ।
पोपधशाला थी निकलो काई, पिशाच को रूप निवार ॥

६— सप्त अग लागे धरणी सु काई, धर्यो तिणे गजरूप ।
अजनगिरी नी उपमा काई, दीसे महा विद्रूप ॥

७— पोपधशाला मे आय ने काई, तीन वार वली जेह ।
वोल्यो वचन पहली परे काई, रच डर्यो नही तेह ॥

८— क्रोधातुर ग्रह्या सुण्ड मे काई, पोपधशाला के वहार ।
उछाल्या आकाश मे काई, तीक्षण दत मझार ॥

९— झाली ने डाल्यो पग तले काई, लोलऱ्या तीन ज वार ।
महावेदना तिणे अनुभवी काई, चलिया नही लगार ॥

१०— हस्ती रूप छोडी करी काई, सर्प वण्यो भयकार ।
लाल नेत्र मसीपुज सो काई, करतो फू फू कार ॥

११— पूर्व नी परे वचन कह्या काई, अण वोल्या रह्या मोय ।
निश्चल पणु जाणी करी काई, क्रोधातुर अति होय ॥

१२— तीन वीटा दिया कठ मे काई, विप सहित हिया माय ।
डस दियो अति जोर सु काई, तो पिण चलीयो नाय ॥

१३— थाको ते वेदनी देवता काई, जाण्यो दृढ परिणाम ।
'तिलोक रिख'' कहे तीजी ढाल मे काई, सुर किधा काम निकाम ।

दोहा

१— सर्प रूप छोडी करी, निज रूप दिव्य ने धार ।
काने कुण्डल जगमगे, सोवे गला मे हार ॥

२— दस दिश प्रभा करतो थको, कटि घूघर घमकार ।
हाथ जोडी ने विनवे, लुल लुल वारम्वार ॥

३— धन्य पुण्य कृत लक्षणा, सफल तुझ अवतार ।
इन्द्रे करी तव प्रशसा, सोधर्म सभा मजार ॥

४— मैं मिथ्यात्व तणे वशे सत्य न मानी वाय ।
धर्म थी डिगावण कारणे, दिया परिपह आय ॥

५— खमजो मुझ अपराध ते, नही करु दूजी वार।
इम लघुता करी देव ते, सचर्यो स्वर्ग मझार॥

ढाल ४ राग—मोने वालो लागे बिछीयो

१— हा रे लाला, तिण काले तिण अवसरे,
समोसर्या वीर जिनद रे लाला॥
कामदेव सुन धारियो,
पारणो करसु प्रभु पेली वद रे लाला॥
कामदेव श्रावक सिरे॥टेर

२— कामदेव श्रावक सिरे,
जिण पहेरीया सहु शिणगार, रे लाला॥
प्रभु प्रणम्या शुद्ध भावसु,
हिवडे हर्ष अपार रे लाला॥

३— प्रभु दीनी देशना,
द्वादश परिषदा मझार॥रे लाला॥
कहे कामदेव थकी तदा,
आजे आधी रात मझार॥रे लाला॥

४— तीन उपसर्ग देवे दिया
ते खम्या सम परिणाम॥रे लाला॥
ए अर्थ समर्थ छे के नही,
सो दाखे हता छ स्वाम॥रे लाला॥

५— गौतमादिक साधु साध्वी,
आमन्त्री ने कहे जिनराय॥रे लाला॥
गृहस्थाश्रमे परिग्रह सह्या,
तुमे तो थया मुनिराय॥रे लाला॥

६— द्वादश अग भणिया तुमे,
परिषह सहवा जोग॥रे लाला॥
तहत वचन करीया सहु,
श्रमणादिक गयो उपयोग॥लाला॥

७— प्रश्न उत्तर करी भगवन्त ने,
पूछी सहु गया निज गेह ।।रे लाला।।
आनन्द जिम पडिमा वही,
अन्ते ठायो अनशन तेह ।।रे लाला।।

८— एक मास सलेखणा,
प्रथम स्वग मझार ।।रे लाला ।।
अरुणाभ विमाने उपना,
थिति दाखी पल्योपम चार ।।र लाला।।

९— चवी ने विदेह मे जावसी,
तिहा लेसी नर अवतार ।।रे लाला।।
सजम ले करणी करी,
ते जासी मोक्ष मझार ।।रे लाला।।

१०— सवत उगुणीसे गुणचालोस मे,
पोष वदि चौथ तिथी जाण । रे लाला ।।
देश दक्षिण कोकन विषे
शहर सतारो वखाण ।।रे लाला।।

११— "तिलोक रिख" कहे सूत्र न्याय सु ।
चौढाल्यो रच्यो सुखकार ।।रे लाला ।।
भणसी गुणसी शुद्ध श्रद्धसी ।
तस होवसी खेवो पार ।।रे लाला ।।
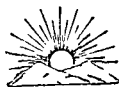
दोहा

१— श्री सिद्धार्थनदन नमु, उत्तमगुण गम्भीर।
मेढी गाँव समोसर्या, विचरता महावीर ॥

२— गोशाले उपसर्ग दियो, हुम्रो लोही ठाण।
छमास लग पीडा रही, न सक्या करी बखाण॥

ढाल १ राग—आदर जोव क्षमा गुण आदर

मोह कम जग माहे मोटो ॥टेर॥

६—तिण अवसर ने सिहो मुनिवर, भक्ता जिनवर शोश जो।
ध्यान धरो बठो तिण वन मे, देख रह्या जगदीश जी ॥

२—मोह कर्म जग माहे मोटो, जालिम मोटो जोधजी।
कायर थी जीतो नही जावे, ज्ञानी नाख्यो जड खोद जी ॥

३—कोई कहे गोशालो मरसी, कोई कहे महावीर जी।
सोह मुनि सुणीयो ध्यान मे हुआ घणा दिलगीरजी ॥

४—साधुसघाते तेडाव्या आया, सनमुख वीरहजूर जी।
उपन्यो ते प्रभु बात सुणावे, तहत्त करे करजोड जी ॥

५—वीर कह गोशालो झूठो, मरसी सात दिन माय जी।
साढी पन्द्रह वष लग सुख मे, विचरसु शक न काय जी ॥

६ जिण तु जा रेवती ने मदिर पाक बीजा ले लाय जी।
बिजोरा पाक छे प्रासुकर्मी, भेल्यो माहरो भाव जी।

७ इम सुणी सीहो अति हर्ष्यो, धन्य धन्य दीनदयाल जी।
ऋषि चौथमल कह सोच मिटायो पहुंची तो म नई ढाल जी॥

ढाल २

राग—तिण अवसर मुनिराय

१—सामल श्रीमुख वाण, सीह कर्यो प्रमाण ।।जिनेश्वर लाल।।
रोम रोम मन हुलस्यो रे ।।

२—जिम तृष्या ने नीर, भूखा ने जिम भोजन खीर ।।जिने०।।
जिम रोगी ने औषध मिल्यो रे ।

३—कामण ने जिम कन निर्धन थयो धनवत ।।जिने०।।
आधा ने कीयो जिम सुझतो रे ।

४—झोली मे पातरा डाल चाले गन्धहस्ति नी चाल ।।जिने०।।
वहरण ने मुनि पागर्या र ।

५—मेंढी गाव रे माय, ईर्या जोवता जाय ।।जिने०।।
रेवती घर आवीया रे ।

६—देख सीहो अणगार, हर्षित थई अपार ।।जिने०।।
सात आठ पग साहमी गई रे ।

७—धन्य दिहाडो आज, भेंटया सीह मुनिराज ।।जिने०।।
मन माग्या पासा ढल्या रे ।

८—भला पधार्या गह, दूधा बूठा मेह ।।जिने०।।
मन रा मनोरथ,सहु फल्या ए ।

९—प्राणी 'अधिको कोड, पूछे बेकर जोड ।।जिने०।।
किसडे काम पधारीया ए ।

१०—कहे सीहो अणगार, हूँ आयो लेवण आहार ।।जिने०।।
दूजो प्रयोजन को नही रे ।

"ऋषि चौथमल कहे एम, वहरावे वहु प्रेम ।जिने०।।
गाथापत्नि रेवती रे ।

ढाल ३

राग—वीर वखाणी राणी चेलणा

१—रसोईशाला माहे जायने जी काढीयो बीजोरा पाक जी ।
रेवती कहे स्वामी लीजीये जी, मीठो हे जाणे गटाक जी ।।
सीह मुनि भला ही पधारीया जी ।।टेर।

२—तब वलता मुनिवर कहे जी, तू वहरावे अधिक उछाह जी।
पिण लेवो कल्पे नही जी, भेल्या भगवतरा भाव जी॥

३—ए तो हूम लेवाको नही जी, पिण दूजो कोला पाक नाय जी।
ते शुद्ध साधने दीजीये जी, ते कियो भर तणे काम जी॥

४—हाथ जोडी कहे रेवती जी, आश्चय पामी अथाग जी।
मैं किण ने न प्रकाशियो जी, देख जो माहरा भाग जी॥

५—कुण ज्ञानी तपसी इसो जी, जिन रहस्य छानी कही वाल जी।
मुनि कहे सकल देखी रह्या जी, प्रभुरे नही छानी तिलमातजी॥

६—सीहो कहे सुण श्राविका ए उपन्यो है केवल ज्ञान जी।
धम आचारज प्रसिद्ध छे ए, भगवत श्री वर्धमान जी॥

७—ज्या सु छानी नही वारताए, तीनो ही लोकरे माय जी।
प्रतिबोध देवे घणा जीवने जी, अपूर्व धर्म सुणाय जी॥

८—वीतराग अरिहतना ए, वेटलाक गुण कह्या जाय जी।
"रिख चौथमल" कहे रेवती जी, गुण गुण रही फुनाय जी॥

ढाल ४ राग— नवकार मन्त्रनो ध्यान धरो

१—वहरावे रेवती भावे चढी, तोडी जिन कर्मारी कोड लडी।
मनुष्य जन्म ने सफल कियो, रेवती शुद्ध मनसु दान दियो॥

२— चित्त वित्त पातर मिलीया,
खीर खाण्ड माहे जिम घृत ढुलीया।
धन्य धन्य रेवती रो जन्म जीयो॥

३— दान दियो हुई रग रली,
मन चितित आशा सर्व फली।
तीथकर गोत्र बांध लीयो॥

४— चार जाति रा देवता तूठा,
पाच द्रव्य जिण रे घर बूठा।
सुर नर सगला रो हर्ष्यो जीयो॥

५— पाक वहरायो रेवती सती,
आण दियो दण मोह जती।
प्रभु जी पाक आरोग लीया॥

६— सुर नर सकर्ल हुआ ' राजी,
कीर्तिदान री वाधी जाभी।
वारे पर्षदा रो हर्ष्या होयो ॥

७— पट् मास नो लोहीठाण गयो,
चारो ही सघ मे हप थयो।
धन्य धन्य रैवतो भलो लाभ लीयो ॥

८— रोग टल्यो हुई गई साता,
देवे किया वखाण गगने जाता।
सुणता सुणता ज्यारो ठरे हीयो ॥

९— तोर्थ कर नो पद ते पासी,
एक भव करने मुगत जासी।
सूत्र भगवती रो साख कीयो ॥

१०— सुण नर नार घणा हर्षे
सवत् अठारे बावन वर्षे।
'ऋषि चौथमल" चौढाल कीयो ॥

१६ | महारानी रोहिणी

ढाल १ राग – हारे म्हारा नेम धमना साढा पचवीस देश जो।

१—हा रे म्हारे, वासुपूज्य नो नदन मघवा नाम जो।
रोहिणी तेहनो कमला पकजलोयणी रे लो॥
हां रे म्हारे, आठ पुत्र ने ऊपर पुत्री एक जो।
मात पिता ने व्हालो नामे रोहिणी रे लो॥

२—हा रे म्हारे, देखी जोवन वेशे निज पुत्री ने भूप ज्यो।
स्वयवरमण्डप माही नृप तेडाविया रे लो॥
हा रे म्हारे, अग वगने मरुधर केरा राय जो।
चतुरगी फोजा थी चम्पा आविया र लो॥

३—हा रे म्हारे, पूर्व भव ना रागे रोहिणी ताम जो।
भूप अशोक ने कठे वरमाला धरे रे लो॥
हा र म्हारे, गज रथ घोडा दान अने वहुमान जो।
देई मोकलावी वेटी वहु आडम्बरे रे लो॥

४—हा रे म्हारे, रोहिणी राणी भोगवता सुखभोग जो।
आठ पुत्र ने पुत्री चार सुहामणी रे लो॥
हां रे म्हारे, आठ मा पुत्र नु नाम छे लोकपाल जो।
ते खोले लेई ने बैठो गोखे भामणी रे लो॥

५—हा रे म्हारे एवे कोईक नगरयणिक नो पुत्र जो।
आउखे थी वालक मरण दशा लहे रे लो॥
हां रे म्हारे, मात पितादिक सहु तेनो परिवार जो।
रडतो पडतो गोग खले पई ने वहे रे लो॥

६—हा रे म्हारे, ते देखी अति हर्षि रोहिणी ताम जो।
पीऊ ने भाखे ए नाटक कुण भाति नो रे लो।
हा रे म्हारे "दीप" कहे पूर्व पुण्य सकेत जो॥
जन्म थकी नवि दीठू दुख कोई जात नो रे लो।

ढाल २

राग—आगा आम पधारो पुज्य

बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजे हासो ॥टेर॥

१—पिऊ कहे जोवन मदमाती, सबने सरखी आशा।
ए बालक ना दुख थी रोवे, तुझने होवे तमाशा ॥बोलो॥

२—तब राजा जी रीम करी ने, खोले थी पुत्र ने खोसी लीधो।
रोहिणी राणी नजरे जोवता, गोख थकी नाखी दीधो॥

३—ते देखी सब अन्तेउर मे, सभी फिकर ते कीधो।
रोहिणी एम जाणे जे बालक, कोईक रमवा लीधो॥

४—नगर तणे रख वाले देवे, अधर गृह्यो तिहा आवी।
सोना ने सिहासने थाप्यो, आभूषण पहरावी॥

५ नगर लोग सब भाग बखाणे, राजा विस्मय थावे।
"दीप" कहे जस पुण्य सखाई, तिहा सहु नवनिधि थावे॥

ढाल ३

राग—रूढो माल बसत,

रोहिणी तप फल जग जयवन ॥टेर॥

१—एक दिन वासु पूज्य जिनवर ना, अन्तेवासी मुनिराज।
रूप कुभ ने सुवर्ण कुभ जी, सहु ज्ञानी भव जहाज ॥वाला रोहिणी०।

२—पधार्या प्रभु जी नगर समीपे, हर्ष्यो रोहिणी नो कत।
सहु परिवार सु पद जुग वदे, निसुणियो धर्म एकत ॥वाला०॥

३—कर जोडी नृप पूछे गुरू ने, रोहिणी पुण्य प्रबध।
शू कीधू प्रभु सुकृत एने, भाखो ते सयला सबध ॥वाला०॥

४—गुरू कहे पूवभव मे कीधु रोहिणी तप गुण खान।
ते थी जन्म थकी नही दीठु, सुख दुख जान अजान ॥वाला०॥

५—भाखे गुरु हिये पूर्वभवनो रोहिणी नो अधिकार।
'दीप' कहे सुण जो एक चित्ते, कम प्रपच विचार ॥वाला०॥

ढाल ४   राग—पनजी मुडे बोल

राजन सुणजो रे, काई पूर्व भव अधिकार ।
दिल मे धर जोरे ॥टेर॥

१—गुरु कहे जम्बू भरत क्षेत्र मे, सिद्धपुर नगर मझारो रे ।
पृथ्वीपाल नरेसर राजा, सिद्धमति तस नारो रे ॥

२—एक दिन श्राय चद्र उद्याने, राणी ने राजानो रे ।
खेले क्रीडा नव नव भाते, जोइजो कर्म निधानो रे ॥

३—एवे कोईक मुनिवर तिहा श्राया, गुणसागर तस नामो रे ।
राजा ते मुनिवर ने देखी, राणी ने कहे तामो रे ॥

४—उठो ए मुनिवर ने वेराश्रो, जे होय सुझतो श्राहारो रे ।
नीसुणी राणी ने मुनि ऊपर, उपनो क्रोध श्रपारो रे ॥

५—विषय थकी श्रन्तराय थये ते, मन मे बहु दुख लावे रे ।
रीसे बलती कडवू तुबू, ते मुनि ने वहरावे रे ॥

६—मुनि ने श्राहार थकी विष व्याप्यो, कालधर्म तिहा कीधो रे ।
राजा ए राणीने तत्क्षण, देश निकालो दीधो रे ।

७—सातमे दिन मुनिहत्या ते, पापे गलत कोढ थयो श्रगे रे ।
काल करी ने छठी नरके, उपनी पापप्रसगे रे ॥

८—नारकी ने तिर्यंच तणा भव, भटकी काल श्रनन्तो रे ॥
"दीप" कहे हिवे धमजोगनो, यं सू सरस विरतन्तो रे ॥

ढाल ५   राग—हु तुम आगल शु कहु कन्हैया"

१—ते राणी मुनि पापथी मेमरीया लाल, फरती भव चक्कर फेर रे ।
तारा नगर मे ऊपनो केस, धनमित्र सेठ ने घेर रे ॥के०॥
जुवो जुवो कर्मविटम्बना केसरिया लाल ॥टेर॥

२—धनवती कूखे उपनो, दुगन्धा तस नाम रे ।
नगरवणिकना पुत्र ने, परणायो बहुमान रे ॥केस० जुवो०॥

३—मुखसेजानी ऊपरे भावि कतनी पासरे ।
बहु दुगन्धना उपनी स्वामी पाम्यो त्रास रे । के० जुवो० ।

४—गुकी परदेसे गयो, जुवो जुवो धर्म स्वभाव रे।
एक दिन कन्या नो पिता, ज्ञानी ने पूछे भाव रे ।।के० जुवो०।।

५—ज्ञानी पूर्व भव कह्यो, भाख्यो सव अवदात रे।
फरी पूछे गुररायने, केम होय सुख सात रे ।।के० जुवो०।।

६—गुरु कहे रोहिणी तप करो, सात वरस सात मास रे।
रोहिणी नक्षत्र ने दिने, चौविहार करो उपवास रे ।।के० जुवो०।।

७—वासुपुज्य भगवत नो, आप करो शुभ भाव रे।
एम ए तप आराधता, प्रगटे शुद्ध स्वभाव रे ।।के० जुवो०।।

८—करजो तप पूरण थया, उजमण भलिभात रे।
तेहती एक भव आतरे, लेसो ज्योति महत रे ।के० जुवो०।।

९—इम मुनिमुख थी साभली, आराधी ते मार्ग रे।
ए थारी राणी थई, रोहिणी नामे नार रे ।।के० जुवो ।।

१०—एम निगुणी हरख्या सहु, रोहिणी ने वले राय रे।
'दीप" कहे मुनि कु भने, प्रणमी स्थानक जाय रे ।।के० जुवो।।

ढाल ६ राग—पूज्य पधारियाए ।।

१— एक दिवस वासुपूज्य जी ए।
समोसर्या जिनराज ।।नमो जिनराज ने ए ।।

२— राय ने राणी हरखिया रे,
सीधा सगला काज ।।
नमो जिनराज ने ए ।।टेर।।

३— बहु परिवार सु आविया रे, वदे प्रभु ना पाय।
श्री मुख ही वाणी सुनी ए, आनन्द अग न माय ।।नमो०।।

४— राय ने राणी बेहु जणाए, लीधो सयम खास।
धन्य धन्य सजम धर मुनि ए सुर नर जेहना दास ।।नमो०।।

५— तपतपी केवल लहि ए, तारिया बहु नर नार।
शिवपद अविचल पद लह्या ए पाम्या भवनो पार ।।नमो०।।

६— एम जो रोहिणी तप कर रे, रोहिणी नी परे तेह।
मगलमाल ते लहे ए, वली अजरामर गेह ।।नमो०।।

७— धन्य वासुपूज्य ना तीर्थ ने, धन्य रोहिणी नार।
ए तप जे भावे करे ए, पामै ते जय जय कार ॥नमो०॥

८— सवत् अठारे उगनसाठनो ए, उज्वल भादव मास।
'दीप विजय" तसगाइयो ए, रही खभात चौमास ॥नमो०॥

कलश

१— वासुपूज्य जगनाथ साहब, तास तीरथ ए थया।
चार पुत्री ने आठ पुत्र थी, दपती मुगते गया॥

२— तपगच्छ विजयानन्द पट्टघर, विजय देवेन्द्र सूरिस्वरू।
तास राज स्तवन कोधो, सकल सघ सोह करू॥

३— सकल पण्डित प्रवर भूषण, प्रेम रतन गुरु ध्याईया।
कवि "दीप विजय" पुण्य हेते, रोहिणी ना गुण गाईया॥

दोहा

१— आदिनाथ आदिश्वरु, सकल विदारण कर्म।
उपकारी भवि तारवा, कह्यो चार प्रकारे धर्म ॥

२— दान शील तप भावना, इण बिना मोक्ष न होय।
तो पिण सब व्रत देखता, शील समो नही कोय ॥

३— शील भाग्या भागे सहू, इम कह्यो श्री जिनचन्द।
शीलवत जे पुरुष ने, सेवे सुर नर वृन्द ॥

४— जश कीर्ति फैले इला, जे ब्रह्मव्रत मे लील।
जो सुख चाहो जीवनो, पालो शुद्ध मन शील ॥

५— विजय कुँवर विजयावती, शील पाल्यो खड्ग धार।
तेह तणा गुण वर्णवू, लिखित कथा अनुसार।

६— सुणी करो सारो सभा, पर नारी पच्चक्खाण।
पक्ष पर्व दिन आखडी करो यथा शक्ति प्रमाण ॥

७— जोवन वय छती जोग मे, नारी रहे जिण पास।
बाल ब्रह्मचारी तिहु योग मे, दुष्कर दुष्कर प्रकाश ॥

ढाल १ राग— शील सुरतरु सेविये

शील तणी महिमा सुणो ॥टेर॥

१—जम्बुद्वीपना भरत मे, दक्षिण कच्छदेशो जी।
नगर कौशम्बी तेह मे, अमरापुरी सम कहे सो जी ॥शील॥

२—धनावो सेठ तिहा वसे, तिणरे विजय कुमारो जी।
रूप कला गुण आगला, जोवन वय हुशियारो जी ॥शील॥

३—तिण अवसर मुनि पागुरिया, समिति गुप्ति प्रतिपन्नो जी।
आप तीरे परने तारता, लोग कहे धन्य धन्नो जी ॥शील॥

४—लोक आया मुनि वदवा, तिमही विजय कुमारो जी।
धर्मकथा मुनिवर कहे, यो ससार असारो जी ॥शील॥

५—जन्म जरा दु ख मरण रो, कहता न आवे पारो जी।
नर भव पामणो दोहिलो चेतो सहु नर नारो जी ॥शील॥

६—उत्कृष्ट्यो वन्ध कर्म नो, विपयविष विकारो जी।
नव लाख सन्नी मनुष्य नो श्री जिन कह्यो सहारो जी ॥शील॥

७—दु ख अनेक अणी जोग सु, पर रमणी दु ख की खानो जी।
फल किंपाकनी ओपमा, इम भाख्यो भगवानो जी ॥शील॥

८—इम सुणी सहु थरहर्या, विजय कुंवर जोड्या हाथो जी।
अहो मुनि सयम लेवा ने, समथ नही कृपानाथो जी ॥शील॥

९—जावज्जीव परनार रा, माने मुनि पच्चक्खाणो जी।
स्वदारा पिण जावज्जीव नी, कृष्ण पक्ष ना जाणो जी ॥शील॥

१०—दुष्कर काम कुवर कियो, मुनिवर कीनो विहारो जी।
"रामचन्द्र" कहे शील ने, धन्य पाले नर नारो जी ॥शील॥

दोहा

१— तिण नगरी माहे वसे, अपर सेठ धन्नसार।
विजया कुमरी तेहने, अद्भुत रूप उदार॥

२— एकदा विजया सुन्दरी गई महासतीया के पास।
शुक्ल पक्ष व्रत आदर्या, मन मे धरी उल्लास॥

३— सयानी चतुरा बहु लज्जा, चौसठ कला भण्डार।
भर यौवन मे आई तदा, शादी विजय कुमार॥

४— कारण कारण सहु किया, विवाह कियो तिणवार।
जेहवी विजया सुन्दरी, तेहवो विजय कुमार॥

ढाल २ राग—मोटी जन मे ओहिवी

सुणजो जो शील सुहामणो ॥टेर॥

१—सोने शृंगार सभी भामा, कांई आई हो रग महल मझार।
नण पैण प्रिय माहरी, कांई ऊभी हो जिहा विजय कुमार ॥सु०॥

२—कथ कहे भल आविया, दिन तीन ज हो नही आवण काज।
शु कारण कहे सुन्दरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ॥सु०॥
३—कृष्ण पक्ष व्रत मैं लिया, इम सुण ने हो सा थई उदास।
शुक्लपक्ष व्रत मे लिया, दुजी परणी हो माण्डो घरवास ॥सु०॥
४—विजय कुंवर कहे है प्यारी, सहजे टलियो हो अनर्थ को मूल।
जावज्जीव व्रत पालसा नर मूरख हो रह्या छे भूल ॥सु०॥
५—काम भोग बहु भोगिया, काई भोग्या हो अनन्तो बार।
तृप्त नही हुओ जीवडो, इम बोले हो तिहा विजय कुमार ॥सु०॥
६—कहे प्यारी प्रीतम सुनो, किम रेसी हो या छानी बात।
प्रकट हुआ भयम लेसा, काई लडसा हो कर्मा रे साथ ॥सु०।
७—करे सामायिक पोषा भेला, काई सोवे हो एक सेज मझार।
जोवे भगनी भ्रात ज्यु, शील पाले हो खाडारी धार ॥सु०॥
८—मन वचन काया करी, नही व्यापे हो कभी काम विकार।
सार धर्म जाणे जिन तणो, काई दूजो हो सहु जाणे असार॥सु०॥
९—नही रुची पुद्गल ऊपरे, धन्य लेखे हो जेहनो अवतार।
"राम" कहे ढाल दूसरी, व्रत पाले हो धन्य जे नर नार ॥सु०॥

दोहा

१— धर्म ध्यान करता थका, द्वादश वर्ष जो थाय।
किण विध बात प्रकट हुवे, ते सुण जो चित्त लाय ॥
२— लक्ष्मी भाग्य ने रागता, दाता सूर सुवास।
एता छाना किम रहे, विद्वत् कवि प्रकाश ॥

ढाल ३

राग—जल्हानी

१— तिण अवसरे तिण काले दक्षिण देशे हो,
सुखकारी मुनिराज, उपकारो जिनराज ॥टेर॥
१—विमल केवली नामे मुनि शुभ वेसे हो जिनन्द।
२—चम्पा परी का बाग मे आई उतर्या हो ॥सु० उ०॥
बहु नर नारी मुनिवदन परवरिया हो जिनन्द।
३—यह ससार असार मुनि दिखलावे हो। सु० उ०॥

तन धन जोवन जाता वार न लावे हो जिनन्द ।
४—मात पिता सुत भामिनी संग न आवे हो ।।सु० उ०।।
सहु सघ छोडी ने चेतन परभव जावे हो जिनन्द ।
५—विषय विकार प्रमादे नरभव हारे हो ।।सु० उ०।।
मूरख चेतन रत्न अमोलक डारे हो जिनन्द ।
६—इत्यादिक मुनि धर्मदेशना दोधी हो ।।सु० उ० ।।
सुण कर श्रावक अमृत रस कर पीधी हो जिनन्द ।
७—जिनदास श्रावक विनवे शीष नमायो हो ।सु० उ०।।
अहो प्रभजी मुझे रयणी स्वप्नो आयो हो जिनन्द ।
८—सहस्र चोरासी मासखमण मुनिराज हो ।।सु० उ ।।
मैं प्रतिलाभ्या निर्दोषण प्रभु आज हो जिनन्द ।
९—तेनो शू फल दाखो कृपा करने हो ।।सु० उ०।।
माखे मुनिवर सेठ सुणो चित्त धरनें हो जिनन्द ।
१०—नगर कौशम्बी विजय कुंवर गुणधारो हो ।।सु० उ०।।
त्रिकरण योगे दम्पति बालब्रह्मचारो हो जिनन्द ।
११—"मुनिराम" कहे शुद्ध शील पाले नर नारो हो ।।सु० उ०।।
धन्य-धन्य जे नर तेनी हू बलिहारी हो जिनन्द ।

दोहा

१— एक सेज्या सोवे बेहु, शुद्ध पाले ब्रह्मचार ।
द्वादश वर्ष ज निसर्या, धन्य तेनो अवतार ॥
२— चरम शरीरी महा उत्तम-क्रिया ज्ञानी गुण ग्राम ।
सुणने सहु विस्मय थया सहु कोई कियो प्रणाम ॥
३— जिनदास मन में चिंतवे, जाय करूं दर्शन्न ।
मुझ मिलीया संयम लेवसों मुनिवर थियो प्रसन्न ॥

ढाल ४ राग—अमोला भंवरजी हो साहिबा, लालो बेठ घर आव

१—जिनदास मुनिवर वंदीने हो, भवियण नगर कौशम्बी जाय ।
बहु परिवारे परवरीया हो, भवियण दर्शन को मन माय ॥
धन धन सेठजी हो भवियण जे पाले ब्रह्मचार ।।टेर।।

२—नगर कौशम्बी का बाग मे हो भवियण, सेठ जी डेरो करेह ।
विजय कुंवर ना तात से हो, भवियण मिलिया हर्ष धरेह ॥ध०॥
३—श् कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो मुझने आज ।
घम मगपण आविया हो, सेठजी, तुम सुत दर्शन काज ॥ध०॥
४—विमल केवली गुण कियो हो, सेठजी, बाल ब्रह्मचारी तेह ।
मुझ दशन की मन मे लगी हो, सेठजी, ज्यो चातक को मेह ॥ध०॥
५—सेठ सुनी अचरज थया हो, भ० लिया कुंवर बुलाय ।
किण भात सोगन किया हो, भ०कुंवरजी, सु थारा मनमाय ॥ध०॥
६—कर जोडी कंवर कहे, हो तातजी लियो अभिग्रह धार ।
आज्ञा दीजे मुझ भणी हो तातजी, ले सू सजम भार ॥ध०॥
७—तात कहे नन्दन सुनो हो कुंवर जी, कठिन मुनि आचार ।
कर अग्रे कहो किम रेवे हो कुंवरजी, मेरू जितनो भार । ध०॥
८—लाख प्रकारे नही रेसु हो तात जी, ले सु सजम भार ।
वैरागी कहो किम रेवे हो कुंवरजी, लीनो सजम भार ॥ध०॥
९—विजया कंवरी पण लियो हो, भवियण पाले शुद्ध आचार ।
तपजप बहु करणी करी हो,भवियण पाम्या दोई केवलज्ञान॥ध०॥
१०—कम खपाई मुक्ति गया, हो, भवियण प्रथम तीर्थ कर वार ।
बालब्रह्मचारी विरला ऐसा हो, भ० सुणजो सहु नर-नार ॥ध०॥
११—सवत् उगणीसे दशे मासमे हो, भवियण नागोर सेखे काल ।
फागण सुद पुनम दिने हो, भवियण जुगत सु जोडी ढाल ॥ध०॥
१२—स्वामी वृद्धिचदजी के प्रसाद सु हो भ० रामचन्द्र करी जोय ।
ओछो अधिको जे कह्यो हो, भ० मिच्छामि दुक्कड मोय ॥ध०॥

"कलश"

१—शीलवत प्रभुनी शादी, श्रीमुख जिनवर भाखियो ।
शील व्रतमम अवर जग मे, नही पदारथ दाखियो ।।
२—चौसठ सेस वर्ष सुर आयु पामे, लोक लज्जा व्रत राखियो ।
दुधर व्रत जे सधर राखे, धन धन जे रस चाखियो ॥

३—विजय सेठ सेठानी विजया, जैसा विरला जगत् मे।
धन्य धन्य मनुष्य जन्म पायो जाय विराज्या मुगत मे ॥

४—तेह तणा गुण मुख—गाता, जन्म सफलो होय है।
गुणवत ना गुण स् णत काने, भव भव पातक खोय है ॥

५—सुणवा नो गुण एहिज कहीये, कछुक हिरदे धारीये।
लीधा व्रत पे कायम रहीये नरभव अफल न हारीये ॥

६—ज्ञानवत ना चरण पकडो, अगाध भवोदधि तारीये।
"रामचन्द्र" आनन्द धर ने ज्ञानादिक विचारीये ॥

२१ सुमति कुमति का चौढालिया

दोहा

१— देव नमू अरिहत ने, सिद्ध सकल भगवन्त।
आचारज उवज्झाय ने, प्रणमू सन्त महन्त ॥

२— सुमत कुमत दोय स्त्री, प्रीतम चेतन राय।
माहो माहने झगडती, समकित साख भराय ॥

ढाल १ राग—कोयल बोली जी हजारी ढोला बाग मे

१— सुमति घट मे आवे, या भात भात परचावे।
पिण मूल दाय नही आवे जीवने ॥
समझावो जी म्हारा चेतन राजा जीवने।
घर लावो जी मनमोहन स्वामो जीवने ॥टेर॥

२— सुमत सीख नही लागे, यो उठ उठ ने भागे।
या कुमति प्यारी लागे जीवने ॥सम०॥

३— आठ पहर रग भीनो ना जाणु काई कीनो।
या भव भव मे दु ख दीनो जीवने ॥सम०॥

४— छाने छाने आवे या चेतन ने भरमावे।
आ नरक निगोद ले जावे जीवने ॥सम०॥

५— पुण्य खजानो खाती, या पुद्गल करने राती।
या उल्टी चाल चलाती जीवने ॥सम०॥

६— या छे कामनगारी, केई ठगिया नर ससारी।
सिखावण दे दे हारी जीवने ॥सम०॥

७— घोको दे विलमावे, मोह मद का प्याला पावे ।
श्रा बन्दर जेम नचावे जीवने ॥सम०॥

८— कुमत लपेटा लेती, मुक्ति सु घाले छेती ।
मैं देऊ सिखावरण केती जीवने ॥सम०॥

९— कुमत कपटरी कुण्डी, या पटके दुरगत ऊडी ।
या श्रकल सिखावे भुण्डी जीवने ॥सम०॥

१०— जड़ाव जयपुर मे गावे, निज चेतन ने समझावे ।
जित श्रातम राम रमावे जीवने ॥सम०॥

दोहा

१— तडक भडक कुमति कहे, करने श्राख्या लाल ।
श्रा कुरण श्राई पापरणी, तू बठो घर मे घाल ॥

२— छाछ मागती श्रायने, बरण बैठी पटनार ।
निकल मारा घर थकी, नही तर कर सु खुवार ॥

३— परण पियुडो लावियो, पाँच पचारी साल ।
जाणूं कर्त्तव्य थायरा, किम बोले ऊँचे नाक ॥

४— मुख मीठी हृदय कठरण, नही थारी प्रतीत ।
बाप भाई छोड नही, फीट फीट हुई फजीत ॥

५— चेतन कहे सुमति सुरणो, काई सिखाऊ तोय ।
मत छेडो पत जायसी, समेसु शोभा होय ॥

ढाल—२ राग—घोड़ो तो आई थारा देश मे मारू जी

कुमति रो सग छोड दो चेतन जी ॥टेर ।

१— थाई एक अरज करया भणी, चेतन जी ।
आप हो चतुर सुजान हो, गुणवन्ता ॥
ऐसा काम न कीजिए, महाराजा ।
लोक हांसी घर हारण हो, पुण्यवन्ता ॥कुमति०॥

२— परणी परणी छोड़ो, चेतन जी ।
कुमति सु कर रह्या नेह हो, गुणवन्ता ॥

चित्त चोरी मन खेंचियो, महाराजा।
इण मु मन रया मेल हो गुणवता ॥कुमति०॥

३— या मु धी गुल पुरसियो, महाराजा।
मैं स्यू पुरसियो तेल हो, बुधवता ॥
दोप न दीजे और ने, प्रीतम जी।
परालब्दगे खेल हो, महाराजा ॥कुमति०॥

४— कुमति रा भरमावीया, चेतन जी।
क्यू छिटकाई मोय हो, महाराजा ॥
बिन अवगुण पीया परहरो, चेतन जी।
भला नही कैसी लोक हो, बुधवता ॥कुमति०॥

५— जोडे जन्मी आपरे चेतन जी।
वातो बहिन कहवाय हो, गुणवता ॥
परी परणावो एहने, चेतन जी।
आगी सासरे जाय हा, बुधवता ॥कुमति०॥

६— फिर परणाऊ दूसरी, चेतन जी।
समकित छोटी वहन हो, महाराजा ॥
हिल मिल रहस्या दोय जणी, चतन जी।
आप उडावो चैन हो बुधवता ॥कुमति०॥

७— कुमति रो सग छोड दो, प्रीतम जो।
आवो हमारे महल हो, गुणवन्ता ॥
स्वर्गा मे शका नही, चेतन जी।
करो मुगत री सहल हो गुणवता ॥कुमति०॥

८— जो थारा घर मे पदमणी, प्रीतम जी।
तो किम परणीया मोय हो, गुणवता ॥
विना विचार्यो जो करो, चेतन जी।
लोक हासी घर हाण हो, बुधवता ॥कुमति०॥

६— जडाव कहे जग जे बडा, चेतन जी।
माने गुरु की सीख हो, गुणवता ॥
तिरिया ने तिरसी घणा प्रीतम जी।
वरसी मुक्ति नजीक हो, बुधवता ॥कुमति०॥

दोहा

१— मोह राजा री डीकरी, कुमति एहनो नाम।
आप थकी लारे पडी, छेड्या होवे कुनाम ॥

२— बाप भाई ने भाणजा, काका बाबा पूठ।
जाई जाय पुकारसी, तो लेसी खजानो लूट ॥

३— मती सतावो नाथ जी, तुम घर रहो नि शक।
धर्म राजा कोपसी, तो काडे इणरी वक ॥

ढाल २ राग—सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की

१— विलख वदन कमति कहे हो चेतन जी।
म्हारा भव भव रा भरतार, सार अब कीजे हो प्रीतमजी ॥

२— पहली लाड लडाविया हो चेतन जी।
अब क्यू तोडो तार, समझ सुख दीजे हो प्रीतमजी ॥

३— कहे हमारे चालता हो चेतन जी।
थे कदीय न लोपी कार, लार ले चालो हो प्रीतमजी ॥

४— प्यारी लगती आपने हो चेतन जी।
काई ए सुमति रा काम नाम नही लेवो हो प्रीतमजी ॥

५— मीठा भोजन जीमता हो चेतन जी।
थे करता सतरे साग, भाग मत खावो हो प्रीतमजी ॥

६—लू ग सुपारी एलची हो चेतन जी।
धारे दर्पण रखतो हाथ, साथ नही छोडू हो चेतनजी ॥

७— रग महल मे पोढता हो चेतन जी।
थ करता मन री जोग, शोक क्यू लाया हो प्रीतमजी ॥

८— चोपट पासा खेलता हो चेतन जी,
मै जातो तुमसू जीत, प्रीत नही छोडू हो प्रीतमजी ॥

९— झरोखे झाकता हो चेतन जी।
मै रहती सदा हजूर, दूर नही जाए हो प्रीतमजी ॥

१०— ग्राहक था सो ऊठ गया हो कुमती जी ।
खाली पडी दुकान, वथा मत कुको हो कुमतीजी ॥

११— इतना दिन नही जाणीयो हो कुमती जी ।
तू बैनड मे वीर, सीर थारो चुको हो प्रीतमजी ॥

१२— गुरुमुख जाण जडाव जी हो चेतन जी ।
आ करसी रग विरग, सग मत कीज हो चेतन जी ॥

१३— सुमति सुपात्र स्त्री हो चेतन जी ।
राखो जिणसु रग, ज्ञान रस पीजे हो चेतन जी ॥

ढाल ४

राग—गोपीचद लडका

१— कर हुँसीयारी चेतन भारी, कीयो शील शृ गारी ।
कर केशरिया उरदिया जब, कुमति जाय पुकारी जी ॥
सुण बाप हमारा सुमति भरमायो प्रीतम माहरो ।
नही केवणवारा, डर नही राख्यो है कोई थायरो, सुण० ॥टेर।

२— मोह मछराल दुष्ट इम बोले, करके आख्या राती ।
देख हवाल करू चेतन का, धुजावे किम छाती जी ॥
सुण सुता हमारी, मान मोडू रे चेतन राय को ।
सुण पुत्री हमारी, गर्व गालू रे चेतन राय को सुण० ॥टेर॥

३— सात कर्म सु सल्ला विचारी, राखी जो हुँसीयारी ।
देखो अब तुम हाथ हमारा, कैसी करा खूवारी जी ॥
सुण भाई हमारा, मान मोडू रे चेतन राय को ।
सुण भ्रात हमारा, मान मोड रे चेतन राय को सुण० ॥टेर॥

४— क्रोध मान का दिया मोरचा, तृष्णा तोप धराई ।
पाप अठारा दारुगोला, तोपा दीवी भराई जी ॥सुण०॥

५— रागद्वेष सेना का नायक, लोभ मुसाय पलारी ।
कपट वकील तुरत भिजवायो, करो बात सब जहारी रे । सुण०

६— पुत्री हमारी कम विसारी, दूजी परणीया नारी ।
सन्मुख आवो चूक बतावो, देवो साबूतो सारी रे ॥
सुण चेतन राजा, पुत्री प्यारो रे म्हारा जीवस ॥टेर॥

७— खुशी हमारी परण्या नारी, करमु मन को जाण्यो ।
हुस होवे तो चढ कर आवो, चूकू ला नही टाणो जी ॥
सुण दूत भतडा, जाजे सीधोरे कही जे स्वामी ने ॥टेर॥

८— ज्ञान का घोडा चित्तका चाबुक, विनय लगाम लगाई ।
तप तलवार भाव का भाला क्षमा ढाल बघाई रे ।
सुण नाथ हमारा, हुई रे चढाई चेतनराय की ॥टेर॥

६— सन्य मयम का दिया मोरचा किरिया तार चढाई ।
सज्झाय पच का दारु शीशा, तोपा दोनी चलाई रे ॥सुण॥

१०— राम नाम का रथ सिणगार्या, दान दया की फौजा ।
हर्ष भाव से हाथी होदे, बैठा पावे मोजा जी ॥सुण॥

११— साच सिपाही पायक पाला, सवर की रखवाल ।
धर्म राजा का हुकम हुआ, जब फौजा आगी चाली जी ॥

१२— धर्म राजा तो आगेवाणी, पीछे चेतन राजा ।
मोहराजा की फौजा हटाई बाजे जश का बाजा जी ॥

१३— जो कायर था सो कम्पण लागा, सठा सूरा धीर ।
कुमति कुमलाई इम बोले, मरीया बाप ने वीर हो ॥
सुण नाथ हमारी, आशा टूटी नि श्वासा नाखती ॥टेर॥

१४— तीय चारु तीर चलाया, सणणण सणणण सणणाट ।
मर्यो मादलीयो गोठ बीतरी, वरताया सुख ठाठ जी ॥
सुण नाथ हमारा जीत हुई रे चेतन राय की ॥टेर॥

१५— पहला हणियो मोह पिता ने, पीछे सातो भाई ।
धीरप दीनो गय ने सरे, फेरी सर्व दुहाई जी ॥

१६— कर्म हणी ने चेतन पाया, मुक्ति गया तराराम ।
जहाव कर सुमति चेतारे, परण्या मगनागार जी ॥
ये सुणो भवि जीवा, सुमति धराधो सुपति गोरपा ॥टेर॥

कलश

१—कुमत सुमत नही वाद कीनो नही खिजायो पीवने।
असत्य कल्पना सम्बन्ध कीनो, समझायो निज जीवने ॥

२—छासठ साल चौढाल जोडी, जयपुर शहर मझार ए।
द्वितीया श्रावण सुदि पक्ष नी, तेरस ने रविवार ए ॥

३—अक्षर पद कोई ढाल गाथा, विना विचार्यो कोय ए।
आयो वेतो त्रीकरण जोगे, मिच्छामिदुक्कड मोय ए ॥

दोहा

१—दोष बयालीस जिनवर कह्या, चतुर लीजो विचार।
साभल हिरदे धार जो, दोषण दीजो टार॥

२—साधु नाम धरावे घणा, पिण गरज न सरे लिगार।
सूत्र सास्त्र हिरदे धर, तो सुधरे जमवार॥

ढाल १ — राग—माजी ने उरा बुलावोरे

१—आधाकर्मी रो दोषण मोटा रे, सेव्या सु पडसी टोटो रे।
उद्देसिक पिण भारी रे, साभल ने कीजो विचारी रे॥

२—पुई कर्म दोषण तीजो रे, इण री सग कोई मत कीजो रे।
मिश्र कर्म साधा ने भेलीजेरे, थापिलो केम सेवो जे रे॥

३—पामणा करे मागा पाछा रे, ऊजवालो कर देवे खासा रे।
मोलरी वस्तु वहरावे रे जी सु साधु ने दोषण थावे रे॥

४—ऊधारो माई ने देवे रे जिण मे झगड़ा घणेरा होवे रे।
समटा पलटा करावे रे, जिण में अजयणा घणी थावे रे॥

५—सामो आणी ने देवे रे जामे जीव जयणा गुण जोवे रे।
ताला उघाड़ी ने देवे रे तिण म फिर आरम्भ होवे रे॥

६—मालोहड़ कम मेवे रे तामे तो दूषण थेवे रे।
नीचो देवे भवन मे थोवे रे, ऐसा दोषण हिरदा मे लावे रे॥

७—दोष पाणी दाग एमा रे, देवे तो भाई केवा रे।
साधु पाछा पदिशो धारे रे, दोष गोताले रहित्रो कोरे रे॥

८--ए दोष लगावे रागीरे, जारी भाग दशा नही जागी रे।
ऐसो देवा मे लाभ ज जाणे रे, पण हिरदा मे ज्ञान न आणे रे॥

दोहा

१— साधु ढीला जो होवे, तो सेवे दोष अपार।
पण लज्जा आवे नही, ते किण विध उतरे पार॥

२— ऐसा साधु सेवसी, करसी वन्दना भाव।
जारी समकित किम रहे, हिरदे करो विचार॥

ढाल २

राग—दस दिसारो दिवलो कह्यो ए

१—धाय नो कर्म ज आदरे, कहे आमा सामा समाचार के।
भव जीवा साभलो रे॥
निमित्त भाखे घणो भात सु ए, जात जणावे आप के।
भव जीवा साभलो रे॥

२ मागे राक तणी परे रे, करे वेदगारी रो काम के।
क्रोध मान माया करे ए लोभ करे घणी वार के॥भ०॥

३—गुण करे दातार ना ए पेला पछे तिणवार के।
आयो जाणे डूमडो ए लजावे साधु रो साग के॥भ०॥

४—विद्या मन्त्र करे घणा ए चूरण जोग मिलाय के।
ए सोला दोषण कह्या ए, ते सेवे ढीला साध के॥भ०॥

दोहा

१— दस दोष एषणा तणा टाले उत्तम साध।
सेवे जाने ढीला कह्या, उत्तराध्ययन के माय॥

२— श्रावक तो डाह्या होवे, साधु होवे गुणवाण।
ते दोष लगावे नही जारा जिनवर किया वखाण॥

ढाल ३

राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

१— शका पडे कोई वात मे रे लाल,
तो फिर जावे मुनिराज हो भविक जन।

हायारी रेखा आली होवे रे लाल,
तिए कने मु नही लेवे जाए हो ॥भ०।

२— सचित्त ऊपर अचित्त ढाकीए रे लाल,
ये छे चौथो दोप हो ॥भ०॥
भाजन अनेरा मे घाल ने रे लाल,
इन्द्रियहीए दातार हो ॥भ०॥

३— शास्त्र पूरो परगम्यो नही रे लाल,
ते किम लेवे विचार हो ॥भ०॥
मिश्र होला उवी पुकडा रे लाल,
मवकाथी दोपए थाय हो ॥भ०॥

४— तुरत रा लिप्या आगए। रे लाल,
अजयए। घणी थाय रे ॥भ०॥
वहरता पाए टपका पडे रे लाल,
तो फिरजावे मुनिराज हो ॥भ०॥

५— दोप बयालीस मोटका रे लाल,
साभल दीजो टाल हो ॥भ०॥
सेव्यामे ओगुए घणा रे लाल,
हिरदा मे लीजो विचार हो ॥भ०॥

दोहा

१— आहार लावे कोई सूभतो, जिएरी माटी वात।
साधा थी दोपए ऊपजे, तनो गुणो अधिकार ॥

२— घर छोडी ने नीसत्या, साए मन वैराग।
साधा पर चित्त साय ने, गयो जमारो हार ॥

ढाल ४

राग—परलेश्वर सेरा सेला करे एग

१—आहार लावे कोई सूभतो रे जिए मे लगावे दोप।
रस इन्द्रिय वस जो होवे रे, वांरो वालो पोस रे प्राणी ॥
दोपए दीजो टाल ॥टेर॥

२—आहार करता वखाणता रे, आरभी वेव सोय।
निरस आहार भावे नही रे, जदी वखोडा होय रे प्राणी ।।

३—सयोग मिलावे घणी भात सु रे, करे स्वाद रो काम।
प्रमाण सु अधिको जीमता रे, होवे सजम री हाण रे प्राणी ।।

४—क्षुधा वेदनी लागा थका रे, वैयावच्च करणी होय।
ईर्या सोधी ने चालवा रे, सजम निभावण होय रे प्राणी ।।

५—कारण थी जीमे सहीरे, विन कारण नही चाय।
कारण दोय प्रकारना रे, लेवे छण्डे मुनिराय रे प्राणी ।।

६—भूखा थी दया पले नही रे, जिण सु लेवे आहार।
धर्म कथा करणी पडे रे, भूखा थी नही वेवाय रे प्राणी ।।

७—अव आहार ने छाण्डणो रे, तेनो सुणो अधिकार।
रोग आवे शरीर मे रे, औषध छाडे आहार रे प्राणी ।।

८—उपसर्ग आवे कोई मोटको रे, देही करे उन्माद।
तिण कारण जीमे नही रे, सहज ही शाति होय रे प्राणी ।।

९—तप किया निर्जरा घणी रे, जिणरा बारह भेद।
जीव दया रे कारण रे, छाण्डे आणी विवेक रे प्राणी ।।

१०—शरीर तो होवे दुर्वलो र, जिण मे नही कोई तत।
जदी आहार त्यागन करे रे, देव मथारो ठायर प्राणी ।।

११—ऐसो आचार साधु तणो रे, साभल लीजो धार।
दोषण सगलाई परहरो रे, जिन आज्ञा विचार रे प्राणी ।।

दोहा

१— आरीसा रा भवन मे, बैठा भरत महाराय।
वैराग किण विध पामीया, ते सुण जो चित्त लाय॥

२— उगी उगी ने उगीया, ठाणायग की साख।
आऊखो मोटो हुवो, पूरव चौरासी लाख॥

ढाल १ राग—भरतेश्वर तेरे तेला किया एम

भरतेश्वर, पुन्यतणा फल जोय ॥टेर॥

१— तीण काले ने तीण समे जी, नगर वनीता नाम।
लोक सहु सुखीया वसे जी, मोटा राजा नो ठाम॥

२— राज करे तिहा भरत जी रे षट् खण्ड भुगता जोय।
पुण्य पाप बेहु ने कीया जी, भुगत तणा फल होय॥

३— भाई नव्याणु जणा जी, जाण्यो है अथिर संसार।
श्री आदेश्वर जी रे आगले जी, लीधो संजम भार॥

४— मोरादे जी मुगते गया जी, भाई भावना सार।
केवलनाणी [illegible] जी [illegible] परिवार॥

५— सीत्तर लाख पूरब लग जी, कुंवर पदे रह्या तेह।
एक लाख वर्ष मण्डलीकपणे जी, छ लाख [illegible] जेह॥

६— आठ [illegible] [illegible] पछे जी, [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] जी, [illegible] [illegible] रो जोग॥

७— चवदे रतन नवनिध घरे जी, हय गय रथ परिवार।
छ लाख पूरव लगे जी, घणी वरताई आण॥

८— चौंसठ सेंस अन्तेउरी जी, दो दो एकण लार।
गिनती मे आंई एतली जी, एकलाख ने बाणु हजार॥

९— एतलारूप वेक्रे करे जी, तिणसु भोगवे भोग।
पुण्य तणो सचो कीयो जी, तीणसु मिलीयो जोग॥

१०— चौंसठ सेंस राजे सरु जी, सेवा करे कर जोड।
तप वरतायो एहवो जी, किणरो न चाल्यो जोर॥

११— सुर नर आण माने सहु जी, सेवा करे दिन रात।
सात रतन छे एकेन्द्रि जी, वली पचेन्द्रिय सात॥

१२— अडतालीस सहस्र पाटण अछे जी, ग्राम छन्यु करोड।
वहोत्तर सेंस नगर कह्या जी, दलपायक री जोड॥

१३— महल बयालीस भोमिया जी, चोबारा चतर साल।
बतीस विध नाटक पडे जी, इम गमावें काल॥

ढाल २

राग— चौपाई की

१—सीततर लाख पुरव लग गया, जब भरतेश्वर राजा थया।
हजार वर्ष ऊणा छ लाख, पाल्यो राज नही लागी चाख॥

२—आण बरताई भरत मझार, वरस लागा छे साठ हजार।
वल ज्यारो इसडो शरीर, वहोत्तर जोजन लग जावे तीर॥

३—चौरासी लाख हाथी ने घोड, पैदल ज्यारे छन्यु करोड।
चौंसठ सहस अतेवर थइ, दोय दोय वरागणा साथे कही॥

४—केस अडतालीस मे लश्कर पडे, भरीया समुद्र खाली करे।
इसडो पडे लश्कर को जोर, तला तलावरा नाखे तोड॥

५—पुरवभव इसडो दीधो दान, चवदे, रतन घरे नव निधान।
सोना चादीरी बीस हजार, सोला सेंस रत्नारी खान॥

६—पहले पोरे चे बावे धान, दूजो पहर करे निदाण।
तीजे पोरे जावे पाक, चोथे ढगला करे अथाग॥

७—छत्र रत्न दे लश्कर छाय, चर्म रत्न देवे नावा ठाय।
बढई रत्न ने हुक्म ज घरे, महल बयालीस भोम करे॥

८—अडतालीस कोस मे लाम्बी कही, बत्तीस कोस मे चौडी कही।
इसडा इसडा आरभ पाम, तो पिण मनरा लूखा परणाम॥

ढाल ३ राग—आउखो टूटो साधो को नहीं

१—एक जणा रे मन मे उपनी रे, भरत रे इतरो दीसे पाप रे।
कसीतरे मुगत सिधावसी रे, ऋषभजिनेश्वर जिणरा बाप रे॥
जोइजोरे अन्तर ज्ञानी एहवा रे॥टेर॥

२—भरत तिण पुरुष ने बुलायने रे, तेलरो वाटको दीधो हाथ रे।
टक्को पडे तो इणने मारजोरे, दोई गावडीया दीधा साथ रे॥

३—चौरासी चोहटा मे फेर जो र, जो इण राख्या निज प्राण रे।
राजा रा मु डा अने आयने र, तुरत वाटको दीयो मेल रे॥

४—भाव बतावो चोहटा तणो रे, वैपारी कीसा कीसा आज रे।
तमासारी खबर मुझने नाही पडी रे, मैं तो नीठ जीव राख्या
महाराज रे॥

५ थांरी नजर लागी जिम वाटके रे, तें तो टाल्या छे आतमदोष रे॥
हू तो बैठो छु इण भोग मे रे, पिण मारो तो नजर लागी मोक्षरे।

ढाल ४ राग—बुहारी-(बीनूरी)

१—भरत कहे भायां भणी, मारी आण मानो कर जोड।
आप मरजादा जो रहो, मारा मुलक दीजो तुमे छोड हो भाई॥
मैं तो आज देसी कह्यो नहीं॥

२—बलता कुंवर इसडी कहे, मां ने दीयो बाबे जी राज।
मांने आण मनावता थांने, सुगडे नी आवे लाज हो भाई॥
थारा दीधां जठै रह्यो॥

३—बलता भरत इसडी कहे, मारे पुन्य उदय हुआ आज।
आण मान्या बिण आवे नहीं, म्हारे चक्र रत्न घर माह हो भाई॥
तिण कारण थांने कहू॥

४—अठाणु मिल एकठा ने चाल्या आदेश्वर पास।
भरतेसर करडो घणो, मारो झगडो दीजो मेट हो बावा ॥
मैं तो हाथ जोड ने अरजी करा ॥
५—वलता ऋषभ जी इम कहे, थें तो सुणो हो बालूडा वात।
कजीया ने झगडा छोडदो, थें तो करो मुगत रो साथ वालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो रे बालूडा, तुमे चेतो चेतो रे वालूडा ॥
६—राज घणो ही ज भोगव्यो, घणी वरताई आरण ॥
दीक्षा लोनी दीपती थारा, सरसी काज परमाण ॥हो बालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो ॥
७—आयो छे जीव एकलो, ओ तो जासी एकाएक।
किसँ भरोसै भूलिया तुमे आणो मन विवेको वालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो ॥
८—जग को कीणरो नही, यो तो स्वार्थीयो ससार।
साधपणो शुद्ध आदरो, थारो होसी खेवो पार ॥ बालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो ॥

दोहा

१— अठाणु सजम लीयो, बाहुबल सेती राड।
पाँच प्रकारे युद्ध किया, चक्र रत्न की आड ॥
२— मूठ उठाई मारवा, शकेन्द्र पकडीयो हाथ।
वाहूबली सोचो तुमे, लोच कियो घर खात ॥

ढाल ५ राग—महासतीया जी, धन थारो अवतार

१— बाहुबल सजम लीयो रे, साचे मन वैराग।
भरतेसर इम विनवे हो बधव, बार बार पगे लाग। हर्षधर॥
बधव, बोल जो हो ॥
२— बधव बोल जो हो, थाने बाबा जी री आण।
थे तो पण्डित चतुर सुजाण, मोसु मत करो खेंचाताण ॥
रे चतुर नर, बन्धव ॥
३— थे जीत्या हू हारीयोरे, देवता भरसी साख।
थारा सरीखो मारे को नही हो,बधव, मारा सरीखा थारै लाख॥
हरष धर बधव बोल

४— माथे सूरज आवीयो रे, पसीने भीनो गात।
उठो नी भोजन करा ओ वधव, खारक दाख नवात ॥
हरषधर बधव

५— अठाणु मिलने एकठारे, मुझने लोभी जाण।
ते पीण तज ने निसर्या ओ वधव, ज्यू वरसो ला रो छाण॥
हरषधर बधव

६— खीलो नाणू तोडने रे जीणरी बधारू बेल।
आवे नही अवधशाल मे जी, तो जाओ ब्राह्मण घर ठेठ ॥
हरषधर बधव

७— भाभीया केरा ओलु भा रे, ते किम सहसू शरीर।
माता रा पग वहे नही ओ वधव, थाने मेली वन माय ॥
हरषधर बधव

८— थें हो मांरी आतमारे, थेंही ज मारी बाह।
दिशा सुनी माया विनाहो वधव, चालोनी आपणे घरमाह॥
हरषधर बंधव

९— बोलपणा होज वोलीयार, भरतेसर महाराय।
पण हाथीदात ज निसर्या र किम परो मुन माय ॥
हरषधर बधव

१०— ब्रह्मार्या री शिर लेयरी रे, भरतेश्वर महाराय।
सिद्धा परम राषाय ने जी, विमल केवली गुण गाय ॥
ध्यान धर बांधव ॥

सोरठा

१— गन्ट गन्ड केरो राज, गुन भरतेसर भोगवे।
छिये गुणरगी राज, एक मना पई मांगसी ॥
२— बैठा महल मझार, पही हाथरी मूदडी।
देही दीठे असार, अजियोध्या भरतेसरो ॥

ढाल ६

१—आभरण अलकार सवही उतार्या, मस्तक सेती पागी।
आपो आप थईने बैठा तो, देहो दीसे नागी॥
भरत जी—भूपत भया र वरागी॥टेर॥

२—अनित्य भावना इसडी जो भाई, चार करम गया भागी।
८देवता दीधो ओघो ने महपत्ति, जिनशासन रा रागी॥

३—साग देख भरतेसर केरो, राण्या हसवा लागी।
इण हसवारी खवर पडेली, थें रहीजो मासु आगी॥

४—चौरासीलाख हय वर गयवर, छिन्यु कोड छे पागी।
लाख चौरासी रथ सगरामीक ततखीण होय गया त्यागी॥

५—तीन करोड गोकुल घर दूजे, एक करोड हल त्यागी।
चौंसठ सेंस अन्तवर जाके, पिण सूरत, मुगतसू लागी॥

६—चार करोड मण अन्न नित्य सीझे, दस लाख मण लूण लागी।
चौंसठ सेस राजा मुख आग, तत्खीण दीधा त्यागी॥

७—अडतालीस कोस मे पडे लसकर, दुश्मन जावे भागी।
चवदे रतनज आज्ञा माने, तत्खीण हुआ त्यागी॥

८—सभामे बोल्या भरतेसर, उठ खडा होवो जागी।
ए लोक ऊपर निजर मा आणो, निजर करो तुमे आगी॥

९—वचन सुणी भरतेसर केरा, दस सेंस उठ्या जागी।
कुटुम्ब त्रिया ने हाट हवेली, रची ससारसू त्यागी॥

१०—सगलाई रह्या छे झूरता, ससार दियो छे त्यागी।
दस सेंस मुकट वद राजा, लीयो मुगतरो मागी॥

११—लाख पूरव भरतेसर केरो, केवल ज्ञान अथागी।
चौरासी लाख पूरब आयु भोगी, मुगत गया सौभागी॥

ढाल १

१—अहो अरणक जी मात पिता सघाते हो सजम लीधो,
मुनि ज्ञानभणी इन्द्रिय पाँचो ही थे निज वस कर लीधी ॥टेर॥

अरणक तात ने सुख दाई वल्लभ लागे निज माई,
हियेहित सु बोलावे गुरु भाई ॥अहो०॥

२—अरणक गोचरीया तो नही जावे, तात सरस आहार वेर लावे,
पछे अरणक ने खवरावे छे ॥अहो०॥

३—अरणक ताजो ताजो खावे छे, वली मातो मातो वणीयो छे,
अब गोरो थयो घणो गातो छे ॥अहो०॥

दोहा

१— अरणक चाल्या गोचरी, ले मुनिवर आदेश।
मुग मुमताणा साथ जी, नगर कियो प्रवेश॥

२— एक नार तरुणी तिहा, निवा महल मे सुनाग।
पथन मागे प्रेमसु, ते गुण जो तिरा साय॥

ढाल २ राग—पूर्व [illegible]

अहो मुनिवर जी, जोबन जोगे [illegible] मेग गमायो
इनो अवसर जी, मेर करी ने [illegible] मू मेरम आवा ॥टेर॥

१—जोवन थाको नीको छे, रूप मारो पिण तीखो छे ।।
ओ अवसर आणी ठीको छे ।।अहो मु०।।

२—ओघा पातरा परहरिये, मुझ ऊपर मैया करीये ।
आप सेजा ऊपर पग धरीये ।।अहो मु०।।

३—मुण्डो परो खोली जे, लज्जा परी मुकी जे ।
अब रग रगीला खेल खेली जे ।।अहो मु०।।

४—वचन सुणी मुनिवर डगीया, आहार ले पाछानही वलीया ।
इत सुन्दर सेती जाई मलीया ।।अहो मु०।।

दोहा

१—केल करे अरणक तिहा, माता जोवे वाट ।
अजु अरणक आयो नही, का सू वणीयो घाट ।।

२—के मुनिवर कामण छल्यो, के कोई उपजी खेद ।
तिण कारण आयो नही, काइक वात मे भेद ।।

३—बेटो जोवा कारणे निकली शहर मझार ।
गली गली फिर जोवती, जोवे शहर वजार ।।

ढाल ३

राग—तेहीज

अहो अरणक रे, अरणक अरणक करती ओ माता फिरे ।
अहो मुनिवर रे, मुनिवर मुनिवर करती ओ माता फिरे । टेर।।

१—अरणक अरणक करती थी, अरणक रो ध्यान धरती थी ।
घर घर लोका गे फिरती थी ।।अहो अ० ।

२—छोरा छोरी चगावे छे, अरणक तोने बुलावे छे ।
आरज्या जिण तिण साथे जावे छे ।।अहो अ०।।

३—अरणक माता दीठी छे, हिवडा लागी मीठी छे ।
मैं काम कियो अनीति छे ।।अहो अ०।।

४—सुदर का सुख परहरीया माता के तो पाय पडीया ।
अहो अरणक आ ते सू करीया ।।अहो अ० ।

दोहा

१— अहो अरणक ते सू कियो, काई तू विलम्यो नार।
थोडा सुख रे कारणे, थे मेल्यो सजम भार॥

२— एवी वात सुणता, थका, मुझने आवे, लाज।
सजम मारग आदरो, ज्यू थारा सुधरे काज॥

३— भव विगाडन नार छे, खोटी इणारी जात।
इणरो सग तज दीजिये, इण पर दाखे मात॥

४— चिरकाल सजम पालवा, पोछ नही मुझ माय।
अनशन करू मातजी, मैं शीला ऊपर जाय॥

ढाल ४

राग—तेहीज

मुनि अनशन करी, अराध्यो सहु शीला पर धारूँ।
अरु ध्यान धरी, आतम कारज इण रीते हूँ सार ॥टर॥

१—अरणक अनसन करीयो छे, ताती सीला पर पडीयो छे।
जिण आतम ध्यान धरीयो छे ॥मुनि०॥

२—जिए निज चेतन बस कीधो, समता रस जिण पीधो छे।
मुनि मन वछित फल सीधो छे ॥मुनि०॥

३—मुनि रे हुवा मुसल खेमो, तिम साधु ने परखो एमो।
पिण गामण रो सुग परहरखो ॥मुनि०॥

२५ | सनत्कुमार चक्रवर्ती

दोहा

१— तिण काले तिण अवसरे, सुधर्म स्वर्ग मझार।
शकेन्द्र छे मोटका, उमराव चौरासी हजार॥

२— तिहा बैठा वखाणियो, चक्री तणो स्वरूप।
देव सहु अचरज हुआ, मानी वात अनूप॥

३— एकण रे मन सशय हुओ, करूँ परीक्षा कोड।
अन्नतणो छे कीडलो, काईक होसी खोड॥

ढाल १ राग—मान न कीजे रे मानवी

१—रूप कियो ब्राह्मण तणो, हाथ मे डागली झाली रे।
डिगमिग वो पगल्या भरे, हथिणापुर मे आयो चाली रे॥
देव करे रे ऐसी पारख्या ॥टेर॥

२—नसा जाला दीसे रे जूई जुई, लिलरीया पडगई काया रे।
वरसो मे वण गयो डोकरो, चाल्यो जावे थोडो रे॥देव०॥

३—मु डा मे से लाला पडे, ज्योत झाकी दीसे थोडो रे।
वडचा धूजत डोकरो, थर थर धूजे छाती रे॥देव०॥

४—इम करतो ते डोकरो, आयो पोल श्री राजा रे।
कहे पोलिया ने डोकरो, मने रूप वतावो महाराजा रे॥देव०॥

५—नीठ नीठ हु तो आवियो, खूँ खूँ कर तो खाँसो जी।
ढील न कीजे भाई पोलिया, निकले म्हारो सासो जी॥देव०॥

६—माथे पोट जूत्या तणी, पेट पेस गयो ऊण्डो जी।
वारा वरसा हु तो चालियो, आवतो होय गयो वूढो जी॥देव०॥

७—जाय जणावो राय ने, वेग जवाव मगावो जी ।
राजा जी जो देरी कहे तो, वेठा आय चेतावो जी ।।देव०।।

दोहा

१— राय रजा दीधा थका, अन्दर आयो देव ।
कहा जैसा ही देखिया, सुर नर सारे सेव ।।

२— इम वोल्यो तीहा डोकरो, तव गर्वाणो भूप ।
स्नान करी चौकी वेसु, जद थू देखजे रूप ।।

३— वलतो डोकरो इम कहे, हा महाराजा सार ।
जीवीत रे सु तो देखसु, थें रूप करो दिल धार ।।

ढाल २

राग—देख्यो चोब डो

१—स्नान करी ने उठीयो रे हा, चन्दन चरच्यो अग के ।।
गरभ्यो राजवी ।।टेर।।

२—भारी शिर पावज पेरियो रे हा, तिलक सजोयो चग मे ।।ग०।।
३—रतन जडित सिहासने रे हा, सभा विराज्यो पाट के ।।ग०।।
४—चौसठ सहस्र राजा मिल्या रे हा, लाग रह्यो गह घाट के ।।ग०।।
५—शरद पूनम को चद्रमा रे हा, तारा वीच जिम चद मे ।।ग०।।
६—यू शोभे भूपति तीहा रे हा, छ गण्ड केरा नाय मे ।।ग०।।
७—पान वीडो मुख चावता रे हा, नजर सभा मे फेर मे ।।ग०।।
८—याद आयो तिहा डोकरो रे हा, हाजिर कीधो साम मे ।।ग०।।
९—रूप देख तिहा डोकरो रे हा, माथो दीधो धूण मे ।।ग०।।
१०—राय कहे सुण डोकरा रे हा, भो दीसे कूण मे ।।ग०।।
११—मने कूण दीसे राय जी रे हां, अब भो पडियो गाल मे ।।ग०।।
१२—गोप मीगो भो डोकरा रे हां, काई पडी रूप म धूल मे ।।ग०।।
१२—सटा पटी माना मु दा रानी रे हां, जो गा पीर म भूप मे ।।ग०।।

दोहा

१— विगडयो रूप अव दतो, ना [illegible] गताय ।
तय रितो मे रूप या, पाणो हाथो हाथ ।।

२ — क्षिण मे रोग ज ऊपनो, पूर्व भवना पाप।
धृग् धृग् ए ससार ने, मन मे चिंते आप॥

३— अब छिटकाऊँ राज ने, लेसु सयम भार।
ऋद्धि त्यागी छ खण्ड तणी, ते सुणजो विस्तार॥

ढाल ३

राग— मगल कमला कदए

१—चक्री चौथा नरेशर जाण ए, सूत्र ठाणाअग मे आण ए।
घणा हुता सपत्ति साज ए, भोगवता छ खण्ड नो राज ए॥

२—हय गय रथ छे जु जुवा ए, लाख चौरासी गिनती मे हुवा ए।
पैदल छन्यु करोड ए ज्याने वदे बेकर जोड ए॥

२—पाटण अडतालीस सहस्र ए, ज्या रे उणायत नही लेस ए।
नगर वहोत्तर हजार ए, ज्या रे चौरासी बाजार ए॥

४—सोना रूपारा उछाव ए, ज्या रे आगर वीस हजार ए।
चवदा रतन छे मोटका ए, ज्या रे कदीयन आवे टोटका ए॥

५—पेली पोहर वावे धान ए, दूजी पोहर करे निदान ए।
तीजी पोहर पाको धान ए, चौथी पोहर ढिगला किया आण ए॥

६—रसोडारो अनुमान ए, सीझे चार क्रोड मण धान ए।
सेर आटो पैसा भर लूण ए, लागे दस लाख नही ऊण ए॥

७—भाणे बैठणरी जोड ए, परिवार पूरो सात करोड ए।
पखाल्या छत्तीस हजार ए, तीन सो साठ रसोई दार ए॥

८—मोटी पदवी चक्री तणी ए, सुख सपदा ऋद्ध पामी घणी ए।
तपसा कीधी घोर ए, जिनसे किणरो नही चाले जोर ए॥

९—रूप जोवन रो जोम ए, ज्यारे महल बयालीस भोम ए।
चारू दिशा शोभे जालिया ए, चोवाराने चत्तर सालिया ए॥

१०—लग रह्या सुखारा ठाट ए, ज्यारे लारे घणो गट्घाट ए।
जग माहे सुरतरु वेलडी ए, ज्यारे चौसठ सहस्र अतेउरीए॥

११—दो दो एकण लार ए, एक लाख ने वाणु हजार ए।
नाटक वृन्द बत्तीस ए, मोटा राय नमावे शीप ए॥

१२—दिन दिन अधिको जोश ए, फौजा पडे अडतालीस कोस ए।
वल ज्यारे इसडो शरीर ए, जावे बहोत्तर जोजन लग तीर ए॥

१३—आण वरताई भरत मझार ए, वरस लागा दस हजार ए।
उत्थापे नही कोई आण ए, ज्यारा वचन करे प्रमाण ए॥

१४—पृथ्वीरा प्रतिपाल ए, ज्यारे नही पडे धरतीमे काल ए।
न्याय करे निर्लोभ ए, ज्यारी फैली जगत माह शोभ ए॥

१५—तेरा तेला किया अखण्ड ए, ज्या साध लिया छ खण्ड ए।
छ खण्ड मे छत्र एक ए, ज्याने सेवे सुर अनेक ए॥

१६—चक्रवर्तीनी ऋद्धि जोड ए, जणा छिनमे दीनी छोड ए।
रुपरो कीनो गर्व ए, देही देखता बिगडी सर्व ए॥

१७—काची काया रो कीसो विश्वास ए, कुण राखे उणरी आस ए।
ज्या छोडी पापारी सीर ए, सजम लेई ने हुआ सुरवीर ए॥

१८—ध्यायो शुक्ल ध्यान ए, जिनसे पाया केवलज्ञान ए।
चक्री चौथा सनत्कुमार ए, अते जासी मोक्ष मझार ए॥

दोहा

१— सयम भार लिया पछे, राण्या हुई दिलगीर।
करे राय से विनती, दुःखे जिसारो पीर॥

ढाल ४ राग—श्री शांति जिनेश्वर भवता सुख [illegible]॥

१— सांभल महाराजा, तिम छोडो निराधार।
कुण ठग थारो मिनोरा, लीनो माया रो सार॥

२— बिन अवगुण नाथ जी, क्या म्हाने बिसारो।
चक्री सात नरेसर, वेगा ओ महल पधारो॥

३— कुण धर्म भरमाया, मामणु मीठा भारी।
कुण [illegible] पाल्यो, [illegible] म्हाने [illegible]॥

४— [illegible] गुण [illegible], कुण [illegible] न [illegible]।
कुण [illegible], [illegible] हुआ [illegible]॥

५— किटकी नही कीजे, किटी ऊपर भारी।
कोई दोप वतावो, मत मारो एकलारी॥

६— पिया पिहर सासरा, थें सव ने सुखकारी।
गिरवा गुणवता, सूरतरी वलिहारी॥

७— यह महल झरोखा, नाटकना झणकारो।
सयम छे दोहिलो, सेहिलो छे घरवारो॥

८— सुर सहस्र पच्चीसो, छत्र चंवर शिर धारो।
तीन क्रोड गोकुल घर, एक करोड हल सारो।

९— विल-विलती राण्या, फिरे मुनिरी लारो।
इन्द्र तव आई प्रतिवोधे तिणवारो॥

१०— यह मोटा मुनिश्वर, छ काया रा प्रतिपालो।
थारे काम न आवे, यू कही गया देव पालो॥

११— वैद्य रूप करी ने देव आयो तिण वारो।
इण विधी ले वोले, करण परीक्षा सारो॥

१२— ऋपि रोग गमाऊँ, कचन करु देह सारी।
कर्म काट्या ही कटसी, किसी पोछ सुर थारी॥

१३— सातसो वर्ष चारित्र, पारयो निरतिचारी।
कर्म आठ काटने, पायो केवल भारी॥

१४— जिन धर्म दीपाई, पहुँचा मोक्ष मझारी।
पीपाड चौमासो, कहे "चौथमल" अणगारी॥

दोहा

१— विहरमान बीसे नमु, जयवन्ता जगदीश ।
अतिशयवन्त अनन्त गुण, तारक विश्वावीस ॥

२— दान शील तप भावना, इण जुग में श्रीकार ।
तिरीयाने तिरसी घणा, पामे भवोदधि पार ॥

३— व्रत सहुई मोटका, शील समो नहि कोय ।
जे नर नारी पालसी, मोक्ष तणा फल होय ॥

४— सांची तिलोकसुन्दरी, राची शील सुरंग ।
तेह तणा गुण वर्णवु, आणी अधिक उमंग ॥

ढाल 1 राग—हमीरीया री

१—जम्बूद्वीपरा भरतमें, सुदर्शण पुर अभिराम ।।सनेही०।।
न्याय गुणे करि निर्मलो, अरिमर्दन नृप नाम ।।स०।।

२—शील तणी महिमा सुणो, एक मना नरनार ।।स०।।
इण भव परभव सुख लहे, वरते जय जयकार ।।स०।।

३—पुष्पदन्त सेठ तिहांवसे, सारथी नामे नार ।।स०।।
तेहने सुत दोय दीपता, सागरदत्त सिनगार ।।स०।।

४—जोबन वय आया थका, सागरदत्त ने निज पुरमांय ।।स०।।
श्रावक सेठ तणी सुता, "रूप सुन्दरी" दी परणाय ।।स०।।

५—कनक पुरी विराजता वसे 'धनश्री' नार उदार ।।स०।।
बेटी तिलोक सुन्दरी तस वरनाई सिनगार ।।स०।।

६—सुख विलसे ससारना, भाया रे घणो प्यार ।।स०।।
मात पिता परभव गया, मुत करे घरनो सार ।।स०।।
७—व्योपार करे परदेश मे, बारे वर्ष नो करार ।।स०।।
एक भाई घरे रहे, एक परदेश मुझार ।।स०।।
८—छोटो भाई परदेश मे, ज्येष्ठ बन्धु घर बसन्त ।।स०।।
लघु भाईनो भार्या, दखी स्नान करन्त ।।स०।।
६—रूपे अप्सरा सारखी, देखी ने व्याप्यो काम ।।स०।।
ए नारी विन भोगव्या, जावे जन्म निकाम ।।स०।।
१०—वस्त्र गेणा मोकल्या, दासी साथे तेह ।।स०।।
जेठ पिता सम जाणने लीधो हर्ष घरेह ।।स०।।
११—अत्तर फुलेल सुखडी, करे काम उदीप ।।स०।।
दासी साथे दे करी, मोकल्या सती समीप ।।स०।।
१२—सती देख मन चिंतवे, जेठ कामी अपार ।।स०।।
सर्व वस्त्र फेंकाय ने दासी ने दियो धुत्कार ।।स०।।
१३—दासी कह्यो जाय सेठ ने, वा नही माने वयण । स०।।
करी खुवारी मारी घणी, अरुण करीने नयण ।।स०।।

दोहा

१— स्वरु आई कहे, चित्त लाई घर नेह ।
मनचाही लीला करो, जोवन लाहो लेह ।।

२— गेणादिक मागे जिके, हाजर करु तयार ।
हु छु किंकर ताहरो, तु मुझ प्राणाधार ।।

३— जेठ वचन सुण सुन्दरी, कीधो कोप करूर ।
परणी वञ्छे पारकी फिट पागडी मे धूर ।।

४ - सती निभ्र छ्यो जेठ ने, रति न मानी कुजात ।
कही जाय आरक्ष ने भ्रात वधूनी वात ।।

५— रूप प्रशसा साभली, कोटवाल तिणवार ।
सती बोलावी ने कहे, करमो सु इकवार ।।

२६ | तिलोकसुन्दरी चरित्र

दोहा

१— विहरमान बीसे नमु, जयवन्ता जगदीश।
अतिशयवन्त अनन्त गुण, तारक विश्वावीस ॥

२— दान शील तप भावना, इण जुग मे श्रीकार।
तिरीयाने तिरसी घणा, पामे भवोदधि पार ॥

३— व्रत सहुई मोटका, शील समो नहिं कोय।
जे नर नारी पालसी, मोक्ष तणा फल होय ॥

४— साची तिलोकसुन्दरी, राची शील सुरग।
तेह तणा गुण वर्णवु, आणी अधिक उमग ॥

ढाल १ राग—हमीरीया री

१—जम्बूद्वीपरा भरतमे, सुदर्शण पुर अभिराम ॥सनेही०॥
न्याय गुणे करि निर्मलो, अरिमर्दन नृप नाम ॥स०॥

२—शील तणी महिमा सुणो, एक मना नरनार ॥स०॥
इण भव परभव सुख लहे, वरते जय-जयकार ॥स०॥

३—पुष्पदन्त सेठ तिहावसे, सत्यश्री नामे नार ॥स०॥
तेहने सुत दोय दीपता, सागरदत्त चित्रसार ॥स०॥

४—जौवन वय आमा थका, सागरदत्त ने तिण पुरमाय ॥स०॥
धनवत सेठ तणी सुता, "रूप सुन्दरी" दी परणाय ॥स०॥

५—वसन्त पुरी जिनदत्त वसे 'धनश्री" नार उदार ॥स०॥
बेटी तिलोक सुन्दरी, सा परणाई चित्रसार ॥स०॥

६—सुख विलसे ससारना, भाया रे घणो प्यार ।।स०।।
मात पिता परभव गया, सुन करे घरनो सार ।।स०।।
७—व्योपार करे परदेश मे, वारे वर्ष नो करार ।।स०।।
एक भाई घरे रहे, एक परदेश मुझार ।।स०।।
८—छोटो भाई परदेश मे, ज्येष्ठ बन्धु घर वसन्त ।।स०।।
लघु भाईनी भार्या, दखी स्नान करन्त ।।स०।।
९—रूपे अप्सरा सारखी, देखी ने व्याप्यो काम ।।स०।।
ए नारी विन भोगव्या, जावे जन्म निकाम ।।स०।।
१०—वस्त्र गेणा मोकल्या, दासी साथे तेह ।।स०।।
जेठ पिता सम जाणने लीधो हर्ष घरेह ।।स०।।
११—अत्तर फुलेल सुखडी, करे काम उदीप ।।स०।।
दासी साथे दे करी, मोकल्या सती समीप ।।स०।।
१२—सती देख मन चिंतवे, जेठ कामी अपार ।।स०।।
सर्व वस्त्र फेंकाय ने दासी ने दियो धुत्कार ।।स०।।
१३—दासी कह्यो जाय सेठ ने, वा नहीं माने वयण ।स०।।
करी खुवारी मारी घणी, अरुण करीने नयण ।।स०।।

दोहा

१— रुवरु आई कहे, चित्त लाई धर नेह ।
मनचाही लीला करो, जोवन लाहो लेह ।।

२— गेणादिक मागे जिके, हाजर करु तयार ।
हु छु किंकर ताहरो, तु मुझ प्राणाधार ।।

३— जेठ वचन सुण सुन्दरी, कीधो कोप करूर ।
परणी वञ्छे पारकी फिट पागडी मे धूर ।।

४- सती निर्भ्र छ्यो जेठ ने रति न मानी कुजात ।
कही जाय आरक्ष ने भ्रात वधूनी वात ।।

५— रूप प्रशसा साभली, कोटवाल तिणवार ।
सती बोलावी ने कहे, करमो स इकवार ।।

६ — सती निकार्यो तेहुने, फिटकार्यो सौवार।
डाकण आल दोहु दई, काडी पुर रे बार ॥

ढाल २

राग—हिवे राणी पद्मावती

१— तिमिर व्याप्यो रवि श्राथम्यो, डरावणी रात।
कने सहाई को नही, सिमरे जगनाथ ॥

२— मुझ शरणो एक शीलरो, धरती मन रे माय।
क्षुद्र जीव नो भय ना हुवो, शील तणे सुपसाय ॥

३— श्रागेई सतीया भणी, पडिया कष्ट श्रनेक।
अजना, चन्दना, द्रौपदी, सीता दमयन्ती देख ॥

४— इण उपसग सु उबरु, तो लेणो मुझ श्राहार।
नही तर म्हारे श्राज थी, जावज्जीव परिहार ॥

५— वले जेठ श्राई कहे, सुख विलसो मुझ साथ।
तो हु ले जाऊ घर भणी, सती नही मानी बात ॥

६— वासी चम्पानगर नो, सेठ तो गुणपाल।
मारग वेतो श्रावियो दीठी श्रधमरी बाल ॥

७— श्रचरज पाय जन मोकल्यो, सती पामी श्रास।
बाई नाम बोलावता, हुवो चित्त हुलास ॥

८— वितक विवरो साम्भली, लायो श्रापरे गेह।
धर्मण बाई थाप ने, राखे श्रधिक सनेह ॥

६— कोतवाल ने जेठ ते, गलतकोढी थाय।
घरसु न्यारा कर दिया, पाप उदे हुवा श्राय ॥

१०— सुखे समाधे सती तिहा, धरती धर्म नो ध्यान।
तिण पग छेड सेठ रे, हुवो पुत्र प्रधान ॥

११— सेठ विशेष राजी हुवो, गोद खिलावे ले बाल।
सती शील सरोवर झुलता, वितो कितोयक काल ॥

दोहा

१— एक दिन मुख्य गुमासते, देखी ईण रो रूप।
काम फन्द माहें पड्यो, चित्त मे लागो धूप ॥

२— हांस कितोल करे घणी, सती निर्भ न्छ्यो तेह ।
हूं कहि सु बाबा भणी, तो तुम देसी छेह ॥
३— तिलोकसुन्दरीना वचन सुणी, चमक्यो चित्त मझार ।
इण ने श्रान देई करी, काढु घर रे बार ॥
४— निर्भय सुती देखने, रुद्र हाडका लाय ।
सती श्रागल विखेरने, सेठ ने बोल्यो श्राय ॥

ढाल ३ राग—मोतीडारो गजरो भुलीए ।

१—तुम सुणो सेठजी सेणा, मुझ मानो कहु तुझ वेणा ।
ए डाकण छे धुत्तारी, मे तो परखी रयण मझारी ॥
२—ये नीठ हूवो छे पूत, एह राख्या होसी श्रपूत ।
हु तुमरो भलो चाहु तिणथी ए वात चेताऊ ॥
३—इण मे शका जाणो काई, तो चालो देऊँ वताई ।
सेठ चिते मन माय, किम लागी पाणी मे लाय ॥
४—सेठ ने सती कने लावे, रुद्र हाड मास देखावे ।
सेठ चमक्यो चित्त माई, नारी जात री खवर न काई ॥
५—सेठ कर रह्यो थागा थोगी, ए नार नही घर जोगी ।
रखे बाल भके श्रा म्हारो, तो वेगी काढू घर वारो ॥
६—एतले सती ऊठ जागे, रद्र हाड मास पडचा मुख श्रागे ।
सती देखी ने विभासे, भावी लेख लिख्यो जिम थासे ॥
७—हिवे सेठ कहे बुलाई, इण घर सु जावो वाई ।
सुण वात हुई दिलगीर, इणरे नैणा ढलक्या नीर ॥
८—तुम सु जोर नही हो तात, थारी खुशी पणारी वात ।
सेठ री छाती भराई, रारयारी रीत रहे नही काई ॥
६— सेठ सहस्र मोहरा पकडाई, सती चाल बाजार मे श्राई ।
'पुज्य सबल दास" कहे सुणो प्यारा, भाई पाप सु हुई जो न्यारा ।

दोहा

१— क्षत्रीय चम्पक सेठ रे, घरणो दीनो श्राय ।
मागे मोहरा पास से, नही दाम ने घर माय ॥

२— लोका मिल समझावियो, पिण नही माने तेह।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन घर नेह ॥

३— बाई कर राखो घरे तो, झगडो देसु मेट।
दीनी मोहरा पाच से, ले आयो घर ठेट ॥

४— सुखे रहे बाई ईहा, जपे जिनेश्वर जाप।
गुमास्तो कोढी हुवो, पूर्व पाप प्रताप ॥

ढाल ४

राग—लहरीयानी

१—लखो वणजारो एकदा, आयो इणपुर माही हो।
कामी मतवालो,
क्रियाणो विविध प्रकारनो, बेंचे खरीदे उच्छाही हो ॥
कामी मतवालो ॥टेर॥

२—लखो विणजारारे हुवे, रसोई चम्पक गेह हो।
तिलोक सुन्दर नो रूप देखने, जाग्यो मनमथ तेह हो ॥का०॥

३—विणजारो पुछे सेठ ने, आतुम घर कुण छे नार हो।
धर्म बेटी माहरे, कह्यो पूर्व विस्तार हो ॥का०॥

४—आ नारी आपो मुझ भणी, बोल्यो वणजारो एम हो।
ए उपकारण माहरो, तुमने आपु केम हो ॥का०॥

५—छेवट रहे नही ताहरे, क्या खोवे दाम निकाम हो।
द्रव्य दस सहस्र आपशु, सुण लोभ व्याप्यो चित्त ताम हो ॥का०॥

६—चम्पक देवण तैयार हुवो, तरे सती पुछे कर जोड।
थे मोल लेवो किण कारणे, तद नायक बोले धर कोडहो ॥का०॥

७—बीजी वाछा नही माहरे, देखी चतुराई तुझ हाथ हो।
रसोई कारण मोलवु, ए मुझ मनरी बात हो ॥का०॥

८—दाम देई ते ले चाल्यो, विणजारो घर नेह हो।
कृतघनरा पाप सु, चम्पक कोढ़ी हुवो तेह हो ॥का०॥

९—आयो दरियाव जहाज बैठने, चाल्यो कितनोय दूर हो।
विषय रसरो मोघो, आयो सतीरे हजूर हो ॥का०॥

१०—मन मेल तु मुझ थकी, करो लील विलास हो।
जीवन गमावे क्यू बावली, हु थारो दासानुदासहो ॥का०॥

११—रूप लावण्य लक्षणे करी, तु अप्सर रे उणिहार हो।
इन्द्र इन्द्राणी नी परे, भोगवा सुख श्रेयकार हो ॥का०॥

१२—मान कह्यो तू माहरो, मत कर जेज लिगार हो।
छेह न दाखु सर्वथा, करमो सु इकतार हो ॥का०॥

दोहा

१— सुणी वचन सती वदे, धिग् थारो अवतार।
मन करने वछु नही, जो होवे सुर अवतार॥

२— तो पिण केड मूके नही, सती गिणे नवकार।
खाय उछालो ने पडी, वारिधि वीच तिवार॥

३— मगर पीठ ऊपर पडी, ते जलधी तट जाय।
कुशले वाहिर नीसरी, नायक कुष्ठी थाय॥

ढाल ५

राग—आवो सुहागण पुरो साथीयो रे

१—रात पडी ने रवि आयम्योरे, बैठी वृक्ष तल आय रे।
ध्यान धरे नवकारनोरे, दृढकर मन वच काय रे॥
भाव धरी ने भवि साम्भलो रे॥टेर॥

२—वृक्ष चढतो पन्नग देखने रे, पक्षी शब्द कराय रे।
सती छिद्ध कार्‌यो दया आण नेरे, नाग गयो बिल माय रे ॥मा०॥

३—समुद्र किनारे पक्षी जाय नेरे, जडिया लाया तीण वार रे।
रूप परावर्तन एक करे रे, दूजी मेटे नेन्न विकार रे ॥भा०॥

४—कोढादि तीजी उपसमेरे ले खग पड्या आण पायरे।
थे उपकार कियो घणो रे, कह्यो कठा लग जायरे ॥भा०॥

५—तुझ भक्ती वण आवे नही रे, मुझ तिर्यञ्चनी जातरे।
कृपा करीने ए लीजिये रे, झूठ म जाणो तिलमात रे ॥भा०॥

६—ए विध किम जाणो तुमे रे, थे तिर्यञ्च अज्ञान रे।
साधु दरसण थी साम्भर्यो रे जातिस्मरण ज्ञान रे ॥भा०॥

७—श्रावक धर्म विराधीयोरे, तिण सु हुवा तिर्यञ्चरे।
ज्ञान प्रभावे गुण एहना रे, झूठ म झाणो रच रे ।।भा०।।

८—वैनातट सुर पुर समोर, इहा थी योजन पचवीशरे।
उहा पधारो राणी अघ छेरे, प्रजापालक कोढी अवनीस रे ।।भा०।।

९—चित्रसार पति ताहरो रे, तुमने मिल से तत्र र।
मान वचन चाली सतीरे, करी चित्त ने एकत्र र ।।भा०।।

१०—जडी प्रभावे रूप पुरुषनो रे, कर आई पुर माय र।
वृद्ध मालण घर उतरयो रे वैद्यनो रूप वणाय रे ।।भा०।।

दोहा

१— अनेक जन ताजा किया, सुण महिमा राजान्।
वैद्य भणी बोलायवा, नृप मेले प्रधान ।।

२— वैद्य आय नृप ने नम्यो, नृप कहे कर मुझ काज।
परणा सु गुण सुन्दरी, दु वली आधो राज ।।

३— वैद्य मान नृप नो वचन, कर उपचार विशेष।
नृपराणी ताजा किया, हर्ष्या लोक अशेष।

ढाल ६.

राग—लसकरीयानी

१—वैद्य गुणे नृप रीझीया हो, राजन् जी, दीयो रहिण ने महेल।
हुवे नाटिक मुख आगले हो, रा०, कर मनमानी सहेल ।।भ०।।

भला ही पधार्या हो उपगारी जी ।।टेर।।

२—करी सगाई बाई तणी हो, राज० चोखो लगन जोवाय।
धवल मगल गावे गोरडी हो, आणी उमग मनमाय ।।भ०।।

३—केसरीयो बनडो वण्यो, रा० तूर्रो किलगी रसाल।
रायजादा जानी घणा हो राजन जी, मानो बडा मछराल ।।भ०।।

४—हाथी घोडा रा ठाट सु हो रा० तोरण बादूयो आय।
विध सहुई साचवी हो, रा० वनो वनी दिया परणाय ।।भ०।।

५—जाझो जस लीयो ब्याह नो हो, रा० मर्धराज नृप देह।
रग महेल सुख सेजमे हो रा० आयो बनो घर नेह ।।भ०।।

६—हंस तणी गत हालती हो, सु० गुणसुन्दर सज सिणगार।
मदन बाण वरसावती हो० सु०, आई हेज घर नार ॥भ०॥
हरख घर आई हो सुन्दर जी ॥टेर॥

७—घुंघट पट अलगो करी हो, सु० निरखे भर भर नैण।
प्रेम हृदय उपजावती हो, सु० थे हम कर बोलो मैण ॥भ०॥
नजर भर जो वो हो पियु प्यारा जी ॥टेर॥

८—भलाई पधार्या महेल मे हो सु० करण केल उछरग।
हसण रमण सम्भोग नो हो, सु० म्हारे हिवडा नही छे ढग ॥भ०॥
भलाही पधार्या हो सन्दर जी ॥टेर॥

९—देव मनासा निज देशना हो सु पीछे तुम सु वात।
वचन सुणी निज कन्तना हो, सु० पीहर गई परभात ॥भ०॥

१०—खेले जमाई राय नो हो सु० ले हय गय रथ परिवार।
पिण नजरा नही देखीया हो, सु० प्रीतम प्राण आधार ॥भ०॥

११—इम करता रहता थका हो, सु० बीतो कितीयक काल।
हिवे दम्पती किण विध मिले हो सु० ते सुण जो वात रसाल ॥भ०॥

दोहा

१— लघु वंधव लिख भेजीयो, जेष्ठ बन्धु ने पत्र।
मरजादा पूरण भई, आवो वेगा अत्र ॥

२— सामाचार पाछा दिया, नहिं आवण रो ढग।
रोग उपनो सोलमो, तिण सु देह विरग ॥

३— दोरा सोरा ही तुमे, आवो घरी उमग।
राय जमाई वैद्य है, ताजो करसी अग ॥

४— कोटवाल भाई बेहु, चाल्या है तिणवार।
बीच मे मिलीयो गुमासनो, चौथो चम्पक सार ॥

५— लखी विणजारो पाचमो, वो पिण मिलीयो आय।
वैनातट भाई जिहा, डेरो कीनो जाय ॥

ढाल ७ राग—सोपर मुगल मया करे

१—लारे लेई गुमासताजी काई लारे० सेठ आयो हो ले कर मे भेंट।
राय जमाई रे आगले, कर जोडी हो आण उभो ठेट॥
सज्जन भलाही पधारिया जी ॥टेर॥

२—प्रीतम नजरा देखिया जी काई प्री० काई हरखो हो हिवडारे माय।
रोम रोम तन हुलस्यो, काई आदर हा दे लोया बुलाय॥

३—कर मुझरो भेट मेलने जी, काई० कहे मोटा हो तुम गरीब निवाज।
थारी छत्रछाया वसा, राजराख्या हा रसो म्हारी लाज॥

४—किण कारण हुवो आवणो जो, काई० काइ पूछे हो मन धरो उम्मेद।
शका काई राखो मति, काई० सुणता हो नही पामा खेद॥

५—जे भाखो ते सही कराजी काई, तद बोल्यो हो सेठ जोडी हाथ।
कुष्ठ रोग बड भ्रातने वले, चारे हो आया उण रे साथ॥

६—करो उपचार कृपा करी जी काई० उपकारी हो तुम गुणरी खाण।
मरजी होवे तो याही तेडु, फरमावो हो सो करू प्रमाण॥

७—नृप कहे रहो किण जायगा जी काई देवरमणहो पुरो सहेररे मायँ।
उहा र वास छे माहरो, सेठ बोल्यो हो इम शीष नमाय॥

८—आसा जद उण मारगे जी काई, आ० तद लेसा हो तुम बाधव देख।
सीख दिघो कर खातिरी, इण वातारी नहीं जेज विशेख॥

६—कर असवारी निसर्या जी काई, दिन दूजे हो करणकु सेल।
वाव बगीचा जायने, पाछा धिरता हो आया इण गेल॥

दोहा

१— राय सुता पति आवता, देखी हरख्यो मन।
सेठ कहे कृपा करी, आज दिहाडो धन॥

ढाल ८ राग—एक दिवस लका पति

१—रथ सु हेठा उत्तरी, मन माहे उमग धरी, हरष भरी।
आया दुवाने सेठ ने ए॥

२—घणा लोका रा वृन्द मे, राय जमाई आनन्द मे।
बैठा सिहासण उपरे ए ॥

३—सेठ दोनु कर जोडने, विनय करै मन मोडने ॥मद०॥
हाजर मुख ने आगले ए ॥

४—वद्य कहे चित्रसार ने, खुशी हो विणज व्यापार मे ॥व्या॥
खेचल नही है राजरी ए ॥

५—सेठ कहे महाराय जी, खेचल नही है काय जी ॥का०॥
तुम प्रसादे सुखीया वसा ए ॥

६ - माहो मांहि वाता करे, देख्या ही नयणा ठरे ।न०।
प्रेम हीये मावै नही ए ॥

७—एक अज म्हारी मानीये मुझ बधव रोग मिटाइये ॥गमा०॥
कहो तो बोलाउ ईण जायगा हो ॥

८—भला बुलाओ इम कह्यो सेठ मन आनन्द भयो।
तत्क्षिण तिहा तेडा वीया ए ॥

९—डील मे राध लोही झरे, लोक देख सुग्या धरे। आगाकरे॥
माख्या चटका दे रही ए ॥

१०—पेली निदान कीजिए पीछे औषध दीजिये ॥दी०॥
पूछे उत्पत रोगनी ए ॥

११—सेठ बोल्यो इण परे, रोग व्याप्यो किण तरे ॥कि०॥
विध बताओ पाछली ए ॥

१२—गर्मी कफ वाय बतावीयो, वद्यरे मन नही भावीयो ॥भ०॥
हम पोथी मैं ना लीख्यो ए ॥

१३—कचपच वाता मत करो, साच होवे सो उच्चरो ॥उ०॥
हम पोथो साची सही ए ॥

१४—मूल उत्पत बतावसो जदी रोग जावसी ॥सुख पावसी॥
नही तर हम जावा सही ए ॥

१५—सेठ नयण अरुण करी, साच कहो थे हितधरी ॥हि०॥
इतरा शभ माहे क्यु पडचा ए ॥

दोहा

१— खलक लोक मिलीया घणा, कहता आवे लाज ।
साच कह्या बिन माहरो, कोई न वणे इलाज ॥

२— सागर दत्त इम वितवी, चित्र सार ने ताम ।
कहे हु कुलखम्पन हुवो, खोई घर नी माम ॥

ढाल ९

राग—मालपुरो राणी जी मारीयो ए ।

१—मुख पर कपडो राल ने, वचन वदे तिणवार ॥बन्धव मोरा हो ॥
तुम नारी नो रूप देखने, मुझ व्याप्यो मदन विकार ॥

बधव मोरा रे, सागर दत्त इण पर कहे रे ॥टेर॥

२—गहिणा कपडा आददे, वस्तु मेली रसाल ॥
उण सती वछी नही, मैं जाय कह्यो कोतवाल ॥ब०॥

३—कोतवाल पिण तिहा गयो, बोलावी सती ने कहिवाय ॥
सुख भोगव तु मुझ थकी, सती न मानी काय ॥ब०॥

४—डाकण आल दोनु दइ, अधगाडी शहर रे वार ॥
पछे हा हुय गया कोढिया, पाप तरण पर कार ॥ब०॥

५—गुमासतो कहे तिण नारने मुझ सेठ लायो निज गेह ॥
रूप देखी ने हूँ रिझियो रे, धुत्कार्यो नही कियो नेह ॥ब०॥

६—डाकण आल दियो तदा, सेठ चमक्यो चित्त मुझार ॥
सहस्रमोरा देई करी, काढी घर रे बार ॥ब० सा०॥

७—तिण पापे हू कोढी हुवो, चटरे चम्पक वोल्यो वाय ॥
भगडो मेट्यो माहरो रे, वाई कर लायो घर माय ॥ब०॥

८—लखो वणजारो लोभ दे, मुझ कनासु गयो लेह ॥
हू कृतधनी कोढी हुवो, विगड गई मुझ देह ॥ब०॥

९—लखो विणजारो वोलियो, सती या मोटकी थाय ॥
मैं बकारी जहाज मे, तद पडी उछालो साय ॥ब०॥

१०—पछे हुवो हैं कोढीयो रे पाप किया पुपात ॥
वैद पहे साची कही, मुझ पोथी मे सब वात ॥ब०॥

सोरठा

१— चित्रसार सुण वैण, दु ख व्याप्यो मन मे घणो ।
वा नारी मुझ सैण, समुद्र पडी सो कव मिले ॥

२— धसक उछालो खाय, पडियो धरणी ऊपरे ।
शीतल पवन ढोलाय, कीयो सचेतन सेठने ॥

ढाल १०

राग—इडर आम्बा आम्वलो रे ॥

१—वैद्य कहे चित्रसार ने रे, इतनो मोह करो केम ।
नारी नेह रे कारणे रे, पुरुप भूरे नही एम ॥
चतुर नर नारी सोच निवार ॥टेर॥

२—वो गई तो जाण दोरे, फेर परणो वर नार ।
दाम होसी घर ताहरे रे, तो मिलसी नार हजार ॥

३—वैद्य वयण सुणी करी रे, सेठ वदे इम वाण ।
रूप लावण्य गुण आगली, उसी फेर मिले कद आण ॥

४—वैद्य कहे सुणो सेठ जी रे, सोच न करो काय ।
भाग्य लीखी जो ताहरे रे, तो मिलसी वोहीज आय ॥

५—थे कहो जिम हुं करु रे, इण तणा रे जतन ।
सेठ कहे जावो आगडा रे, इम वोल्यो खाची मन ॥

६—सिद्ध वैद्य करुणा आणने रे, जडीया खोली जी नीर ।
उपचार कियो पाचु तणो रे, हुवो कचन वर्ण शरीर ॥

७—राय जमाई कहे सेठने रे, तुमचो देखावो गेह ।
"सवलदास" जी कहे साभलो रे, आणी अधिक सनेह ॥

दोहा

१— महल देखवा कारणे, राय जमाई तेह ।
आयो मन उमग धरी, सेठने लारे लेह ॥

२— सदर कमाड जडी करी, रूप पुरुप नो मेट ।
नारी निज सागे वणी, छेल महेल मे पेठ ॥

ढाल ११ राग—मोती दोनी हमारो, राजिंद मोती दोनी ॥

१—तत्क्षीण दीनो पट उघाडो, देखी तो अमरी सम नारी हो।
ए स्यु सपनो मुझने आवे, के कोई इन्द्र जाल देखावे हो॥
पिउडा बलीहारी ॥टेर॥

२—पेठो मरद ने निसरी नारी, वदन देखता सहि मुझ प्यारी।
स्यु विमासो कहे इम बाला, थें मुझ प्रीतम प्राण रसाला॥

३—खानाजाद हु दासी तुम्हारी, विरह पीड मीटावो हमारी हो।
घणी घणियानी दोनो मीलिया, जाणे पयमे पतासा मिलीया॥

४—हिवडा भीतर हरष न मावे, ज्यु शशी सायर लहर चढावे हो।
पुरुष अवस्था किण विध पाई, धुरा पठ सु सरव बताई॥

५—वार घणी हुई राज पधारो, इम कहे हाकम ने हुजदारो।
सा कहे सेठ तणी हु जारी, रायपे जाय कहो समाचारो॥

६—अचरज पाय आया रायपासे, बातनो विवरो सर्व प्रकाशे।
राय कहे जावो उण पासे, म्हारी बेटीनो सी गति थासे॥

७—वात सुणी बोली इम नारी, म्हा दोना रा एक भरतारो।
रायपे जाय बात जणावी, सेठ बोलायकर थापो जमाई॥

८—घणो कुर्व दोधो वधारी, शील री बात हुई प्रसिद्ध।
तिलोकसुदरी शीलवती बाई, कहे देव आकाश रे माई॥

९—राय सूता सज सिणगारो, आई पीउ तणे दरबारो।
वडी वहे आगे मालक हुँ ही, अबे आधी मालक तु ही॥

१०—सुख विलसे प्रीतम येहु साथे, रगरली मे वासर जावे हो।
ईर्ष्या खेदो करे नही कोई, सम्पत दोनारे माहो माही॥

दोहा

१— येई वर्ष ईहा रह्या, अब मांगे छे सीख।
देश अमारे जायसां रहा न लागे ठीक॥

ढाल १२

राग—इम धनो घण ने परचावे।

१—राजन्द वयण सुणी मनचिंते, आखिर परदेसी जासेरे लो॥
बाई ने सीख देवे भली परे, जावत सासरे वासेरे लो॥
धन धन जे निज कारज सारे।।टेर॥

२—पतिभक्ता गुण ग्राहक होजे, सीलवती कुल उजवाले रे लो।
विनयवत सवसु नमी ने चाले, कुकर्म पाप ने टाले रे लो॥

३—दान पुण्ये कर रहीजे सूरी, बुरी करे मत किणरी रे लो।
सासरे पीहर भलो दिखावे, लोकसोभा करे जिणरी रे लो॥

४—मातपिता सिखामण दीनी पिण, चालता हीयो भरीजे रे लो।
सिर पाव गहेणा वेष बहु विध, बाइ जमाई ने दरीजे रे लो॥

५—मुहुर्तलग्न शुभ देखी ने, तुरत प्रयाणो कीधो रे लो।
राजादिक पोचाय ने घिरिया, जाबतो लारे घणो दीधोरे लो॥

६—कुसले खेमे निज घर आया, गुणपालरा गुण घणा जाण्यारे लो।
कुटुम्ब कबिलो सेण सगाने, वस्त्रादिके सन्मान्यारे लो॥

७—सुख भोगवता प्रितम साथे, दोनो ही बेटा जाया रे लो।
चित्तवल्लभ ने गुणसुन्दर, कचन वरणी काया रे लो॥

८—भणी गणी ने पण्डित हुआ, जौवन वैसे आया रे लो।
परणायावाने मोटे ठिकाने, माणे मनमानी माया रे लो॥

९—धर्मघोष स्थविर पधार्या, परखदा वदण आवे रे लो।
चित्रसार सुन्दर बेहु आगे, मुनिवर धर्म सुणावे रे लो॥

१०—ससार असार सुपना जिम, विणसता वार न लागे रे लो।
आयु अस्थिर जल ओस बिन्दु सम, नदी जलदाई जौवन जावे रे लो॥

११—दस दृष्टाते नरभव दुर्लभ, पामी ने मत हारो रे लो।
विषय कषाय तृष्णा लोभ, विकथा पाप निवारो रे लो॥

१२—सण उपदेश वैराग मन आणी, चित्रसार ने दोनु नारी रे लो।
घररो भार सूपी निज सुतने, सजम लिधो सुखकारी रे लो।

१३—पच आचार महाव्रत पाले, दोषण सगलाई टाले रे लो।
तप जप सयम शुद्ध आराध, आतम गुण उजवाले रे लो॥

१४—कर अणसण उपना देवलोके, महर्धिक पदवी पाई रे लो।
लेहि नरभव ने कर्म खपावी, मुगती जासी मुनीराई रे लो॥

१५—शील उपदेश थी ए विस्तारो, 'पूज सबलदास' चित लायो रे लो।
ओछो अधिको आयो हुवे तो, मिच्छामी दुक्कड थायो रे लो॥

१६—अष्टादस सो बाणवे बरसे, कियो फलोधी चौमासो रे लो।
शील री महिमा सुणे सुणावे, जिण घर लील विलासो रे लो॥

दोहा

१— पूर मनोरथ सरस्वती, वली प्रणमु अरिहत देव ।
सानीघ करजो मात जो, सेव करू नित्यमेव ।।

२— गुण गाउ गिरवा तणा, साभल जो घर प्रेम ।
शीलवत की जगत मे, महिमा फैले केम ।।

३— शील पाल्यो शुद्ध मने, चवदे पूर्वघर कोड ।
नाथ नम्यो है आयने, सुणजो आलस छोड ।।

ढाल १ राग—हमीरीया नी

१—पूरब महाविदेह मे, चपानगरी सुजाण हो ।।चतुर नर।।
अरिमदन तिहा राजवी, धूजे वैरी ना प्राण हो ।।चतुर नर।।
सुणजो जी चरित्र सुहावणो ।।टेर।।

२—जिण नगरी माहे वसे, श्रीपति नामे सेठ हो ।।च०।।
दान मान करी दीपतो, भरे घणा ना पेट हो ।।

३—पुत्र नी चिंता अति घणी, पूर्व पूण्य विशेप हो । चतुर नर ।
देवी देव मनावता, बेटो जनम्यो एक हो ।।चतुर।।

४—व्हालो घणो मात तातने, बीजो ही वहु परिवार हो, च० नर ।
रूपे अतिरलियामणो, जाणे देवकुमार हो ।।चतुर०।।

५—गुर पासे भणवा भणी बेसाड्यो पोसाल हो, चतुर नर ।
रायकुंवर पिण पढे तिहा, बीजा ही वहु बाल हो ।।

६—प्रीतवधी माहो माहे घणी, राय कुंवर सु अधिक हो ॥चतुर०॥
भणी गुणी ने आया घरे, कलावत प्रसिद्ध हो ॥चतुर०॥

दोहा

१— पाच से घोडा सारीखा, राजा दीना सूप ।
कुवर खेलावे खात सु चित्त धरी ने चूप ॥
२— सेठ पुत्र पिण देखने, कहे पिता ने आय ।
हू पिण घोडा खेलावसु, माने दो तुरी मगाय ॥

ढाल २

राग—कथ तमाखू परहरो

१—सेठ कहे सुत साभलो, आया वेवारी लोक ॥म्हारा लाल ॥
विणज करो बाजार मे, वे छे तुरिया जोग ॥म्हा॥
सेठ कहे सुत साभलो ॥टेर॥
२—बीजी वस्तु मागो जको, हाजर तुरत तैयार ॥म्हारा ॥
तो पिण हठ पडियो घणो, मरजासु इण बार ॥
३—हठ बैटा नो देखने, सेठ गयो राजा पास ॥म्हा०॥
आगल मेली भेटणो, क्षेम करे अरदास ॥
४—आदर दे राजा पूछियो आवणो हुवो केम ॥म्हा०॥
बीतक सहु बतावीयो, राय बोल्यो घर प्रेम ॥
५—तुम पुत्र मुझ कवर सु अन्तर की सो होय ॥म्हारा०॥
घोडा ले जावो रावला, बेराजी मत करो कोय ।
६—वचन सुणी राजा तणो, सेठ बोल्यो इम वाय ॥म्हा०॥
मगाऊ आप हुक्म सु, आज्ञा दीवी राय ॥
७—तुरत मेल्या आदमी, कबोज देश मे माय ॥म्हा०॥
पाच सो तुरग मगावियां, चाली वर्ण सुहाय ।

दोहा

१— सोना नी सागत सजी, सोना राही पलाण ।
सेठ निज सुत ने सू पिया, पलावत मे पाण ॥

२— राय कुवँर रमतो जठ, आयो सेठ कुवार।
खेलावे वहु खात सु, दोउ मिल एक हजार ।।

३— वली प्रोहित सुत मत्री कियो, ए पिण कँवरनी साथ।
इतरा मे अचरज हुओ, सुणो आगली वात ।।

४— घाडायत जाय दौडिया, वारू पुकार्या आण।
कन्या घोडा देखने, रोवा लागी जाण ।।

ढाल ३

राग— पयोडा रे बात कहो घूर छेहयी
कोइक रे क्माने वेग छोडाव जोरे ।।टेर।।

१—कन्या रे, कन्या रूदन करे घणी रे।
घाडायत लिया जाय रे, साहसीक रे साहसीक कोई वीर हो रे,
माने दोनी छुडाय रे ।।

२—कन्या रे, कन्या रुदन ते साभलो रे सेठ कुँवर तिणवार रे।
राय सुत रे, राय० ने ते इम कहे रे, चालो छुडावा जाय रे ।।

३—राय कुँवर रे, राय० चित्तचमकीयो रे, बोल्यो मस्तक घुण रे।
हुतो रे, हु० जाव सु शहर मेरे, आडा कजिया ले वे कुण रे ।।

४—सेठ सुतरे, से० साहसीक पण रे, सवार पाचसो ले लार रे।
कन्या रे, क० ने छोडावा चालीयो रे, लायो रायतणे दरवार रे ।।

५—मालज रे, मा० लायो लूटने रे ते पिण दियो भूप ने सूप रे।
राजा रे, रा० रीज्यो सेठ सुत उपरे रे, रीज भोज दीनि अनूप रे ।।

६—खबर रे, ख० देय बुलावियो रे, इण कन्या नो तात रे।
मालज रे, मा० ने कन्या सूप दी रे कृपा करी नरनाथ रे ।।

७—कन्या रे, क० कहे निज तात ने रे, परणु एहीज कुवार रे।
अवर रे, अ० परणवा री आखडी रे, इण भव ए भरतार रे ।।

८—राजा रे, रा० सेठ भणी बोलायने रे, थाप्यो व्याह मण्डाण रे।
उत्सव रे, उ० कर परणावीयो रे व्याह तणी विध जाण रे ।।

दोहा

१— बेटी भणी परणाय ने, सेठ गयो निज ठाम।
राजा जस बीच मे लियो, पुण्य बडा अभिराम ।।

२— पुत्र बहु ने देखने, श्रीपति सेठ सुजाण।
एक दिन निज कवरसु, बोल्या इण परमाण ॥

ढाल ४ राग— नित्य करूँ साधु जी ने वन्दना

१—सेठ कहे पुत्र साभलो, म्हारो, वचन मानो नेट रे।
प्रोहित मत राखो घर बारण, घोडा कर दो राय ने भेंट रे॥
सेठ कहे पुत्र साभलो ॥टेर॥

२—आपा वेवारी वाणिया, विणज करा बाजार मे जाई रे।
आखिर मे तो एक दिन जावसा, सीख मानो तो गुण थाई रे॥

३—तात वचन शिरधार ने, तुरग किया राय नी भेटो रे।
विणज करे हीरा तणो, फिर प्रोहित सु प्रीत नेटो रे॥

४—केईक दिना के आतरे, मात पिता किनो कालो रे।
घर नो धुरन्धर ते थयो, ससार नी काची जालो रे॥

दोहा

१— सुख विलसे ससार ना, भामिनी ने भरतार।
न जाणे उग्यो आथम्यो, पुण्य जोगे ससार॥

२— एक दिवस प्रदेश थी, आया है समाचार।
लेखा ने सुलझावणो, वेगा आवो इणवार॥

३— प्रोहित भणी घर सू पने, सेठ गयो परदेश।
प्रोहित पापी आतमा, नही धर्म नी रेश॥

ढाल ५ राग—चन्द्रा प्रभु मुझ मन भावे रे

१—मुझ मित्र की नार केहवी रे, आयो घर मझार।
रूप माहे रलीयावणी रे, देखी जाग्यो विकार॥
जो थो कमगत भारी रे, न्याय डुबोवे व्यभिचारी रे॥टेर॥

२—पद्मोत्तर ने मणीरथ राजा, रावण लंका रो नाथ।
पर नारी ना नेह सू र, गमाई घर री आत॥

३ नया कपडा पहर ने रे मुझ आगल उभो मेल।
मुझ मित्र कह्यो तुझ भणी रे, म्हारो वचन न दीजो ठेल॥

४—प्रीत करो मुझ थी तुम्हेरे, भोगवो सुख ससार।
जीवन लावो लीजिये रे, वार वार नही अवतार॥

५—वचन सुणी ए विप्रना रे, वोली वचन करुर।
पर नारी वछे पापीयो रे, फिट थारी पगडी मे धूल॥

६—सती घणो निभ्रंच्छीयो रे, मूल थी पाडी माम।
निकल पापी यहा थकी रे, मत आइजे इण ठाम॥

७—मुंह लेई आयो घरे रे, गयो सेठ ने पास।
तुझ नारी व्यभिचारणी रे, सेठ सुणी हुओ उदास॥

दोहा

१— सेठ इण पर चितवे, आ वात मानी किम जाय।
वो नारी सीता सारखी, किम लागी पाणी मे लाय॥

२— आट दोट मन मे थयो, दुकान उभी छोड।
नारी की परीक्षा भणी, आयो निज घर दौड॥

३— रात पडो रवि आथम्यो, सूतो महल मझार।
नारी आय उभी तीहा, सज सोले शृंगार॥

४— मूल नही बतलावणो, नही आदर सम्मान।
नारी तुरत पाछी वली, आयी आपणे स्थान॥

५— मन शका मे निकल्या, पूरब चवदे क्रोड।
महासतो ए मोटको, सणजो आलस छोड॥

प्रक्षेप ढाल

राग—ख्याल की

सती मन आलोचे आतम सुधारे जिनवर ज्ञान से॥टेर॥

१—पक्खी पर्व आराधती सरे, आलोचन विधी माय।
आरती आया सोचती सरे, कैसा कलक शिर आयरे॥सती०॥

२—और कारण दिखे नही सरे, ब्राह्मण चुगली खाय।
पति वियोग पडावियो, सरे केसो कियो अन्याय रे।सती०॥

३—प्रभु तुम्हारी साख से सरे दोप नही मुझ माय।
कलक सहित सजम लेणा, के मरण भलो नही थाय रे॥सती०॥

४—इम पश्चाताप सती करे, पति खडा था बहार।
प्रच्छन्न परणे सहु साभल्यो सरे, दिल पलटचो तिणवार रे ॥सती०॥
५—एकपक्षी सुण वारता, द्वेष धर्यो मैं मन्न।
अब निर्णय किया बिना खाणो नही मुझे अन्न ॥सती०॥
६—धाय माता ने पुछता, फिटकारी दियो सुनाय।
यो सोनो है सोलमो, थे कष्ट दियो बिन न्याय ॥सती०॥

ढाल ६ राग—आज शहर मे योगीसर आया।

१—धाय भणी सेठ पुछी बातो, प्रोहितनी ए बाणी रे लोल।
ए सुलक्षणी सती उत्तम, ये महासती गुणखाणी रे लोल॥
धन्य धन्य जे नर शील आराधे ॥टेर॥
२—प्रोहित मित्र कुपात्र निवारो, जात ऊँची गुण काला रे लोल।
उण दु ख दीयो सतो भणी, पिण ये रतनारी माला रे लोल॥
३—धाय बात साची कही थे, तू छे बडी प्रवोणी रे लोल।
मैं कह्यो न मान्यो तात केरो, यो कणमागण मतिहीणोरे लोल॥
४—नेह जोड्यो पाछो निज नारी सु, क्षीर ने साकर जेमो रे लोल।
नारी जाणी शील सुहाणी, विप्र ने जाण्यो तेमो रे लोल॥
५— घणा वर्ष लग सुख भोगवियो, भद्रकभावे थायो रे लोल।
दोनो ही काल करी ने उपन्या, जुगल पणा रे मायो रे लोल॥
६—सेठ जीव नाभीराजा थया, सेठाणी मोरादेवी रे लोल।
कथाकार मे मैं सांभलियो, जिणी पुत्र जनम्या जिनराई रे॥
७—कोई कहे पेलरे भव सह्या, परीषा दिन रातो रे लोल।
ते तो जाणे केवलज्ञानी, कथाकार की बातो रे लोल॥
८—पूर्वभव सम्बन्ध कह्यो मैं, ओछो अधिको होई रे लोल।
पूज्य "सबलदास" इम कहे माने दोष मत लाग जो कोई रे॥

दोहा

१— अवसर जे नर अटकले, ते तो चतुर सुजान ।
दीपावे जिनधर्म ने, तेनो भण्यो प्रमाण ।।

२— किण विध धर्म दीपावियो, साभल जो नर नार ।
सेण होवे साधु जी, लब्धितणा भण्डार ।।

ढाल १

राग—नणदल ए नणदल

१– पच महाव्रत पालता, विचरता नगर पुर ग्राम हो मुनिवर ।
कठिन क्रिया जिण आदरी, साधु सुदर्शन नाम हो मुनिवर ।।
साधु सदा ही सुहामणा ।।टेर।।

२—साधु सदा ही सुहामणा, पूरण ज्यासु प्रेम हो, मुनिवर ।
हिवडा भीतर बस रह्या, हीरा जडिया हेम हो, मुनिवर ।।

३—तप कर काया सोखवी, वैराग मे भरपूर हो, मुनिवर ।
आचारमे वली उजला, सत्यवादी ने शूर हो, मुनिवर ।।

४— जाणे सोनो ने पत्थरसारखो, त्रिया तृणसमान हो मुनिवर ।
शत्रु ने मित्र सारखा गिणे, निश्चल ज्यारो ध्यान हो, मुनि० ।।

५— जीवण री वाछा नही, मरण तणो भय नाय हो, मुनिवर ।
पूठ दे ससार ने निसरचा,जैनी शास्त्र सूत्र रे माय हो मुनि० ।।

६—उग्र विहारी एकला, सहता शीत ने ताप हो, मुनिवर ।
पूरण पराक्रमधारी है, परिहरचा सहु पाप हो, मुनिवर ।।

७— लब्धि इण ने ऊपनी, करता उग्र विहार हो, मुनिवर ।
रिख रायचन्द कहे साभलो, आगे वहु अधिकार हो, मुनिवर ।।

२— महला मे बैठो थकी, पियु ने सुणावा काज ।
राणी चेलणा गुण करे, धन्य दिहाडो आज ॥

ढाल ३ राग—मारी सजनी आज म्हारा गुरासा पधारसी जी ।

१— दृढ़ सजम तप धारी ।
ये तो एकला उग्र विहारी, हो ज्ञानी ॥
गुरुजी आपरा, दर्शन की बलिहारी ॥टेर॥
२— वारी वार हजारी, हो ज्ञानी गुरु जी ।
आपरा दर्शन की बलिहारी ॥
३— स्वामी राजगृही मे आया ।
राणी चेलणा ने घणा सुहाया हो० ॥
४— मैं आवता दूर सु दीठा ।
मने लाग्या अमृत सरीसा मीठा हो० ॥
५— आप अठे पग धरीया ।
म्हारा देखता रा नैण ज ठरीया हो० ॥
६— मैं चरण तुम्हारा भेटिया ।
मारा भव भव रा दु ख मेटिया हो० ॥
७— पूरब सुकृत कीना ।
म्हारा ज्ञानी गुरु जी दर्शन दीना हो० ॥
८— पूरब सुकृत अतिशायी ।
म्हारा ज्ञानी गुरु जी की आई बधाई हो० ॥
९— म्हारा मनरा मनोरथ फलिया ।
मुँह मगिया पासा ढलिया हो० ॥
१०— आज म्हारा ज्ञानी गुरु जी मिलिया ।
म्हारा भव-भव रा पातक टलिया हो० ॥
११— थे शील सथमरा दाता ।
आप सयम मे रग राता हो० ॥
१२— थे शीलागरथ पर बैठा ।
थे सारथी मुक्ति ना सेंठा हो० ॥

१३— धन्य दिहाडो आज ।
म्हारा सरीया वंछित काज हो० ॥

१४— शीलसमुद्र मे पेठा ।
मुक्ति महल रे द्वार माहे बैठा हो० ॥

१५— थे अभयदानरा दाता ।
थे तो सजम मे रगराता हो० ॥

१६— ढाल भई या तीजी ।
राणी चेलणा इण पर रीझी हो० ॥

१७— ऋषि रायचदजी वाणी ।
श्री मुख थी वीर वखाणी हो० ॥

१८— सेणी श्राविका चेलणा राणी ।
रायचद कहे वीर वखाणी हो० ॥

दोहा

१— श्रेणिक रे समकित नही, तेह समय की बात ।
राणी गुण इतरा किया, नृप माने नही तिल मात ॥

२— वली रानी चेलना कहे, साभल जो महाराज ।
मोटा गुरु छे माहरा, तिरण तारण की जहाज ॥

३— भोग तजी जोग आदर्यो, करणी ज्यांरी श्रेयकार ।
त्यागी कनक ने कामिनी, ते विरला अणगार ॥

४— श्रेणिक कहे राणी सुणो, म्हारा गुरु री होड ।
थारा गुरु पदी ना करे, क्यो करे तू झोड ॥

५— चेलना चरचा करे घणी, पिण पाछो ने देवे पाव ।
करणी इणने पाधरी, यु राजा खोटा खेले दांव ॥

६— हलकारा ने हुक्म कियो, जो वो शहर मे जाय ।
राणीरा गुरु कठे उतरे, मोने वेगा कहि जो आय ॥

७— हलकारा शहर जोयने, कहे साभल जो महाराय ।
महाराणी रा गुरु उतर्या, यक्षदेवरा माय ॥

८— राजा श्रेणिक तिण समे, एक वेश्या दिधी वाड ।
चौकी वेसाडी चहु दिशे, वली जडीया जोर किंवाड ॥

६— खिष्ट राणी ने करवा भणी, श्रेणिक कीधा काम ।
पिण वात रो पेच हिवे सुणो, किणरी जावे माम ॥

ढाल ४

राग—चौपाई की

१— वेश्या देखी देवरा रे माय ।
तव विचार कियो मुनिराय ॥

२— जड दियो आडो माहे घाली नार ।
तो अठे दिसे कोई अवर विचार ॥

३— यो कीधो कोई घेखो काम ।
इण वाता साधा रो होसी कुनाम ॥

४— दिन उगा लोक देखसी नार ।
साच कूड रो कुण काढसी तार ॥

५— जिनमारग जो नीचो जाय ।
ऊंचो आणे रो करू उपाय ॥

६— लब्ध काढ किया विस्तार ।
दूर उभी देखे वेश्या नार ॥

७— ओघो मुंहपति वस्त्र पातरा ।
वाल दीवी सब माया मातरा ॥

८— जोगी वण बैठो अवधूत ।
गोटो करने लगाई भभूत ॥

६— लाम्बा लटारी जटा असराल ।
रुद्राक्ष की गलेमे माल ॥

१०— सिंदुर टीको आरया लाल ।
बैठो विछाय चित्तारी खाल ॥

११— हाथ मे तुम्वी लोह रो कडो ।
बैठो राख रो ऊंचो कर दडो ॥

१२— हाथ मे' वडो हिरण रो सीग।
वण बैठो बाबारो धीग॥

१३— वेश्या डरती बोली नार।
बाबा म्होने मत कर जो छार॥

१४— नेडी तू मत श्राय श्रवार।
थर थर धूजी वेश्या नार॥

१५— टुक टुक वैश्या रही छे जोय।
रखे भस्म मारी पिण होय॥

१६— जो हू निकलू देवरा रे बार।
जाणो श्राई नवें ससार॥

१७— जुलक जुलक उभी जोवे दूर।
जोगी जोश चढ्यो भर पूर॥

१८— श्रेणिक कह्यो राणी ने जाय।
थारा गुरु मे कला नही काय॥

१९— स्त्रीना वे सेवणहार।
तिण मे नही कोई फरक लगार॥

२०— शका वे तो देखो नचीत।
नहींतर राखो मुझ परतीत॥

२१— राणी कहे सुणजो महाराज।
हिवे किसो विन्याय करो काज॥

२२— वेश्या भेली राखसी सोय।
ते तो गुरु थारा ही होय॥

२३— थारा गुरु जोगी होसी महाराय।
देखो चालो श्रापा दोनु जाय।

२४— चवडे देख लेसा महाराज।
जिण रा गुरु तिणरी जासी लाज।

२५— राय राणी श्राया देवरा रे बार।
थले घणा मिल्या नर नार॥

२६— देवरा रा खोल दिया किमाड।
बैठा जोगी ने वेश्या नार॥

२७— सामो जिणसु कुण माडे सीग।
जाणें बैठो वावा रो धीग॥

२८— राणी कहे सुणजो महाराज।
हिवे गुरु चेलारी किसी रही लाज॥

२६— हू तो सावी तरह आपसु खसी।
राणी राजा साथे हँसी॥

३०— हावयो वाक्यो राजा थयो।
ओ कठी पेठो, वो कठी गयो॥

३१— जिनमारग रो हुवो उद्योत।
दीप रही समकित की ज्योत॥

३२— अन्तसमय अवसाने आये।
आलोवणा लीधी मुनिराय॥

३३— अन्तसमय साधु अनशन करी।
गया मुनिवर स्वर्ग सचरी॥

३४— चेलणारी हुई चौथी ढाल।
समकित री ज्योति रसाल॥

३५— "ऋषि रायचद" जोडी रीया गाम।
श्रावक लोक वसे शुभ ठाम॥

३६— जेमलजीरे प्रसाद प्रमाण।
सवत अठारे तेतीसा जाण॥

३७— जेठसुदि बारस दिन जाण।
वीतराग रा वचन प्रमाण॥

दोहा

१— नवमा अग तीजा वर्ग मे, कह्या धन्ना रा भाव ।
साभल जो चतुरा नरा, आलस अग निवार ॥
२— वैरागी शील सेहरो, घन्य धन्ना अरणगार ।
तेह तरणा गुरण वरणंवु, पातिक दूर निवार ॥

ढाल १

१—नगरी काकदी अति रलियावरणी,
सहस्राम्रवन उद्यान, हो भविक जन ।
प्रजा लोक सुखीआ तिरण नगरी मे,
जित शत्रु राजान्, हो भविकजन ॥
भावधरी नें हो भवियरण साभलो ॥टेर॥
२— भद्रासार्थवाही वसे तिहा,
जाने गज सके नही कोय हो ॥भ०॥
तस घर धन्ना ओ कु वर जन्मिया,
रूप देखो ने हर्षित होय हो ॥भ० भा०॥
३—जोवन वेशमे आया जाणी करी,
परणाई बत्तीसी नार हो ॥भ०॥
महल तेंतीस मे लीला कर रह्या ।
एक नाटकना झणकार हो० ॥भ० भा०॥
४— षट् रस भोजन चीजा नितनई
घणा दासी ने घणा दास हो ॥भ०॥

क्रोड वत्तीसा रो सोवन डायचो ।
विलसे लील विलास हो ।।भ० भा०।।

५—विचरत वीर जिनेश्वर समोसर्या,
लक्षण सहस्र ने आठ हो ।।भ०।।
वारह परिषदा हो आई वन्दवा,
लग रह्या धर्म का ठाठ हो ।।भ० भा०।।

६— करी सवारी ओ राजा सचर्या,
घरी कुणिक जिम कोड हो ।।भ०।।
पच अभिगम दूरा मूकने ।
वन्द्या है वेकर जोड हो ।।भ० भा०।।

७—पहली ढाल सम्पूर्ण थाए थई,
समवसर्या जिनराज हो ।।भ०।।
नगरी मे हुगेमगे लागी अति घणी,
लोग टोले टोले जाय हो ।।भ० भा०।।

ढाल २ राग—आछे लाल री

१— धन्ना नाम कुवार, बैठा है गोख मझार ।
सुन जो चित्तलाय, लोका ने जाता देखिया जी ।।

२— कहे सेवक ने एम, लोक जावे छे केम ।।सुन०।।
किए कारण मेलो मण्डियो जी ।।

३— सेवक कहे कर जोड, समवसर्या जिनराज ।।सुन०।।
लोक जावे छे वन्दवा जी ।।

४— सुण्या सेवक ना वैण, वाला लागा अमीय समान ।।सुन०।।
वन्दन ने मन हुलसियो जी ।।

५— सकल सजा शृगार, बहु लोका रे परिवार ।।सुन०।।
जमाली जिम चालिया जी ।।

६— आया तिहाँ जिनराज, पच अभिगम साच ।।सुन०।।
सन्मुख बैठा श्री वीर ने जी ।।

७— भगवन्त दे उपदेश, काल घटे छे हमेश ॥सुन०॥
जन्म मरण रा रोग लग रह्या जी ॥

८— जैसी उन्हाला की साझ, तैसी ससार्या की मौज ॥सुन०॥
सडन पडन अणी देह नो जी ॥

९— मेलो मण्डियो अचराल अणचिन्त्यो उठ जाय ॥सुन०॥
जीव बटाऊ पाहुणो जी ॥

१०— अस्थिर कुटुम्व धन माल, काई फँसीयो रे माया जाल ॥सुन०॥
भ्रमर कमल तणी परे जी ॥

११— सुण्या भगवन्त ना वैण, लागा वैरागी ने बाण ॥सुन०॥
धन्नाजी कहे कर जोड ने जी ॥

१२— हु लेसु सयम भार, छोड बत्तीसी ही नार ॥सुन०।
आऊ मे आज्ञा लेय ने जी ॥

१३— भाखे दीनदयाल, जिमे थाने सुख थाय ॥सुन०॥
ढील न कीजे देवानुप्रिया जी ॥

१४— वदया है दीनदयाल, या थई दूसरी ढाल ॥सुन०॥
घर आई माता जी ने किम कहे जी ॥

ढाल ३ राग—राणकपुरो रलियामणो रे लाल

कृपा करी ने दीजे आगन्या रे लाल ॥टेर॥

१— घर आई माता जी ने इम कहे रे लाल।
हु लेसु सयम भार ॥सुनो मात जी ॥
आज्ञा दीजे मुझ भणी रे लाल।
करणी न ढील लिगार ॥सुनो मात जी ॥कृपा०॥

२— एह वचन श्रवणे सुणी रे लाल।
माता जी गई मुर्छाय, ॥सुत सामलो रे ॥
सावचेत थई माता इम कहे रे लाल।
आज्ञा दीवी किम जाय ॥सुत०॥
चारित्र छे बच्चा दोहिलो रे लाल ॥टेर॥

३— पाचो ही महाव्रत पालना रे लाल।
करणो माथा रो लोच ॥सुत०॥
बाईस परिषह जीतना रे लाल।
मरण रो नही करणो सोच ॥सुत०॥

४— खड्गधारा नी परे चालणो रे लाल।
करणो उग्रविहार ॥सुत०॥
मोह माया दोनो जीतना रे लाल।
शील पालणो नववाड ॥सुत०॥

५— सावद्य ओषध करणो नही रे लाल।
दुष्कर मारग घोर ॥सुत०॥
हरगीज थासु पले नही रे लाल।
मत करो झूठी मकझोर ॥सुत०॥

६— एकाएकज तू माहरे रे लाल।
आज्ञा देऊ कणी रीत ॥सुत०॥
ये कचन, ये कामण्या रे लाल।
सुखविलसो घर प्रीत ॥सुत०॥

७— कुँवर कहे माता सुणो रे लाल।
हु गयो नर्क निगोद ॥सुणो मात०॥
दुख अनन्ता में सह्या रे लाल।
कह्यो कठा लग जाय ॥सुणो० कृपा०॥

८— वन माहे एक मृगलो रे लाल।
कुण करे वींरी सार ॥सुणो०॥
मृगला नी परे विचरसु रे लाल।
एकडलो अणगार ॥सुणो० कृपा०॥

९— हरगिज तोरेसु नही रे लाल।
छोड सु मायाजाल ॥सुणो०॥
माता जी वरजीने आफिया रे लाल।
या थई तीसरी ढाल ॥सुणो० कृपा०॥

ढाल ४

राग—बिछियानी राग

१—रे लाला महावल कुँवर तणी परे।
माताजी ने उत्तर दीध रे लाला ॥
कृष्ण थावरचानी परे ।
दीक्षा दीनी मोटे मण्डाण रे लाला ॥
वरागी वेराग मे झिल रह्या ॥टेर॥

२— रे लाला माला मोती सहु खोलिया।
माता झेल्या खोला रे माय रे,लाला ॥
ठलक ठलक आंसु पड ।
जाणे टूटो मोत्यारो हार रे ॥ला०॥

३—रे लाला भगवत ने दीनी भलावणी ।
पुत्र ने दीधी सीख रे लाला ॥
किरिया मे कसर राखो मती।
गुरूरी आज्ञा मे रहिजो ठीक रे ॥ला०॥

४— रे लाला माता वदि निजस्थानक गई।
धन्ना जी हुआ अणगार रे लाला ॥
समिति गुप्ति री खप करे।
किरियारो कोड अपार रे ॥ला०॥

५—रे मुनि चरण वद्या जिनराज रा।
दीक्षा लीनी तीणहिज दिन रे लाला ॥
बेले बेले करसु पारणो ।
जावज्जीवन पाडु भिन्नरे ॥

६— रे लाला आमिल कर सु पारणे ।
आहार लेसु खरडे हाथ रे लाला ॥
कोई नाख्यो थको वछे नही।
एहवो लेसु पारणे आहार रे ॥

७—रे मुनि जिम सुख होवे तिम करो ।
आज्ञा दीनी श्री जिनराज रे लाला ॥

धन्नाजी सुण राजी हुआ।
अब सारसु आतम काज रे॥

८— रे लाला आयो वेला रो पारणो।
मुनि काकदी नगरी मे जाय रे लाला॥
गोतमस्वामी नो परे।
आय वीर ने बतायो आहार रे॥

९—रे लाला आहार मिलेतो पानी नही मिले।
पानी मिले तो नही मिले आहार रे॥
मुनि दीनपणो आण्या नही।
क्रोधादिक जीत्या शुद्ध भाव रे॥

१०— रे लाला आज्ञा हुई जिनराज री।
जिम बिल माहे पेसे भुजग रे लाला॥
गृद्ध पणो आण्यो नही।
मुनि माण्ड्यो कर्मा सु जग रे॥

११– रे लाला विहार कियो जनपद देश मे।
धन्नाजी वीर जी के सग रे लाला॥
सामायिक स्थविरा कने।
मुनि भण्या ग्यारह अगरे॥

१२— रे मुनि तपस्या अति कठीन करी।
वली लीनी अतापना घोर रे लाला॥
शुद्ध ज्ञान मे लयलीन हुआ।
दुष्कर करणी कीनी घोर रे॥

१३—रे मुनि री काया सूखी खखर थई।
जाव खघक नी पर जाण र लाला॥
चोथी ढाल सम्पूर्ण थई।
वली आगे शरीर वखाण रे॥

ढाल ५ राग—शकर बसे रे कैलाश मे

श्री धन्ना मुनिश्वर तप तप्या॥टेर॥

१– सूखी तो छाल काष्ट नी पावडी।
एहवा पग दोई सूखारे॥

लोही ने मास सूखो गयो।
दीसे दुर्बल लूखार ॥श्री०॥
श्री धन्ना मुनिश्वर, तप तप्या।

२— श्रुत भुगत्या सु लागी रे॥
श्रुत लागी ज्यारी मोखो ॥टेर॥
काया तो खखर डरावणो।
सूखा सर्प नो खोखो रे ॥श्री०॥

३—मूंग उडद नी कोमल फली।
वली सूखी तेहनी फलीया रे॥
एहवो तो धन्ना मुनिराज नी।
सूखो पग नी अगुलिया रे ॥श्री०॥

४— कागपक्षी ने मोरिया।
एवी सूखी ऋषि नी पिण्ड्यारे॥
गोडा री गाठ वनास्पति।
पिण परिणाम चंगारे ॥श्री०॥

५—सायल पिगु कुम्पल सारिखी।
कटि ऊँट अर्ध पगोरे॥
पेट तो सूखो जाणे दीवड्योडा।
पेठो ऊण्डो अथगो रे॥

६— आरेसा उपरा ऊपरी मूकिया।
एवी पासुल्या जाणो रे॥
हाथ कडा आभरण जेवडा।
पासली लारली पिछाणोरे॥

७—छाती तो सुखी दोपट बीजणो।
बाया खेजडला नी फलिया र॥
हाथ रो पजो वड नो पानडो।
कुलत्थ फली सूखी आगुलिया र ॥श्री०॥

८— गलो तो सूखो करवा जेवडो।
डाळी आमकुली जानो रे॥

सूखी जलोक होट जेवडा ।
जिह्वा सूखो साग पानो रे ॥श्री०॥

६—नाक विजोरा री कातडी ।
आस्या छिद्र दोय बीणा रे ॥
अथवा तो तारा प्रभात रा ।
कान कादा छोत भीणा रे ॥श्री०॥

१०— उदर कान होट जिभिया ।
ज्या मे चाम-नसा जाणो रे ॥
सतरा बोला मे घाल्या हाडका ।
काया दीसे महाविकरालो रे ॥श्री०॥

११—ढीलो पलाण तुरगनो पावडो ।
एहवा लटके दोनो हाथो रे ॥
आयुष्य रे वल हाले चालता ।
धुजे कम्पणवायु माथो रे ॥श्री०॥

१२— बाजे निहाला तिलनी साकली ।
एवा खड खड हाडो रे ॥
ढाकी तो अगनि तणी परे ।
माहे तेज घणो गाढो रे ॥

१३—ढाल थई एतो पाचमी ।
मुनि काया जोर कसी रे ॥
परवानी राखी कोई शरीर नी ।
सुरत मुगत्या जाय वसी रे ॥

ढाल ६

नगरी राजगृही समोसर्या ॥ हो जिनद ॥
करता उग्र विहार हो ॥टेर॥

१— राजा श्रेणिक आया वदवा हो ॥ जि० ॥
साथे अभयकुंवार हो ॥

२— जिनवर दे उपदेशना ॥ हो श्रोताजन ॥
सकल जीवा हितकार हो ॥

३— श्रेणिक राय पूछा करे ॥ हो० ॥
मुनिवर चवदे हजार हो ॥
४— दुष्कर करणी निर्जरा ॥ हो० ॥
चवदा सहस्र मे कुण थारे होय हो ॥
५— वीर जिनेश्वर इम कहे ॥श्रो श्रेणिकराय॥
मुनिवर चवदे हजार हो ॥
६— दुष्कर करणी निर्जरा ॥ हो श्रे० ॥
मारे धन्ना नाम कुंवार हो ॥
७— श्रेणिक कहे कारण किसो ॥ हो जि० ॥
कह्यो लारलो विस्तार हो ॥
८— वीर वन्दी धन्ना जी कनै ॥ हो श्रे० ॥
चरण वदया बारम्बार हो ॥
९— सुकृत मानव भव था लियो ॥हो मोटा मुनि॥
धन थारो अवतार हो ॥
१०— वीर जिनेश्वर गुण किया ॥हो मोटामुनि॥
दुष्कर करणी रा अवतार ॥
११— श्रेणिक वदी निज स्थानक गया ॥ हो जि० ॥
मुनिवर रा गुण गावे हो ॥
१२— धन्ना जी रातरा चितवे ॥ हो जि० ॥
उपन्यो वैराग अपार हो ॥
१३— दान शील तप भावना ॥ हो जि० ॥
शिवपुरी मारग सार हो ॥
१४— छठी ढाल सम्पूर्ण थई ॥ हो जि० ॥
सुणो सथारारो सार हो ॥

ढाल ७ राग— हु बलिहारी जादवा

१— धन्ना जी ऋषि मन चितवे,
तप करता टूटी हम तणी काय के।

वीर जिनन्द जी ने पूछ ने,
आज्ञा ले सथारो देसु ठाय के ॥

२— प्रह उठी वन्दया श्री वीर ने,
श्री मुख आज्ञा दीवी फरमाय के ।
विमलगिरी स्थविरा सगे,
चाल्या सब सत सतियो ने खमाय के ॥

३— सथारो आयो एक मास को,
स्थविर पाछा आया वीरजी रे पास के ।
भण्डोपकरण सहुँ सूँपने,
गौतम स्वामी पुछे बेकर जोड के ॥

४— तप तप्या हो मुनिवर आकरो,
को स्वामी वासो कियो किण ठाम के ।
सागर तेतीसा रे आउखे
नौ महीना मे सर्वार्थसिद्ध पाय के ॥

५— महाविदेह क्षेत्र मे सिझसी,
विस्तार नवमा अग के माय के ।
सत ढालियो सम्पूर्ण थयो,
"आशकरण" मुनिवर गुण गाय के ॥

६— सवत् अठारे इकसठे,
वैसाख विद पक्ष के माय के ।
विशलपुरी गुण गाविया,
रिख रायचद जी के प्रसाद के ॥

७— बुद्धिजीसारु गुण वर्णव्या,
सूत्र रे अनुसारे जोय के ।।
ओछो जी अधिको जो कियो,
मिच्छामि दुक्कड मुझने होय के ॥

दोहा

१— तेरमो परिषह वर्णवु, वध है जिणरो नाम ।
मोक्षगामी मुनिवर सहे, ते सारे आतम काम ॥

२— मन दृढ राखी मुनिवरु, न आणे राग ने द्वेष ।
खन्दक ना शिष्य पाच से, सुणजो भाव विशेष ॥

ढाल १ राग—धन धन शील सुहामणो

भवियण भाव सु साभलो ॥टेर॥

१—भरतक्षेत्र माहे भली, सावत्थी नगरी सोहे रे ।
स्वर्गपुरी की ओपमा, देखता मन मोहे रे ॥भ०॥

२—भवियण भाव सु साभलो चित्त ठिकाणे कीजे रे ।
निद्रा नेडी मत आणजो, सुण सुण ने रस पीजे रे । भ०॥

३—सेठ सेनापति मन्त्रवी, वसे घणा व्यापारी रे ।
प्रदेशी आवे घणा, सुख विलसे नर नारी रे ॥भ०॥

४—राज्य करे रलीयामणो, राय जितशत्रु जाणी रे ।
राणी तेहने धारणी रूपे जाणे इन्द्राणी रे ॥भ०॥

५—कुवर खन्दक कला घणी, रूपे सुर अवतारी रे ।
सूत्र भण्यो भली परे, धर्म नी श्रद्धा धारी रे ॥भ०॥

६—जैन धर्म साचो श्रद्धियो, नही माने मिथ्यातो जी ।
समकित मे सेठो घणो, साधु सेवे दिन रातों रे ॥भ०॥

७—चर्चा मे सेठो घणो, अन्यतीर्थि कोई आवे रे ।
विवाद विषय ने, करे [illegible] जीती कोई [illegible] जावे रे ॥भ०॥

८—कुंवर मे कमी कोई नही, सगली वातें सेरणो रे।
उदार दिल नो छे घरणी, अल्पभाषी मृदु वेरणो रे।।भ०।।

९—पुरन्दर यशा पुत्री भली, सुदर छे मृगानैणी रे।
रूप जौवन आई भली, भरणी गुरणी ने हुई सैणी रे।।भ०।।

१०—कन्या कुंवारी राय नी, थई परणावरण जोगो रे।
गुरण बुद्धि देखी पुत्री नी, सोचे कुवर मिले जोगो रे।।भ०।।

११—पहली ढाल माहे किया, वहिन भाई ना वखाणो रे।
"रिख रायचद" कहे साभलो, आगे चतुर सुजाणो र।।भ०।।

ढाल २

राग—माधव इम बोले

१—कुम्भकारकटक नो घरणी रे, कुभकार राय जारण।
तेज प्रतापे रवि जिसो रे, कोई न लोपे आरण र।।
पृथ्वीपति राया।।टेर।।

२—सेना चार प्रकार नी रे, भरिया भण्डार पूर।
कमी नही किरण वात री रे, दुश्मन गया दूर र।।पृ०।।

३—रूपवत ए राजवी रे दीसे कुवरी जोग।'
पुत्री परणाई प्रेम सु रे हर्षा सगला लोक र।।पृ०।।

४—दत्त दायचो दीधो घरणो रे, जितशत्रु महाराय।
बाई सासरे सचरी रे, तीहा रहे सुख माय रे।।पृ०।।

५—सासरा माहे सुख घरणो रे, कुंवरी ने चित्त चेन।
पिहर मे व्हाली घरणी रे, खन्दक कुंवर री बेन रे।।पृ०।।

६—एकदा प्रोहत ने कह्यो रे सावत्थी नगरी तू जाय।
वस्तु अमोलक भेटरणो र मेल जो सुसरा ने पाय रे।पृ०।।

७—पालक तीहा थी आवीयो रे, साव थी नगरी रे माय।
आशिर्वाद देई करी रे, उभा राजसभा रै माय र।।पृ०।।

८—समाचार सगला कह्या रे, परवानो दी राय।
मिजमानी मेलो आगले र, आदर से लिराय रे।।पृ०।।

६—राजा बैठो सिहासने रे, कुँवर प्रजा तिहा जाण।
"रिख रायचद" कहे साभलो रे, दोनो राजा रा किया
वखाण रे ॥पृ०॥

दोहा

१— पालक प्रोहित तिण समे, राजसभा के माय।
मिथ्या धर्म बखाणता, नास्तिक मत थपाय ॥
२— शास्त्र नी जुगती करी, निषेध्यो स्कदक कुमार।
पालक खीसाणो हुग्रो, भरी सभा मझार ॥
३— प्रोहित नो हासो हुग्रो घट्यो सभा मे तोल।
कुवर मिथ्यात्व घटावियो, रह्यो सभा मे बोल ॥
४— पालक खदक ने ऊपरे, धर्यो घणेरो धेख।
द्वेष तणा फल पाडुवा, ग्रागे लीजो देख ॥

ढाल ३

राग—भरतेश्वर, तेरे तेला करे एम

१—तिण काले ने निण समे जी, करता उग्रबिहार।
सावत्थी नगरी समोसर्या जी, साधा रे परिवार ॥जि० ज०॥

जिनेश्वर जगतारण जगदीश, मुनि सुव्रत विश्वावीस ॥टेर॥

२—प्रभू पधार्या बाग मे जी, जोवता जारी वाट।
विधसु वदन ग्राविया जी, नर नार्या रा ठाट ॥जि० ज०॥

३—कोणिकनी परे ग्रावियो जी, जीतशत्रु राजान्।
स्कदक कुवर तिहा ग्रावियो जी, सफल गिण्यो दिन जान ॥जि०ज०॥

४—दीधी धर्म नी देशना जी, भव जीवा ने काज।
जन्म मरण मे बूडो मती जी, जो मिल्यो धर्म नो साज ॥जि० ज०॥

५—तन धन जोवन कारमो जी, ग्रस्थिर सहु ससार।
वाणी सुण वैरागीयो जी, स्कन्दकराय कुवार ॥जि० ज०॥

६—कर जोडी कुवर कहे जी लेसु सजम भार।
मात पिता ने पूछने जी, छोडु वेग ससार ॥जि० ज०॥

७—यथासुख जिनजी कह्यो जी, घर ग्रायो घर राग।
'रिख रायचद' कहे तीजी ढ़ाल मे जी, कवर पाम्यो वैराग ॥जि० ज॥

ढाल ४ राग—राजबीया ने राजपियारो

माता जी मोने अनुमति दीजे ॥टेर॥

१—तात मातरे पाए लागी, बोले बेकर जोडी जी।
काया माया मैं जाणी काची, आयुष्य नो थिति थोडी जी॥

२—माता जी मोने अनुमति दीजे, जेज हिवे नही कीजे जी।
क्षिण क्षिण माहे देही छीजे, इम जाणी आतम दमीजे जी॥

३—वैण सुणी मुर्छाणी माता, बोले सुण मुझ जाया जी।
तु मुझ वालो बेटो एक, सुकोमल थारी काया जी॥

४—जोवनवय मे जोग न लीजे, सुख भोगवीजे सदाई रे।
रमणी रिद्ध रो लावो लीजे, सपदा सखरी पाई जी॥

५—कुँवर कहे काची सर्व माया, म्हारो मन नही लागे जी।
मुनिसुव्रत स्वामी मुझ मिलीया, सजम लेसु जा आगे जी॥

६—उत्तर प्रत्युत्तर कीधा बहुला, जमाली जिम जाणी जी।
सहस्रपुरुष सिविका शृ गारी, कुँवर ने सुप्यो आणी जी॥

७—मुनिसुव्रत स्वामी गुरु मिलीया, दीक्षा ली स्कदक कुमारो जी।
रायपुत्र पाचसे कुवरा सु निकल्या स्कदक कुमारो जी॥

८—पाचसे जणा सु सजम लीधो, काटी जग नी फासो जी।
सूत्र सिद्धान्त भली तरे भणीया, आणी मन हुल्लासो जी॥

९—अनुक्रमे पदवी पाया मोटी, आचारजनी जाणी जी।
परिवार जारे पाचसे चेला, सगला उत्तम प्राणी जी॥

१०—चौथी ढाले दीक्षा लीधी पदवी मोटी पामी जी।
रिखरायचद कहे आगे सुणजो, किण गति रा होवे गामी जी॥

ढाल ५ राग—जम्बुद्वीप मझार

१— बीसमा जिनराय, मुनिसुव्रत भला ए।
पग ज्यारा प्रणमी करी जी॥

२— स्कदक कहे छे एम, विहार हु कर।
कुभकारकटक भणी ए॥

३— बहेन बहनोई तिहा, ज्या ने प्रतिबोधवा ।
भगवत विहार हु करु ए ॥

४— भगवत भाखे एम, जो तुम्हे जावसो ।
तो थाने उपसर्ग होवसी ए ॥

५— तुम बिना आराधक होय, भगवत भाखीयो ।
होरा पदार्थ नही दाखीयो ए ॥

६— करता उग्रविहार, स्कदक आचार्य ए ।
पाचसे परिवारसु ए ॥

७— कु भकटक है देश, नगर बसत पुरे ए ।
उद्याने आई उतर्या ए ॥

८— पालक प्रोहित तेह, रीस ज पाछलो ।
इण मोने खिष्ट कियो हुतो ए ॥

९— सुजम ले आयो एथ वैर वालु म्हारो ।
परभव मैं करू पोंचतो ए ॥

१०— बाग,वाहर बालु रेत, आयो आधी रात रो ।
प्रोहित छानो पापीयो ए ॥

११— पाच से खड्ग दिया, गाउ ।
ढाला पाच से, गडाइ जुदी जुदी जायगा ए ॥

१२— तीर कामठी तेह, बदुक बर्च्छीया ए ।
कुल्हाडी ने कटारीया ए ॥

१३— सग्राम ना छे साज, घरतीमा धरदीयो ए ।
प्रोहित कपट इसो कियो ए ॥

१४— प्रोहित पापी जीव कुवध केलवी ।
साधा ने मारवा भणी ए ॥

१५— महामिथ्यात्वी जीव, द्वेषी धर्मनो ए ।
अभवीजीव ज जाणीये ए ॥

१६— राते कपट वणाय प्रात प्रोहतीयो ए ।
राजाजी कने आवीयो ए ॥

१७— प्रोहित माण्ड्यो जजाल, पांचमी ढाल मे ।
"रिख रायचद" कहे साभलो ए ॥

ढाल ६

राग—पुज्य पधारीया ए

कर्म छोडे नही ए ॥टेर॥

१—स्कन्दक विराज्या वाग मे ए, जावणो वदन काज के।
सगपण साला तणो ए, वली घर्म नो राज के ॥कर्म॥

२—कर्म छोडे नही केहने ए, कुण साधु ने कुण चोर के ।
उदय हुआ पछे ए, किण रो न चाले जोर के ॥कर्म॥

३—पालक कहे महाराय ने ए, किण ने वदन जावो आज के ।
स्कदक आयो वाग मे ए, लेवण आपरो राज के ॥कर्म॥

४—कपटी भेष वणावियो ए, पाचसे साथे सरदार के ।
जो वदन जावसो ए, तो लेसी आपने मार के ॥कर्म॥

५—म्हारो साच मानो नही ए, ऐ लाया सग्रामनो साज के ।
छिपाया धूल मे ए, आप देखी जे महाराज के ॥कर्म०॥

६—इण रे चारित्र नो मन को नही ए, पाचसे लायो उमराव के ।
नृप कहे साची अछे ए, तु कहे तिका बात के ॥कर्म०॥

७—पालक कहे महाराय ने ए, किसो राखो भ्रम के ।
उरा आवो देखो इहा ए, इण मोडा रा ए कर्म के ॥कर्म०॥

८—सग्राम नो साज देखाडीयो ए कर कर ऊची धूड के ।
राजा मन मे जाणीयो ए, पालक रे नही कूड के ॥कर्म॥

९—प्रोहित कहे महाराय ने ए अबे आयो म्हारो साच के ।
ज्यू नाणो दिखाय द ए, हाथ मे लेइने काच के ॥कर्म०॥

१०—राजा रो मन फेरीदियो ए, प्रोहित कपटी एम के ।
आगे हुआ ते साभलो ए, वाचा कानारा नृप केम के ॥

११—राम रे मन पड गई ए सीता केरी शक के ।
धोवी रा वचन सु ए, देखो कर्मा रो वक के ॥कर्म०॥

१२—शख राजा रे शका पडी ए, पूछी नहीं कोई बात के।
कलावती राणी तणा ए, कपाया दोनु हाथ के ॥कर्म०॥
१३—चेलणा किण नें चितारीयो ए, कोप्यो श्रेणिक भूपाल के।
कह्यो अभय कुमार ने ए, दीजे अ तेउर प्रजाल के ॥कर्म०॥
१४—सती अजना रे ऊपरे ए, रुठ्यो पवनकुमार के।
परणी ने पर हरी ए, वली दियो पग नो प्रहार के ॥कर्म०॥
१५—इणरीते आगे हुवा ए, राजा किणरा न होय के।
प्रोहित ने कहे राजवी ए, साधा सु दुश्मन होय के ॥कर्म०॥
१६—पालक ने राजा कहे ए, थें राख्यो म्हारो राज के।
तु साधर्मी हुओ ए, अब तोने भला यो काज के ॥कर्म०॥
१७—ओ मोने मारण आवीयो ए, ए मोड्यो पाखण्ड के।
पाच से भेला करी ए, दे मन आवे जो दण्ड के ॥
१८—प्रोहित ना बहु चितीया ए, होणहार होवे जिम होय के।
साधा ने मोक्ष जावणो ए, कर्म न छोडे कोय के ॥
१९—प्रोहितपरिषह दिवे किण परे ए, थे सुण जो बाल गोपाल के।
"रिख रायचद" इम कहे ए, पुरी थई छठी ढाल के ॥

ढाल ७ राग—राजवीया ने राज पियारो

धन्य धन्य साधुजी सहे परिसो ॥टेर॥

१— पालक पापी अभवी प्राणी,
नगर बाहर मण्डाई घाणी रे।
पिलता चेला अनुक्रमे,
गुरुगोडे उभा रिखो आणी रे ॥ध०॥
२— धन्य धन्य साधु जी सहे परिसो,
कठिन कम ना तोडी जाला रे।
मुक्ति मदिर मे जाय विराज्या,
जन्म मरण फेरा टाला रे ॥ध०॥
३— प्रथम चेला ने घाणी मे घाल्यो,
चारआहारना किया पचक्खाणी रे।

तिल भर द्वेष न धारियो मुनीश्वर,
केवल लेई पाया निर्वाणी रे ॥ध०॥

४— अनुक्रमे पिल्या पापी,
स्कन्दक आचार्य ना शिष्य रे ।
चार से ने अठाणु चला,
किण नही आणी मन रीस रे ॥ध०॥

५— चार से ने अठाणु पिल्या,
रह्या आचारज देख रे ।
इहा लग तो गुरु रा मन मे,
नही आयो कुछ धेख रे ॥ध०॥

६— बालक चेलो नानो रह्यो,
मोने देखता मत पिलरे ।
नवदीक्षित है नानो चेलो,
कोमल इण रो डिल रे ॥ध०॥

७— मो प्रते जोयो किम जावे,
तु पीलेला घाणी मे घाल रे ।
इण ऊपर मारो मोह ज अधिको,
रह्या पालक ने पाल रे ॥ध०॥

८— पालक प्रोहत पाछो बोल्यो,
तु मोने रह्यो पाल रे ।
पिण तोने दुख देवण गाढो,
अभी पीलु घाणी मे घाल रे ॥ध०॥

९— जुलक जुलक चोला रे सामो,
रह्या आचारज जोई रे ।
तब चेले मन माहे जाण्यो,
गुरु रे चिंता रो छेहन कोई रे ॥ध०॥

१०— चिंता देखी ने चेलो बोल्यो,
आप सोच करो छो केम रे ।
मुझ ऊपर मोह न राखो,
म्हारे मुगत जावण रो प्रेम रे ॥ध०॥

११— अकाममरण मैं कीधा अनन्ता,
गरज न सरी लिगारो रे।
अब के पण्डितमरण करी ने,
आप प्रसादे करु खेवो पारो रे ॥ध०॥

१२— इतरे पालक आणी पकड्यो,
दीयो घाणी मे घाल रे।
केवल लेइ मुगत सिधाया,
भव फेरा दिया टाल रे ॥ध०॥

१३— सातवी ढाल मे सिद्ध गति पाया,
स्कदक आचार्य ना शीष्य रे।
"रिख रायचद" कहे जाने नमाऊ,
कर जोडी ने मारा शीप रे ॥ध०॥

ढाल ८

बात सुणो स्कन्दक तणी ॥टेर॥

१—इण मूरख कह्यो नही मानीयो, ओ लागो म्हारी लारो रे।
पछे गुरु ने पीलीया, ये पालक पापी हत्यारो रे॥

२—बात सुणो स्कन्दक तणी, जाने आयो क्रोध अपारो रे।
विराधिक हुओ साध जी, जाय उपन्यो अग्निकुमारो रे॥

३—अवध करी ने जाणीयो, पालक कीधी घातो रे।
वैर पूर्वलो साभर्यो, हिवे छे इणरी वातो रे॥

४—साधु श्रावक ने टालने, बीच मे लिया भूपालो रे।
पाप पालक ना प्रगट्या, भस्म किया सहु वालो रे॥

५—रैयत ने आता आयो नही, बेन पुरन्दर यशा टालो रे।
साधाने दुख दियो ज्यारे, पाप उदे हुआ तत्कालो रे॥

६—अनर्थ ए मोटो हुओ, साधा रो हुओ सहारो रे।
वार वार वाल्यो देश ने, नाम थयो दण्डाकारो रे॥

७—पुरन्दरयशा सजम लियो, तपस्या किनी घणी वाई रे।
स्वर्ग पहुँची साधवी, दोनी मुगति नी साई रे॥

८—चेला तो मुगति गया, गुरु हुआ अग्निकुमारो रे।
रीश कदे रूडी नही, क्षमा सु सुख अपारो रे॥

९—स्कदक आचारज जिम कियो, तिम साधु ने करणो नाई रे।
क्रोध तणा फल पाडुवा, क्षम्या सु शिव सुख होई रे॥

१०—चेला परिवह जिम सही, कर दियो खेवो पारो रे।
तिम सेणो (सहनो) सर्व साधु ने, इम भाख्यो किरतारो रे॥

११—वध परिपह तेरमो, कह्यो उत्तराध्ययन मभारो रे।
दूजे अध्ययन मे कथा कही, तिण रो ए अधिकारो रे॥

१२—पूज्य जयमलजीरा प्रसाद सु 'रिखरायचद" जोडी ढालो रे।
चेत मास नागौर मे, प्रीत साधा सु पाला रे॥

३१ | मेतार्य मुनि

दोहा

१— श्री जिन समरु भाव सु सत्गुरु लागु पाय।
कथा अनुसारे गाव सु मेतारज मुनीराय॥

२— पूर्वभव दो मित्र थे, ब्राह्मण केरी जात।
देशना सुणी ऋषि राज की, सजम लियो सघात॥

३— सजम पाले भाव सु तपस्या करे करूर।
एक दिन मन मे चितवे, पूर्व पाप अकूर॥

४— जैनधर्म स्वीकार छे, शका नहीं लिगार।
स्नान नही इण मार्ग मे, एतो कही आचार॥

५— कुलमद दुगु छा भाव थी, नीच कुल बन्धन कीन।
आलोयणा बिन सोच वी, सुर गति दोनु लीन॥

६— दोय मित्र तिहा देवता, बोले आपस माय।
जो पहले नरभव लहे, घाली जे धर्म माय॥

७— सजम लेवाणो तिण भणी, करि कोई दाय उपाय।
इम सकेत कीनो उभे, सुर भव आपस माय॥

८— कुलमद जिन कीनो हुतो, ते पहले चव्यो तेथ।
मातग कुल मे अवतर्यो, उदय कर्म के हेत॥

९ — शेप पुण्य प्रतापथी, पायो सम्पति सार।
किणविध ते सजम लियो, ते सुणजो अधिकार॥

ढाल १

राग—सोवन सिंहासण रेवती

शेठ युगधर दीपतो रे ॥टेर॥

१—शहर राजगृही दीप तु, राज करे श्रेणिक राय रे।
शेठ युगधर दीपतो, लक्ष्मीवंत कहाय रे ॥शे०॥

२—श्रीमती नार सुलक्षणी, रूप गुणे अधिकाय रे।
अशुभ कर्म प्रभाव थी, मृत वझणी ते थाय रे ॥शे०॥

३—एकदा गर्भ रह्यो तेहने चिंतवे ते मनमाय रे।
जीवे नहि बालक माहरे, धन रख बालक नाय रे ॥शे०॥

४—जिम सन्तति रहे कुल विषे, तिम करू कोई उपाय रे।
एटले आवी मातगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥शे०॥

५—तिण ने एकाते लेई करी, दीयो घणो सन्मान रे।
सम्पति छे मुझ घर घणी, जीवे नही मुझ सन्तान रे ॥शे०॥

६—जो तुझ होवे नन्दन कदा, गुप्त पणे घर मोय रे।
मेल जे तु निशि समे, ठीक पडे नही कोय रे ॥शे०॥

७—द्रव्य देशु तुझ सामटु, होसी सुखी तुझ पूत रे।
प्रेम हु राख शु अतिघणो, रहसी मुझ घर तणो सूत रे ॥शे०॥

८—राजी थई तिणे मानीयो, जनमीयो नन्द जिणवार रे।
प्रच्छन्न पणे तिणे मोकल्यो, ठीक नहि पुर नर नार रे ॥शे॥

९—जनम महोत्सव सब ही कियो, दिवस थया जब बार रे।
दियो दशोट्टण जात मे, वरतिया मगलचार रे ॥शे०॥

१०—नाम मेतारज थापी यु, प्रतिपालन करे पच धाय रे।
पूर्व पुण्य प्रभाव थी, रूप गुणे अधिकाय रे ॥शे०॥

११—कुलमद कियो तिण कर्म थी, महतर घर अवतार रे।
बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥शे०॥

१२—बहोतर कला मे पण्डित थयो, आवियो योवन साय रे।
'तिलोक रिख' कहे पहली ढाल मे, पुण्य थी सुख सवाय रे ॥शे०॥

दोहा

१— यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाई सात ।
पच इन्द्रिय सुख भोगवे, आनन्द मे दिन रात ॥

२— हवे तिण अवसर ने विषे, पूर्वे कीनो करार ।
ते सुर आई उपदिशे, ले तु सजम भार ॥

३— तलालीन ते भोगवे, माने नही लगार ।
कीनी सगाई वली तिणे, ते सुणजो अधिकार ॥शे०॥

ढाल २ राग—इण सरवरीयारी पाल, उभी दोय रावली

१—आठमी कन्या तेह, परणवा उमाह्या ॥हा० प०॥
कीनी सजाई जान, जानी भेला थया ॥हा० जा०॥
केशरीया जामो पहर, मुकुट शिर पर धर्यो ॥हा० मु०॥
माथे बाध्यो मोड, बीदनो वेश कर्‌यो ॥हा० बी०॥

२—शिरपर शिर पेज जडाव, तुर्रो झगमगे सही ॥मा० तु०॥
कलगी तिण ऊपर जाण, अधिक भलकी रही ॥मा० अ०॥
झगमगे कुडल कान, हार झगझग करे ॥मा० हार०॥
बाजुबन्द भुज दण्ड, पोंची कडाकर सिरे ॥मा० पों०॥

३—मुंदडी अगुली के माय झलके हीरा तणी ॥मा० झ०॥
कमर कन्दोरो जडाव, सुवर्ण को खिखडी ॥मा० सु०॥
अत्तर अग लगाय, तिलक भाले कर्यो ॥मा० ती०॥
कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं उर्यो ॥मा० सु०॥

४—बेठो होय असवार, लाडो वण्यो सो सही ॥मा० ला०॥
गावे मगल नार, अधिक उच्छा वही ॥मा० अ०॥
धप मप मादल नाद, के साद सुहामणा ॥मा० के०॥
घडिन्दा घडिन्दा ढोल, तिड किड शासा तणो ॥मा० ती०॥

५—चाल्या अधिक उत्साह, ब्याह करवा भणी ॥मा० ब्याव०॥
आया मध्य बजार, बणी शोभा घणी ॥मा० व०॥
तिण समे सो सुर कीध, बात कौतुक तणी ॥मा० बा०॥
मातग मन दियो फेर, हेर अवसर भणी ॥मा० है०॥

६—लीनो हाथ मे लट्ठ, घठ धीठो घणो ।।मा० घ०।।
आयो जानके माय, धरी कुलठ पणो ।।मा० ध०।।
माने नही कछु शक, बक एकी जणो ।।मा० ब०।।
आयो सो वीद हजूर, काम नही दूर तणो ।।मा० का०।।

७—सघलाही रह्या देख, बोले सुणो नन्दना ।।मा० बो०।।
हु छु सगो तुझ बाप, जाणे मत फन्दना ।।मा० जा०।।
सातकन्या ब्याही वणिक, परणाऊ एक माहरी ।।मा० प०।।
पकडी अश्व लगाम, कोई नही बाहरी ।।मा० को०।।

८—वदलायो चित्त लोक, धोको सवने पड्यो ।।मा० धो०।।
साची दीसे ए वात, जोग इसडो घड्यो ।।मा० जो०।।
लोक गया सव ठाम, वीद रह्यो एकलो ।।मा० वी०।
अधिक खीसियाणो होय, देखे सो भूई तलो ।।मा० दे०।।

९- तिणसमे सो सुर वेण, कहे मेतार्य विषे ।।मा० क०।।
ले हवे सजम ताम, कहे सो भूडी दीसे ।।मा० क०।।
हवे पाछो होय सुजस परण कन्या वणिकनी ।।मा० प०।।
नवमी परण भूप, घूया श्रेणिक नी ।।ना० गु०।।

१०—बारा वरस गृहवास, रहु तदनतरे ।।मा० रहु०।।
लेशु पिछे सजम भार, वचन ए नहि फिरे ।।मा० व०।।
एम सणी सूर वेग, सेण मन फेरियो ।।मा० से०।।
झूठी मातग नी वात, वीद वली हेरीयो ।।मा० बि०।।

११—हुई सजाई सर्व, तिहा वली ब्याहनी ।।मा० ती०।।
आया सोही बाजार, वात थई न्यायनी ।।ना० बा०।।
महेतर आयो सो चाल जान माही दौडी ने ।।मा० जा०।।
उण मदिरा पीध, बोले कर जोडी ने ।।मा० बो०।

१२—ए नहि माहरो नन्द, खोटो हु बोलियो ।।मा० खो०।।
माफ करो अपराध, कह्यो बे तोलियो ।।मा० क०।।
भर्म टल्यो सहुलोक, कन्या परणी सही ।।मा० क०।।
'तिलोक रिख' कहे दुजी ढाल, दुविधा राखी नही ।।मा० दु०।।

दोहा

१— राज सुता परणावणी, सुर सोची ने तास।
दीनी बकरी रूयडी, उगले रतन उजास ॥

२— रत्न राशि भगमग करे, देखे बहु नरनार।
पुरमे पसरी वारता, मेतारज पुण्यसार ॥

ढाल ३

राग—वैदर्भीशु मन वस्यो ॥

१—राय सुणी इम वारता, मन मे विस्मय थाय ॥हो लाल॥
बकरी लावो वेग सु, जेज करो मति काय ॥हो लाल॥
राय सुणी इम वारता ॥टेर॥

२—सुभट सुणी चल आवीया, युगधर ने गेह ॥हो लाल॥
मागे बकरी शेठ थी, उगले रत्न छेह ॥हो लाल॥रा०॥

३—शेठ वदे सुभटा भणी, मैं नाही मालक तास ॥हो लाल॥
मेतारज ने पूछी ने, लेई जावो थें उल्लास ॥हो लाल ॥रा०॥

४—कुंवर कने जाची तिका, सो बोले तिणवार ॥हो लाल॥
बकरी जीवन प्राण छे, रत्न पुंज दातार ॥हो लाल रा०॥

५—सुभट गया फिर राय पें, दाख्या सहु समाचार ॥हो लाल॥
सुणी क्रोधातुर बोलीयो,जेज न करो लगार ॥हो लाल रा०॥

६—हलकार्या सुभटा भणी, घसमस करता जाय ॥हो लाल॥
छाली लाया छोडिने, पूछयो तिण सु नाय ॥हो लाल रा०॥

७—राय कचेरी लाविया, क्षण अन्तर नी माय ॥हो लाल॥
बकरी छेरी तिण समे, दुगन्ध रही फैलाय ॥हो लाल रा०॥

८—सभा सहु व्याकुल थई, उठ चाल्या सहु लोक ॥हो लाल॥
छे भूप कारण किसो, वात थई ते फोक ॥हो लाल रा०॥

९—सुभट कही झूठी नही, एही रत्न दातार ॥हो लाल॥
पूछे कारण कुवर शु, सुभट गया तिण वार ॥हो लाल रा०॥

१०—पूछ्यो कारण कुंमर थी, किण कारण दुर्गन्ध ॥हो लाल॥
उगले नहिं किम रत्न तें, दाखो तेह प्रबन्ध ॥हो लाल रा०॥

११—सो कहे मुझ राजी करे, रत्न उगले श्रीकार ॥हो लाल॥
नहिं तोए रे बुरी, शका नहिं लगार ॥हो लाल रा०॥

१२—राय कहे जे छालिका, देवे रत्न श्री मोय ॥हो लाल॥
मुख मागी वस्तु तिका, देशु हु खुश होय ॥हो लाल रा०॥

१३—सो कहे कन्या तुम तणी, दो मुझने परणाय ॥हो लाल॥
रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तब राय ॥हो लाल रा०॥

१४—गुण मजरी कन्या भली, कीधो व्याह उत्साह ॥हो लाल॥
'तिलोक रिख' कहे तीजी ढाल मे, कुंवरनो पुर्यो उमाह ॥हो लाल॥

दोहा

१— नव कन्या परणी भली, नव निधि पति जिम तेह।
भोगवे सुख ससारना, दिन दिन वधते नेह॥

२— वारा वर्ष इम बीतिया, सो सुर आयो चाल।
कहे ले हवे तु वेग शु, सजम चित्त उजमाल॥

३— नही तो देऊ सकट घणो, इणमे फेर न फार।
सियाल परे श्री वीर पे, लीधो सजम भार॥

४— मन मे ताम विचारियो, धिक् धिक् काम विकार।
पायो हीनता लोक मे, महतर घर अवतार॥

५— हवे करणी दुष्कर करू, कर्म करू सब छार।
मास मास तप धारियो, निरन्तर चौविहार॥

ढाल ४

राग—जमी कदमे रे जीव जाई उपनो।

१—नित नित प्रणमु रे मेतारज मुनी, तारण तरण जहाज।
परम वैरागी रे रागी धर्मना साधे आतम काज॥
नित नित प्रणमु रे मेतारज मुनी ॥टेर॥

२—सुत्तर थिविरा पासे रे सीख्या स्थिर मनें, नव पूर्व के रो ज्ञान।
ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो ध्यावे निर्मल ध्यान॥

३—कोई समे आया रे राजगृही वली, पारणो आयो रे तास।
प्रभु आज्ञा लेई गोचरी पागुर्या, भिक्षा निरवद्य काम॥

४—मारग जाता रे सुवर्णकार के श्रोलखिया रिखराय।
एह जमाई रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय॥

५—श्रावो पधारो रे श्रम घर साधु जी, कृपा करो मुनिराय।
बहरो सूझतो आहार छे माहरे, बोले ते एक उपाय ॥नि०॥

६—इम सुणी मुनीवर तिहा बहोरण गया, उभा रहियारे बार।
सोनी घर मेरे श्रायो वेग सु, वहोरावण भणी आहार ॥नि०॥

७—सुवर्ण जव था रे राय श्रेणिक ना, कुर्कुट श्रायो रे चाल।
सो जव चुगिने रे गयो ते शीघ्र शु, मुनिवर रहिया रे भाल॥

८—बाहिर श्रायो रे आहार वहरायने जव नाही दीठा रे नयण।
कहो किण लीधा रे कुण श्रायो इहा, कहे रोषे भर्यो वयण॥

९—मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहु, झूठज लागे रे मोय।
कुर्कुट चुगिया रे इम उच्चारता, हिंसा पातक होय॥

१०—देख्यो श्रदेख्यो रे काई न बोलणो, निश्चय कियो श्रणगार।
मोनज पकडी रे श्राण आराधवा, धन्य सो करुणा भण्डार॥

११—मौनज जाणी रे सुवर्णकार ते, श्राई रीस श्रपार।
इणना भेद मे थई चौरी सही, पूछे वारम्वार ॥नि०॥

१२—मारे चपेटा रे कहे वलि चोर तु, किम नही बोले रे साच।
मुनिवर क्षमा रे थारी तन मने, बोले नहि मुख वाच ॥नि०॥

१३—तिम तिम आधिको रे सो क्रोधभर्यो, सोचे ए श्रति धीठ।
कुट्या विन रस ए देवे नहि, मूर्ख चोल मजीठ ॥नि०॥

१४—मुनिवर पकडी रे ले गयो वाडा मे, शिर पर श्रालो रे चर्म।
खेंची ने बाध्या रे तावडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥नि०॥

१५—लोचन छटकीरे बाहिर नीकल्या, तड तड तुटी रे नाड।
मुनिवर स्थिर मन दृढ करी राखी यू, जेम सुदशन पहाड ॥नि०॥

१६—केवल पाई रे मुगत सिधाविया, अजर श्रमर श्रविकार।
देव बजावे रे दुदुभि गगन मे, बोले जय जय कार ॥नि०॥

१७—तिण समे मोली रे एक कठियारडे, नाखी धमक सु ताम।
छीठज कीनी रे कुर्कुट भय वशे, जव पडिया तिण ठाम ॥नि०॥

१८—सोनी देखी रे थर थर धूजियो, कीधो महोटो अकाज।
मैं मूढ भावे रे निर अपराधीया, घात करी रिखराज ।।नि०।।

१६—राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करसी कुटम्ब सहार।
एम जाणी ने सहु श्री वीर पें, लीधो सजम भार ।।नि०।।

२०—जप तप करणी रे कीधी सहु जणा, पाया सुर अवतार।
अनुक्रमे जासी रे कर्म खपाई ने, सहु तो मोक्ष मझार ।।नि०।।

२१—नव कोटी धन नव कन्या तजी, नव विध ब्रह्मचर्य धार।
नव पूर्वधर नव सवर करी, पाया भव जल पार ।।नि०।।

२२—एहवा मुनिवर क्षमा सागरू, तस गुण गाया उमाय।
'तिलोक रिख' दाखे रे चोथी, ढाल ए,सुणता पातक जाय ।।नि०।।

२३—सवत उगणीसे रे गुणचालीशमे, आषाढ वदि पडवा वखाण।
दक्षिण देशे रे पनाशहर मे, नानाकीपेठ मे जाण ।।नि०।।

२४—जोडज गाई रे विपरीत जो कह्यो, मिच्छामि दुक्कड मोय।
भणशे गुणशे रे विधि शुद्ध भाव शु ,तस घर मगल होय ।।नि०।।

दोहा

१— सौदागर मिलिया पछे, रहे वस्तु की चाव।
बीच दलाल मिले नही तो किमकर आवे भाव ॥

२— घर बैठा ही भाव सु, सब कारज सिद्ध थाय।
सेठ सुदर्शन किण विधे, गुरू ने वन्दन जाय ॥

ढाल १ — राग—आधाकर्मी रो दोषज

१— राजगृही श्रेणिक राजा जी रे,
समकित धारी चेलणा राणी रे।
कोम छत्तीसी वसता रे,
ज्यारा पुण्य जरा नही कसता रे ॥

२— राजा ने विचारी ने करणो रे,
बिना सोचे पाव न धरणो रे।
बिना सोची जिबान देवे रे,
ते ने पीछे पछतावो होवे रे ॥

३— ललितपुरुष पट् आया रे,
काम अपूर्व दिखाया रे।
तिण सु राय लुभाणो रे,
दियो वचन चूक गयो स्याणो रे ॥

४— कोई काज आज थे करसो रे,
तेनी सजा कभी नहीं पासो रे।

ते मद्य मासना भोगी रे,
तेनी बुद्धि नही कोई जोगी रे ।।

५— तिहा रहे अर्जुनमाली रे
ते ने बधुमती घर आली रे ।
गाव बाहिर फूलवाडी रे,
तेना बाप दादा लगाडी रे ।।

६— छाव भर फूलडा लावे रे,
तेथी आजीविका चलावे रे ।
प्रमोद महोत्सव आवे रे,
ले बधुमती बाग मे जावे रे ।।

७— ललीत पुरुष आगे बैठा रे,
देख बधुमती मोह मे पेठा रे ।
पापमती तेने आवे रे,
छहु मदिर मे छिप जावे रे ।।

८— बाप दादा सेवित जाणो रे,
मुद्गर पाणी यक्ष बखाणो रे ।
फूल लेई अर्जुन तिहा आयो रे,
बधुमती ने साथे लायो रे ।।

९— रख फूलडा ने शीप नमायो रे,
पट् ललीत पुरुष तिहा धाया रे ।
गाढ बधन दियो बाधी रे,
तेह नी नारी पिए विषय रस आधी रे ।।

१०— शीलरा जतन न कीधा रे,
मोह अध विषय रस पीधा रे ।
घन मेणरया सती तारा रे,
सीता द्रौपदी ने शील प्यारा रे ।।

११— ज्यारा परिणाम हुता चोखा रे,
देव टाल्या घणा रा दोखा रे ।
ज्यारा परिणाम हुता लूखा रे,
वाने मिलीया दादा ने भूखा रे ।।

१२— अर्जुन ने रीसज आई रे,
खाली पत्थर सेव्यो बाप भाई रे।
देव शक्ती हुती यदि वाको रे,
मारी केम गमावतो नारी रे॥

१३— जब देवने रीसज आई रे,
मारी काण न राखी काई र।
उठासू मुद्गर लियो हाथो रे,
सातो मार्या एकण साथो रे॥

दोहा

१— देव रीस उतरी नहीं, फिरे राजगृह वहार।
रोजाना ते मारतो, छह पुरुष एक नार॥

२— नव सो अठयोत्तर नर हण्या, एक सो त्रेसठ नार।
दिन नेरे पाच मास मे, ग्यारा सो इकतालीस दिया मार॥

ढाल २ राग—चित्त समाधी होवे

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रे तिलक समान रे माई।
एक करोड ने इगोतर लाख,
गाँव लागे तिण माय रे माई॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो॥

२— तिण रे माहि नालदी पाडो,
तिणरो घणो अधिकार रे माई।
चोदह तो चोमासा किया,
भगवत श्री महावीर रे माई॥

३— लाखा घर ने घणा क्रोडीघज,
अधिको रिद्ध रो मान रे माई।
शालीभद्र सा सेठ वसे तिहा,
पुण्य तणा निधान रे माई॥

४— सेठ सुदर्शन वसे तिण माही,
धर्म धुरधर धीरे रे माई।
इसडी वेला मे वदन जासी,
भगवत श्री महावीर रे माई ॥

दोहा

१— वीर जिनेश्वर समोसर्या, घणा मुनि परिवार।
गुणशील बाग मे उतर्या, तप सयम गुण धार ॥

२— दु दुभि नाद सुणी करी, हुई नगरी मे जाण।
दिल चाहे पण जावे नही, अर्जन नो भय आण ॥

३— सुदर्शन मन चितवे, जाई करू दर्शन।
चरण वदी निज मात ना, इण पर किनो प्रश्न ॥

ढाल ३

राग—सुग्रीव नगर सुहावणो

१—हाथ जोड ने इम कहे जी, साभल म्हारी जी माय।
आज्ञा दीजे मुझ भणी जी, मुझ मन याहिज चाय ॥हे मायडी॥
मैं वदु वीर जिनन्द ॥टेर॥

२—मात कहे सुत साभलो जी तारा मन मे खात।
यहाँ बैठा वन्दना करो ए, वीर जाणे सब बातरे जाया ॥
तु घर बैठा ही वाद ॥टेर॥

३—वलता कु वर इम कहे जी, साभल मोरी बात।
घर बैठा वन्दन करु, म्हारी जुगत नही छे बात ॥ए जननी ॥

४—ग्राम नगर आया साभलु जी, तो मन खुशियाली थाय।
भगवत आया बाग मे जी, यहाँ बैठु किण न्याय ॥ए मायडी॥

५—और साधु आया साभलु जी, तो पिण हर्ष अपार।
वक्त विशेखे वीर जी, म्हारे समकित रा दातार ॥

६—एकज सुत तु मायरे जी, धन सुख माया अपार।
इतरा ने छिटकाय ने तू मरण मुखे किम जाय ए जाया ॥
त अठेही जबैठो वाद ॥टेर॥

७—ये सुख सपति सायवी जी, मिली अनन्ती वार।
दर्शन दुर्लभ वीरना जी, म्हारे जीवन प्राण आधार॥

८—मन दृढता देखी करीजी, मन मे सोच्यो रे माय।
गद् गद् नेरगा इम कह्यो जी, ज्यू थाने सुखथाय रं जाया॥
थे वदो वीर जिनन्द ॥टेर॥

दोहा

१— घर सु बाहिर निकल्या, चाल्या एका एक।
मेल झरोखा जालिया, देखे लोक अनेक॥

ढाल ४

राग—ऊँची बणाई एक सेवीकारे।

१—चोवटा बीचे होई निसर्या रे, पादविहारी चाल्या सेठ रे।
जावता देख्या साथे ना हुआ रे, कायर हीया रा रह्या बैठ रे॥
जोई जो कायर रो हियो थर हरे रे ॥टेर॥

२—दुर्गुण ग्राही मुख सू इम कहे रे, यश को भूखो दीसे सेठ रे।
खबरपडसी वाहिरनिसर्या, पडसो जदअर्जु नमाली री फेट रे॥

३—सेठजी नगरी बाहिरनिसर्या रे, अर्जु नने आतो लिया जाण रे॥
मुग्दर उलारे पल हजार नो रे, डेढ मन पक्कारो प्रमाण रे।

ढाल ५

राग—सुग्रीव नगर।

१—भूमी कपडा सू पू जने जी, वैठा तिण हिज ठाम।
ए उपसर्ग उपन्यो जी, आप देख रह्याछो स्वाम।
जिनेश्वर थ्रव थारो रे आधार ॥टेर॥

२—पेला व्रत जो आदर्या जी, तुम पासे जिनराज।
हिव्डा व्रत छे मायरा जी, दो विध तीन प्रकार ॥जिन॥

३—इण उपसर्ग सु उवरू जी, तो लेसु अन्न पान।
नही तर माने आज से जी, जावजीव पच्चक्खाण॥

४—अर्जु न आयो उतावलो जी, फिरियो चहु ओर आय।
सेठ सुदर्शन ऊपरे जी, वारो हाथ नीचो नही जाय॥

५—झुक झुक देख्यो सेठ ने जी, मेखोमेख मिलाय ।
नजर मिलन्ता वासी गयो जी, ले मुग्दर देवता जाय ॥जि०॥

ढाल ६ राग—हम्मरीया री

१—अर्जुन धरती ढल पड्यो, सेठ लीयो उठाय हो श्रोता ।
हाथ जोडी अर्जुन कहे, इण विरीया कित जाय हो सायबा ।
अर्ज करू थासु विनती ॥टेर॥

२—धर्म आचारज माहरा, भगवत श्री महावीर हो अर्जुन ।
जाने मैं वन्दन निसर्यो, सुधर्यो काज सधीर ॥हो अ॥
भव थिति पाकी हो तुम तणी ॥टेर॥

३—अर्जुन कहे हू पापियो, क्या मुझ ने पिण साथ ।
ले जाय हो सायबा, पतित पावन म्हारा वीर ॥हो अ०॥
तू चाल थने ज्यु सुख थाय ॥टेर॥

४—अर्जुन सेठ दोनो चाल्या, आया भगवन्त पास ॥हो अ०॥
दर्शन देख जिनन्द रा, चरण वदी बैठा पास, हो अर्जुन ॥

५—भगवन्त दीनी देशना सुणी सभी चित्त लाय ॥हो अ०॥
सोची श्रद्धी अर्जुन कहे, मैं लेसु सयम भार ॥हो अ०॥
अर्ज करू सुणो विनती ॥टेर॥

६—वलता वीर ऐसी कहे, ज्यु थाने सुख थाय ॥हो अ०॥
विश्वास नही इण श्वास रो क्षिण २ माहे जाय । हो अ०॥
सयम लीनो भाव सु ॥टेर॥

७—सयम लीनो भाव सू दीधी समकित की नीव हो स्वामी ।
बेले बेले पारणा करावो, जावोजीव हो स्वामी ॥

८—तिण नगरी मे गोचरी, उठया अवसर देख ॥हो अ०॥
भात मिले तो पाणी नही मिले, धीरज धारी विशेख हो ॥

९—कोई मारे भाटा काकरा कोई दे मुख सु गाल हो ।
खम्या किधी अति घणी, ना आण्यो क्रोध लिगार हो ॥

ढाल ७

१— मुनि अर्जुन सजम लीयो।
प्रभू पासे पासे अभिग्रह किधो हो ॥
मुनिवर हद क्षमा दिल धारी ॥टेर॥

२— जावजीव छठ छठ पारणा करवा।
ससार समुद्र ज तरवा हो ॥मु०॥

३— देह री ममता टाली।
कोई काटवा कर्मा री जाली हो ॥मु०॥

४— राजगृही में गोचरी सिधाया।
जहाँ कीनो छे पेली वार धावो हो ॥

५— छठ पारणे गोचरी जावे।
लोग देखी मुनि रीसन लावे हो ॥मु०॥

६— घर माहि मुनिवर ने तेडे।
ज्यारा पातरा मे धूलज रेडे हो ॥मु०॥

७— कोई एक तो मारे चपेटा।
कोई नाखे मुनिवर ने हेठा हो ॥मु०॥

८— कोई बाल जवान ने बुढा।
मुनिने वयण सुणावे छे भूडा हो ॥मु०॥

९— कोई कहे मारिया मुझ पिता।
कोई कहे पाप लागे इणरो मुखजोता हो ॥

१०— कोई कहे मारी मुझ माता।
कोई कहे याने डामज देवो करताता हो ॥

११— कोई कहे मारिया मुझ भाई।
याने दीजे यमपुर पहुँचाई हो ॥

१२— कोई कहे मारी मुझ भगिनी।
याने देखता उठे हिये अगनी हो ॥

१३— कोई कहे मारी मुझ नारी।
याने दीजे मुख पर छारी हो ॥

१४— कोई कहे मारी मुझ बेटी।
यानें काढो पकड कर घेटी रे ॥

१५— कोई कहे बेटी बहुआ मारी।
याने दिजो तीन वार धिक्कारी हो ॥

१६— कोई कहे मारीयो मुझ काको।
याने जल्दी दूरा हाको हो ॥

१७— कोई कहे मारी मुझ सासू।
याने देखता आवे नयणा आसू हो ॥

१८— कोई कहे मरियो सुसरो ने सालो।
यारो मुख करिजे कालो हो ॥

१९— कोई करे वचन प्रहारा।
कोई घाव देवे तलवारा हो ॥

२०— कोईक तो कचरो डाले।
कोईक तो पाणी हिलोले हो ॥

२१— कोईक पत्थर फेंके रीसे।
मुनि ने देखी ने दातज पीसे हो ॥

२२— इण कर्म कीधा घणा खोटा।
याने कोई न देसी रोटा हो ॥

२३— इण कारण सयम लीधो।
इण वेष मुनि नो कीधो हो ॥

२४— इत्यादिक सुणी जन-वाणी।
मुनि रीस नही दिल आणी हो ॥

२५— सुणी ने मन मे एम विचारे।
मैं कीधा कर्म चडाले हो ॥मु०॥

२६— मैं मारिया मनुष्य जीव सेती।
दुख थोडो छे मुझने तेह थी हो ॥

२७— हण्या मनुष्य इग्यारे सौ ने इकताली।
म्हारी आतमा हुई घणी काली हो ॥

२८— आर्त्त रौद्र ध्यान निवारे।
मनि धर्म शुक्ल चित्त धारे हो ॥
२९— अन्न मिले तो नही मिले पाणी।
पानी मिले तो नही मिले अन्न हो ॥
३०— छह मास चारित्र पाली।
दिया सगला पाप ने टाली हो ॥मु०॥
३१— तप करता शरीर सुखायो।
अन्तकृतजी मे अधिकार जाणो हो ॥
३२— अर्धमास सलेखना आई।
अत समय केवल शिव पाई हो ॥मु०॥
३३— क्षमा सहित तप करणी।
ससार समुद्र ज तरणी हो ॥मु०॥
३४— उगणीस सौ गुणतीस को सालो।
यह तो जोड्यो है सतढाल्यो हो ॥
३५— "तिलोकरिखजी" गुरु सेवीजे।
यह तो नरभव सफल करीजे हो ॥
३६— विपरीत जोड कोई दाखी।
मिच्छामि दुक्कड छे सब साखी हो ॥
मुनिवर हद क्षमा दिलधारी ॥टेर॥

ढाल १

राग—हु तुम आगल सू कहु कन्हैया

१—चपा नगरी अति भली हू वारी,
दधिवाहन राय भूपाल रे, हू वारी लाल ।
पद्मावती री कुक्षे उपन्या हू वारी,
कर्म किया चण्डाल रे ॥हू०॥
करकण्डु जी ने वन्दना हू वारी ॥टेर॥

२—करकडु जी ने वदना, हू वारी,
पहला प्रत्येक बुद्ध रे ॥हू०॥
गिरवाना गुण गावता, हू वारी,
समकित थावे शुद्ध रे ॥हू० क०॥

३—लाधी है वास की लाकडी, हू वारी,
थया कचनपुरी रा राय रे ॥हू०॥
बाप सु सग्राम माण्डियो हु वारी,
साध्वी दिया समझाय रे ॥हू० क०॥

४—वृषभरूप देखी करी हू वारी,
प्रतिबोध पाम्या नरेश रे ॥हू०॥
उत्तम सयम आदर्यो हू वारी,
देवता दियो मुनि वेश रे ॥हू० क०॥

५—कर्म खपाय मुक्ति गया हू वारी,
करकण्डु ऋषिराय रे ॥हू०॥
"समय सुन्दर" कहे साधने हू वारी,
नित्य नित्य प्रणमु पाय रे । हू० क०॥

ढाल २

राग—दसवा स्वर्ग थकी चव्या जी

१—नगर कम्पिल पुर ना धणी जी, जय सेन नाम भूपाल ।
न्याय नीति प्रजा पाले जी, गुणमाला पटनार ॥दु०॥
दुमोही लाल, बीजो प्रत्येक बुद्ध ॥टेर॥
२—धरती खणन्ता निसर्यो जी, मुकुट एक अभिराम ।
बीजो मुख प्रतिबिम्बनो जी, दुमोही थयो जारो नाम ॥दु०॥
३—मुकुट लेवा भणी माडियो जी, चण्डप्रद्योतन सग्राम ।
ते अन्यायो कुशीलियो जी, किम सरे ज्यारो काम ॥दु०॥
४—इन्द्र ध्वजा अति सिणगारीया जी, जोता तृप्ति नही थाय ।
खलक लोक खेले रमे जी, मोच्छव माण्ड्यो राय ॥दु०॥
५—दुमोही तेहने देखियो जी, पड्यो मल मूत्र मझार ।
हा ! हा !! शोभा कारमी जी, ए सहु अस्थिर ससार ॥दु०॥
६—वैरागे मन वाल ने जी, लीनो हैं सजम भार ।
तप जप करणी आकरी जी, पाम्या है भवनो पार ॥दु०॥
७—बीजो प्रत्येक बुद्ध एहवो जी, दुमोही नाम ऋषि राय ।
"समय सुन्दर" कहे साधु ने जी, प्रणम्या पातिक जाय ॥दु०॥

ढाल ३

राग—बीरा मारा गज थकी उत्तरो

१—नगर सुदर्शन सार जीहो,
मणिरथ राज करे तिहा ।
२—कीनो है सब लो अन्याय, जीहो,
युगबाहु बधव मारीया ॥
३—मेणरया गई नास, जीहो,
पुत्र जायो रे उजाड मे ॥
४—पडी विद्याधर रे हाथ, जीहो,
शील पण राख्यो सती सावतो ॥
५—पद्मरथ नाम भूपाल, जीहो,
घुड़ला अपहरिया तिहा आविया ॥

६—ते तिहा दीठो वाल, जी हो,
पुत्र लेई पाछा वल्या ॥
(जी हो, पुत्र पाल मोटो कियो)

७—भोम्या नम्या सहु आय जी, हो,
नमी एवो नाम थापीयो ॥

८—थया मिथिला ना राय, जी हो,
सहस्र अन्तेउरी सामठी ॥

९—दाह ज्वर चढीयो देह, जी हो,
विन भुगत्या छूटे नहीं ॥

१०—सुण्यो है ककरण को शोर, जी, हो,
चदन घीसती कामण्या ॥

११—मन माहे कियो रे विचार, जी हो,
कुटुम्ब विटम्ब सम जाणीयो ॥

१२—उपन्यो है जाति स्मरण ज्ञान, जी हो,
उत्तम सयम आदर्यो ॥

१३ इन्द्र परीक्षा कीध, जी हो,
चढता परिणाम सु निसर्या ॥

१४—'समय सुन्दर" कहे साधना जी हो,
नित्य नित्य प्रणमु पाय ॥

ढाल ४ राग—आशावरं

१—पण्डुवर्धनपुर नो राजवी ॥मोरी सैया ॥
सिहरथ नाम नरिन्दो ए ॥

२—एक दिन घुडला अपहर्या ॥मो०॥
पडीयो अटवी दुख दण्ड ए ॥

३—पर्वत ऊपर देखीयो ॥मो०॥
सप्तभूमिया आवास ए ॥

४—कनकमाला विद्याधरी ॥मो०॥
परण्या है राय हुल्लासो ए ॥

५—नगरी भरणी राय सचर्यो ॥मो०॥
नग्गई नाम कहायो ए ॥

६—सैल करण राजा चल्यो ॥मो०॥
चतुरगी सेना लार ए ॥

७—मार्ग मे श्राम्बो फल्यो ॥मो०॥
फूटरा फल-फूल पान ए ॥

८—कोयलडी टहुका करे ॥मो०॥
मिजर रही लहकाय ए ॥

९—एक मिजर राजा ग्रही ॥मो०॥
ज्यु मत्री प्रधान ए ॥

१०—राजा फिर ने श्रावियो ॥मो०॥
वृक्ष देख्यो विन छाया ए ॥

११—हा! हा!! शोभा कारमी ॥मो०॥
क्षण माहे खेरू थाय ए ॥

१२—जातिस्मरण उपन्यो ॥मो०॥
लीनो सयम भार ए ॥

१३—"समय सुन्दर" कहे साधुजी ॥मो०॥
चौथो प्रत्येक बुद्ध ए ॥

ढाल ५

राग—प्रभाती

१—समकाले चारो चव्या,
समकाले हो थया कुल सिणगार ॥

सहेल्या ए, वदु रुडा साध ने,
ज्याने वद्या हो जावे जन्म रा पाप ॥टेर॥

२—ए तो समकाले सयम लियो,
समकाले हो करता उग्रविहार ॥स०॥

३—चारो दिशा सु चारो श्राविया,
समकाले हो यक्ष देवरा रे माय ॥स०॥

४—यक्ष चमक रह्या देखने,
कीने आपु वो म्हारी पूठ की वाण ॥स०॥

५—करकण्डु जी तरीणो काढियो,
काना मासु हो, खाज खिणवारे काज ॥स०॥

६—दुमो ही कहे माया अजु रखी,
काई छोड्यो हो सघलोई राज के ॥स०॥

७—नमी जी कहे निंदा मति करो,
निंदा माहे हो कह्यो मोट को पाप ॥स०॥

८—निग्गई कहे निंदा नही,
हित कहता हो पामे परम आनन्द ॥स०॥

९—समकाले जप तप किया,
समकाले हो दीना कर्म खपाय ॥स०।

१०—समकाले केवल लह्यो,
समकाले हो पहुंच्या मोक्ष मझार ॥स०

११—उत्तराध्ययन मे चालिया,
कथा मांहे हो, चारो प्रत्येक बुद्ध ॥स०

१२—"समय सुन्दर" कहे साधु ना,
गुण गाया हो, पाटणपुर शहर ॥स

३४ | विनयाराधना

दोहा

१— श्री जिनराज प्ररूपीयो, विनय मूल जिनधर्म ।
इम जाणो भवी आदरो, टूटे आठो ही कर्म ॥

२— विनय विना शोभा नाही, नाक विना जिम नूर ।
जीव बिना जिम देहडी, शस्त्र विना जिम शूर ॥

३— नमसी सो सुख आपने, इणमे शक न कोय ।
घाली तराजू तोलीए, नमे सो भारी होय ॥

४— आव आवली जम्बुदिक, उत्तम वृक्ष नमन्त ।
तिम सुगुणा जन जाणीये, मध्यम तरु अकडत ॥

५— मात पिताथी अधिक्तर, गुरु उपकार अपार ।
टालो अशातना सर्व थें, जो तरणो ससार ॥

६— धर्म गुरु मत वीसरो, पल पल गुण करो याद ।
सुगुणा जन सुणजो तुमे, गुरु गुण अगम अनाद ॥

ढाल १ राग—पास जिनेश्वर रे स्वामी

गुरु-गुण समरो रे भावे ॥टेर॥

१—गुरु गुण समरो रे भावे, मोक्ष मार्ग गुरु विना नहि पावे ।
गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥गु०॥

२—मोती जैसा मेलारे महीये, शक्कर सरीसा खारा मनइये ।
सुमेरु ज्यु समरोरे न्हाना, अणगमता जिज प्राण समाना ॥

३– अधीरज कुंजर रे जेहवा, केशरीसिंह जेम कायर कहेवा।
गुणधर जेहवा ऐ विराधी, भारडपखी जिम परमादी ॥

४—सुर गुरु जेहवा रे अभणीया वैश्रमणजेहवा मूजी सो थुणीया।
क्रोधी पूरा रे दीसे, टले नही जे कर्म शत्रु अरि से ॥

५—शशिसम उष्णतारे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो।
सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्री जिन जेहवा लोभी विख्याता ॥

६—शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भव तरणी।
भवजलतारक रे वाणी, दे उपदेश सदा सुखदाणी ॥

७—मोहनीकम रे अन्धो, करतो नीच अकारज धधो।
दुर्गति पडतो रे राखे, निर्वद्य वैण मधुर सत्य भाखे ॥

८—सतुगुरु करुणा रे कीनी, बोध बीज समकीत घट दीनी।
भर्म मिटायो रे भारी, सत्गुरु सम नही कोई उपगारी ॥

९—महिपति सजती रे नामे, पहुतो वन मृग मारण कामे।
गदभाली मुनिवर रे तार्यो, सजम लेई निज कारज सार्यो ॥

१०—परदेशी हत्या रे करतो, पाप करण सो रच न डरतो।
केशी गुरु तार्यो रे सोई, गुणचालीस दिन मे सुर होई ॥

११—दृढप्रहारी रे नामे, चार हत्या करी जातो पर गामे।
सत्गुरु बोधज रे दीनो, सजम देई शिववासी सो कीनो ॥

१२—एम अनन्ता रे प्राणी, तरिया सत्गुरु की सुणी वाणी।
सेवा करसी रे भावे, सो नर भव भव मे सुख पावे ॥

१३—जिणे गुरु आज्ञा रे धारी, सो जिन आज्ञा मे नर नारी।
गुरुकी तो महिमा रे भारी, "तिलोक रिख" कहे नित बलिहारी ॥

दोहा

१— गुरु कारीगर सारिखा टाकी वचन उच्चार।
पत्थर की प्रतिमा करे, जिम सत्गुरु उपगार ॥

२— मूल तेंतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार।
गुरुनी टालो आशातना, जो तरणो ससार ॥

३— राग द्वेष पक्ष छोड जो, मत करजो मन रीश ।
टाल्याथी सुख पावसो, भाख्यो श्री जगदीश ।।

ढाल २

राग—निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई

जाणी करे आशातना प्राणी,
जिणने आगे नरक निसाणी ।।टेर।।

१— अडतो आगे पाछो वरोवर, उठै बैठे चाले ।
एक एक मे तीन गणीजे, ए नव भेद दिखावे ।।जाणी०।।

२— गुरु सगाते थडिल पहुचा, शुचि करे पहेली चेलो ।
कोइक वन्दवा आवे तेहने, बतलावे गुरु पह्लो ।।जा०।।

३— गुरु शिष्य आवे साथे उपाश्रय, पहेली ईर्या ठावे ।
अवराने आगल आलोवे, आहार पाणी जे लावे ।।जा०।।

४— गुरु पहेली वतलावे परने, देवण की मन वारो ।
गुरुने विन पूछा पर सोपे, सोलमी ये अवधारो ।।जा०।।

५— लूखो सूखो निरसो विरसो, गुरुने देनो चहावे ।
सरस आहार मन गमतो देखी, आप लेई हरखावे ।।जा०।।

६— रात्रे सूतो गरजी पूछे कुण सूतो कुण जागे ।
सुनकर उत्तर दे नही जाणी, कामज करणो लागे ।।जा०।।

७— गुरु बतलावे कारण पडिया, उत्तर दे आसण बैठो ।
उठण केरो आलस अगे, काम करण मे ढीठो ।।

८— गुरुबतलायो कोईक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ।
जाणे कोईक काम वतासी, राखे मन अण मणियो ।।

६— गुरु वतलायो बैठो बैठो, शु कहो ! शु कहो, बोले ।
तहतवाणी मयेणवन्दामी, सो तो कहे ना भोले ।।

१०— गुरु गरडा तपसीनी वैयावच्च, करता निर्जरा भारी ।
एम सुणी सो कहे अपुठो, तुमने शु नहि प्यारी ।।

११— गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञान दीपक उजवालो ।
कहे अपुठो गुर सू मूरख, पोते क्यो नही चालो ।।जा०।।

१२— तु तुकारी देवे गुरु ने, ऐसो मूरख प्राणी।
गुरु उपदेश देवे भविजन ने, श्राणे चित्त श्रकुलाणी ।जा०॥

१३— गोचरी वेला हुई भाभेरी, दिन चढ्यो नही दीसे।
वखाण थोभे नही भूक्ख लागी, बोले भरियो रीसे ॥जा०॥

१४— गुरुजी श्रर्थ करे भविजनने, बीच बीच माही बोले।
कहे थाने शुद्ध श्रर्थ न श्रावे, वर्ष निकाल्या भोले ॥जा०॥

१५— गुरुजी कहेता शिष्य पयपे, याद पुरी नही थाने।
मैं कहु सावत बात वणाई, गुरु कथा छेदी वक्खाणे ॥

१६— गुरु वखाण करे तीण माही, कोईक काम वताई।
पर्पदामाही भेदज पाडे, मूरख समभे नाई ॥जा०॥

१७— गुरु वखाण करीने उठे, तिणहीज सभा मझारो।
सोहीज शासन सोहीज गाथा, करे श्रर्थ विस्तारो ॥जा०॥

१८— हीणता जणावे निज गुरु केरी, पडित पणो बतावे।
लोकसरावण सुण करमूरख, मनमे श्रति श्रकडावे ॥जा०॥

१९— गुरुना श्रासन श्रोघो पु जणो, पग सु ठोकर देवे।
गुरु ने श्रासणे सुवे वेसे, ऊ चो श्रासण सेवे ॥जा०॥

२०— गुरुनी प्रशमा करे न पोते, सुणकर श्रति मुरझावे।
तेंतीस आशातना मूल कहीसो, जडामूलसु ढावे। जा०॥

२१— गुरुने श्रागे वस्तर केरी, पालठी मारी वसे।
कर वान्धे किरसाण जु भोलो, टेके बैठे विशेषे ॥जा०॥

२२— पाय पसारी श्रालस मोडे, पग पर पग चढावे।
विकया माडे कडका मोडे, गुरुने नही मनावे ॥जा०॥

२३— हड हड हँसे शर्म नहीं राखे, जिम तिम बोले वाणी।
काम करे गुरुने विण पूछ्या, बीच बीच बात ले ताणी ॥

२४— गुरुजी कोइक जिनस मगावे, जावण को मन नाही।
उत्तर टाले चोज लगाई, ते सुण जो चित्त लाई ॥जा०॥

२५— हालवसत नही गोचरी केरी, श्रथवा नर नही घर मे।
दिया होसी किंवाड वारणें, मिले न श्रण श्रवसर मे ॥जा०॥

२६— वेहरावणरा भाव न दीसे, अथवा जिणरे नाई।
असुजता के सूजता होसी, वस्तु न मिलसी ठाई ।।जा०।।

२७— अवार तो हु आखर सीखु, लिखमु पानो पूरो।
पलेवणो तथा थडिल जाणो, अथवा घर छे दूरो ।।जा०।।

२८— सोतो कन्जूस तथा मिथ्यात्वी, मुझने नहि पीछाणे।
शर्म आवे मुझ भीख मागता, जाऊ केम अजाणे ।।

२६— मुझने ठण्डवाय नही सोसे, तडको चडिया जामु ।
कहे उन्हालो पावबले मुझ दिनढलीयाथी सिधासु ।।जा०।।

३०— चौमासे कहे कीचड वहुलो, पग लपसे छे महारा।
भूख लागी थकेलो चढीयो, पग अकड्या छे सारा ।।जा०।।

३१— म्हारा शरीर मे अडचण दीसे, चालण शक्ती नाई।
एक बार मे आणी दीधो, अव भेजो परताई ।।जा०।।

३२— एक काम करावे तिण मे, जाणी ढील लगावे।
जाणे जलदी करसु कारज, फेर मुझ और वतावे ।।जा०।।

३३— विनय वन्दना करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सिखावो।
पाछे कर जो काम तुम्हारो, पहेला वोल बतावो ।।जा०।।

३४— सयम लीधो मैं तुम पासे एता दिन के माई।
काम काममे काल बीतावो, ज्ञान सिखावो नाई ।।जा०।।

३५— अवगुण आपणा देख नाई, वात करण को रसियो।
पेट भरीने निदज लेवे, विकथा सणवा रसियौ ।।जा०।।

३६— समीसाज थी पाय पसारे, भणियो सो न चितारे।
टेके बैठा अक्षर सीखे, भली सीख नहो धारे ।।जा०।।

३७— गुरु की केहणी करे वैठ जु अवगुण ताके पर का।
सुअर भिष्टा खावे खीर तज, ए लक्षण तिण नरका ।।जा०।।

३८— अभिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे छन्दे।
आप करे गुरु छानो कारज, परना अवगुण वि॰दे ।।जा०।।

३९— गुरु देखो ने अक्षर घोवे, दीसे घणो सयाणो।
पीठ फेरीया छान्दे चाले, जाणे जग को राणो ।।जा०।।

४०— आपणे हाथे कामज विगडे, परने माथे नाखे ।
गुरु पूछ्या घुरावि श्वान ज्यु, रच न साचु भाखे ।।जा०।।

४१— और आशातना भेद घणेरा, पुरा कह्या न जावे ।
"तिलोक रिख" कहे ढाल दूसरी, भविकसुणी हरकावे ।।जा०।।

दोहा

१— जे अविनय थी डरे नही, करे आशातना कोय ।
ते दु ख किण परे भोगवे, साभलजो भवी लोय ।।

२— सड्या कान की कूतरी, जीण घर जावे चाल ।
नीकाले घुर घुर करे, इण विध होय हवाल ।।

३— परभव किलिमष देव मे, उपजे सो अविनीत ।
तिहायी मरी चउगति मे होवे पूरी फजीत ।।

४— गुरु वालक वृद्ध अणभण्या, ते पण अविनय टाल ।
अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल ।।

५— सूतो सिह जगावणो, खेर अगारे पाय ।
गिरि खणवो,जेम नख थकी,पोते अशाता थाय ।।

६— करतल मारे शक्ती पर, विष हलाहल खाय ।
मिर्चा आजे आख मे, पोते अशाता थाय ।।

७— एतो देव प्रभाव थी, विघ्न करे नही काय ।
आशातना फल ना टले, करता कोई उपाय ।।

८— एक वचन ज्ञानी तणा जो धार नर नार ।
तासअविनय तजवो कह्यो दशवैकालिकमझार।।

६— जिण पासे धारण कियो सजम शिव दातार ।
तेहनी करे आशातना, सो मूरख सरदार ।

१०— नीतिशास्त्रे पुन दाखीयो सातवार होय श्वान ।
सो भव लहे चाडालना, आगे लहे दु ख खान ।।

११— गुरुनी निंदा जे करे, महापापी कहेवाय ।
सर्व शास्त्रे दरसावियो, मुक्ती कदही न जाय ।।

१२— के बहेरो के वोबडो, के दुर्बल के दीन।
जिन मारग पावे नही, जो करे गुरु की हीन ॥

१३— इम जाणी भवि प्राणिया, करो विनय गुरु देव।
ते सुणजो मुगुणा तमे, किण विध करी ये सेव ॥

ढाल ३ राग—सोई सयाणो अवसर साधे।

विनय करीजे भाई, विनय करीजे।
विनय करीने शिव रमणी वरीजे ॥टेर॥

१— श्री गुरु सेव करो मन रगे,
मोह क्लेश कुमति सब भगे।
सजम किरिया गुरु मुख धारो,
लुल २ नमन करी गुरु ठावो ॥वि०॥

२— गुरु बतलाया तहेत उच्चारो,
क्रोध मान सब दूर निवारो।
कठिण सुणी श्री गुरुजी की वाणी,
रीश करो मत हित पिछाणी ॥

३— फरमावे गुरु कामजो कोई,
जेज न करणो अवसर जोई।
गुरु मुझ ऊपर कृपा किनी,
निर्जरा रूप प्रसादी दीनी ॥वि०॥

४— अग चेष्टा श्री गुरकी देखी,
सो कारज करणो सुवि सेखी।
वैयावच्च करता आलस छोडो,
भक्ती किया पहले मत पोडो ॥वि०॥

५— प्रश्न पूछता हाथ ज जोडो,
शीश नमावो मानज मोडो।
मधुर वचन प्रशसा करके,
ज्ञान सीखो अति आनन्द धरके ॥वि०॥

६— छोटा मोटा सु हिल मील रहीजे,
अधिक भण्या को गर्व न कीजे।

खारईसको किण सु राखणो नाई,
मारो थारो करो मत काई ।।वि०।।

७— वाद विवाद छोड मत माडो,
विकथा वात तणो रस छाडो ।
वचन कहो मती कोई मर्मनो,
मनसे सदा डर राखो कर्मनो ।।

८— रीशवसे पातरा मत पटको,
छिजको खाई दुजापर तटको ।
जेम तेम बड वड पण नहि करीये,
लोक व्यवहार सु अधिको डरिये ।।

९— ऊँचे शब्द करो मत हेला,
सुणकर लोक हो जावे ज्यु भेला ।
जैनमार्ग की लघुता आवे,
सासारिक सगा सुणी दु ख पावे ।।वि०।।

१०— प्रियधर्मी की आस्ता छुटे,
क्रोध रिपु सजम धन लुटे ।
ऐसो काम करो मत स्याणा,
इणभवे निन्दा आगे दु ख पाणा ।।

११— रिद्धि छोडी जिणरो गर्व न कीजे,
अधिक गुणी पर नजर जो दीजे ।
आगल का अवगुण मत देखो,
अपणा अवगुण को करो लेखो ।।वि०।।

१२— बालक तरुण वृद्ध जो जो नरनारी,
सब थी जीकारे बोलो विचारी ।
तु तु तुकारो ओछी बोली,
करीये कछु नही ठट्ठोरोली ।।वि०।।

१३— नीचे देखी धीरे पग मेली,
न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो ।
सजम काम मे निर्जरा जाणो,
उज्जवल भावे शका मत आणो ।।वि०।।

१४— पच व्यवहार प्रमाण करीजे,
निश्चयव्यवहार अरु नयसमजीजे।
उत्सर्ग अरु अपवाद पिछाणो,
सतगुरु वयरण करो परमाणो ।।वि०।।

१५— इण विध करणी भवजल तरणी,
दु ख दुर्गति आपद भय हरणी।
श्रीजी ढाले विनय रीत वरणी,
"तिलोक रिख" कहे शिववरणी ।।

दोहा

१— मान बढाई ईर्ष्या, क्रोध कपट दे टाल।
म्हारो थारो छोड के, चाले रुडी चाल ।।

२— विनय करे गुरु देव को, करे आज्ञा प्रमाण।
तिण ने महागुण निपजे, ते सुणजो भवियाण ।।

ढाल ४

राग—रे भाई सेवो साधु सयाणा

रे विनय तणा फल मीठा, हलुकर्मी सुण कर हर खावे।
मुरझावे नर धिठा रे भाई, विनय तणा फल मीठा ।।टेर।।

१—प्रगमे भलो ज्ञान विनीत शिष्य ने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे।
भर्म गया सु समकित पुष्टि, समकीत सु व्रत छाजे रे ।।भा०।।

२—व्रत पाल्या सु धन धन वाजे, आदर अधिको थावे।
खमा खमा करे नर नारी, मनगमती वित्त पावे रे ।।भा०।।

३—विनयवत शिष्य ने सीरा चोखो, होवे शु शालाकारी।
इण भव माही ऋद्ध सिद्ध सम्पत, परभव मे सुख त्यारी रे ।।भा०।।

४—होय आराधक सुर पद पावे, महेल मनोहर भारी।
रतन जडीत पच रग मनोहर, वास कुसुम छवि प्यारी ।।भा०।।

५—ककर कटक पक रजादिक, नीच अपावन नाई।
जाली झरोखा झगमग दीपे सुगन्ध रही महकाई रे ।।भा०।।

६—बत्तीस नाटक पडे निस दिन जठे, राग छविशे आलापे।
धपमप धप मप वाजे मृदगा, सुणता श्रवण नहीं धापे रे ।।भा०।।

७—नाना प्रकार हार ज्या लटके, तोरण छे पच प्रकारें।
आयडता होय नाद मनोहर, जाणे कोई देवी उच्चारे ।।भा०।।

८—दोय सहस्र वर्ष छोटा नाटक मे, मोटा मे दश हजारो।
एक मुहूर्त को काल ज्यु बीते, विनय करणी फल धारो ।।भा०।।

६—पल सागर स्थिति एम निकाली, तिहाथी चवी नर थावे।
- सजम धारी कर्म निवारी, ज्ञान केवल सोहि पावे रे ।।भा०।।

१०—होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो।
विनय करण फल पार न पावे, शास्त्र को भेद पहिचाणो रे ।।भा०।।

११—सुणता तो आनद वढावे, गुणता बुद्धि प्रकाशो।
पालता तो शिव ना फल लहीये, राखो चित्त विश्वासो रे ।।भा०।।

१२—सवत् उगणीसे छत्तीस सालें, तेरस वदि वैशाखें।
विनय फल ढाल कही पर चौथी, सर्व सिद्धान्त को साखें ।।भा०।।

१३—देश दक्षिण विचरता आया, खानरा हिवडा मझारो।
"तिलोक रिख" कहे मून धर्म का, करवा पर उपगारो रे ।।भा०।।

१४—सुणकर रागद्वेष मत करजो, समुच्चय दियो उपदेशो।
नही मानो तो मरजी तुम्हारी, निज करणी फल लहेशो ।।भा०।।

१५—दान शीयल तप भावना भावो, ए जग मे तत सारो।
पालो आराधो विनय यथाथ, उतर्या चाहो भव पारो ।।भा०।।

'कलश'

१—विनय करणी, दुख हरणी सुख निसरणी, जाणिये।
इणलोक शोभा, आगे शुभ गति, सिद्धात न्याय वखाणिये ।।
धर्म मूल सो, विनय दाख्यो, सीचे तो फल पाईये।
कहे 'रिख तिलोक" भविका, आराध्या शिव जाईये ।।

३५ | चार धर्मका संवाद

दोहा

१— प्रथम जिनेश्वर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद।
दान शील तप भावना बोलु सहष सवाद॥

२— वीर जिनन्द समोसर्या, राजगृही उद्यान।
समवशरण देवे रच्यो, बैठा श्री वर्धमान॥

३— आई बारा परिषदा, सुणवा जिनवर वाण।
दान कहे जग हु बडो, मुझ ने प्रथम वखाण॥

४— सांभल जो सहु को तुमे, कुण छे मुझ समान।
अरिहत दीक्षा अवसरे, आपे पहिले दान॥

५— प्रथम प्रहर दातार नो, सहु कोई ले नाम।
दीधा री देवल चढे, सीझे वछित काम॥

६— तीर्थंकर ने पारणे, कुण करसी मुझ होड।
वर्षा करू सौनैया तणी, साढी बारा क्रोड॥

७— हु जग सगलो वश करू, छे मुझ मोटी बात।
कुण कुण दान थकी तर्या, ते सुण जो अवदात॥

ढाल १ राग—ललना

१— धन्नो सार्थवाह साधु ने, दीधो घृत नो दान ॥ललना॥
तीर्थंकर पद मे दीयो, तिण से मुझ अभिमान ॥ललना॥
दान कहे जग हूँ बडो ॥टेर॥

२— दान कहे जग हूँ बडो, मुझ सरीखो नही कोय॥ ल० ॥
ऋद्धि वृद्धि सुख सम्पदा, दाने दौलत होय॥ ल० ॥

३— सुमुख नामे गाथापति, प्रतिलाभ्यो अणगार ।। ल० ।।
कुँवर सुवाहु सुख लियो, ते तो मुझ उपकार ।। ल० ।।

४— पाचसे मुनि ने पारणे, देतो, वहरी आण ।। ल० ।।
भरत थयो चक्रवर्ती भलो ए पिण मुझ फल जाण ।। ल० ।।

५— मासखमण ने पारणे, प्रतिलाभ्यो ऋषिराय ।। ल० ।।
शालिभद्र सुख भोगव्यो, दान तणे सुपसाय ।। ल० ।।

६— आप्या उडद ना वाकुला, उत्तम पात्र विशेख ।। ल० ।।
मूलदेव राजा थयो, दान तणा फल देख ।। ल० ।।

७— प्रथम जिनेश्वर ने पारणे, श्री श्रेयास कुमार ।। ल० ।।
इक्षु रस वहरावियो, पाम्यो भव नो पार ।। ल० ।।

८— चन्दनवाला वाकुला, प्रतिलाभ्या महावीर ।। ल० ।।
पाच द्रव्य प्रकट थया, सुन्दर रूप शरीर ।। ल० ।।

६— पूर्वभव पारेवडो, शरण राख्यो सूर ।। ल० ।।
तीर्थंकर चक्रवर्ती तणो, प्रगट्यो पुण्य अकुर ।। ल० ।।

१०— गज भवे सुसल्यो राखीयो, करुणा किधी सार ।। ल० ।।
श्रेणिक ने घर अवतर्यो, अगज मेघ कुमार ।। ल० ।।

११— इम अनेक मे उद्धर्या, कहता न आवे पार ।। ल० ।।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, पहलो दियो अधिकार ।। ल० ।।

दोहा

१— शीयल कहे सुण दान तु, किस्यो करे अहकार ।
आडम्बर आठे प्रहर, जाचक सु व्यवहार ।।

२— अन्तराय वली ताह रे, भोग करम ससार ।
जिनवर कर नीचा करे, तुझने पडो धिक्कार ।।

३— गर्व मा कर रे दान तु मुझ पूठे सहु कोय ।
चाकर चाले आगले, तो शु राजा होय ? ।।

४— जिनमन्दिर सोना तणो, नवु निपजावे कोय ।
सोवनकोडी दान दे, शील समो नहि होय ।।

५— शीयले सकट सवही टले, शीले सुजस सोभाग।
शीले सुर सान्निध्य करे, शीयल वडो वैराग॥

६— शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि केहरी, भय जावे सब भाग॥

७— जन्म मरण ना भय थकी, मैं छोडाव्या अनेक।
नाम कहु छु तेहना, साभल जो सुविवेक॥

ढाल २ राग—पास जिणद जुहारी ए

१—शील कहे जग हु वडो, मुझ वात सुणो अति मिठी रे।
लालच लावे लोकने, मैं दान तणी वाता दीठी रे॥
शील कहे जग हु वडो ॥टेर॥

२—कलह कारण जग जाणीये, वली व्रत नही पिण काई रे।
ते नारद मे सीझ्यो, जोवो मुझ अधिकाई रे॥

३—बाहे पहेर्या बेरखा, शख राजा दोषण दीधो रे।
काप्या हाथ कलावती, ते मै नवपल्लव कीधा रे॥

४—रावण घर सीता रही, तो रामचन्द्र घर आणी रे।
सीता कलक उतारी यु, मै पावक कीधो पाणी रे॥

५—चम्पा पोल उघाडिया, चालनी काढ्यो नीरो रे।
सती सुभद्रा जश थयो, मै तस कीधी भीरो रे॥

६—राजा मारण माडियो, अभिया दोषण दाख्यो रे।
शूली सिंहासण कियो, मै सेठ सुदर्शन राख्यो रे॥

७—सीयल सन्नाह मन्त्रीश्वरू, आवतो अग्दिल थम्भ्यो रे।
ते पिण सन्निध मै करी, वली धर्म कारज आरम्भ्यो रे॥

८—पहेरण चीर प्रकट किया, म अठोत्तरसो वारो रे।
पाण्डव हारी द्रौपदी, मैं राखी माम उद्धारो रे॥

६—ब्राह्मी चन्दनबालिका, वली शीलवती दमयन्ती रे।
चेडानी साते सुता, राजमती शिवा कु ती रे॥

१०—इत्यादिक मै उद्धर्या, नर नारी केरा वृन्दो रे।
'समय सुन्दर' प्रभु वीर जी, पहलो मुद आनन्दो रे॥

दोहा

१— तप बोल्यो तटकी करी, दान ने तू अब हीन ।
पण मुझ आगल आवियो, साभल रे तू शील ।।

२— सरस भोजन ते तज्या, न गमे मीठा नाद ।
देह तणी शोभा तजी, तुझने किसो स्वाद ।।

३— नारी थकी डरतो रहे, काया किमो वखाण ।
कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ।।

४— कोई विरलो तुझन आदरे, छोड तुझ ससार ।
आप एकलो भाजता, बीजा भाजे चार ।।

५— कर्म नीकाचित तोडवा, भाजु भव भय भीम ।
अरिहत मुझने आदरे, वर्ष छमासी सीम ।।

६— रुचक नन्दीसर पर्वते, मुझ लब्धे मुनि जाय ।
मेरु पर्वतकी चूलीका आनन्द अग न माय ।।

७— मोटा जोजन लाखना, लघु कथुवा आकार ।
गज रथ पायक तणा, रुप करे अणगार ।।

८— मुझ कर-स्पर्श उपशमे, कुष्टादिक नो रोग ।
लब्धि अठावीस ऊपजे, उत्तम तप सयोग ।।

९— जे मैं तार्या ते कहु, सुण जो मन उल्लास ।
चमत्कार चित्त पामसो, दे सो मुझ शावास ।।

ढाल ३

राग—नणदल ए

१— दृढप्रहारी अति पापीयो, हत्या किधी चार ।।हो सुदर।।
ते म तीणए भव उधर्यो, मुक्यो मुगति मझार ।।हो सुदर।।
तपसरीखो जग को नही ।।टेर।।

२— तप सरीखो जग को नही, तप करे कर्म नो सूड ।।हो सु०।।
तप करवो अति दोहिलो, तप माहे न वहे कूड ।।हो सु०।।

३— सात माणस नित्य मारतो, करतो पाप अघोर ।।हो सु०।।
अर्जुनमाली मैं उद्धर्यो, छेद्या कर्म कठोर ।।हो सु०।।

४— नन्दीषेण ने मैं कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव ।।हो सु०।।
बहोत्तर सेंस अन्तेउरी, पुण्य भोगे नित्यमेव ।।हो सु०।।
५— रूप कुरुप कालो घणो, हरिकेशी चंडाल । हो सु०।।
सुर नर कोडी सेवा करे, ते में कीध निहाल । हो सु०।।
६— विष्णु कुंवर लब्धि कीयो, लाख जोजन नो रूप ।।हो सु०।।
श्री सघ केरे कारणे, मुझ मे शक्ति अनूप ।।हो सु०।।
७— चवदे सेंस अणगार मे, श्री धन्नो अणगार ।।हो सु०।।
वीर जिनन्द वखाणीयो, ये पिण मुझ अधिकार । हो सु०।।
८— कृष्ण नरेसर आगले, दुक्कर करणी कीध ।।हो सु०।।
ढढण नेमि प्रशसीयो, मुझ शक्ते हुओ सीध ।।हो सु०।।
९— नन्दीषेण वहोरण गयो, गणिका कीधी हास ।।हो सु०।।
वृष्टि करी सोनैया तणी, मे तसु पुरी आश ।।हो सु०।।
१०— इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपसी जीव ।।हो सु०।।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, राखो मेर अतीव ।।हो सु०।।

दोहा

१— भाव कहे तप तु कस्यो, छेड़्या करे कषाय ।
पूर्वकोडी तप तप्यो,, खिण मे खेरू थाय ।।
२— खदक आचारज प्रते, ते बलाव्यो सर्वदेश ।
अशुभ नियाणो तु करे, क्षम्या नही लवलेश ।।
३— द्वीपायण ऋषि दुहव्या, शम्ब प्रद्युम्न साह ।
तपसी क्रोध करी तिहा दीधो द्वारिका दाह ।।
४— दान शील तप साभलो, मकरो झूठो गुमान ।
लोक सहु को साखदे, धर्म भाव प्रधान ।।
५— आप नपुसक थें त्रणे, दे व्याकरण ते साख ।
काम सरे नही को तुमे, भाव भने मुझ पाख ।।
६— रस विना धनध न नीपजे, जल विना तरु नही वृद्धि ।
रसवती नही लवण बिना तिम मुझविन नही सिद्धि ।।

७— मन्त्र तन्त्र मणी औषधी, देव धर्म गुरु सेव।
भाव बिना ते सब वृथा, भाव फले नित्यमेव ॥

८— दान शील तप जे तुमे, निज निज कह्या वृतान्त।
तिहा जो हू न हूँ तो, तो कोई सिद्धि न जात ॥

९— भाव कहे मैं एकले, तार्या वहु नर नार।
सावधान थई साभलो, नाम कहू लो धार ॥

ढाल ४ राग—कपूर होवे अति ऊजलो रे

१—वन माहे काउस्सग रह्यो रे प्रसन्नचन्द्र ऋषि राय।
तेने मे कीधो केवली रे, तत्क्षिण कर्म खपाय ॥सौभागी॥
सौभागी सुन्दर भाव बडो रे ससार ॥टेर॥

२—थड ने डाली समो जी, एतो बीजा मुझ परिवार।
दाना दि बिन हूँ एकलो रे, पहुँचाँऊ भवपार ॥सौ० भा०॥

३—वश ऊपर चढियो खेलवारे, एलाची पुत्र अपार।
केवलज्ञानी मैं किया रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥सौ० भा०॥

४—भूख तृषा खमे अतिघणी रे, करतो क्रूर आहार।
केवल महिमा सुर करे रे कुरगडु वे अणगार ॥सौ० भा०॥

५—लाभ थी लोभ वधे घणो रे, आण्यो मन वैराग।
कपिल मुनि थयो केवली रे, ते मुझने सौभाग ॥सौ० भा०॥

६—अर्णीका सुत गच्छ नो धणी जी, खिणजधा वली जाण।
कीधो अन्ते गुरु केवली रे, गगाजल गुण खान ॥सौ० भा०॥

७—पन्द्रे से तापस भणी रे, दीधी गोतम दीख।
तत्खीण कीधा केवली वे, जो मुझ मानी सीख ॥सौ० भा०॥

८—पालक घाणी पीलीया रे, खन्दक सूरि ना शिष्य।
जन्ममरण थी छोडाविया रे, आपे मुझ अशीष ॥सौ० भा०॥

९—चण्डरुद्र ने चलता रे, दीधो दण्ड प्रहार।
नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पण तिणी वार ॥सौ० भा०॥

१० - धन धन खाती खातर भणी रे, प्रतिलाभ्यो अणगार।
मृगलो भावना भावतो रे, गया पचम कल्प मझार ।।सौ० भा०।।

११—निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मन थी मान।
मृगावती ने मैं दीयो रे, निर्मल केवलज्ञान ।।सौ० भा०।।

१२—मरुदेवी, गज उपरे रे, पेखी पुत्र नी रिद्ध।
मुझ ने मन माहे धर्यो रे, तत्क्षिण पाई सिद्ध ।।सौ० भा०।।

१३—वीर वदन चल्यो मारठो रे, चाप्यो चपल तुरग।
दर्दुर नामे देवता रे, थयो ते मुझ ने सग ।।सौ० भा०।।

१४—प्रभु पाय वदन निसरी रे, दुगला नामे नार।
कालधर्म बीच मे करी रे, पहुची स्वर्ग मझार ।।सौ० भा०।।

१५—काया नी शोभा कारमी रे, रूप रो कीसो अभिमान।
भरत आरेसा भवन मे रे पाम्यो है केवलज्ञान ।।सौ० भा०।।

१६—अपाडाठाकर कलानीलो रे, प्रगट्यो भरत स्वरूप।
नाटक करता पामीयो रे, केवल ज्ञान अनूप ।।सौ० भा०।।

१७—दीक्षा दिन काउस्सग्गरह्यो रे, गजसुखमाल मसाण।
सोमले शीश प्रज्वालियो रे, सिद्ध हुआ सुजाण ।।सौ० भा०।।

१८—गुणसागर थयो केवली रे, साभल पृथ्वीचन्द।
पोते केवल पामीयो रे, सेव करे सुर इन्द्र। सौ० भा०।।

१६—एम अनेक मैं उधर्या रे, मूक्या शिवपुरी वास।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी रे, मुझ ने प्रथम प्रकास ।।सौ०।।

दोहा

१— वीर कहे तुमे साभलो, दान शील तप भाव।
निंदा छे अति पापिणी, धर्म करे प्रसाव ।।

२— पर निंदा करता थका, पापे पिण्ड भराय।
राग द्वेष बाधे घणा, दुर्गति प्राणी जाय ।।

३— निंदक सरीखो पापीयो, भुण्डो कोय न दीठ।
वली चण्डाल समो कह्यो, निंदक मुख अदीठ ।।

४— आप प्रशसा आपरी, करता इन्द्र नरिन्द्र ।
लघुता पामे लोक मे, नासे निज गुण वृन्द ।।

५— को केहनी म करो तुमे, निन्दा ने अहकार ।
आप आपणे ठामे रहो, सहु को भलो ससार ।।

६— तो पण अधिको भाव छे, एकाकी समरत्थ ।
दान शीयल तप तीन भला, पण भाव विना अकथ ।।

७— अजण आसो आजता, अधिकी आणी रेख ।
रज माही तज काढता, अधिको भाव विशेख ।।

८— भगवत हठ भाजण भणी, चारे सरीखा गिणन्त ।
चरी करी मुख आपणो, चतुर्विध धम भणत ।।

ढाल ५ राग—चेतन चेतोए रे

१— वीर जिनेश्वर इम भणे रे, बैठी परिषदा वार ।
धर्म करो तुमे प्राणीया रे, जिम पामो भवपार रे ।।
धर्म भवियण हीये धरो ।।टेर।।

२— धर्म भवियण हीये धरो धर्म ना चार प्रकारो रे ।
भविजन तुमे साभला रे, धर्म मुगति सुखकारो र ।।

३— धर्मथकी धन सपजे रे, धर्मथकी सुख होय ।
धर्म थकी आरती टले रे, धर्म समो नही कोय रे ।।

४— दुर्गति पडता प्राणीयो रे, राखे श्री जिनधर्म ।
कुटुम्ब सहु को कारमो रे मत भूलो भवि भर्म रे ।।

५— जीव जके सुखिया हुआरे, वले होसी रे जेह ।
ते जिनवर ना धर्म थी रे, मत कोई करो सदेह र ।।

६— सोले से ने छासठ समे रे, सागानेर मझार ।
पद्म प्रभु सुपसायते रे, एह भण्यो अधिकार रे ।।

७— सोहम स्वामी परम्परा रे, खरतर गच्छ कुलचद ।
युग प्रधान जग परगटचो रे, श्री जिनचद सुरिन्द रे ।।

८— तास शिष्य अति दीपतोरें विनयवत जसवत।
आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सुरी महत रे ॥

६— प्रथम शिष्य श्री पुज्यनारे, सकलचद तस शिष्यो।
"समय सुन्दर" वाचक भणें रे, सघ सदा सुजगीषो रे॥

१ — दान शील तप भावनो रे, सरस रच्यो सवादो।
भणता गुणता भाव सु रिद्धि समृद्धि सुख सुप्रसादो रे॥

ढाल १

१— धम्मोमगल महिमानिलो, धर्म समो नही कोय।
धर्म सु नमे देवी देवता, धर्म शिघ सुख होय ॥धम्मो०॥

२— जीव दया नित्य पालिये, सयम सतरे प्रकार।
बारह भेदे तप तपे, ये है धर्म को सार॥

३— ज्यो तरुवर ना फूलडे, भ्रमरो रस ले जाय।
त्यो सतोषे साधु आतमा, फूल ने पीडा नही थाय॥

४— इण विध विचरे गोचरी, लेवे सुझतो आहार।
ऊँच नीच मध्यम कुले, धन धन ते अणगार॥

५— मुनिवर मधुकर सम कह्या, नही तृष्णा नही रोष।
मिले तो भाडो देवे देह ने, नही मिल्या रो सन्तोष॥

६— घणा घरारी गोचरी, थोडो थोडो लेवे आहार।
पाचो इन्द्रिय वश करे, सफल करे अवतार॥

७— महाव्रत पाले निर्मला, टाले सगलाई दोष।
देवलोक निश्चय खरा, सूरत लागी ज्यारी मोक्ष॥

८— धन रो कैसो गारवो, रूप रो कैसो अभिमान।
भरत आरीसारा भवन मे, पाया केवलज्ञान॥

९— धन्य मरूदेवी माता जी ध्यायो है निर्मल ध्यान।
गज होदे बैठा थका, पाया है केवलज्ञान॥

१०— श्री आदेश्वरजीरा डीकरा, भरतादिक सो पूत।
इण भव थी मुक्ति सिधाविया, कर करणी करतूत ॥

११— श्री आदेश्वरजीरी डीकर्या, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय।
बले बेले माण्ड्या पारणा, मुक्ति गया सिद्ध होय ॥

१२— बाहुबलजीरो पोतरो, श्री श्रेयासकुमार।
इक्षुरस वहिरावियो, भावे सुझतो आहार ॥

१३— खाजा लाड् ने सूखडी, पच विगय परिहार।
वीर जिनन्द वखाणियो, धन्य धन्नो अणगार ॥

१४— धना नी परे नव जणा, तप कर झोशी देह।
धर्म तणे प्रसाद से, पहुचा है स्वार्थसिद्ध तेह ॥

१५— प्रदेशी पापी हूतो, मिथ्यामत भरपूर।
केशीगुरु समझाविया, हुआ सूर्याभनामा सूर ॥

१६— अर्जुन माली बहु कीनी, देवता रा जोग सु घात।
धर्म तणे प्रसाद से, मोक्ष मिली हाथोहाथ ॥

१७— रूप स्वरूप मे काला हूंता, हरिकेशी अणगार।
धम तणे प्रसाद से, पहुचा है मोक्ष मझार ॥

१८— नन्दन को जीव डेडको, आयो थो समकित सेव।
धर्म तणे प्रसाद से, हुआ दर्दुर नामा देव ॥

१९— किडीयानी करूणा किनी, धर्मरूची अणगार।
दया तणे प्रसाद से, सर्वार्थसिद्ध मझार ॥

२०— अम्बड जी का शिष्य सात सो किधो पाणी रो नेम।
उनाला की रेणु मे, राख्यो नेम सु प्रेम ॥

२१— खलल खलल नदीया वहे, पिण नहीं आज्ञा रो जोग।
सूरा तो सथारो कियो, पहुँचा है पाचवे देवलोग ॥

२२— ईर्या जोय ने चालणो, भाषा बोल विचार।
बाईस परिषह जीतणा, सजम खाडा री धार ॥

२३— अध्ययन पहले दुम पुप्फिया, सखरो अर्थ विचार।
"पुण्ययश" "शिष्य जेतसी", धर्म जय जय कार ॥

ढाल २ राग—कपूर होवे अति उजलो

१— दीक्षा दोहिली आदरी, काम भोग घर छोड ।
सकल्प थी दुख पग पगे जी, वैरागे मन मोड ।।
मुनिश्वर, धन धन ते अणगार ।।टेर।।

२— घर छोडो ने निसरचा जी, लोधो सजम भार ।
भोग छोडी जोग आदरचो जी, हूँ जाऊँ ज्यारी वलिहार ।।

३— मनवाले भूल चूकतोजी, मत करो ढील लिगार ।
यो जग जाणो कारमो जी, कुण कता कुण नार ।।

४— करे अतापना आकरी जी, कोमल मती राखो देह ।
राग-द्वेष तजो पाडुवा जी, जो सुख चावो अछेह ।।

५— अग्निकुड जलते पडे जी, अगधनकुल नो सर्प ।
वमीयो विष वछे नही जी, ज्यु कुल आपणो झप ।।

६— धिक् धिक् तुझ जीतव भणी जी, वमीयो वछे आहार ।
जीवित वछे मरणो भलो जी, निर्लज ने लाज न लीगार ।।

७— नारी सारी पारकी जी, देख भरम मत भूल ।
वाय झकोरे तरु पडे जी, ऐसी स्थिती होसी डावाडूल ।।

८— घर घर फिरणो गोचरो जी, देखोला सुन्दर नार ।
हुडवृक्ष री ओपमा जी, मोटी उठायो भार ।।

९— हुडवृक्ष हेटो पडे जी, वायु तणे सजोग ।
अस्थिर होसी थारी आत्मा जी, रूलसी घणो रे ससार ।।

१०— जिम हस्ति अकुश वसे जी, स्थिर राखो मन तेम ।
राजमती सती बुझव्यो जी, ठाम आया रहनेम ।।

११— अध्ययन श्रामण्य नाम पुब्विया जी, बीजे ये अधिकार ।
पुण्यकलश—शिष्य "जेतसी" जी, प्रणमे सूत्र श्रेयकार ।।

ढाल ३ राग—चेला जी रे आइ मन माय

१— सुध साधु निग्रंन्थ, साधे मुक्तिनो पथ ।
आतम सवरयो रे, सवर आदरयो ए ।।

२— दूषण टाले सदीव, तेहने एहवी सीख।
वीर जिनवर कहे ए, मुनिवर सरदहे ए ॥

३— उद्देसिक अद्भूत, कृतगड लीधु मूल।
नित्यपिंड जाणियो ए, सामो आणीयो ए ॥

४— न करे राई भात, न जीमे गृहीने पान।
रायपिंड ना करे ए, सेजातर परिहरे ए ॥

५— न राखे सन्निहिराय दानशाला नही जाय।
वाय न विजणो ए रगन रिजणो ए ॥

६— चोवा चन्दन चपेल, तन न लगावे तेल।
नही जोवे आरसी ए, ते गुरू तारसी ए ॥

७— न खेले पासा सार, मुख न कहे मार।
छत्र शिर ना धरे ए, गृही सग परहरे ए ॥

८— आदरे तीन रतन, तेहना करे जतन।
तीन बोल वरजणा ए, अग्न-जल अगनाए ॥

९— पीठ खाट पलग, तजे तिगिच्छा अग।
जुती नही पायतले ए, जीव दया पाले ए ॥

१०— मूलादि कद मूल, परहरे सचित फल फूल ॥
तजे तिम सेलडो ए, लूण धूपेणावली ए ॥

११— वमन विरेचन कर्म, करीने गुमावे धर्म।
दात दातण घसी ए, नाही लगावे मसी ए ॥

१२— नही पेहरे हीर चीर, नही करे शोभा शरीर।
शरीर पीठी न माजणो ए, आख न आजणो ए ॥

१३— सूत्र ना वावन बोल, वर्जे साधु अमोल।
तप कीरिया करी ए, पहूचे शिवपुरी ए ॥

१४— अध्ययन सुदृडीयार, नामे तीजो सार।
अर्थ प्रतीक छे ए, 'जेतसी' मन वसे ए ॥

ढाल ४

१— श्री महावीर भाखे एम, स्वामी सुधर्मा उपदेसीया।
जीओ मुनिराज, स्वामी सुधर्मा उपदेसीया॥

२— सुण सुण जम्बू स्वामी, चोथो अधीन छ जीव।
जीओ मुनिराज चोथो अधीन छह जीव॥

३— पृथ्वी पाणी तेऊ वाय, वनस्पति त्रस जाणिये जी ॥जि०॥

४— ए छह जीवनिकाय, हिंसा टालिने दया पालीयेजी॥

५— महाव्रत पाच सदीव, रात्रि भोजन टालियेजी॥

६— त्रिविधे त्रिविधे जावजीव, गर्हि निंदी पडिक्कमीजी॥

७— दीक्षा लेई ने पूछे शिष्य, किम बोलु चालू रहूँजी॥

८— समभावे गुरू एम, जयणा बोले ने जयणा चालजेजी॥

९— श्रीजिनशासन सार, प्रथम ज्ञान पछे दयाजी॥

१०— जीवाजीव विचार, जाणे अनुक्रम ज्ञानथी जी॥

११— केवलदर्शन नाण, उपजे कर्म खपाय ने जी ॥जि०॥

१२— छेहडे लहे सिद्ध ठाण, अजरअमरसुख शाश्वता जी॥

१३— एह छह जीवनिकाय, सुणता तन मन हूलसे जी॥

१४— श्रद्धे शुद्ध परिणाम, पुण्यकलश शिष्य 'जेतसी' जी ॥जि०॥

ढाल ५

राग — अनो तो पूरो उडियो गिरनारिया "कलश"

१— पाचमो पिंडेसणा अज्झयण, उद्देसी न लेवे साधु रे।
विधी लेई भात पाणी, करो तिरो ससार रे॥

२— दीक्षा पाले दोष टाले, धरे ध्यान समाध रे।
सूत्र साचा अर्थ आछा, भणे गुणे ते साध रे॥

३— सचरे मुनि गोचरी कु ग्राम नगर मझार रे।
जोय चाले शुद्ध पाले, हसे न बोले लिगार रे॥

४— छकाय मर्दे साधु अर्थे, किया भोजन जेह रे॥
तेहने धरे जती वर्जे, दोषिलो आदि देह रे ॥दि०॥

५— असण पाण खादिम सादिम, लेवे सूझतो जेह रे।
असूझता मुनि दोष जाणी, कहे कल्पे न एह रे॥

६— विधे लेवे विधे आलोवे, विधे करे आहार रे।
लूखो सूखो अरस वीरस, हीलें निंदे नही लिगार रे॥

७— पिंड निपेध्या, कुल निपेध्या, तजो भलो निर्दोष रे।
मुहादाई मुहाजीवी, बेहुँ जासी मोक्ष रे॥दि०॥

८— काले जावे काले आवे, विचरे नही अकाल रे।
कालोकाले समाचरे ते, वदु साधु त्रिकाल रे॥

९— वस्त्र पात्र सयण आसण, छत्ता नही देवे जेह रे।
जति रती ते रोप न करे निंदे वदे तेह रे॥

१०— तपचोर वय चौरादि, हुवै किलिपीदेव रे।
दुर्गत दुर्लभबोध जाणी, धर्ममारग सेव रे॥

११— सीख शिक्षा ग्रहण शिक्षा, ते लहे सुर लोय रे।
"जेतसी" कहे सूत्र माहे, वोल बहु छे जोय रे॥

ढाल ६

राग—इद्र इद्राणी हो सुखभर पोसरि

वैरागी निरागी हो सुधा साधु जी ॥टेर॥

१—वैरागी निरागी हो सुधा साधु जी नाण दसण सपन्न।
वनवाडी मे हो आय समोसर्या, सुमति गुप्ति प्रतिपन्न ॥वै०॥

२—मिल मिल राय राजा ने मूहता, ब्राह्मण क्षत्रिय लाग।
साधु ने पूछे हो किम छै थाहरो, आचार गोचर जोग॥

३—मुनिवर भाख मारग मोक्ष नो, कठिन आचार विहार।
हुओ नै होसी ए धम कहेने, मुक्ति तणो दातार॥

४—छ व्रत पाले हो राखे छ जीव ने, नही स्नान शृंगार।
पल्यक निपिद्या गृहभोजन तज्या, अकल्प ठाण अठार॥

५—तैल गुडादि स्निग्ध जैकरे, ते ग्रहो नही अणगार।
नित तप भाखे इक भोजन करे, वर्जे विपय विकार॥

६—वस्त्रादि राखे सयम पालवा, न धरे ममता प्रेम।
विभूपा से बध कम चीकणा, अयत्न वर्जे येम॥

७—जीव इत्यादि पाले पग पगे, न करे रात विहार।
एक काय हणता त्रस स्थावर हण्या, लहे दुर्गति अवतार॥

८—तप जप करणी दु:ख हरणी करे, निमल नही अहंकार।
संवेगी सोभागी चंद्र ज्यू सोभता, पहूचे मुक्ति मझार॥

६—छठो मीठो लागे मोभणी, भलो धर्मार्थ काम।
नमे सुख पामे हो जेतसी, आतम उज्जवल परिणाम॥

ढाल ७ राग—भाया रे ठग बाजिया

१—साधु बूझो रे, भाषासमिति विचार, भाषा चार भेदे कही।
साधु बूझो रे, सत्य असत्य ने मिश्र, असत्यामृषा चौथी कही॥

२—साधु बूझो रे, भाषा निर्वद्य बोल, पहली ने चौथी वली।
साधु बूझो रे भाषा न भाखे दोय दूजी ने तीजो टली॥

३—साधु बूझो रे, निश्चय कठीन कठोर, शंकित सावद्य सलवे।
साधु बूझो र जेहथी लागे पाप तेहवी वाणी न सलवे॥

४—साधु बूझो रे, चोरने न कहे चोर न कह काणो काणा भणी।
साधु बूझो र, पर पीडा हुई जेह, तेहवो वाण न बोलवी॥

५—साधु बूझो र, असाधु ने न कहे साधु, साधु ने साधु बुलाय जे।
साधु बूझो रे, सुर नर तिर्य च हार कहि दोष न लगाय जे॥

६—साधु बूझो रे, सुवक्कशुद्धि अज्झयण, बोल घणा छे सातवें।
साधु बूझो रे, जेह थी लागे पाप, न पडीश तू इण वात मे॥

७—साधु बूझो रे, दस विध बोली साच, अरिहत आज्ञा छे इसी।
साधु बूझो रे, पुण्यकलश कहे सीप सूत्र रागे जेतसी॥

ढाल ८ राग—मन मोयो रे तुंगियांपुर

श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे॥टेर॥

१—श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे,
हिंसा टाली ने दया पालरे।
जो जो जाणे जीव छ कायना रे,
पग पग जयणा कर चाल रे॥

२—टाले तो सूक्ष्म आठ विराधना रे,
टाले मद मत्सर ने प्रमाद रे।
तप जप तपकर काया सोसवे रे,
जीते इन्द्रियगना विषय स्वाद रे॥

३—जरा न करो देही जोजरी रे,
न वैदे रोग पीड़ा घट माहि रे।
इन्द्रिय हीणी खीणी ना पड़ी रे,
ता लग कर धर्म ससार रे॥

४—क्रोध तो वैर वधे घटे प्रीतड़ी रे,
माने तो विणसे विनय आचार रे।
माया मिठाई नासे जगत में रे,
लोभे तो विणसे सर्व गुणसार रे॥

५—ज्योतिष निमित्त स्वप्न फल जे कहे रे,
यत्र मत्र झाड़ा जुड़ाय रे।
टामण टूमण औषध केलवे रे,
ते किम तीरसी किम तारेय रे॥

६—भीत न जोवे नारी-चित्तरी रे,
वाले जिम लोचन रवि तेज रे।
हीणी खीणी वले वरसा सौ तणी
ब्रह्मचारी न धरे तिण सु हेज रे॥

७—पक्षी का बच्चड़ा डरे बिलाव थी रे,
ब्रह्मचारी नारी सु तेम रे।
शोभा सिणगार ने षट्रस जीमणो रे,
तालपुट जहर करे एम रे॥

८—हाथ ने पाव वली छेद्या हुए रे,
कान ने नासिका वली जेह रे।
ते पिण डोसी सौ वरसा तणी रे,
ब्रह्मचारी न धरे तिण सु नेह रे॥

९—वसहि सयणासण पाय-पूछणो रे,
पडिलेह लीजे वारम्वार रे।

धन ते मुनिवर चन्द्र सूर्य समा रे,
आप तीरसी ओरा ने तार रे ॥

१०—आयारपणही नाम अध्ययन ना रे,
सखरा तो अर्थ विचार रे।
सिद्धात साखे भाखे जेतसी रे,
सूत्र थी हो जो मुझ निस्तार रे ॥

ढाल ९ राग—धारिणी समझावे हो मेघकुमार

ओलखडी करी जे हो, गीतारथ गुरुतणी ॥टेर॥

१—ओलखडी करी जे हो गीतारथ गुरुतणी क्रोध मान मद छोड।
आसातना टाली नमिये पूजीये, वदिये वेकर जोड ॥ओ०॥

२—सूत्र भणावे सखरी वाचना रे, पूछे पूछे अर्थ विचार।
चन्द्र सूर्य ज्यो गुरू ने सेवियै, विनय कीजै बारम्बार ॥

३—नवमा विनय समाधी अध्ययनना रे नया नया अर्थ विचार।
उद्देशे चौथे थेवरा वर्णव्या, समाधि रा स्थानक चार ॥

४—पहली विनय समाधि नामे भली रे, बीजी सूत्र समाध।
तीजी तप चौथी आचारनी रे, ए चारो आराध ॥ओ०॥

५—समाधि आराधे ते शिवपद लहे रे, पामे अमर पद तेव।
करजोडी ने वदे जेतसी रे गुणवत श्री गुरदेव ॥

ढाल १० राग—भाव धरी ने पालजे

अरिहत वचने दीक्षा आदरी रे ॥टेर॥

१—अरिहत वचने दीक्षा आदरी रे, नार वमे सुजाण।
दसवा भिक्खु नाम अध्ययन ना रे, वम्यो न वछे जाण ॥

२—खणे ने खणावे पृथ्वीकाय ने र, पीवे न पीवावे नीर।
जले न जलावे तेउ काय ने र, बीजे ने वीजावे समीर र ॥अ०॥

३—छेदे ने छेदावे हरितकाय ने रे, वरजे बीज सचित।
पचे न पचावे भोजन रसवती र, त्रस थावर वध चित्त ॥

४—क्रोध मान माया लोभ परिहरे, नही दे सावद्य उपदेश।
आप तिरे पर ने तारसी रे, सांचा ते दरवेश ॥प्र०॥
५—राग द्वेष मद मत्सर परिहरे, न करे वणिज व्यापार।
तजे तमाशो हसी मष्करी रे, वंछे नही सिंगार॥
६—जहाज समान गुरुदेव मिल्या रे, अरू अटकी है म्हारी नाव।
डूबती ने पार लगावजो, ये छे म्हारा भाव हो॥प्र०॥
७—पाच महाव्रत पाले इन्द्रिय दमे रे, ग्राम कटक सहे घोर।
श्मशाने पडिमा पडिवजे रे तज्यो प्रतिबंध शरीर॥
८—मर्म न भाखे भलो रे, वाचे सूत्र सिद्धात।
आतम ध्याने आतम उद्धरे रे, पामे परम पद अन्त॥
९—शय्यंभवस्वामी ए रच्यु रे, दशवैकालिक सूत्र।
ससरो शुद्ध आचार प्ररूपियो साधुनो रे, तार्यो मणक पूत॥
१०—जिम भाख्यो तिम पालनोरे, तो सुधरे बेहु लोक।
इह लोके जश शोभा घणी रे, परलोके सुख ना थोक॥
११—सवत् सतरे सत्योतरे रे जी, बीकानेर मझार।
पुण्यकलश शिष्य भणे जेतसी रे, गीत रच्यो टकसार॥

३७ | आत्म निन्दा

दोहा

१— अरिहत सिद्ध अनत गुण, धरिये शुद्ध मन ध्यान ।
सम्यग्ज्ञान प्रकट हुए, दूर हरण अज्ञान ।।

२— आचारज छत्तीस गुण, जिन गादीधर जाण ।
अकुश चारो सघ मे, वरतावे जिन आण ।।

३— वाणी द्वादस अगनी, वदन करी वरसाय ।।
दोष रहित निष्पक्ष लवे, ते प्रणमू उवज्झाय ।।

४— अढ्ढोद्वीप माहे नमू, साधु सकल गुणधार ।
ज्ञानादि त्रिरत्न धर, साधे मोक्षद्वार ।।

५— आदि दोय पद देव छे, तिहु पद मे गुरु शुद्ध ।
चरण कमल तेहना नमू, आपे निर्मल बुद्ध ।।

६— तसु प्रसाद चेतन तने प्रगट्यो ज्ञान प्रकाश ।।
दिव्यहिये सम्यक्दशा, खोजत भद्र खुलास ।।

७— आतम निन्दा आपणी, जीव सदा करे जोय ।
पर निंदा है पाप सू, हर्गिज भलो न होय ।।

ढाल १ राग—अगोरी कत चगी सुयण सावट

१— पर निंदा पचक्खाण, करो कोमल पणे ।।चेतनीया।।
आत्म निंदा प्रभाव, वधे गुण आपणा ।।चे०।।
मर्म लखो जिन धर्म, निर्वेरी मग खरो ।।चे०।।

२— तू दुश्मन तो दुश्मन, थारे घणा ।।चे०।।
तू सज्जन तो सज्जन, सारा श्रापणा ।।चे०।।
३— तू परने दुख दाई, तो भव भव दुखी ।।चे०।।
तू सहुने सुखदायक, तो पोते सुखी ।।चे०।।
४— छहुं जीवनिकाय, जीवणो वछे सही ।।चे०।।
लूटे छ कायारा प्राण, अनुकपा थारे नही ।।चे०।।
५— या जीवांरा वैर बदला, किम छूटसी । चे०।।
अलवत्त थारा प्राण, भवोभव लूटसी ।।चे०।।
६— हिंसा अनर्थ मूल, करता नही डरे ।।चे०।।
उदय आसी फल तेह, निश्चय मे तू मरे ।।चे०।।
७— पण जीवा रो वर मरण थारे जाण ले ।।चे०।।
इण मे भूठ न लेश, जिन वचन पिछाण ले ।।चे०।।
८— जीतव विधि इण लोक, व'दन पूजा अर्चवा ।।चे०।।
चाहे तू प्रशसा, जनम मरण मुकायवा ।।चे०।।
९— सब दुख टालण निमित्त, छविध जीव हणे ।।चे०।।
तू अज्ञानी वाल निष्ठुर, निर्दय पणे ।।चे०।।
१०— ए हिंसा कर्मगठ, नरक मरी खलु ।।चे०।।
सूत्र आचारग साख, उदेरस कुल वधु ।।चे०।।
११— कारखाना छत्तीस, छ काया मरण का ।।चे०।।
देव धर्म गुरु मोक्ष, निमित्त नही करण का ।।चे०।।
१२— अर्थ अनर्थ धर्म काज, हिंसा वरजीवली ।।चे०।।
प्रश्न व्याकरण माय, प्ररूप्यो केवली ।।चे०।।
१३— माठी बुद्ध अबोध, तीके हिंसा करे ।।चे०।।
श्रीजिन वचन सभाल, भवि दिल मे धरे ।।चे०।।
१४— क्रोध लोभ भय हास, तणी सगत रह्यो । चे०।।
बोले क्रूर कठोर कुमति के वश थयो ।।चे०।।
१५— पाच मोटका भूठ, वचन मुख मत कहो । चे०।।
सर्वथा प्रकारे भूठ, तजो तो सुख लहो ।।चे०।।

१६— चोरी को मोटो दोष, परायो धन चहे ॥चे०॥
परधण री परवासु, जग मे अपजस लहे ॥चे०॥

१७— देव मनुष्य तिर्यंच, सम्बन्धी कुशीलसु ॥चे०॥
तृप्त कदापि न होय, विषय सुख लील सु ॥चे०॥

१८— नर नारी को वेद, विकार विसारिये ॥चे०॥
वर्जे कुशील कुसग, मदन मन मारिये ॥चे०॥

१९— नर नारी के सग, मथुन सेवता ॥चे०॥
मरे सन्नी नव लाख, किंचित्, सुख वेवता ॥चे०॥

२०— असन्नी री नही सख्या, श्री जिन भाखियो ॥चे०॥
पाच आश्रव मे सरदार, मैथुन दाखियो । चे०॥

२१— दुर्गति को दातार, कहि जे परिग्रहो ॥चे०॥
तृष्णा परी रे निवार, हिये समता धरो ॥चे०॥

२२— मुर्च्छा दूरी निवार, भाव दोऊ तजो ॥चे०॥
पुदगल सुखनी चाह, मेट निज सुख भजो ॥चे०॥

२३— निज गुण अखे अडोल, अतोल अमोल है ॥चे०॥
पुद्गल सुख मे भीनो, न चीनो पोल मे ॥चे०॥

२४— भोलो थको तू भूल, आश्रव मे अलु झियो ॥चे०॥
सेवे पाप अठार, बुरो तोने सूझियो ॥चे०॥

२५— पापी निर्लज नीच, नि शर्मो ह्वय गयो ॥चे०॥
माठा लखण माय, भागल भूण्डो भयो ॥चे०॥

२६— कामी क्रोधी कुटिल, करापाती कुकर्मी ॥चे०॥
कपटी कुटिल कठोर, अपत तु अधमी ॥चे०॥

२७— कायर कृपण कहर, कुवध उपजे खची ॥चे०॥
लपट लोभी लबाड, लोलुपी लालची । च०॥

२८— अहकारी अणखीलो, अपछन्दी उठी ॥चे०॥
श्रद्धे नही गुर सीख, सुमति दिल मे घटी । चे०॥

दोहा

१— हे चेतन मिथ्यातमे, भमियो ग्रादि भूल।
अज्ञानी तू बापडा, समकित से प्रतिकल ॥

२— ग्रति ग्रज्ञानी ग्रासता, महा मूल मिथ्यात।
तदपी तू यामे तपे, सगाय भर्म सगात ॥

३— तज मिथ्यातग्रज्ञान तम, समकितगुए कर शुद्ध।
विमलजोत विज्ञान के परचे होत प्रबुध ॥

४— काम स्नेह दृष्टि राग मे, रहे सदा ग्रनुरक्त।
रस साता रिद्धि गर्व मे, ग्रातम तू ग्राशक्त ॥

५— पतग,ग्रली, मृग, गज मच्छी, मरे एकमे मुरझाय।
पाचो इन्द्रिय वश पड्यो, को हवाल तुझ थाय ॥

६— तू भटके दुर्भव ग्रति, सूझ न पडे लिगार ॥
ग्रष्टकम को बहूलता, वाकी बधु ससार ॥

७— दुश्मन तेरह काठिया, जबर घाडायती जाए।
मुक्ती पुरी के पथ मे, करे धर्म धन हाए ॥

ढाल २ राग—कमक कचोला छोड लेणी बछ काछली

१— माठी लेश्या माय, ध्यान माठो घरे ॥रे जीवा॥
माठी बुद्ध विचार, माठी चिता कर ॥

२— माठा ग्रध्यवसाय, परिणाम उपजे होये ॥रे जीव॥
माठा लक्षणधार, मोह मदिरा पीये ॥रे॥

३— ग्रतस दुर्मति दुष्टपणे तू सेवसी ॥रे जीवा॥
जासी नरक निगोद, महादु ख वेवसी ॥रे०॥

४— कबहुक वेद विकार, विपय रस चितवे ॥
कबहु वितण्डा वाद, वृथा नायक चवे ॥रे जीव॥

५— बोले भु डा बोल, मर्म मोसावले ॥रे जीवा॥
देवे कूडा ग्राल, पोते भु डो छाले ॥रे०॥

६— ताके पराया छिद्र, करे चुगली बुरी ॥रे०॥
परनिंदा पर मयल, चुथे कर कर बुरी ॥रे०॥

७— छाती पराई बाले, ते अपनी बले ।।रे०।।
पोखें घेस विशेप, वधे फोकट कले ।।रे०।।
८— दोप पराया काढ, आपरणा जे ढके ।।रे०।।
अशुभ कर्म के बघ, उलझी अछत्तो वके ।।रे०।।
९— तिण निंदा रे पाप, आगे गू गो थावसी ।।रे०।।
देव किल्मेपी होय, घरणो पछतावसी ।।रे०।।
१०— तूं आरणे अहकार, मो सरिखो नही।रे०।।
पूर्व पुण्य सजाग, पाई सपत सही ।।रे०।।
११— पुण्य क्षीरण हो जाय, पडेला निगोद मे ।।रे०।।
रलसी काल अनन्त, म फूले मोद मे ।।रे०।।
१२— कबहुक भिष्ठारो जीव, हुवो तू चुरणीयो।रे०।।
बोरकली रे माय, पगे चिथीजियो ।।रे०।।
१३— साधारण मे उपज्यो, उदे आया पापडा ।।रे०।।
कवडी रे भाग अनन्त, बिकाणो तु बापडा ।।रे०।।
१४— कबहू राक कगाल-परणें मागत फिर्यो ।।रे०।।
भिष्टारी ओडी उठाई, पोइस पोइस कर्यो रे ।।रे०।।
१५— अब के पुण्य पसाय, उत्तम खोली मली ।।रे०।।
मति कर मान गुमान, मान शिक्षा भली ।।रे०।।
१६— क्रोध लोभ मद माय, च्यार कपाय सु० ।।रे०।।
हारे मानुप जन्म, विपैरो लाय सु ।।रे०।।
१७— माने रति अरति, राग और द्वेप मे ।।रे०।।
फसियो मोहजजाल, विलमायो हर्प ।।रे०।।
१८— सित्तर कोडाकोड, सागर लग मोह सू ।।रे०।।
न लहे शुद्ध विवेक, मिथ्या भ्रम छोह सू ।।रे०।।
१९— बध तीस प्रकार महामोहणी मुदे ।।रे०।।
प्रकृत्ति अट्ठावीस, हुवे पल पल उदे ।।रे०।।
२०— सकल कर्म मुख्य मोह, समझ कर तोडिये ।।रे०।।
शील सतोप सुबुध, सुकृत मन जोडिये ।।रे०।।

२१— दु सह कम दुर्दन्त, चार घनघातिया ॥रे०॥
तोड सके तो तोड, मोह सगातिया ॥रे०॥

२२— नवतत्त्व स्वरूप, हिया मे धारिये ॥रे०॥
सवर निजरा मोक्ष, विशेप विचारिये ॥रे०॥

२३— शम सवेग निर्वेद, अनुकम्पा आसता ॥रे०॥
समकित लक्षण सेव, मिले सुख शास्वता ॥रे०॥

२४— ज्ञान दशन चारित्र, निहु आराधिये ॥रे०॥
बारे भेदे तप, अहो निश साधिये ॥रे०॥

२५— शुक्ल ध्यान शुभ भाव, निरतर ध्याइये ॥रे०॥
केवलदर्शन ज्ञान, परम पद पाईये ॥रे०॥

२६— एहवी सतगुरु सीख, न श्रद्धे प्राणियाँ ॥रे०॥
कर्म शुभाशुभ सग, फिरेला ताणीया ॥रे०॥

२७— लख चौरासी जुण, चउगती भटकसी ॥रे०॥
वलि वलि गर्भावास, उधे शिर लटकसी ॥रे०॥

२८— प्रारम्भ मे आगीवाण, पच वणियो रहे ॥रे०॥
बडपण खाटण काज, ईंघ को ओछो कहे ॥रे०॥

२९—माड पचपतहीण, तड अग मे पडे ॥रे०॥
जतो घर मे भार, घणा खोटा घडे ॥रे०॥

दोहा

१— तू चेतन प्रमादवश, न डरे करतो पाप।
भव भव मरसी भोलिया, सहसी घणा सताप ॥

२— पाप लगावे व्रत मे, ए भूडो आचार।
अतिक्रम व्यक्तिक्रम मे, अतिचार अनाचार ॥

३— ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ज्यो विराधना थाय।
शून्य मनक्रिया करे, तो सारी निष्फल जाय ॥

४— आलोया निन्द्या विना, मरे विराधक होय।
पहुचे दुर्गति पाधरो, तप जप करणी खोय ॥

५— जो चाहे आराधना, ले प्रायश्चित्त गुरु साख।
ते सिद्ध गति गामी हुवे, जिनवाणी रस चाख॥

६— श्रुत ज्ञान को विनय तू क्यो न करे रे जीव।
विनयहीन ने ज्ञान की, वृद्धी न होय कदीव॥

७— धन्य विनयी भव्य जीवते, पावे निर्मल ज्ञान।
श्रुत ज्ञान के विनय सू, हुवे क्रोड कल्याण॥

ढाल ३

राग—आज नहेजा रे दीसे नाहलो

१— इणभव परभव सोगन लेने भागीया।
सेविया पाप अठार, वीतरागरा वचन उलागिया॥

२— अव्रत ने मिथ्यात्व, जोग प्रमाद कषाय वधारिया।
खोटा शास्त्र अभ्यासते, अज्ञान पणे अवधारिया॥

३— इत्यादिक अपराध, सहु आलोई निंदी पडिक्कमी।
समकित व्रत सभाल, शुद्ध हुवो चेतन गुरु पद नमी॥

४— जो आराधक थाय तो, थारी भव थिति पाकी सही।
ए जिनशासन न्याय, पुण्यसयोगे सत्सग लही॥

५— निवर्ते सावध्य योग ते, समाई सवर कहिये।
भावे शुद्ध परिणाम, भव निधि तिरिये॥

६— मोटी नाव है पच्चक्खाण, देशव्रत सर्व व्रत इसी।
समता रूप समाध, सूत्र वचने जिन भाखी जीसी॥

७— दोय घडी रे काल तू व्यवहार समाई आदरे।
आर्त्त रौद्र परिणाम, सकल्प विकल्प चेतन किम करे॥

८— बैठे मू डो बाध तू जाणे मैं समाई करी।
न मिटे माठो ध्यान मन शुद्ध करणी खराखटी॥

९— शुद्ध समायिक धार, चन्द्रलेहा राणी केवल लयो।
चद्रावतसकराय, स्वर्ग वार मे पोसा मे गयो॥

१०— उपशम सवर विवेक, चोर चेलायती शुभ ध्यानी थयो।
अरु प्रदेशी राय समता करने सुधर्म सुर भयो॥

११— देवतणा उपसर्ग, कामदेव पोषा मे लिया।
उत्तम पुरुष अनेक, इम शुभ गति पामिया॥

१२— तु भरोसे मत भूल, वा समाई तोसू किम वणे।
आत्मनिन्दा अभ्यास, कर्म घटावो रे चेतन आपणे॥

१३— तु सम्यग्दृष्टि कहाय, धर्म को धोरी रे चेतन बाजियो।
म पडे पाप मझार, जो परमेश्वर सेती लाजियो॥

१४— प्रकट छाना रे पाप, केवलिया सु न छिपे एक ही।
उदासीनता आण, निष्फल थाय पाप अनेक ही॥

१५— चक्रवर्ती पद पाय, भरत निकाचित पाप न बाधियो।
ते समदृष्टि पसाय, उदासीनता मे चिरा साधियो॥

१६— उदय कर्म सुख भोगतो, पिण अरुचि पुदगल सुख तणी।
अनित्यभावना भाय, केवल पाम्यो रे खट खण्डरा धणी॥

१७— श्रेणिक ने कृष्ण समकित सभाल, आतम निन्दा रे चेतन आपणी।
धीरज दिल मे धार, प्रगटे निज ज्ञान दशावणी।

१८— धारिया गुण इकवीस, दृढधर्मी वारे चाव सु॥
शखपोखली आद, आनन्दादिक दश शुद्ध भाव सु।

१९— पडिमाधारी एह ज्या, उत्कृष्टी किरिया आदरी॥
पाम्या देव विमाण, सिद्ध गत पासी एक नर भव करी।

२०— तु जाणे रे जीव, देशव्रती श्रावक पोते हुवो।
न टले प्रगट इग्यार, तो तु देशव्रत सेती जुवो॥

२१— पाल सके तो पाल, लीधा ते श्रावकव्रत निमला।
सयम तप कर सतोप, विषे कषाय पाडजो पातला॥

२२— आणे मन वैराग, भावे सर्व व्रतनी भावना।
सत् चित्त् आनन्द ध्याये, निज आतम गुणध्यावना॥

२३— नित्य सुमरे नवकार, चवदेपूर्व माहे सार छे।
सुधरे जन्म सुजाण, इण भव पर भव शरण आधार है॥

२४— धन्य धन्य गजसुखमाल, सारो तन अग्नि मे पजल्यो ।
सुमरता आतम स्वरूप, पिण उपसर्ग थी मन न चल्यो ॥

२५— खधक रिखना शिष्य, पालक पापी घाणी मे पोलिया ।
नाणी रीस लगार, वैरभाव पूर्ण पोसी लिया ॥

२६— खदक रिखनी खाल, राय उतारी वर काचर तणे ।
मैतारज मुनिराय, मार्यो सुवर्णकार निर्दय पणे ॥

२७— इम अनेक अणगार, समता सागर प्रगटिया केवली ।
एहवी समता रे आण, तो तु थासी रे जीव अनन्तबली ॥

दोहा

१— पद्गल सुख की ममन से, भूल गयो मत हीण ।
ज्यु मदिरावश मानवी, होत कर्दम मे लीन ॥

२— काम घेनु अरु कल्पवृक्ष, चिन्तामणी चित्रावेल ।
काम कुभ पारस सुधा, अमृत घुटका केल ॥

३— रसायण रसकुपिका, अष्टसिद्धि नवनिद्धि ।
चक्रवर्तादिक राज श्री, रतन चतुर्दश रिद्धि ॥

४— हेम रजत हीरा पन्ना, मणि माणक परवाल ।
गउमेदक ने लसणिया, मुक्त पिरोजा लाल ॥

५— पुद्गल वस्तु अनित्य सब, मिले टले बहुबार ।
तु याकी ममता धरे, कर कुडो अहकार ॥

६— गले मिले ने वीखरे, बादल जेम विचार ।
पुद्गल वस्तु स्थिर नही, अशाश्वतो असार ॥

७— सडे पडे विणसे मुकर, देह औदारिक होय ।
तू यामे मूर्च्छित हुवे, मरसी नर भव खोय ॥

ढाल ४ राग—दो रे जीवा थें दान सुपातर बिन दीधा पामी जे केम

१—सुमत सखी के सग न बैठे कुमति दुतीसग खेले रे ।
ताते तू पुद्गल को रसियो आशा अछती जे लेरे ॥
चेतन आतम निन्दा कीजो ॥टेर॥

२—चेतन आतम निन्दा कीजो, परम धर्म रस पीजो रे।
निज सुख भूल रमे पुद्गल मे, दुर्मत सू मत धीजो रे॥

३—पुद्गल सुख रे कारण चेतन, कृतघ्न पापी कहावे रे।
पार को कीधो गुण नही माने, तू उल्टो श्रोगुण गावे रे॥

४—पोते प्रीत करी जिण सेती, कपट घणो उर राखे रे।
ठगाई करने धन लेवे तू, मित्र द्रोह अभिलाखे रे॥

५—मिष्ठवचन परतीत उपजावे, आगलो भरोसो माने रे।
तिण ने मारे के फदे मे पटके, तू विश्वासघाती नही छाने रे॥

६--घरजा मरजा ने विसरजा ए वो करतो न लाजे रे।
थापण राख पराई नटसी, तो खोटाकर्मी त वाजे रे॥

७—खोटी करवत इत्यादि करने, पाप अठारे बधासी रे।
पचसी कुभीपाक नर्क मे, पछे घणो पछतासी रे॥

८—तू नही केहनो कोई नही थारो, अन्तर ज्ञान विचारो रे।
आप आप रो मतलब खेले, सहु ने स्वार्थ प्यारो रे॥

९—सज्जन कुटुम्ब तणे वश पडियो, वधण प्रेम बधाणो रे।
हारे मानुष जनम पदारथ, फेर न आसी टाणो रे॥

१०—पुण्य सजोगे आय मिल्या छे सज्जन कुटुम्बी सारा रे।
होत विजोगे सब उठ जासी, थासी न्यारा न्यारा रे॥

११—यो ससार स्वप्नवत् भूठो, इन्द्रजाल की माया रे।
लख चौरासी खेल खेलियो, भेष अबरके पाया रे॥

१२—भर्म कर्म के सग भुलानो, जगत जाल मे खूतो रे।
जनम मरण जजाल विलोके, मोह निन्दा मे सूतो रे॥

१३—जगतजाल मे ख्याल वृथा है, तू भोला किम भूले रे।
मोह निद्रा सू जाग चिदानन्द, निज समकित सुख भूले रे॥

१४—निश्चयदेव आतमा गुरु आतमा धर्म पिछाणो रे।
आतम अनुभव तीन तत्त्व है निश्चय समकित मानो रे॥

१५—आतमनिन्दा सिखावण एहवो, चितवता कर्म टूटे रे।
सुणता गुणता गुरुप्रसदे, जन्म मरण सू छूटे रे॥

१६—अवेदी अलेशी अविकारी, सिद्ध स्वरूप सभालो रे।
सोह स्वरूप "विनयचन्द" तू हित अहित कल्पना टालो रे॥

"कलश"

१— कुमठ गोकलचन्द जेवा, तात मुझ धर्मी लहे।
श्री पुज्य हमीर मुनि गुरु भेट के, जिनमत गहे॥

२— उगणीसो इकवीस वरसे, फाल्गुण सुद तृतीया खरी।
सुकृत कारण दुरित हारण, आतम निन्दा म्हे करी॥

२८ | विदुषी महासती श्री सोहनकुँवर जी

परिचय रेखा

सवैया

१—आदि अनादि अनूप अनन्त अगोचर भी अपनो प्रन छारी
होकर भक्ति अधीन वही, भगवन्त सु सन्तन के भय हारी ॥
एक नही चउवीस विलोकहु देह अहा ! जग मे जिन धारी ।
या हित भक्ति भगीरथि की "ललितागज"जावतु है वलिहारी ।

दोहा

१— जो जन जग मे जन्म ले, करे आत्म-कल्याण ।
नित्य करें उसको नमन, मुक्ति अहो तजि मान ॥

राग—जाओ जाओ रे मेरे साधु

तरणी चाहो वैतरणी तो तो करलो उत्तम करणी ॥टेर॥

१—रहनेमी गिरिनार गुहा मे, वाणी दुर्मुख वरणी ।
दूर करी उसकी दुविधा को, नेमनाथ की घरणी ॥तरणी ॥

२—शुभ करणी कर चन्दनवाला चढगी मोक्ष निसरणी ।
सूत्रो मे जिसकी शोभा को, स्वय सुधर्मा वरणी ॥तरणी॥

२—भूतकाल की भव्य कथायें, कितनी जाये वरणी ।
दशमुख दुख हरणी करणी की, सीता विश्वभरणी ॥तरणी॥

४—सम्प्रति मे भी शीलशिरोमणि, सोहनकु वरी गुरुणी।
वैतरणी तरणी जिसकी यह, कथा सुनो मन हरणी ॥तरणी॥

५—कलिमल हरणी करणीकर्ता को जाये जो जरणी।
धन्य वही जग मे 'ललितागज' धन्य वही है धरणी ॥तरणी॥

राग—राधेश्याम

१—श्री वीर भूमि मेवाड-मध्य, अति सुन्दर सेरा प्रान्त अहा।
शुचि वसन रूप तरु से शोभित हैं गगनचुम्बि गिरिराज महा॥
कल कल अरु छल छल झरनो की, वजती सितार पुनि मधुर जहां।
जिसकी आभा को चकित-चित्त हो अलकाधिप आलोक रहा॥

२—आम्रादिक मधुर फलो का है, जो प्रान्त मनोहर कोष महा।
सौरभमय सुमनो का सुन्दर, वहता समीर निशिद्योस वहा॥
मन-इच्छित मिलती क्यों को, शीतोष्णा दोनो फसल जहा।
क्या कहूँ अधिक अनुकम्पा है, जिस पै प्राकृतिक अनूप अहा॥

३—उस सेरा प्रान्त-बीच सुन्दर शोभे है ग्राम त्रिपाल सही।
जो स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक तीनो मे छाना छुपा नही॥
लिखने को जिस का ललित चरित, 'ललितागज' लेखिनी हुलस रही।
अवतार लिया आदर्श अहा। गुरुणी श्री सोहन कुँवर वही॥

लावनी राग— बिन काज आज महाराज लाज जा मोरी॥

२ ४ ६ १
विधि वेद अक विधु वर्ष महा सुखदाई।
तिथि अक्षय को यह अक्षय छवि प्रकटाई। टेर॥

१— हे जाति जशोधर ओसवाल जग माही।
जिसमे कुल भोगल-सोलकी छवि छाई॥
जो वीतराग पद पकज का अनुयायी।
प्रकटी उस कुल की ऐसी यह पुण्याई।
लघु लेखिनि जिसका लिखे चरित हुलसाई ॥विधि॥

२— थे पिता "रोडमल जिसक जग विख्याता।
विदुषी गुलाव कुँवरी थी जिसकी माता।

श्री प्यारचद अरु भैरव दो थे भ्राता।
आलोक ज्ञान वैराग्य जिन्हे हर्षाता।
सौरभ गुलाब की उन पर यह प्रकटाई ।।निधि।।

३— पुत्री का भावी सुख दुख पूछनताई।
घर जोसी जी के शेठ गया हुलसाई ।।
दैवज्ञ देखि ग्रह-कुण्डलि गिरा सुनाई।
यह भक्ति भगीरथी तुमरे घर चलि आई।
इसलिये नाम शुभ इसका खिमिया बाई ।।निधि।।

४— द्वितियेन्दु ज्योति ज्यो नित्य वृद्धि को पावे।
कन्या द्युति त्यो ही दिन-दिन बढती जावे।
जो अष्ट-सिद्धि नव-निधि सी प्रकट लखावे।
मँगनी हित जिसके कई शेठ चलि जावे।
है पुण्य तणो कवि किंकर यह प्रभुताई ।निधि।।

राग—मोहन गारो रे०।।

वर्ष दो माही जी २ ए हुया जबे श्री खिमियाबाई जी ।टेर।

१— दुलावतो का गढ है सुन्दर, मेदपाट के माही जी।
तखत कुँवर के साथ करी है सुखद सगाई जी ।।

२— जोरी जुगल अनूपम एहो, भव्यो के मन भाई जी।
किन्तु आतमा क्रूर काल की, अति कलपाई जी ।वर्ष।

३— अकस्मात् इण कारण उण हो, गापत्ती यह ढाई जी।
तन चेतनता राडमल की, गो गट काई जी ।वर्ष।

४— उण विरिया तिरपाल निवासी, सारा लोग लुगाई जी।
अखियन से असुअन की धारा, अहो बहाई जी ।वर्ष।

५— परउपकारी हरणी धर्म प्राण हा गो कितशेठसिधाई जी।
दीनन की उण विन अब करि है, कौन सहाई जी ।।वर्ष।।

दोहा

१— इण विधि आखा गाम मे, शोक तणो हा ! शोर।
जोर-जोर सू सब करे, हा ! अकाज भो घोर ॥

२— छाती माथो कूटती, अर्धांगिनि अणमाप।
पति-विरहानल मे पडी, पेखो करे प्रलाप ॥

राग—मोहन गारो रे०॥

हुओ ओ काई जी २ क्यू प्राण नाथ ऐ बोले नाई जी ।।टेर।।
१— तन जीवन धन को चेतन बिन, लखि गुलाब कुरलाई जी।
एडी मौन आज अलबेसर ! क्यू अपनाई जी ।।हुवो०।।
२—मो सू हा ! अपराध इसो पिउ ! कह दो हुयगो काई जी।
किण कारण ओ कियो रूसणो, दो फरमाई जी ।।हुवो०।।
३— बालूडा बेहद, विलपै अ, आँसूडा दृग ढाई जी।
आप बिना कुण है अब यांरो, कहो सहाई जी ।।हुओ०।।
४— कुत्सित करणी किण भव री आ, हाय उदय हो आई जी।
अघबिच मे वहती रे वाले, मने वहाई जी ।।हुवो०।।
५—सुण उणारो ओ करुणाक्रन्दन, कुलदेवी कलपाई जी।
शीघ्र आय उण रे सन्मुख हो, गिरा सुनाई जी ।।हुवो०।।
६—नर सुर असुर नाग किन्नर है, तृण जिती जग माही जी।
तन नश्वरता किण ही अपणी नही मिटाई जी ।।हुवो०।।
७—इण कारण तूं थिर चित करने, कर शुभ कम कमाई जी।
शील सलूनी तोरो रुच्छक, है जिनराई जी ।।हुओ०।

राग– जाओ जाओ ओ मेरे साधु।

टारे टारे नवकार मन्त्र यह, विपदा सगरी टारे ।।टेर।।
१—देवी कहे सती ! सुन मेरी, नयना अश्रु न ढारे।
सजनी ! जप नवकार मन्त्र जो, तोरी विपद विडारे ।।टारे।।

२—स्थूलिभद्र जिणरे बल देखो, वेश्या री मति-वारे।
श्री श्रीपाल भूप पुनि जा-बल, सूरो सिर पग धारे ॥टारे॥

३—दमयन्ती कुन्ती कौशल्या ,मैना काज सुधारे।
भूत काल की भव्य कथायें, कितनी ग्रहो उचारे ॥टारे॥

४—निर्मल मन हो नवपद की जो, प्राणी सेवा सारे।
शिवरमणी भी फिरती मित्रो, उणरे लारे-लारे ॥टारे॥

लावणी-अष्टपदी राग—नेम की जान बनी भारी०।

सुरी री सीख सती मानी, लगन उर नवपद री ठानी ॥टेर॥
लगन जो साचे मन लागे, सफल वो अवस हुवे सागे।
पेखलो परतख सब भाई, सती रे लिव री सफलाई ॥

दोहा

अमर-गच्छ के सन्त श्री—नेमिचन्द कविराय।
ललित लगन से प्रेरित होवे, गये ग्राम मे आय ॥

मिलत

१— जिन्हो से सुन के जिनवाणी ॥सुरी०॥
इसो गुरु ज्ञान-सुधा पायो, सती मन पीकर हरषायो।
विचारे उर मे धर क्षमता, जगत री झूठी है ममता ॥

दोहा

छाया जिणरी है परे, काया थिर वो नाँय।
राव रक की गिनती क्या है, स्वय अहो जिनराय ॥

मिलत

२— एक दिन हुयगे जो फानी ॥सुरी०॥
अखँ सुख धर्म बीच राजे, जिसे लखि भव भय सब भाजे।
सु-मन हो सेवा जो साजे, सिंह सम निर्भय वो गाजे ॥

दोहा

मैना सुलसा सी अहो, एक न हुई अनेक।
ग्रन्थो मे जिनकी गरिमा को, दृग उघार लो देख ॥

मिलत

३— नही है जिनकी छवि छानि ॥सरी॥
सोच यो सोच मोच वाई, रमयो योग-हृदय-माई।
किन्तु सुत सुता ओर माल्यो, नयन से आँसू तब राल्यो ॥

दोहा

मो विन याँरी कौन हा ! करि है सार-सँभाल।
जला रही है एक यही अब, योकुँ चिन्ता-ज्वाल ॥

मिलत

४— आड आ मोटी अटकानी ॥सुरी०॥
देखि जल माता के नैनो, हुओ वड-सुत को यो कैनो।
अश्रु क्यो आये नयनन मे, कहो दुख काई मन मे ॥

दोहा

जननी जरद जनाय दे, मन कल्पे है मोर।
सादर शीस नमाय के सरे, करूँ अरज कर जोर।

मिलत

५— रखे वा वात मन्त छानी ॥सुरी०॥
प्यार जो अरजी गुदराई, उसे द्रुत भैरु अपनाई।
समर्थन कियो क्षमा वाई, मुदित मन होकर तव माई ॥

दोहा

हृदय समाई वात जो, दी उन को दरशाय।
वात मात की सुनकर तीनो, यो वोले हरषाय ॥

मिलत

६— हमारे मन भी यह मानी ॥सुरी०॥

दोहा

प्यारचन्द भैरव क्षमा, यें तीनो इक साथ।
अरज करें यो मात से, जोडी दोनो हाथ ॥

राग—जाओ जाओ जी मेरे साधु० ।

लेलो लेलो जी जी जल्दी लेलो, सयम शिव सुखदाई । टेर॥

१—परतख ही परखो गुरु-गगा, घर बैठे चलि आई।
इच्छा पूरण करने मे अब, देर करो क्यो माई ॥लेलो०॥

२—जैसे दावी किस्तूरी की, सौरभ रहती नाई।
वैसी ही सब जान गये हैं, इनके मन की भाई ॥लेलो०॥

३—गढ दुलाबतो से, दौडे, सम्बन्धी तब आई।
करी सगाई हम ना छोरे, ऐसी बात सुनाई ॥लेलो०॥

४—सजन सनेही मिल समजावे, पै वे समझे नाई।
आखिर गये झगडते दोनो, राज कचहरी माई ॥लेलो०॥

५—न्यायी हाकिम ने खिमिया को, अपने पास बुलाई।
साम दाम अरु दण्ड भेद से, बहुतेरी समजाई ॥लेलो०॥

६—हाकिम कहे मानजा नहितर, दूला खाल खिचाई।
तब तो अपनी भाषा मे यो, बोली खिमिया बाई ॥लेलो०॥

७—दरखत ऊपर बाघ कोअडा, मारो आप भलाई।
तन करदो चेतन बिन तो भी, मैं परणी जू नाई ॥लेलो०॥

दोहा

१— नन्ही ऊमर मे निरखि, प्रज्ञा अहो ! प्रवीन।
हाकिम साहिब भी हुये, विस्मय बीच विलीन ॥

२— धर्म अर्थ अरु काम पुनि, मोक्ष पदारथ चार।
नर सेवे हो निडर निज, इच्छा के अनुसार ॥

राग—इक तीर फेंकता जा, तिरछी कबान वाले

ऐसा विचार करके, हाकिम हुकम सुनावे।
कानून से रुकावट, शुभ काम मे न आवे ।।टेर।।

१— एकान्त सत्य करणी, कानून से परे है।
इस हेतु हम उसे तो, हाँ रोकने न पावें ।।ऐसा०।।

२— नर योनि मे निराला, स्वात्माभिमान सोहे।
उसको बताओ हम किस, कानून से हटावे ।।ऐसा०।।

३— निज बुद्धि के मुआफिक, मैंने इसे टटोली।
मरना भला, न करना, यह तो विवाह च्हावे ।।ऐसा०।।

४— है रग ना पतगी, जिसको कि आप घोये।
यह रग है किरमची, घोया धुला न जावे। ऐसा०।।

५— ये आपके रु मेरे, रोके नही रुकेगी।
अतएव खुश मना हो, आज्ञा इसे दिरावे ।।ऐसा०।।

६— सुन फैसला सयाना, ललितागज हरपकर।
"सत्योक्ति माम् पुनातु," कह शीस को झुकावे ।।

राग—अगर है मोक्ष की वांछा

हुआ यह हुक्म जब जाहिर, मोद सबने मनाया है।
चतुर्विध सघ मे मित्रो ! बडा आनन्द छाया है ।।टेर।।

१— सु गुरु पै मुदित मन आकर, सविधि कर वन्दना सादर।
विजय का वृत्त सब उनको, उन्होने कह सुनाया है ।हुआ।

२— विनय फिर यो करे सब ही, रखे जो धर्म पै आस्ता।
वरे वह विजय लक्ष्मी को, नजर यह स्पष्ट आया है ।हुआ।

३— खडे पद-पकजो मे ये, पिपासु धर्म के प्राणी।
कृपालू कर कृपा करिये, इन्हो पै छत्र छाया है ।हुआ।

४— महाव्रत पच की शिक्षा, भरी भिक्षा इन्हे देकर।
शरण मे शीघ्र ही लीजे कलपती इनकी काया है ।हुआ।

५— विनय श्री सघ का गुरु ने, किया स्वीकार खुश होकर ।
धरा शिर हाथ बच्चों के, सभी जन मोद पाया है ।हुआ ।

'हरिगीतिका'

१— गुरुदेव के पद पकज मे, अब प्यार भैरव तो रहे ।
स्वीकार सादर द्रुत करें, गुरुदेव जो इनको कहे ।
अध्ययन ‌‌\शवकाल नदी, सूत्र का सुन्दर करें ।
यम नियम प्रत्याख्यान पौषध आदि शुचितप को वरे ।।

२— आलोक इनकी वृत्ति निर्मल, सुगुरु खुश हो यो भने ।
वैरागियो ! है चावने ये, सार के कसे घने ।
गुरुदेव की महती कृपा लखि, बाल विनती यो करे ।
क्या कठिन है ससार मे, जिसके कि शिर गुरुकर धरे ।।

दोहा

१— इस प्रकार अवलोकिये गुरु की सेवा भाय ।
वैरागी दोनो रहे, हिय मे अति हरषाय ।

राग—राधेश्याम

१— करते विहार ग्रामानुग्राम,
शिवगज पधारें सद्गुरु जब ।
मन मुदित हुआ श्री सघ करे,
गुरु से सविनय यो विनती तब ।।

२— है योग्य उभय वैरागी,
अब दीक्षा लेने के स्वामी ।
इसलिये महोत्सव करने का,
दो हुक्म हमे अन्तर्यामी ।।

३— शिवगज सघ का अति आग्रह,
आलोक वदे यो गुरु ज्ञानी ।

"यतनीयम् शुभे यथाशक्ति,"
हैं सुन्दर यह आगम वानी ॥

४— आदेश गुरु का ऐसा पा,
श्री संघ मुदित-मन को आला।
तन मन से दीक्षोत्सव प्रबंध,
आदर्श किया है तत्काला ॥

५— दीक्षोत्सव देखन सहधर्मी,
चलि दूर-दूर से आये हैं।
वे आत्मानंदी दृश्य देखी,
मन अपने अति हर्षाये हैं ॥

६— है धन्य अहा ! ये आत्माएँ जो,
भव भय को दूर निवारा है।
लो कह कर के सब एक स्वर,
जय जय जय शब्द उचारा है ॥

दोहा

१— इस प्रकार आनन्द युत, दीक्षा ले दुहुँ भ्रात।
ज्ञान ध्यान सीखें सदा, विचरे गुरु के साथ ॥

लावनी

राग—बिन काज आज महाराज

अब सुनो सभी नर नार चित्त निज थिर कर।
खिमिया गुलाब की कथा नींद को परिहर ॥टेर॥

१— श्री रायकुंवर जी महासती सद्गुरुणी।
थीं अमरगच्छ की सतियों बीच शिरोमणी।
जो संयम निष्ठा उत्तम करते करणी।
जिनकी ये दोनों बनी अहो! अनुचरणी।
यों करें विनय उनके पद पद्म पकर कर ॥अब॥

२— हैं अबलाएँ हम दोनो अति दुखियारिन।
अविलम्ब हमारी विपदा करो निवारन॥
है विरुद आपका भव्य तिरन अरु तारन।
इस हेतु बनावें आप हमे सुखियारन॥
कर कृपा दिरावे सयम हमे शिवशकर॥अब॥

३— नयनन मे इनके गुरुणी जी लखि पानी।
करुणाकर करुणा भरी वदे यो वानी॥
जो जपे जाप नवकार मन्त्र को प्रानी।
तो हो जावे उसके सघरे दुख फानी।
यह कथन सत्य है झूठ न एक रती भर॥अब॥

४— इस हेतु प्रथम निज दिनचर्या शुभ कीजे।
व्रत पोषध प्रत्याख्यान वीज चित दीजे॥
सविनय कर सेवा गुरु ज्ञानामृत पीजे।
जिससे हाँ, ममता-नागिन का मद छीजे॥
हो अभय वरो फिर तुम दोनों सयम वर॥अब॥

५— सुन सदुपदेश यो दोनो गुरणी जी का।
मन सोचे पाया कैसा गुटका घी का।
अब तो ये दोनो तप से तन को तावे।
अरु ज्ञान ध्यान करने मे चित्त लगावे।
कर करणी गुरुणी जी का लीना मन-हर॥अब॥

६— यो करणी इनकी उत्तम लखि गुरुणी जी।
अविलम्ब उचारे वाणी मनहरणी जी।
अब सिद्ध मनोरथ करो सफल करणी जी।
सयम-तरणी चढ तिरलो वैतरणी जी।
पा ऐसी आज्ञा, परम शान्ति ली उर धर॥अब॥

७— अविलम्ब हि उन ने जोशी को बुलाया।
अरु दीक्षा लेने हेतु लग्न दिखलाया।
दैवज्ञ देखि पचाग रु वचन सुनाया।
अति-उत्तम मुहूरत भाग्य विवश यह आया।
मत करना इसमे फेर-फार इक-पल-भर॥

६ ५ ६ १
८— निधि परमेष्ठी-निधि-विधु वरस मनभाया।
आषाढपुरी तृतिया का मुहुरत आया।
पचभदरा सुन्दर शहर मरुस्थल माही।
दी दीक्षा इन को वहाँ नेमी-गुरुराई।
श्री रायकुँवर की शिष्याएँ घोषित कर ।।अव।।

राग—दिल जाने से फिदा हूँ।

गुरुदेव ने इन्हे जव, सयम सुधा पिलाया।
सानन्द पी हृदय मे शुचि योग को रमाया ।।टेर।।

१— बनके जु मोक्ष पथ के, दोनो पथिक सयाने।
निज ध्येय साधेन मे, आदर्श जो लगाया ।गुरुदेव।

२— अभ्यास शास्त्र का फिर, करने लगी मनोहर।
जिसको विलोकि जियरा, कलि कालका जलाया ।गुरु०।

३— दीक्षा लिये इन्हो को, षड्मास ही हुए थे।
शिर-छत्र हाय उनका, उसने उहो उठाया ।गुरु०।

४— नर नाग क्या सुरासुर, सर्वज्ञ-सिद्ध हमारे।
भोगे अवश्य जैसा, जिसने करम कमाया ।गुरु०।

राग—राधेश्याम

१— शुचि सयम लिये इन्हे मित्रो!
हा एक अयन भी हुआ नही।
हत्यारा काल अचानक आ,
शिर-छत्र इन्हो का हरा सही ।।

२— श्री रायकँवर जी गुरणी जी,
रयणी मे सोते स्वप्न लखा।
अति-मोटा कुभ सरिसा मुक्ता,
उस स्वप्न मे उनने जु लखा ।।

३— वे समजगये सकेत महा,
यात्रा का अन्तिम है एहो।

अतएव सजग होकर सत्वर,
जो किये कृत्य पडिलेहो ॥

४— ऐसा विचार निश्चय करके,
अविलम्ब सघ को बुलवाया ।
अरु चौविहार उपवास शाख,
उनकी से पचखा मन भाया ॥

दोहा

१— करके शुचि सलेखना, हो समाधि म लीन ।
ज्योति ज्योति मे जा मिली, पेखो परम प्रवीन ॥

राग—राधेश्याम

१— बिन चेतन के तन को निहार,
सद्गुरुणी जी की शिष्याएँ ।
हा ! कर्ण-कटु करुणा क्रन्दन,
करती वे यो है कल्पाएँ ॥

२— यो करी मौन धारण जिसका,
कहिये करुणा कर क्या कारण ॥
हा दयानिधे ! करुणासागर !
हा अशरण-शरण, तरण तारण ॥

३— अपराध हुआ क्या हम से जो !
यो आप सद्य मुख मोर लिया ।
भयभीत हुई भव-भय से हम,
चित चरणो मे तुमरेजु दिया ॥

४— तुम आश्रय किसके छोर गये,
हमको हा ! स्वामिनि ! बतलाओ ।
कलपाओ मत यो मधुर गिरा,
इक वेर कृपा कर फरमाओ ॥

५— यो विलपे हैं सब शिष्याएँ,
हो व्यथित शोक के बानो से ।

अन्दन पै सोहनकँवरी का,
हा! सुना न जाये कानो से ॥

६— कारन हो इसको हुये नही,
षड् मास हि दीक्षा लिये सही।
इसलिये व्यथा इसके दिन की,
"कवि किंकर" कैसे जाय कही ॥

७— श्रद्धेय सद्गुरु श्री नेमिचन्द्र,
कर करुणा धैर्य बँधाया है।
अरु चौमासा मे शास्त्र ज्ञान,
दे इसका दुक्ख मिटाया है ॥

दोहा

१— ऐसे वर्षावास दो, सद्गुरु अपने पास।
कर वाया है कर कृपा, सुन्दर शास्त्राभ्यास ॥

राग—राधेश्याम

१— यो पाकर सद्गुरु से प्रबोध,
कर आत्म-शोध के भाव जगे।
इस कारन नश्वर तन से तप,
आदर्श अहो! करने जु लगे ॥

२— उपदेश इन्हो का सुनकर के,
मन वशीकरण का घबराया।
इस हेतु इन्हो के वचनो मे,
आ अपना गौरव प्रकटाया ॥

३— सानन्द सिंह सी गुंजाते,
जयकारी जब ये जिनवाणी।
हो जाते मन्त्रमुग्ध तब से,
सुनते थे शुध-मन जो प्राणी ॥

'कुण्डलिया'

१— नर से नारायण बने, जाको जन्म प्रमान।
नर होकर खर जो बने, वो है नीच महान॥
वो है नीच महान, ज्ञान अपना जो खोवे।
रोवे वागो फाड-फाड, पै अब क्या होवे।
या हित डरपो बन्धु ! कर्म करते हा ! खर से।
कर करणी उत्कृष्ट, बनो नारायण नर से॥

दोहा

१— आये मूँठी बाँध हम, जायें हाथ प्रसार।
करणी अब ऐसी करें, अवरन लें अवतार॥

२— बिजुरी, सो वभव निरखि रे मन ! तू मन फल।
कर मे हैं करुपाण तो, वहती नदियो भूल॥

३— उपदेशामृत पान कर, इनका परमोदार।
मंत्र-मुग्ध से मन हि मन, हो जाते नर नार॥

राग—राधेश्याम

१—सुनते ये कानो, व्याधि-व्यथित, है महासती जी अमुक अहो।
तत्काल, उन्हो के निकट जाय, यो कहते क्या है हुक्म कहो॥

२—तन मन से सेवा करने मे, लग जाते दिन अरु रात अहा।
है सेवा धर्म गहन अति ही, जो योगिन के भी अगम अहा॥

३—भर यौवन मे मन्मथ-मुद्रा, जिनके पद पकज-तले रही।
लखि छवियो जिनके लारलार, रति की मति भी हा डले रही॥

४—जो चार चार महिनो तक भी तन के वस्त्र नही धोते थे।
तप तपते तब तो दिन मे वे, नहि एक मिनिट भी सोते थे॥

५—ये हुये वर्ष सोलह के जब तप मास-खमरण का घोर किया।
आलोक जिसे आ-बाल वृद्ध-मन मुदित हुए धन्यवाद दिया॥

६—जब करते मास खमण तब भी, व्याख्यान हमेशा फरमाते।
आलोक प्रभा इनकी अद्भुत, मन मे मिथ्यात्वी चकराते॥

दोहा

१— इस विध अति आनन्द-प्रद, जिनवाणी का स्रोत।
यत्र तत्र सुन्दर बहा, करने धर्मोद्योत ॥

राग—राधेश्याम

१—आहार पौरसी प्रथम बाद, आजीवन जिनने सदा किया।
प्रत्येक पारणा तप का फिर, तज तीन पौरसी बाद किया ॥

२— मिष्टान्न त्याग रस त्याग और, फिर विगय त्याग छोटे-मोटे।
घुटते सदैव ही रहते थे, पचखाण के यो सुन्दर घोटे ॥

३—अस्वस्थ अवस्था मे केवल, इन का प्रतिबन्ध खुला धरते।
पनि दोनो आठम चौदस को, प्रतिमास न भोजन जो करते ॥

४—उपवास की गिनती कौन करे जिन किये अहो! अस्सी बेला।
फिर किये मौन रख जीवन मे, निर्जल जिनने इक्सठ तेला ॥

५—चोले की सख्या पैसठ है, चालीस किये जिन पचोले।
छ छ भी जिन चालीस किये, सातो के आये दो झोले ॥

६—कीवी पचास अट्ठाये जिन, दस नव के थोक किये मनहरे।
दो दफे किये दस दस रु दफे—दो एकादश हा अति सुन्दर ॥

७—फिर किये बार दो बारह अरु, तेरह की सख्या एक सही।
चौदह भी एक बार जानो, पन्द्रह भी हा उससे अधिक नही ॥

८—सोलह का थोक तीन विरिया, अरु सतरह दोय दफे जानो।
अट्ठारह एक दफे सुन्दर, उन्नीस एक फिर पहिचानो ॥

९—जिन किये बीस दो दफे और, इकवीस एक विरिया सुन्दर।
बावीस दोय, तेवीस एक, चोवीस किये जिन दो मनहर ॥

१०—शुचि मास खमण जिन तीन किये, इक किया थोक तेतीसो का।
इस भाति तपाया तन को जिन भजन हित भव-भय का धोखा ॥

११—षट् शास्त्र विशारद पूज्यपाद, आचार्य जवाहिरलाल अहा।
पुनि जैन दिवाकर, जग वल्लभ, श्री चौथमल्ल मुनिराज महा ॥

१२—सानन्द चतुर्विध संघ अहो !, होकर प्रसन्न अपने मन में।
है दिया प्रवर्तिनि पद इन को, अजमेर महा-सम्मेलन में॥

दोहा

१— पाई प्रभुता प्रबल यों, कर करणी उत्कृष्ट।
तदपि इनके वदन पै निरख्यो मद निकृष्ट॥

राग—राधेश्याम

१—है नेश्रायित जिन की सुन्दर, शिष्याएँ जिनका नाम अहा।
श्री प्यार कवर अरु पदम कवर, पुनि मोहन मनोज्ञ महा॥
२—श्री गेंदकँवर अरु देवकँवर, श्री राजकँवर जी महासती।
श्री विमल कँवर अरु सजन कँवर, सौभाग्य कँवर जी महासती॥
३—श्री चतुर कँवर पुनि प्यार कँवर, परताप कँवर सन्मति धारी।
सेवा गुलाब सद्गुरणी की, आदर्श करी हा अविकारी॥
४—है विनयवती कैलाश कवर, अरु कुसुमवती विदुषी भारी।
व्याकरण मध्यमा पास अहो ! है पुष्पवती सन्मति वारी॥
५—श्री प्रभावती जी पुण्यात्मा, श्रीमती और मोहनकवरी।
श्री प्रेम कँवर अरु चाँद कवर, पुनि चन्द्रवती सद्बोध भरी॥
६—श्री रतन कवर अरु दाखा जी, है सुगुनवती जी अति नीकी।
पुनि रूप कवर परकाशकवर, ये नेश्रायित गुरुणी जी की॥
७—इन मे से कितनी ही सतियें, कर करणी उत्तम स्वर्ग गई।
सेवा गुरुणी जी की साजे, जो सप्रति मे मौजूद सही॥

दोहा

१— किन किन गाम रु शहर मे, गुरुणी जी चौमास।
कियें विगत उनकी सुनो, उर मे धरी उल्लास॥

चौपाई

१—सयम ले पचभदरा माही,
किये प्रथम चौमास वहाँ ही।

पुनि झाडोल गाम पहचानो,
तत् पश्चात थावला जानो ॥

२—श्री सनवाड और पुनि घासा,
चन्देरा उदयापुर खासा।
गोगुन्दा है ग्राम मनोहर,
और भीलवाडा अति सुन्दर ॥

३—पुनि डवोक, नाई पहिचानो,
घाणेराव सादडी जानो।
सुखद देलवाडा जग ज्हारी,
और सलोदा शाताकारी ॥

४—ग्राम डूंगले कर चौमासा,
भरी भावुको की मन आशा।
श्री इन्दौर शहर अति मोटा,
और किया पावन पुर कोटा ॥

५—मदनगज, जयपुर, अजमेरा,
ब्यावर अरु जेत्राजा हेरा।
नाथदुवारा परम प्रवीना,
अरु पीपाड भक्ति रस भीना ॥

६—जस धारी जोधाणा मांही,
धर्म ज्योति आदर्श जगाई।
अन्तिम चौमासा पाली कर,
निर्मल ध्यान निरजन का घर ॥

४ २ ० २
७—वेद नेत्र नभ कर वर्षाला,
भादो सुदि तेरस तिथि आला।
सोहनकवर समाधी ठाई,
ज्योति ज्योति मे अहो! रमाई ॥

८—पाली सघ भक्ति रस भीना,
निर्वाणोत्सव सुन्दर कीना।

कवि-किंकर यो करणी करते,
वे ही नर अक्षय सुख वरते ॥

कुण्डलिया - छन्द

१— शरण कर नभ कर वरष, भादव पख उजियार।
तिथि तेरस को तत्त्व विद, सुर पुर गये सिधार ॥
सुरपुर गये सिधार, छार शिष्याए उनमुनि।
छाया शोक अपार चतुर्विध संघ बीच पुनि ॥
कवि किंकर कलपाय, जाय वह तो नहि वरणा।
गुरणी सोहन कवर, लिया जब सुर पुर शरणा ॥

छप्पय-छन्द

१— जैन-धर्म स्याद्वाद सरस सिद्धान्त प्रवीना।
गुरु मुख से समझा रहस्य उसका अति झीना ॥
मन मतंग को तप अकुश से वश मे कीना।
संयम का पीयूष वर्ष चौंसठ जिन पीना ॥
यों निर्मल निज जीवन बना, सुरपुर मे जा संचरे।
उस गुरुणी सोहन कवर को, नित उठ वन्दन हम करें।

दोहा

५ २ ० २
१— शर कर नभ कर वर्ष गुरु पूनम गनमाल।
गुरुणी जी रा सुगुन अे, लिखिया लेखक-बाल ॥